

बानो

पुनर्जन्म की एक सच्ची दर्द भरी दास्तान 

जे. पी. सिंह "साहिर"



BlueRose ONE .com
Stories Matter
New Delhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS

India | U.K.

Copyright © J. P. Singh "Saahir" 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS

www.BlueRoseONE.com

info@bluerosepublishers.com

+91 8882 898 898

+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-558-2

Cover design: Anuj

Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: October 2026

समर्पण

मेरी बच्ची, मेरी दोस्त, मेरी इल्हाम की देवी, मेरी म्यूज, मेरी सरस्वती, मेरी
महबूबा निवेदिता को समर्पित

आभार

निवेदिता तुम इस जनम में मेरी रूह को इतने करीब से छूकर अगर न गुज़री होती तो मेरी रूह कभी बेदार ही न हो पाती। मेरी रूह को इर्तिक़ा की अगली मँज़िल पर पहुँचने में मदद करने के लिए तुम्हारा शुक्रिया

बानो

पुनर्जन्म की एक सच्ची दर्द भरी दास्तान



बाज़ औकात यूँ भी होता है कि इन्सान को अपनी ज़िन्दगी में अचानक कुछ ऐसे लाक्राबिले-यक्रीन वाक़ियात से दो चार होना पड़ जाता है जिनके बारे में उसने कभी तसव्वुर में भी सोचा नहीं होता। कुछ ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ। यक्रीन नहीं होता कि ऐसा क्यों हुआ और फिर मेरे साथ ही क्यों हुआ? चलो, अगर इसलिए हुआ कि होना ही था तो फिर इस उम्र में ही क्यों हुआ? आदमी ज़िन्दगी की तमाम जद्दोज़हद से फ़ारिग हो जाने के बाद जब सुकून की ज़िन्दगी जीने की ख्वाहिश रखता है, तभी बैठे बिठाए उसकी ज़िन्दगी में अगर कोई तूफ़ान आ जाए तो वो क्या करे? हमारी ज़िन्दगी में बहुत से ऐसे वाक़ियात गुज़रते हैं जिन पर हमारा बस नहीं होता। उन्हें हम अल्लाह की मर्ज़ी समझ कर सब्र कर लेते हैं। जिन वाक़ियात पर हमारा बस नहीं होता और जो बस यूँ ही अचानक हम पर गुज़रते हैं और जिनके होने से हमें जिस्मानी या ज़ेहनी चोट पहुँचती है, दर्द होता है, हमारा जानी या माली नुक़सान होता है, उन्हें हम हादिसात कहते हैं। लेकिन अल्लाह क्यों चाहेगा कि हमारे साथ कोई हादिसा पेश आए। मुझे ये भी समझ नहीं आ रहा कि जो हादिसा मेरे साथ हुआ उसे मैं हादिसा कहूँ या सानिहा, क्योंकि इसे सिर्फ़ हादिसा नहीं कहा जा सकता। हादिसा होता तो कुछ रोज़ में ठीक हो जाता और ज़िन्दगी फिर से पटरी पर आ

जाती। भूल भी जाता और कभी ज़िक्र आने पर ही याद आता। लेकिन जब कुछ ऐसा हो जाए और वो भी तब जब उसके होने का ज़रा सा भी अँदशा या इम्कान न हो, और ये भी कि उसके हो जाने पर आपकी ज़िन्दगी में एक शदीद उथल-पुथल मच जाए और किसी भी सूरत में ज़िन्दगी के फिर से पटरी पर आने के सभी रास्ते, सभी तरीके, सभी वसाइल, सभी मनसूबे, सभी मुदावे नाकामयाब हो जाएँ तो बन्दा क्या करे। सानिहा ही कह सकते हैं शायद इसे, लेकिन क्योंकि ये मेरे साथ हुआ है तो मैं ही बता सकता हूँ कि ये सानिहा से भी बहुत ऊपर की कोई चीज़ है जिस की शिद्दत और जिसके असर को मुकम्मल तौर पर ब्यान कर पाना अल्फ़ाज़ के बस की बात नहीं। इसके असरात को सिर्फ़ महसूस किया जा सकता है और चूँकि इसे सिर्फ़ मैंने ही महसूस किया है इसलिए मैं ही बता सकता हूँ कि इसकी मार कितनी गहरी है। लेकिन बताना तो बहरहाल अल्फ़ाज़ की मदद से ही पड़ेगा और जैसा कि मैंने पहले कहा कि अल्फ़ाज़ में शायद वो कुव्वत या उनके मा'अनी में वो वुस'अत न हो जिससे इससे होने वाले एहसासात को सही, माकूल और मुकम्मल तौर पर ब्यान कर सकूँ। बहरहाल, कोशिश तो कर ही सकता हूँ। और कोशिश तो करनी पड़ेगी भी। अगर इसे अल्फ़ाज़ में ब्यान न करके ज़ेहनो-दिल के हल्के में ही इस डर से छुपा कर रखता हूँ कि लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे तो यक़ीनन इसकी मार से बचना मुश्किल हो जाएगा मेरे लिए। ये कोशिश इसलिए भी करनी पड़ेगी क्योंकि अगर मैं इसे अयाँ नहीं करता तो जो मेरे साथ हुआ, हो रहा है, होता ही चला जा रहा है तो शायद ये तब तक होता ही चला जाए जब तक मैं इसके असर से मर न जाऊँ या पागल न हो जाऊँ। ये दोनों में से एक तो करके ही छोड़ेगा। फ़ौजी हूँ, सो ज़ाहिर है कि सख़्त-जान भी हूँ, चुनाँचे, ये मुझे मार तो नहीं सकता मगर जो धमाचौकड़ी इसकी वजह से मेरे ज़ेहन में मुसलसल जारी है और जिसकी वजह मेरी समझ से बाहर है, उससे पैदा हुए इज़तराब और फिर कई रातों की नींद से महरूमी, रोज़मर्रा की बेतरतीबी और तक्ररीबन ऐसाबी

खलल की सी हालत वगैरह मुझे पागल तो जरूर कर के छोड़ेगी। अगर वो भी नहीं तो एक तवील-ओ-शदीद मुसलसल जेहनी दबाव के हालात से तो गुजरना ही पड़ेगा। बहुत कोशिश कर रहा हूँ कि इसके असरात से जेहन ऐसा भी मुत्तासिर न हो कि ऐसे दबाव तले आ जाए जिससे उबरना मुश्किल हो। अक्सर ऐसा तभी होता है जब आप नाकर्दा गुनाहों की सजा पाते हैं या आपको समझने वाला कोई नहीं होता और अगर होता भी है तो क्रस्दन आपको समझना नहीं चाहता। ऐसी हालत में ज्यादा जेहनी वरजिश छोड़कर यही मुनासिब होगा कि इस सानिहे को सानिहा ही समझूँ और इसे अल्लाह की मर्जी समझ कर कुबूल कर लूँ और ये समझ कर सब्र कर लूँ कि मेरे साथ ये होना ही था और ज़िन्दगी के इसी मरहले पर होना था। आम तौर पर देखा गया है कि ज़िन्दगी में अगर कोई मुसीबत आती है या कोई हादसा गुजरता है तो उसका असर कुछ दिनों या महीनों में खत्म हो जाता है या धीरे धीरे कम होने लगता है लेकिन यहाँ जो मेरे साथ हुआ है वो होता ही चला जा रहा है और न तो वो खत्म होने का नाम ले रहा है और न ही उसका असर कम हो रहा है। उल्टा, दिन, महीने, साल गुजरने के साथ उससे पैदा हुआ दर्द ज्यादा शदीद और दायमी होता चला जा रहा है।

ऐसा नहीं है कि इससे पहले मुझ पर कोई हादसा नहीं गुजरा। दो बार मुझ पर बैठे बिठाए ऐसे सँगीन मसाइब पड़े कि कोई दूसरा होता तो खुदकुशी कर गया होता। जब कोई ऐसा हादसा गुजरता है जिस का ख्वाब में भी खदशा न हो तो आदमी को सँभलने में वक़्त लगता है और अगर ये हादसा आपकी तरफ़ से बिना किसी ग़लती के हो तो उसकी सजा बेहद नागवार गुज़रती है। कुछ लोग उसके साथ जुड़ी बदनामी बर्दाश्त नहीं कर पाते और खुदकुशी कर लेते हैं मगर मैं उन लोगों में से नहीं हूँ। मैंने वो सब पूरी हिम्मत से बर्दाश्त किया क्योंकि मैं जानता था कि उसकी वजह मेरी बदनीयती नहीं थी। मुझ पर हमला किया गया था। साज़िश रची गई थी। इन दोनों हादसात के बाद भी मैं पूरे चैन

की नींद सोता था और न तो मुझे किसी क्रिस्म का खौफ ही था, न मैंने लोगों से मिलना जुलना ही छोड़ा था। मगर ये सानिहा जो मुझ पर अब गुजरा है उस की वजह से मेरी रातों की नींद उड़ गई है। तक्ररीबन डेढ़ साल हो गया है मुझे नींद ही नहीं आती। दिन में दो ढाई घंटे क्रिस्तों में सो लेता हूँ। बात ही कुछ ऐसी है कि इसके साथ जुड़ी तकलीफ़ मुझे अकेले ही बर्दाश्त करनी है। मैं न तो इसे किसी के साथ साझा कर सकता हूँ, न मश्वरा कर सकता हूँ। एक एहसासे-शर्मिंदगी है सो अलगा। अगर मेरे साथ ये होना ही था तो इस उम्र में ही क्यों हुआ?

सरकारी मुलाज़मत के दौरान मैं अपनी ईमानदारी और नेकनीयती के लिए मशहूर था। कुछ लोग मुझे बेहद सख़्त मिज़ाज अफ़सर भी कहते थे, लेकिन मेरी सख़्तमिज़ाजी की तारीफ़ भी करते थे क्योंकि मैं सियासी लीडरों और वज़ीरों के ग़ैर वाजिब मुतालिबात को सिरे से ख़ारिज कर देता था और अवाम की मुश्किलात के हल के लिए आला अफ़सरों और सियासी लीडरों से भी टकरा जाता था। पढ़ने में आप को शायद ये अच्छा लग रहा होगा लेकिन अपनी ऐसी फ़ितरत और रवय्ये की वजह से मैंने अपनी सिविल मुलाज़मत के बाईस सालों के दौरान छत्तीस सैंतीस तबादलों को भी बर्दाश्त किया है। इससे पहले फ़ौज में था तो दस साल एक ही पल्टन में रहा। एक भी तबादला नहीं। यहाँ बार बार तबादला होने से एक जगह से दूसरी जगह जाने और नये सिरे से शुरू करने में आने वाली मुश्किलात की अपनी दिक्कतें हैं मगर मैंने कभी भी अपना तबादला रद्द करवाने के लिए किसी सियासी लीडर की मिन्नत नहीं की। जहाँ भेजा गया वहाँ बिना किसी हील हुज्जत के चला गया। आखिर करनी तो अवाम की ख़िदमत ही थी। यहाँ नहीं, कहीं और सही। एक राज़ की बात बताता हूँ। ये कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर, असिस्टेंट कलेक्टर, एस डी ऐम, डिप्टी कमिश्नर, कमिश्नर वग़ैरह सुनने में बहुत अच्छे लगते हैं, देखने में और भी अच्छे लगते हैं क्योंकि वो लाल बत्ती वाली गाड़ी में सफ़र करते हैं, गनमैन

आस पास रहते हैं, कुछ दीगर सरकारी खादिम भी मिल जाते हैं, सरकारी मकान, टेलीफ़ोन, गाड़ी के अलावा, ग़ैर सरकारी अमीर और रसूखदार ज़मींदार, कर्ज़ पर ली हुई बड़ी बड़ी गाड़ियों वाले प्रापर्टी डीलर, कम्पनियों के मालिक, स्कूलों, कॉलेजों और यूनिवर्सिटियों के मालिक, मल्टी स्पैशियलटी अस्पतालों के मालिक, सियासी लोगों और आप में ताल मेल बिठाने वाले बिचौलिए और दलाल सब आपकी खिदमत में हाज़िर रहते हैं। ये बात दीगर है कि ये तमाम लोग तभी तक आपके आगे पीछे घूमते हैं जब तक आप किसी खास पोस्टिंग पर किसी खास स्टेशन पर तैनात हैं। जैसे ही आपका तबादला किसी दूसरे शहर में हुआ वैसे ही ये पुराने स्टेशन वाले आपकी आँख के तारे आपको भूल कर आपकी जगह आने वाले नये अफ़सर की आँख के तारे बनने के लिए दाव बिठाने में मशगूल हो जाते हैं। लेकिन इसमें घबराने की ज़रूरत नहीं। अगले स्टेशन पर इन चापलूसों का बना बनाया सेट हफ़्ते भर ही में आपके बाबू आपको दिला कर ही मानते हैं। इन सबको आपका साथ चाहिए ताकि ये सारे शहर को बता सकें कि आप उनके बड़े खास हैं और किसी का कोई भी काम आपसे चुटकी बजाते करवा सकते हैं। दूसरी तरफ़ आपको भी इनका साथ चाहिए क्योंकि ये लोग सिर्फ़ आपकी खिदमत का ढोंग ही नहीं करते, ये सियासी लीडरों और वज़ीरों के भी नज़दीक होते हैं। आपकी ज़रा सी ना-नुकर पर आपका तबादला करवा सकते हैं और अगर आपका तबादला किसी और वजह से हो जाए तो रुकवा भी सकते हैं। आप चाहे कितने भी बड़े अफ़सर हों आपकी लगाम सियासी लोगों के हाथ में ही होती है। जो वो चाहें, क़ानूनी या ग़ैर क़ानूनी तरीक़े से उनके हक़ में करते जाओ तो ठीक नहीं तो अपना तबादला या सस्पेंशन पक्का समझो। ज़्यादातर अफ़सर ऐसे भी होते हैं जो सारी नौकरी चापलूसी में ही गुज़ार देते हैं। लीडरों के पैरों में ही गिरे रहते हैं और अवाम की खिदमत से पल्ला झाड़ लेते हैं। लेकिन अगर कभी आप रिटायर हो जाने के बाद इनकी गप्पें सुनो तो सारी उम्र दुम दबाकर नौकरी करने वाले ये अफ़सर

अपनी बहादुरी के ऐसे ऐसे मनगढ़न्त किस्से सुनाएँगे कि आपको लगेगा कि मुल्क इनकी ही वजह से तरक्की कर गया बर्बाद हो गया होता। जबकि सच ये होता है कि मुल्क और भी ज़्यादा तरक्की करता अगर इनकी बुजदिली की वजह से बर्बाद न होता।

लेकिन मैं इन सबसे हट कर था। मेरी सारी नौकरी के दौरान बड़े से बड़ा तीस मार खाँ सियासी लीडर भी मुझसे कोई नाजायज़ काम नहीं करवा सका। कुछ लीडर मेरी ईमानदारी और तेज़ी से काम निपटाने के किस्से सुनकर मुझे अपने इलाक़े में तैनात करवा लेते लेकिन महीने डेढ़ महीने में ही उनका भरम टूट जाता जब वो कुछ नाजायज़ करने को कहते और मैं सिरे से इन्कार कर देता। नतीजा, हफ़्ते भर में कहीं और तबादला। एक बार की बात है कि एक शहर से मेरा तबादला हो जाने पर कुछ लोग मेरा तबादला रुकवाने के लिए वज़ीरे-आला के पास पहुँच गए और उनसे गुज़ारिश की कि अफ़सर बड़ा नेक और ईमानदार है। सबके काम बिना ताख़ीर कर देता है। इलाक़े के लोग उसके काम से बड़े खुश हैं। वो लोगों में बहुत मक़बूल है। इसलिए उसका तबादला रोक दिया जाए। वहाँ से वापस आकर उन लोगों ने बताया कि वज़ीरे-आला ने उनकी बात ये कह कर टाल दी कि यही तो दिक्कत है कि वो लोगों में मक़बूल है जबकि उसे सियासी लीडरों में मक़बूल होना चाहिए। लेकिन सियासी लीडरों के नाजायज़ मुतालिबात को दरकिनार कर देने वाली मेरी फ़ितरत और रवय्ये को कब तक बर्दाश्त किया जा सकता था। बहुत से सियासी लीडरों को नाराज़ कर चुका था। सो एक दिन जबकि मेरी तरक्की होने को तक्कीबन दो महीने बाक़ी थे मुझ पर झूठे इल्जाम लगाकर मुझे नौकरी से फ़ारिग़ कर दिया गया। मेरे लिए ये एक बहुत बड़ा हादिसा था। एक ही पल में मैं अर्श से फ़र्श पर आ गया था। लेकिन मैंने इस हादिसे को दिलेरी से बर्दाश्त किया। मुझ पर रिश्तत माँगने का इल्जाम लगाया गया था लेकिन इससे सरकार की ही ज़्यादा किरकिरी हुई क्योंकि जिस अवाम ने मुझे इतने बरस ईमानदारी से काम

करते हुए देखा था उन्होंने मुझ पर लगाए इल्जाम को सिरे से नकार दिया था। सबने इसे सियासी इन्तक़ाम करार दिया।

मुलाज़मत से सुबक्रदोश होने के बाद सोचा था अपने गाँव जाकर आराम से तमाम शहरी झमेलों से दूर चैन की ज़िन्दगी बसर करूँगा लेकिन गाँव में मेरे भाईयों और दीगर रिश्तेदारों को ये बात बड़ी नागवार गुज़री। वो जिन्हें मैं हमेशा अपना समझता रहा मेरे दुश्मन बन गए। जहाँ तक कि मेरे वालिद ने भी मुझसे किनारा कर लिया। क्योंकि मैंने अच्छी खासी नौकरी के बावजूद कोई नाजायज़ जायदाद नहीं बनाई थी, इसलिए शायद उन्हें ये लगा कि मैं नालायक हूँ और उनसे ख़ानदानी जायदाद में हिस्सा माँगूँगा। हालांकि मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था लेकिन उनको कैसे समझाया जाए जो समझना चाहते ही न हों। एक दिन मेरे भाइयों ने मेरे चाचाओं के साथ मिलकर एक साज़िश के तहत अचानक मुझ पर जानलेवा हमला कर दिया। वो शायद जान ही ले लेते अगर मेरी बीवी मुझ पर बरसती लाठियों और ठोक़रों के बीच मेरे ऊपर न जा गिरी होती। ये दूसरा ऐसा हादसा था जिस पर यक़ीन करना बहुत मुश्किल था क्योंकि मैंने कभी ख़्वाब में भी नहीं सोचा था कि मेरे सगे भाई मेरे साथ ऐसा करेंगे।

इस हादसे के बाद हमने गाँव छोड़ने का फैसला किया और एक दो छोटे शहरों में रहने के बाद चण्डीगढ़ आकर रहने लगे। चण्डीगढ़ एक बड़ा और मशहूर शहर है जहाँ रिटायर होने के बाद लोग आराम की ज़िन्दगी बसर करने के लिए आ बसते हैं क्योंकि यहाँ आराम की ज़िन्दगी बसर करने के लिए वो तमाम सहूलियात मौजूद हैं जो एक इन्सान को दरकार हैं। बच्चों की तालीम के लिए एक से बढ़कर एक स्कूल, कॉलेज, तीन चार बड़ी यूनिवर्सिटियों के अलावा कुतुबख़ाने, मेडिकल का सबसे बड़ा तहक़ीक़ी और तरबियाती मरकज़, पी जी आई, हर मरज के लिए बीसियों अस्पताल, तफ़रीह के लिए सुखना लेक, रॉक गार्डन, रोज़ गार्डन, लैय्यर वैली, ड्रामा थियेटर, सिनेमा हॉल्स, होटल्स, रेस्टोरेंट्स, मॉल्स और हर सैक्टर में अलग बाज़ार जहाँ दुनिया

भर की तमाम चीजें मिल जाती हैं। आप जो चाहे कर सकते हैं। सिनेमा देखना चाहते हैं, देखिए। घूमना चाहते हैं, घूमिए। बोटिंग करना चाहते हैं, कीजिए। रेस्टोरेंट में खाना खाना चाहते हैं, खाइए। ड्रामा देखना चाहते हैं, देखिए। मुशायरा सुनना चाहते हैं, सुनिए। दीगर अदबी सरगर्मियों में शिरकत करना चाहते हैं, कीजिए। शॉपिंग करना चाहते हैं, कीजिए। पढ़ना चाहते हैं, पढ़िए। वरजिश करना चाहते हैं, कीजिए। पहाड़ों की सैर करना चाहते हैं, पास ही शिमला, कसौली, सोलन की पहाड़ियों में कुदरत के नजारों से लुत्फ़अन्दोज़ होइए। यानि हर वो शय जो आपको दरकार है वो यहाँ मिल जाती है। अब तो चण्डीगढ़ सिर्फ़ चण्डीगढ़ न रह कर पँजाब के मोहाली और हरियाणा के पँचकूला को मिलाकर चण्डीगढ़ ट्राई सिटी एरिया कहलाने लगा है। यूँ तो मोहाली और पँचकूला दोनों अलग अलग शहर हैं और पहला पँजाब और दूसरा हरियाणा का शहर है लेकिन चण्डीगढ़ से सटे होने की वजह से यहाँ के बाशिंदे जब कहीं बाहर जाते हैं तो खुद को चण्डीगढ़ का बाशिंदा ही बताते हैं। यूँ रहता तो मैं भी मोहाली में ही हूँ लेकिन इस लिहाज़ से आप मुझे भी चण्डीगढ़ का बाशिंदा कह सकते हैं।

यहाँ एक किराए का मकान लेकर रहने लगा तो कुछ पुराने दोस्तों से भी राबिता किया। मेरा ज़्यादा वक़्त तो पढ़ने में ही गुज़रता है क्योंकि मुझे किताबें और तन्हाई पसन्द हैं। यूँ तो मेरे बहुत सारे दोस्त हैं लेकिन किताबें हमेशा इन्सानों से बेहतर दोस्त साबित होती हैं सो इन्हीं से अच्छी दोस्ती है। इसलिए ज़्यादा वक़्त इन्हीं के साथ कटता है। हल्की फ़ुल्की शायरी भी कर लेता हूँ। शायरी की किताबें भी पढ़ता हूँ। हालांकि मेरे पास अपना भी एक छोटा सा कुतुबख़ाना है जिसमें दुनिया भर के मशहूर और मक़बूल नसरनिगारों और शायरों की कई किताबें हैं फिर भी जब से चण्डीगढ़ आया हूँ अक्सर हर महीने एक दो नई किताबें ख़रीद ही लाता हूँ। मेरा तो गुज़र इन किताबों में हो जाता है लेकिन मेरी बीवी को ये शौक़ नहीं सो उसको कभी कभार मॉल या सिनेमा

हॉल ले जाता हूँ बड़े आराम से कट रही थी यहाँ ज़िन्दगी लेकिन बीवी कुछ बोरियत महसूस करती थी। आखिर घर के एक कमरे में टीवी के सामने कितने घँटे बैठ सकता है कोई और उस पर ये दावा भी करना पड़े कि सब ठीक है तो बात हज़म नहीं होती। एक दिन उसने फ़ोन पर अपनी एक पुरानी सहेली से बात की और उसे बताया कि आजकल हम मोहाली में रह रहे हैं। उससे फ़ोन पर बातचीत का सिलसिला चल निकला। फिर घर पर आना जाना, मिलना जुलना, सिनेमा, शॉपिंग वगैरह जाना होने लगा। मैं खुश था कि चलो बीवी को पुरानी सहेली मिल गई। ये और भी खुशी की बात थी कि दोनों में पटती भी खूब थी।

एक दिन वो और मेरी बीवी कहीं तफ़रीह कर रहीं थीं, वहीं से दोनों अचानक घर आईं और वो मुझसे कहने लगी कि आपकी बीवी ने बताया कि आप उर्दू सीखना चाहते थे तो चलो जल्दी मेरे साथ। आज आखिरी दिन है यूनिवर्सिटी में दाखिले का। वो दाखिला फ़ार्म साथ ही लेकर आई थी। मेरी बीवी ने मुझे जल्दी नहाकर तैयार होने को कहा जबकि उसकी सहेली ने मेरा फ़ार्म भरा और आनन फ़ानन में हम लोग पंजाब यूनिवर्सिटी के उर्दू शो'अबे के दफ़्तर पहुँच गए। दाखिला भी हो गया।

उर्दू सीखने की मेरी वाक़ई बड़ी ख़्वाहिश थी लेकिन मुलाज़मत के दौरान ऐसा मौक़ा कभी न आया था कि आराम से उर्दू सीखने के लिए किसी तालीमी अदारे में दाखिला ले पाता। शायरी करता था और कभी कभार सही लफ़्ज़ की तलाश में इधर उधर हाथ पैर मारते हुए महसूस करता था कि अगर मुझे उर्दू आती होती तो मैं बहुत से शायरों का कलाम असल रूप में पढ़ सकता और साथ ही मेरे पास लफ़्ज़यात का एक वसीअ ज़ख़ीरा भी होता तो मैं और अच्छी शायरी कर पाता।

जब हम बड़े हो रहे थे और स्कूल जाना शुरू किया था तब मुल्क की तक्रसीम हुए तक्ररीबन पन्द्रह साल हो चुके थे और उर्दू किसी वजह से पाकिस्तान जा चुकी थी। हम हिन्दी पढ़ते थे। बाद में पंजाबी सूबे के चक्कर में तक्रसीम की मार से बचे हुए पंजाब के दो टुकड़े और हुए। हरियाणा और हिमाचल प्रदेश। जो हिस्सा बच गया वो पंजाब बना, या यूँ कहिए कि बचा खुचा पंजाब असल पंजाब का तक्ररीबन छेवाँ हिस्सा ही रह गया। उस पर भी खुशियाँ मनाई गईं। सियासत कितनी अजीब चीज है। एक अच्छे खासे खुशहाल इलाक़े और वहाँ के बाशिंदों को बर्बाद करने के बाद भी सियासतदान खुश थे। पाकिस्तान बनने से वहाँ पर एक लीडर वज़ीरे-आज़म बना तो तीन चार लोग मुख्तलिफ़ सूबों के सूबेदार या वज़ीरे-आला। अब अगर पाकिस्तान न बना होता तो इन लोगों को कौन पूछता। सियासी लोग या सियासतदान शुरू से ही अपनी सियासी रोटियां सेंकते आए हैं। इन्हें अवाम की फ़िक्र कम अपने रुतबे की ज़्यादा होती है जिसे क़ायम रखने के लिए वो पूरा का पूरा मुल्क भी बर्बाद कर सकते हैं।

यही वजह थी कि हिन्दुस्तान में बच रहे पंजाब के दो और टुकड़े किए गए। तक्रसीम के बाद पंजाब का पहला वज़ीरे-आला एक हिन्दू लीडर बना। दूसरा भी हिन्दू और यही दोनों बारी बारी तक्ररीबन तक्रसीम के नौ साल बाद तक आज़ाद हिन्दुस्तान के आज़ाद पंजाब के वज़ीरे-आला रहे। सिखों की अक्सरियत वाले सूबे में हिन्दू वज़ीरे-आला? ये बात कुछ सिख सियासी लीडरों के गले नहीं उतरती थी। फिर वही सियासी साज़िशें और स्कीमें सिख लीडर प्रताप सिंह कैरों को वज़ीरे-आला पंजाब बनाने में कामयाब हुई। कहते हैं प्रताप सिंह कैरों एक क़ाबिल लीडर था जिसने तक्रसीम की मार खा कर म'आशी तौर पर कमज़ोर हो चुके पंजाब को फिर से पैरों पर खड़ा करने में क़ाबिले-तारीफ़ काम किया था। लेकिन किसी निजी रँजिश के चलते उसे किसी ने क़त्ल कर दिया और पंजाब में सदरे-मुल्क की हुक़मरानी क़ायम हुई

जो एक आरज़ी इन्तज़ाम होता है और नये वज़ीरे-आला के चुने जाने तक ही रहता है। यही वो मौक़ा था जिसका फ़ायदा उठाकर सिख लीडरों, खासकर अकाली दल के लीडरों ने पंजाबी सूबे का नारा बुलंद किया। मक़सद सिखों की अक्सरियत क़ायम करना और फिर सिख सरकार क़ायम करना जिससे कोई सिख लीडर ही पंजाब का वज़ीरे-आला बने। माँग यह कि हिन्दी, हरियाणवी और पहाड़ी बोली बोलने वालों के अलग सूबे बनें और पंजाबी बोलने वालों को पंजाबी सूबा मिले। सियासत कामयाब हुई और पंजाब एक बार फिर हार गया। फ़र्क सिर्फ़ ये था कि इस बार वो अपनों के हाथों हारा था। सो महाराजा रणजीत सिंह के अज़ीम पंजाब के छः सात टुकड़े होने के बाद वो पंजाब न होकर अकाली दल का पंजाबी सूबा बनकर रह गया। लेकिन सियासी लोग कहाँ समझते हैं ये अपनों से अलग होने का दर्द। आज उसी हिमाचल में दाख़िल होने के लिए दाख़िला टैक्स देकर जाते पंजाबी बड़े ख़ुश नज़र आते हैं। यही चन्डीगढ़ जो पंजाब की ज़मीन पर बसाया गया था आज हरियाणा और पंजाब के बीच मुत्तनाज़ा शहर होकर रह गया है।

ख़ैर, बात हो रही थी ज़बान की, तो तक्रसीम के साथ उर्दू पाकिस्तान वाले ले गए, हिन्दी हरियाणा और हिमाचल वाले ले गए और हमारे पास बस पंजाबी रह गई। बात जब मुल्की यकजहती की चलती है तो ये कहा जाता है कि मुख्तलिफ़ ज़बानें होने के बावजूद हम एक हैं। हमसे पूछिए, अभी हिन्दी ठीक से सीख नहीं पाए थे कि पंजाबी सीखने लगे। पंजाबी में भी अभी हाथ तँग ही चल रहा था कि अँग्रेज़ी लग गई। तीन तीन ज़बानें सीखने वाली हमारी शायद मुल्क की पहली पीढ़ी थी। मुल्क के साथ एक होने की ज़दोज़हद से गुज़र ही रहे थे कि आलमी यकजहती के चक्कर में अँग्रेज़ी का हैट पहनना भी ज़रूरी समझा जाने लगा था या शायद आज़ादी के बाद हम कोई ऐसी ज़बान ईज़ाद नहीं कर पाए जो हमें एक कर सकती सो अँग्रेज़ों के जाने के बाद भी अँग्रेज़ी सीखना ज़रूरी था हमारे लिए।

उर्दू तो जैसे हमारे लिए एक ग़ैर मुल्की ज़बान होकर रह गई थी। उर्दू यहीं पंजाब में जन्मी, यहीं उसका नश्चो-नुमा हुआ और एक ऐसी ज़बान के रूप में मक़बूल भी हुई जिसके ज़रिए न सिर्फ़ बेशतर हिन्दुस्तानी बल्कि अँग्रेज़ भी हमसे जुड़े रहने में कामयाब हुए और एक तवील अरसे तक उर्दू एक तालीमी, मुआशरती, दफ़्तरती, अदालती, सियासी और अदबी ज़बान के रूप में इस्तेमाल होती रही। फिर भी तक्रसीम के वक़्त पाकिस्तान ने इसे क़ौमी ज़बान क्या बना लिया, हिन्दुस्तान वालों ने इससे पल्ला ही झाड़ लिया। ये दीगर बात है कि पाकिस्तान की क़ौमी ज़बान उर्दू होने के बावजूद वहाँ लोग अक्सरियत से सिन्धी, बिलोची, पश्तो या पंजाबी ही बोलते हैं। सियासत मुल्कों और अवाम को तो तक्रसीम करती ही है ज़बान को भी कर गई। इतना वसीअ और अमीर अदबी ज़ख़ीरा कोई कैसे किसी के सुपर्द कर सकता है। पता नहीं किसने और कब इसे मुस्लमानों की ज़बान कह दिया जिसके सबब हिन्दुओं ने इसे पढ़ना छोड़ दिया और हिन्दी बोलने वाले इलाक़ों में रहने वाले मुस्लमानों के लिए उर्दू ज़रूरी हो गई। सो अब मुआशरे को बाँटने में ज़बान का रोल भी तय हुआ।

मुख़्तसर ये कि जिन दिनों हम लोग पंजाब में तालीम ले रहे थे उन दिनों उर्दू यहाँ से जा चुकी थी और हमारे बुज़ुर्ग़ बेशक़ पंजाबी बोलते थे मगर उनकी पंजाबी में तक्ररीबन सत्तर फ़ीसदी अल्फ़ाज़ उर्दू के ही होते थे। हम लोग भी पंजाबी बोलने के बावजूद ज़्यादातर उर्दू अल्फ़ाज़ ही इस्तेमाल करते थे। वक्त बीतने के साथ बुज़ुर्ग़ तो सिधार गए और उर्दू बोलने वालों की गिनती में कमी आ गई और फिर पंजाबी को दफ़्तरती ज़बान के तौर पर इतने बरस इस्तेमाल करने से भी आम बोल चाल में उर्दू अल्फ़ाज़ की जगह पंजाबी अल्फ़ाज़ ने ले ली।

उर्दू हमसे छूट गई और इसे सिखाने वाले उर्दू अदारों में भी कमी आई। हिन्दुस्तान में जन्मी, पली और उरूज को पहुँची उर्दू ज़बान अपने ही मुल्क में सौतेली हो गई। इसका कोई वाली नहीं रहा। चन्द पुराने लोगों ने बहुत कोशिश

की कि ये यहाँ तकसीम से पहले की तरह मक़बूल रहे मगर ऐसा हो नहीं सका। आप पँजाब यूनिवर्सिटी के उर्दू शो'अबे को ही ले लीजिए। बेचारा सौतेले पन में किसी तरह ज़िन्दगी काट रहा है। किसी दूसरे शो'अबे की इमारत में से माँगे हुए डेढ़ दो कमरों में सारा शो'अबा है और वो भी शायद एक ही बड़े कमरे में दीवार बनाकर दो हिस्सों में बाँटा गया है। एक कमरे के आधे हिस्से में शो'अबे के हैड का दफ़्तर है जिसे वो क्लास रूम के तौर पर भी इस्तेमाल करते हैं और बचे हुए आधे हिस्से में एक छोटा सा कुतुबख़ाना और दो क्लर्कों के बैठने की जगह बनाई गई है। दूसरे कमरे के एक हिस्से में उर्दू पढ़ाई जाती है और दो अलमारियों की एक दीवार बनाकर दूसरे हिस्से में फ़ारसी। मुश्किल से ये कि उर्दू और फ़ारसी शो'अबे दोनों इन दिनों आखिरी साँसों पे हैं, या यूँ कह लीजिए कि अपनी पहली साँस के वक्त से ही आखिरी साँसों पर हैं। हालांकि शो'अबे के चेयरपर्सन कुछ न कुछ जोड़-तोड़ करके इस कोशिश में रहते हैं कि इसकी साँसें चलती रहें लेकिन मौजूदा दौर में ज़बानो-अदब को ज़िन्दा रख पाना मुश्किल होता जा रहा है। किसी भी मुल्क के नश्वो-नुमा के लिए ज़बानो-अदब का इतिहास बेहद ज़रूरी है मगर अफ़सोस हमारे हाकिम इस बात को समझते ही नहीं या इस तरफ़ तवज्जह करना ज़रूरी नहीं समझते।

दाखिले के फ़ौरन बाद मैं, मेरी बीवी, हमारा बेटा और मेरी बीवी की सहेली सभी उस्तानी साहिबा के साथ ही क्लास में गए। ये क्लासरूम भी किसी और शो'अबे से कुछ दिनों के लिए माँगा हुआ था। दर असल कोर्स के शुरुआती दिनों में तलबा की गिनती ज़्यादा होती है जो वक्त गुज़रने के साथ खुद ही कम हो जाती है क्योंकि उन्हें किसी दूसरे कोर्स में दाखिलता मिल जाता है। बाकी तलबा क्लास में पहले से ही बैठे थे और उस्तानी साहिबा का इन्तज़ार कर रहे थे जो सिर्फ़ मेरे दाखिले की वजह से ही अभी तक क्लास में नहीं जा सकी थीं। वहाँ पहुँच कर उस्तानी साहिबा ने सबके साथ मेरा त'आरुफ़ करवाया। ये उर्दू का इब्तदाई सर्टिफ़िकेट कोर्स था और अभी कुछ ही दिन

पहले बाकायदा शुरू हुआ था। सभी तलबा के लिए ये नया था। कोई भी पहले से उर्दू नहीं जानता था। सबकी उर्दू की क्लास में दाखिले के मुख्तलिफ़ वजूहात थीं। ये कोर्स शाम के वक़्त करवाए जाते हैं और बहुत से तालिबे-इल्म अपने रेगुलर कोर्स के साथ शाम के वक़्त उर्दू सीखने की ग़रज़ से इसमें दाख़िला ले लेते थे। कुछ एक ऐसे भी थे जो मौसिक्री में डिग्री कर रहे थे, गुलुकार बनना चाहते थे सो उर्दू के तलफ़्फ़ुज़ पर पकड़ बनाने के लिए उर्दू सीख रहे थे। कुछ ऐसे भी जिन्होंने किसी कोर्स के लिए ज़रूरी दाख़िला टेस्ट दे रखा था और नतीजे के मुन्तज़िर थे। कुछ ऐसे नौकरीपेशा भी थे जो इसी यूनिवर्सिटी में पढ़ चुके थे और नौकरी लगने के बाद यूनिवर्सिटी छूट जाने को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे थे और किसी न किसी बहाने शाम के किसी कोर्स में दाख़िला ले लेते थे कि यूनिवर्सिटी में आना जाना बदस्तूर जारी रह सके। माना जाता है कि जो एक बार पंजाब यूनिवर्सिटी में आ गया वो वापस अपने गाँव नहीं लौटा। किसी न किसी बहाने वो यूनिवर्सिटी में ही रहना चाहता है। रेगुलर कोर्स न सही ईवनिंग कोर्स में दाख़िला लेकर वो यहीं मन्डराएगा लेकिन वापस घर नहीं जाएगा। दूर-दराज़ के गाँवों से चन्डीगढ़ आए बच्चों की तो यूनिवर्सिटी और चन्डीगढ़ की चकाचौंध को देखते ही आँखें चुँधिया जाती हैं। यहाँ का माहौल, आज़ादी और ख़ूबसूरती चन्डीगढ़ को ऐसा पुरकशिश बना देती है कि जो एक बार चन्डीगढ़ आ गया चन्डीगढ़ का ही होकर रह गया। मेरे अलावा एक और रिटायर्ड डीजीपी साहब थे जो साठ के पार थे। बाक़ी सब बाईस-तेईस से लेकर तीस-बत्तीस तक के ही थे।

मैं चूँकि बचपन ही से उर्दू अल्फ़ाज़ और बोलचाल में उनके इस्तेमाल से बहुत मुत्तासिर रहा हूँ, उर्दू में शायरी भी करता हूँ सो मुझे उर्दू ज़बान बहुत अच्छी लगती है। जो चीज़ आपको अच्छी लगे ज़ाहिर है उसमें आपकी दिलचस्पी बढ़ेगी और आप चाहेंगे कि उससे आपकी वाक़िफ़ियत भी बढ़े, आप ज़्यादा वक़्त उसी के साथ गुज़ारें। उसके लिए ज़रूरी था कि मैं उर्दू ज़बान

उसके असली रूप में सीखूँ उसके रस्मूलखत से वाकिफ़ हो जाऊँ। सो जैसे ही मुझे चन्डीगढ़ आकर उर्दू सीखने का मौक़ा फ़राहम हुआ यूँ महसूस हुआ जैसे कोई ख़ज़ाना मिल गया हो। मुलाज़मत से सुबक़दोश होने के बाद ज़िन्दगी की जो रफ़्तार धीमी पड़ने लगी थी उसमें फिर से तेज़ी आने लगी। उर्दू पढ़ते सीखते बहुत खुश था मैं।

मेरी बीवी की सहेली का नाम बॉबी है। डॉक्टर है सो डॉक्टर बॉबी हुईं लेकिन डॉक्टर होते हुए भी डॉक्टरी का पेशा अख़्तियार नहीं किया बस अपने खाविन्द के अस्पताल में इन्तज़ामिया फ़रायज़ को अन्जाम देने में थोड़ी बहुत मदद करती है। इसी उर्दू शो'बे से कोई तीन साल पहले डिप्लोमा किया है। उस्तानी साहिबा की ख़ास चहेती तालिबा रही है और अब भी है। उर्दू शो'अबे में उसका काफ़ी आना जाना है। उम्र पचास के ज़रा सी ऊपर, बच्चों का सा गोल चेहरा, घुँघराले बाल, छोटी आँखें, लगभग चपटी, फैली हुई नाक, क्रद नाटा या यूँ समझिए सब मिलाकर पाँच फुट तक पहुँचने में ज़रा सी चूक गई, लेकिन फिर भी जैसे एक ही बालिशत में सारे ठाठ लिए हुए थी। न मोटी न पतली कहा जा सकता है उसे। तेज़-तर्रार, ख़ुदसर, ख़ुद अहमियत, अना-ओ-तकब्बुर से भरी और बेहद ख़ुद पसन्द। बातें करने लगे तो किसी दूसरे को मौक़ा ही न दे। वो अक्सर चलती क्लास में भी आकर बैठ जाती है और नये तलबा से वाकिफ़ियत करने में दिलचस्पी रखती है।

हमारी क्लास में कोई आठ दस लड़कियाँ और तक़रीबन बीस बाईस लड़के थे जो बदस्तूर क्लास में आते थे। कुछ और भी थे जो इक्का-दुक्का कभी कभार शक़ल दिखा जाते थे। त'आरुफ़ के बाद क्लास में सबसे अशूआर सुनाने को कहा गया, सबने अपने पसँदीदा अशूआर सुनाए और मेरे शो'र सुनाने के बाद मुझे कोई गीत भी सुनाने को कहा गया क्योंकि डॉक्टर बॉबी ने सबसे ये कह दिया कि मैं गाता भी बहुत अच्छा हूँ। क्लास ख़तम होने के बाद जब हम अपनी कार में वापस जा रहे थे तो देखा हमारी ही क्लास की एक लड़की

सड़क के किनारे मोड़ पर खड़ी थी। शायद पीछे आने वाली लड़कियों के इन्तज़ार में। जब हम उसके नज़दीक से गुज़र रहे थे तो वो लड़की मेरी जानिब देखकर मुस्कराई। जवाब में मैं भी मुस्कराया और फिर जैसे ही हरी बत्ती हुई गाड़ी आगे बढ़ते हुए हम लोग बातें करते हुए घर आ गए। डॉक्टर बॉबी ने बताया कि उस्तानी साहिबा को मेरा गाना बहुत पसन्द आया था।

घर आते ही मैं इधर-उधर के कामों में मसरूफ़ हो गया। रात का खाना खाकर कुछ वक़्त टीवी देखा और फिर रोज़ की तरह कोई किताब लेकर बैठ गया। मुझे पढ़ने की आदत सी है। आदत क्या जुनून है। मुझे कुछ न कुछ पढ़ना ही होता है। जब बचपन में हरूफ़ पहचानने लगा तो उनसे अल्फ़ाज़ बनाने की कोशिश करता। कहीं कुछ लिखा देखता तो उसे पढ़ने की कोशिश करता। रफ़्ता रफ़्ता पढ़ने में रफ़्तार भी पकड़ ली। अब क्या था! किसी दीवार पर कुछ लिखा देखता तो वहीं रुक जाता, कोई पोस्टर चिपका मिलता तो मैं भी तब तक उसके साथ चिपका रहता जब तक पूरा नहीं पढ़ लेता। कोई लफ़्ज़ समझ में न आता तो बड़ों से उसके मानी पूछता। गाँव में हलवाई की दुकान पर अख़बार आता था। स्कूल के बाद वहाँ पहुँच जाता। यहाँ तक कि गलियों में पड़े मूँगफली वगैरह के फेंके हुए खाली लिफ़ाफ़े उठाकर भी पढ़ डालता चाहे उनके एक तरफ़ गोबर ही क्यों न लगा हो। अल्लाह का लाख शुक्र है कि ये शौक़ कभी छूटा नहीं। मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि मेरे हाथ में कोई नॉवल है, शायरी, त'आरीख़, फ़लसफ़ा, साँईस, मज़हब या किसी और मज़मून पर किताब है। मुझे तो बस पढ़ना है। कभी दोस्तों में बैठे अगर किसी मज़मून पर बहस होने लगे तो मेरी राय सुनने के बाद मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि तुझे हर बात कैसे पता होती है, तो मैं कहता हूँ कि मैं तुम्हारी तरह सारा दिन ताश नहीं खेलता ना, इसलिए।

उस दिन भी पढ़ने बैठा तो कुछ ही देर बाद उस लड़की का वही मुस्कराता हुआ चेहरा मेरे ख़्याल से गुज़रा। उस पर क्लास में बैठे हुए शायद एक या दो

बार सरसरी सी नज़र पड़ी होगी। ग़ौर से नहीं देखा था उसे। मगर वो सड़क के किनारे खड़ा मुस्कराता हुआ चेहरा, पढ़ते पढ़ते तीन चार बार मेरी नज़रों के सामने से गुज़रा। अगले दिन क्लास में वो मेरे से अगली क्रतार में बैठी थी शायद इसलिए नज़र नहीं आई। क्लास के आखिर में फिर वही एक एक शे'र सुनाने का सिलसिला चला। तब देखा कि वो मुझसे दो क्रतारों आगे बैठी हुई थी। उसने कोई शे'र सुनाया मगर उसका चेहरा मैं ठीक से देख नहीं पाया। क्लास खत्म होने पर सभी बाहर आए तो देखा वो उस्तानी साहिबा से बात कर रही थी। पहले सोचा रुक कर उससे उसका नाम वगैरह पूछता हूँ, फिर सोचा ऐसा करना शायद ठीक नहीं रहेगा। इसलिए मैं एक तरफ़ से निकलकर अपनी गाड़ी तक पहुँचा और सीधा घर। मेरी एक आदत ये भी है कि मैं कभी तहज़ीब और तमीज़ के दायरे से बाहर नहीं जाता। कभी ज़बरदस्ती किसी से बात करने या वाक्किफ़ियत करने की कोशिश नहीं करता। कोई बुला ले या कुछ पूछे तो मैं पुर-तहज़ीब तरीक़े से उससे बात भी करता हूँ और जो पूछा गया हो उसका जवाब भी देता हूँ। दूसरी ये कि मैं दफ़्तर से फ़ारिग होने के बाद सीधा घर का रुख़ करता हूँ। हमेशा घर से सीधा दफ़्तर और दफ़्तर से सीधा घर। मुझे शराब, सिगरेट, किमारबाज़ी की दावतें कभी रोक नहीं पाईं। अगर किसी ने किसी खास मौक़े पर मदद किया हो तो दफ़्तर से घर जाकर, नहा धोकर, तरो-ताज़ा होने के बाद ही वहाँ जाता हूँ। वैसे भी दफ़्तर से थका हुआ वजूद और ज़ेहन लेकर पार्टी में जाकर थकी हुई शक्ल दिखाने और थकी थकी सी बातें करने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं।

क्लास में अगले दस बारह दिन तक न तो मेरी उस लड़की से कभी बात हो सकी और न ही कभी ग़ौर से देख पाया। क्लास के आखिर में उस्तानी साहिबा जो सबसे शे'र सुनाने को कहतीं उससे धीरे-धीरे क्लासमेट्स मेरी तरफ़ मुतवज्जह होने लगे थे। इसकी दो वजूहात थीं। एक तो ये कि बाक़ी लोग किसी मक़बूल शायर का कोई शे'र रट कर लाते और ग़ौर-शायराना तरीक़े से सुनाते

जबकि मैं अपने लिखे अश्आर और कभी कभी मुकम्मल ग़ज़ल या नज़्म सुना दिया करता था। दूसरी ये कि अश्आर सुनाने का मेरा अन्दाज़ तक्ररीबन पेशेवर शायरों जैसा था। गा भी ठीक ठाक ही लेता हूँ सो क्लास में मक्कबूल होने में ज़्यादा देर नहीं लगी। एक और बात भी थी जो शायद उनको पसन्द आई हो वो ये कि उम्र में उनसे तक्ररीबन दोगुना बड़ा होने और बड़े औहदे से रिटायर होने के बावजूद भी मैं उन्हीं की उम्र का होकर उनसे मुखातिब होता था। कहते हैं कि बड़ा आदमी होने की सबसे बड़ी निशानी ये है कि आपकी मौजूदगी में आपके जूनियर खुद को छोटा न समझें। अल्लाह ने एक और ने'अमत से नवाज़ा है मुझे और वो ये कि मैं अपनी असली उम्र से काफ़ी छोटा लगता हूँ। जब तक मैंने ये नहीं बताया कि मैं रिटायर हो चुका हूँ तब तक सब मुझे चवालीस-पैंतालीस साल का ही समझते रहे। इसका राज़ शायद फ़ौज में लगाए दस साल और अभी भी हर रोज़ वरजिश करना हो लेकिन मैं उनका तक्ररीबन हम-उम्र दोस्त बन चुका था।

उस्तानी साहिबा डॉक्टर ज़रीन फ़ातिमा हैं। ये भी नाटे क़द की हैं, साँवली हैं और अपनी मर्ज़ी से ही ग़ैर शादीशुदा भी। उम्र तक्ररीबन बावन त्रेपन बरस। बहुत खुशमिज़ाज और ज़िन्दगी से भरपूर। ज़हीन, मुहज़ज़ब और मिलनसार। ईद के रोज़ कई बच्चे उनके यहाँ पहुँच जाते हैं, क्योंकि उनके यहाँ उस दिन तमाम तरह के ज़ायकेदार पकवान खाने को मिलते हैं। एक अच्छी उस्तानी होने के साथ वो एक अच्छी कुक भी हैं और बेमिसाल मेहमान नवाज़ भी। नये कोर्स में आए बच्चों की उर्दू में दिलचस्पी बढ़ाने के लिए और सीखना आसान बनाने के लिए क्लास में हर एक को कोई शे'र या ग़ज़ल, गीत गाने को कहतीं। इससे एक तो क्लास का माहौल खुशनुमा हो जाता, दूसरा शे'रो-ग़ज़ल कहने, गाने से शे'र ख़्वानी के हुनर में इज़ाफ़े के साथ तलफ़्फ़ुज़ बेहतर करने में सहूलत तो होती ही उर्दू अदब में दिलचस्पी भी बढ़ती। सभी तलबा के साथ उनके त'अल्लुक उस्तानी के साथ ही एक बहन जैसे होते, जैसे कोई अपने ही

खानदान का शाख्स हो। उनके इस खय्ये से मुत्तासिर सभी तलबा उनकी बहुत इज्जत भी करते और कभी कभार क्लास में ही चाय समोसा पार्टी करने की आजादी भी ले लिया करते, खास कर तब जब किसी का यौमे-विलादत हो।

एक दिन मैंने क्लास के आखिर में उस्तानी साहिबा के हुक्म की तामील में अपनी एक छोटी सी नज़्म सुनाई जो बहुत सराही गई। क्लास छूटने पर मैं अभी दरवाजे से बाहर निकल ही रहा था कि किसी ने पीछे से आवाज़ दी। “एक्सक्यूज मी सर”। पीछे मुड़ कर देखा तो वही लड़की मुझसे मुखातिब थी। “सर ये नज़्म आपने लिखी है? बहुत अच्छी थी” मैंने कहा, “हाँ मैंने ही लिखी है”। “सर आप बहुत अच्छा लिखते हो”। मैंने उसे शुक्रिया कहा और उससे उसका नाम पूछा। उसने कहा, “सर मेरा नाम निवेदिता है”। यकीन मानिए, बचपन में स्वामी विवेकानन्द की कुरबत में रहने वाली सिस्टर निवेदिता नाम की औरत के अलावा पिछले पचास सालों में मैंने ये नाम न कभी सुना और न ही इस नाम की किसी लड़की से मिला ही था। लेकिन आज निवेदिता नाम की लड़की मेरे सामने खड़ी थी और मुझसे मुखातिब भी थी। मुझे ये नाम नया भी लगा और अच्छा भी। निवेदिता का बात करने का तौर तरीका बहुत मुहज्ज़ब और मुअद्ब था। वो मुझे अच्छी भी लगी और प्यारी भी।

इसके बाद क्लास में मिलने पर अक्सर दुआ सलाम होने लगी। एकाध बार निवेदिता और दूसरे बच्चों के इसरार पर क्लास छूटने के बाद उनके साथ स्टूडेंट सेंटर पर चाय पीने भी गया। कुछ दिनों में और कुछ लड़कों लड़कियों के नाम पता लगते गए। आपस में बातें होने लगीं। हँसी मजाक भी चलने लगा, यानि अब सब लोग धीरे धीरे बेतकल्लुफ़ होकर आपस में हिल मिल गए थे।

ऐसे ही एक बार हम सब आनन्दपुर साहब में विरासते-खालसा देखने गए, गुरुद्वारा केशगढ़ साहब में मत्था टेका, फिर भाखड़ा डैम देखने के बाद एक और गुरुद्वारे विभोर साहब के दीदार के बाद वापस आए। सबने जाते और

आते वक़्त बस में ख़ूब गाने गाए और मौज मस्ती की। इस ट्रिप में मेरी बीवी, मेरा बेटा और डॉक्टर बॉबी भी हमारे साथ थे। सब बहुत अच्छा चल रहा था। क्लास में पढ़ने के साथ साथ मौज मस्ती भी ज़ोरों पर थी। बड़ा खुशनुमा माहौल था। किसी बच्चे का यौमे-विलादत होता तो चाय, समोसा, मिठाई के अलावा गानों और लतीफ़ों की महफ़िल भी जमती। उस्तानी साहिबा ने हमारा एक वॉट्सएप ग्रुप भी बना दिया था ताकि अगर कोई मैसेज देना पड़े तो इस के ज़रिए सब तक पहुँच जाए। ये प्लैटफ़ार्म भी हमारे त'अल्लुक्रात मज़बूत करने में काफ़ी कारगर रहा। फिर वो हुआ जिसका किसी ने तसव्वुर में भी नहीं सोचा था। हमारी खुशी शायद कुछ लोगों को बर्दाश्त नहीं हुई और उनकी बद-दुआओं के सबब कोरोना जैसी ख़तरनाक वबा ने दस्तक दे दी। दस्तक क्या दे दी, ज़बरदस्ती अन्दर तक घुस आई। नतीजतन सभी स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटीज़ और दीगर अवामी मक्रामात बन्द हो गए। हुक़म हुआ कि कल से कोई क्लास में नहीं आएगा। सब कुछ बन्द हो गया। दुकानें, बाज़ार सब। खुले रह गए तो दवा की दुकानें और अस्पताल। वज़ीरे-आज़म साहिब का हुक़म था जो हस्बे-मामूल रात के आठ बजे सादिर हुआ। राशन की दुकानों पर वो आपा-धापी मची कि बस कुछ न पूछिए। लोगों ने रातों-रात अगले तीन चार महीनों का राशन भर लिया। दुकानों, बाज़ारों, सुपरमार्केटों तक से राशन चुक गया। अगले दिन से हर तरफ़ क़ब्रिस्तान की सी ख़ामोशी। कोई आदमी दिखाई नहीं देता था बाहर। पुलिस की सख़्त पाबन्दी में सिर्फ़ आवारा कुत्ते ही उन्हें चैलेंज कर रहे थे कि हिम्मत है तो हमारा चालान काटकर दिखाओ। एक दो दिन सुनसान देखने के बाद कुत्ते भी हैरान होकर कहने लगे कि भाई चालान बेशक़ हमारा ही काट लेना लेकिन किसी आदमी की शक़ल तो दिखाओ। वही कुत्ते जो भीड़ से नहीं डरते थे अब सुनसान से डरने लगे थे। चन्डीगढ़ जैसे शहर में जहाँ देर रात तक भी रौनक़ रहती थी वहाँ आसपास के जंगलों से जंगली

जानवर भी इन्सान का हाल पूछने शहर तक आ गए कि “भई, खैरियत तो है, कई दिन हो गए, दिखाई नहीं दिए”।

अजीब सा माहौल था। जो लोग राशन नहीं ले पाए थे उनकी बीबीओं को तो जैसे खुदा की तरफ से ही अपने खाविन्दों को सुनाने का मौका मिल गया था कि, “तुम तो हो ही लेट लतीफ़, जब सारी दुनिया को पता चल गया कि कल से दुकानें नहीं खुलेंगी तो एक तुम्हें ही क्यों पता नहीं चला। अब क्या वज़ीरे-आज़म अलग से तुम्हारे कान में कह के जाते”।

खैर, इस कोरोना की वजह से तमाम तरह की पाबन्दियाँ लगने से हमारी क्लास अब ऑनलाइन लगने लगी लेकिन कई जगहों पर सिग्नल कमज़ोर होने की वजह से क्लास में खलल पड़ता। अब वो मज़ा नहीं रह गया था। हाँ इतना ज़रूर हुआ कि हमें ऑनलाइन पढ़ने के लिए कई नई चीज़ें सीखनी पड़ीं और हमारे फ़ोन को लेकर हमारे तकनीकी इल्म में काफ़ी इज़ाफ़ा हुआ।

इम्तहान भी ऑनलाइन हुए। अगले साल डिप्लोमा कोर्स भी पूरा ऑनलाइन ही पढ़ा। इस दौरान हम लोग वॉट्सएप पर आपस में जुड़े रहे। क्योंकि कोरोना के खलल से हमारी पढ़ाई में काफ़ी दिक्कतें आने से हम कोर्स भी मुकम्मल नहीं कर पाए थे इसलिए हमने इधर उधर से जो भी मिला वो आपस में साझा किया। इस काम में निवेदिता ने काफ़ी त'आव्वुन किया। निवेदिता एक बड़ी ही नेक लड़की है। सबके साथ त'आव्वुन करती है। हर किसी की मदद के लिए आगे आती है। बहुत खुश मिज़ाज और मिलनसार। खूबसूरत है और खूबसूरत बातें करती है। ज़हीन है और अँग्रेज़ी अदब की तालिबा होने की वजह से शे'रो-अदब की बारीकियों से भी वाकिफ़ है। उसकी शक्लो-सूरत के अलावा उसका बात करने का तरीक़ा, हर काम में सलीक़ा, दूसरों से बर्ताव, सादगी, ईमानदारी सब मिलाकर उसको और भी खूबसूरत बना देते हैं। उसमें एक अच्छी लड़की, एक अच्छी बेटी और एक अच्छी दोस्त

होने की सभी खूबियाँ मौजूद हैं। वो क्लास में सबको अच्छी लगती है क्योंकि वो है ही बहुत अच्छी। अन्दर से भी बाहर से भी। मुहज्जब और सलीकाशिआ। हमारी उस्तानी साहिबा भी उसे बहुत पसन्द करती हैं और पढ़ाते वक़्त किसी ख़ूबसूरत शख्स या माहताब का ज़िक्र करते हुए अक्सर कहतीं, "जैसे कि हमारी निवेदिता।" अब जब वो सबको अच्छी लगती है तो क्या मुझे अच्छी नहीं लगनी चाहिए? यक़ीनन मुझे भी ये लड़की बहुत अच्छी लगती है। अच्छी क्या लगती है ऐसा लगता है जैसे कोई अपना ही हो।

वॉट्सएप पर बहुत से लोग अश्आर साझा करते और दूसरे उन्हें दाद भी देते। कभी कभी तो मोहमल अश्आर पर भी दाद मिलती। ऐसे अश्आर भी जो बहुत ग़ैर-मैयारी होते और वॉट्सएप पर ग़ालिब या गुलज़ार के नाम से फ़ारवर्ड किए जा रहे होते। इस दौरान मैंने महसूस किया कि मेरे अश्आर पर दाद मिलना कम हो गई है और कई बार तो बहुत अच्छे मैयारी शेर पर भी कोई कुछ नहीं बोलता। मुझे इस बात का एहसास तो था कि ज़्यादातर बच्चे उन्हीं अश्आर को पसन्द करते थे जो बहुत मक़बूल हो चुके थे, चाहे वो इतने अच्छे न हों। मेरे अश्आर चूँकि नये थे और पहले नहीं सुने गए थे शायद इस वजह से वो उनमें मक़बूल नहीं हो पाए। जो चार छः लोग मेरे अश्आर पर दाद देते थे उनके अलावा बाक़ी लोगों का ख़य्या मुझे अजीब सा लगा।

एक दिन मैंने ये बात ग्रुप में लिखी कि "भई, मैंने नोटिस किया है कि आप लोग और लोगों के अश्आर पर तो बहुत दाद देते हो मगर मेरे अश्आर पर नहीं। मुझे लगने लगा है कि मैं शायद इतना अच्छा नहीं लिखता कि आप लोगों को पसन्द आए। मैं कोई उस्ताद शायर नहीं हूँ। अभी सीख ही रहा हूँ। आप लोगों की दाद से हौसला-अफ़ज़ाई होती है। लेकिन मुझे सिर्फ़ दाद नहीं चाहिए। जहाँ कहीं किसी शेर में ख़ामी नज़र आए आप मुझे बताएँ ताकि मैं उसे और अच्छा बना सकूँ। झूठी दाद पाना मुझे क़तई पसन्द नहीं। आप लोग मेरी ख़ामियाँ बता कर मेरा फ़ायदा ही करेंगे, नुक्सान नहीं। अगर आप ये बातें

ग्रुप में न लिखना चाहें तो मेरे नम्बर पर अलग से लिख भेजें। मुझे खुशी होगी”। इसके जवाब में तक्ररीबन सभी ने लिखा कि, "हम आपकी शायरी को बहुत पसन्द करते हैं। आप बहुत अच्छा लिखते हैं लेकिन क्योंकि इम्तहान नज़दीक आ गए हैं सो उनकी तैयारी में मसरूफ़ होने की वजह से कमेंट नहीं कर पात”। कुछेक ने ये भी लिखा कि वो कोशिश करेंगे कि मेरे अश्आर पर कमेन्ट करें। इनमें निवेदिता भी थी जिसने कहा था कि उसे मेरी शायरी अच्छी लगती है और वो अब से उस पर तनक़ीद भी किया करेगी। सो मैंने उससे कहा कि अगर उसे मेरी शायरी अच्छी लगती है तो मैं अलग से हर रोज़ उसे कुछ न कुछ भेजा करूँगा जिस पर तनक़ीद से मुझे भी फ़ायदा होगा। उसने जवाब दिया कि ये तो बहुत अच्छा होगा कि उसे हर रोज़ नई और अच्छी शायरी पढ़ने को मिलेगी। पिछले इम्तहान के वक़्त कोरोना की मदाख़लत की वजह से हमारी पढ़ाई मुकम्मल न हो सकी थी सो हम लोग जहाँ से भी जो भी कुछ मिल रहा था एक दूसरे को फ़राहम कर रहे थे। उन्हीं दिनों मैंने और निवेदिता ने कुछ स्टडी मैटीरियल अपने निजी नम्बरों के ज़रिए साझा किया था इसलिए ग्रुप के अलावा हम अलग से भी बाहम त'अल्लुक़ में थे। सो मैं ग्रुप में अश्आर लिखने के अलावा उसके नम्बर पर अलग से भी अपनी कुछ पुरानी लिखी शायरी और कुछ बिल्कुल ताज़ा-तरीन शायरी भेजने लगा। ये एहतियात भी रखी कि एक या दो से ज़्यादा अश्आर, ग़ज़ल या नज़्म उसे एक ही दिन न भेजूँ।

उसकी तरफ़ से तनक़ीद की शक़ल में भी ख़ूब दाद मिलती। ये सिलसिला यूँ ही कुछ रोज़ चलता रहा। अब न जाने उम्र का तक्राज़ा है या ज़ेहन पर जिम्मेदारियों का बोझ कि मैं रात को चाहे दस बजे सोऊँ या बारह साढ़े बारह बजे, मेरी नींद रात को दो ढाई बजे खुलनी ही खुलनी है। इस वक़्त जाग जाने पर आप न तो सैर करने जा सकते हैं, न वरजिश कर सकते हैं, न बीवी और बच्चे की नींद में ख़लल डालने के डर से उठ कर कमरे से बाहर जा सकते हैं।

लाइट भी इसी वजह से आप ऑन नहीं कर सकते। अब दो मुतबादल बचते हैं। या तो आप दो तीन घंटे करवटें बदलें या फिर कुछ पढ़ लिख लें। पहले मैंने चीन में बनी एक छोटी सी क्लिप वाली रीडिंग लाइट खरीद रखी थी और अगर रात को पढ़ना होता तो उसे किताब में क्लिप की मदद से ऐसे लगा देता कि उसकी रौशनी किताब के उस सफ़हे पर पड़ती रहे जिसे मैं पढ़ रहा होता। उस ज़माने में वो चीज़ भी किसी अजूबे से कम नहीं थी। फिर स्मार्टफ़ोन का ज़माना आया जिसने सब कुछ बदल डाला। अगर आपके पास स्मार्टफ़ोन है तो दीगर बहुत सी चीज़ें खरीदने की भी ज़रूरत नहीं। मसलन घड़ी, पेन, कापी, किताब, काग़ज़, नोटपैड, कैलन्डर, कैलकुलेटर, प्लैनर, अलार्म, अप्वाइंटमेंट शेड्यूलर, रिमाइंडर, रीडिंग लाइट वगैरह सब इसी में है। सो, फ़ोन खोलें और कुछ पढ़ना है तो पढ़ें, कुछ लिखना है तो फ़ोन का नोट्स वाला ऐप्प खोलें और टाईप करना शुरू कर दें। इससे भी मज़ेदार सहूलत ये कि जो आप लिख रहे हैं वो साथ ही साथ सेव होता जा रहा है। उसे आप एम एस वर्ड में डाल लें तो आपकी ड्राइव पर वो हमेशा के लिए सेव हो जाता है। आप कहीं भी बैठकर किसी भी डिवाइस पर उसे खोल सकते हैं, पढ़ सकते हैं या उसमें तरमीम कर सकते हैं।

आपने अक्सर बहुत से अज़ीम शो'अरा के बारे सुना होगा कि वो रात को ही ज़्यादा लिखते थे। किसी भी ज़बान के अदब में जो भी बहुत अच्छा और मैयारी लिखा गया है वो रात के दो-ढाई, तीन बजे ही लिखा गया है। इसके पीछे क्या राज़ है ये औरों के बारे तो मैं ज़्यादा नहीं कह सकता लेकिन अपने बारे में ये कह सकता हूँ कि रात के तीसरे पहर का सकूत, नींद का कुछ हिस्सा पूरा होने पर मिलने वाला ज़ेहनी सुकून, ख़्यालातो-तसव्वुरात की बुलन्दी को हासिल करने के लिए सबसे ज़्यादा मुफ़ीद होता है। आधी से ज़्यादा रात गुज़र जाने पर ख़ुदा से बनी दूरी और एकाध घंटे बाद शुरू होने वाले चौथे पहर के साथ ही ख़ुदा से होने वाली क़ुरबत का मिला जुला माहौल ही आपके

जेहन में बुलन्द ख्यालात पैदा करता है। अगर आप उस वक़्त उठ कर इन ख्यालात को लिख लें तो अदब हो जाता है और अगर करवटें बदलते रहें तो ये ख्यालात बेशक़ अगले दिन आपको थोड़ा बहुत याद रह जाएँ लेकिन न तो इनमें वो शिद्दे-एहसास बाक़ी रहता है न अल्फ़ाज़ की वो तरतीब ही क़ायम रहती है। यही वजह है कि आमद के वक़्त लिखा हुआ एहसास अदब हो जाता है और आमद के वक़्त के बाद लिखा एहसास सिवाय जोड़ तोड़ के और कुछ नहीं होता। खुदा का लाख शुक्र है कि उसने मुझे दुनिया के उन खास मुसन्निफ़ीन की फ़ेहरिस्त में रखा जो रात को ढाई तीन बजे उठकर अदब तख़लीक़ करते हैं। यह वही अमृत-वेला है जिस वक़्त उठकर अल्लाह का नाम लेने के लिए सभी मज़ाहिब में कहा गया है। यही वो वक़्त है जब इन्सान अल्लाह के बहुत नज़दीक़ होता है। इस वक़्त दिल में नेक ख्यालात भेजता है परवरदिगार, ताकि अगली सुबह आप नेक कामों से शुरू कर सकें। जो इस वक़्त ख़रिटे ले रहे होते हैं उनके हिस्से में न तो नेक ख्यालात आते हैं न नेक काम। ये दीगर बात है कि जिन अज़ीम शो'अरा की तारीफ़ में मैंने अभी अभी क़सीदे पढ़े हैं उनमें से ज़्यादातर वो थे जो वफ़ूरे-शिद्दे-एहसास की हरारत को बर्दाश्त नहीं कर पाते थे और इस हरारत को बर्दाश्त करने के लिए बेशुमार सिगरेट और शराब का सहारा लेते थे। मेरा मानना है कि मुसन्निफ़ीन का ज़ेहन तख़लीक़ के अमल से गुज़रते वक़्त बेहद पेचीदा और मुख़्तलिफ़ मौज़ुआत की तज़ादात और बहुत ऊँचे दर्जे की तवानाई के ऐसे एहसासात की गुत्थियाँ सुलझा रहा होता है जो उनके ज़ेहन में पूरी कुव्वत से आपस में गुत्थमगुत्था हो रहे होते हैं। यह बुनियादी तौर पर एक मेकेनिकल अमल होता है जिसमें दिमाग़ के बर्क़ी लहरों के शामिल होने के साथ साथ हमारे ज़ेहन से निकलने वाले तमाम कीमीआई रसों जिनसे कि ख़ौफ़, गुस्सा, हैरत, ग़म, खुशी, प्यार और दिलेरी, वगैरह के एहसासात पैदा होते हैं, के मिलने से मुकम्मल होता है और जैसा कि हर मेकेनिकल, बर्क़ी या कीमीआई अमल के रदे-अमल के रूप में

हरारत पैदा होती है ठीक वैसे ही तखलीक्री अमल के वक़्त भी मुसन्निफ़ीन के ज़ेहन में ये हरारत पैदा होती है जिसे ठन्डा करने के लिए उसमें पानी, शराब और सिगरेट का इस्तेमाल जायज़ माना गया है। सिगरेट और शराब दोनों ही ऐसे नशे माने गए हैं जो हमारे ऐसाबी निज़ाम में होने वाली सरगर्मियों की रफ़्तार को थोड़ा धीमा कर देते हैं और जिनसे मुसन्निफ़ की ज़ेहनी तबज्जह ज़ेरे-ग़ौर मजमून पर मरकूज़ करने में मदद मिलती है। इसलिए तखलीक्री मुसन्निफ़ीन के लिए सिगरेट या शराब के नशे को हालांकि ग़लत नहीं समझा गया है लेकिन इस की आड़ में बहुत सारे मुसन्निफ़ीन ने सारी हदें पार करते हुए तखलीक़ के नाम पर रात रात भर ज़मकर सिगरेट और शराब पी तो वो ज़्यादा देर ज़िन्दा नहीं रहे। अगर कम पीते, हद में रह कर और तरीक़े से पीते तो शायद हमें और ज़्यादा मैयारी तखलीक़ात से नवाज़ सकते। खुदा का लाख शुक्र है कि बन्दे में ऐसा कोई ऐब नहीं।

सो मैं रात को नींद खुल जाने पर या तो अपने स्मार्टफ़ोन पर कुछ पढ़ लेता हूँ या आमद हो जाए तो लिख लेता हूँ। अब जो लोग मुसन्निफ़ीन हैं वो मेरी इस बात को ज़रूर समझेंगे कि जब आप कोई फ़नपारा तखलीक़ करते हैं तो आपके दिमाग़ में ये ख़याल बड़ी शिद्दत के साथ पैदा होता है कि इसे किसी के साथ उसी वक़्त साझा किया जाए। इस बात की सबसे बड़ी मिसाल आर्किमिडीज़ नाम का साँईसदान है जो नहाते वक़्त अपने एक तज़ुर्बे का नतीजा मिलते ही नंगे बदन सारे शहर का चक्कर “यूरेका, यूरेका” कहते हुए लगा आया था। ये कुछ ऐसा ही है जैसे घर में बच्चा पैदा होते ही हम उसकी ख़बर जल्द-अज़-जल्द अपने जानने वालों को देना चाहते हैं। जब आप कोई चीज़ ईजाद करते हैं या कोई फ़नपारा तखलीक़ करने के अमल से गुज़र रहे होते हैं तो वो बिल्कुल वैसा ही है जैसे एक हामिला बड़े एहतियात के साथ अपने बच्चे को कोख में रखकर सँभालती है। वो कुछ भी कर रही हो उसकी तमाम तबज्जह उसी बच्चे पर मरकूज़ रहती है। जब बच्चा पैदा हो जाता है तो वो

अपनी इस खुशी को सबके साथ उसी वक़्त साझा करना चाहती है। ठीक वैसे ही एक मुसन्निफ़ के ज़ेहन में जो ख़्याल पल रहा होता है और जिसके बनाव सिंगार का अमल उसके ज़ेहन में कई दिनों से चल रहा होता है जब वो अपनी आख़िरी मुकम्मल शक़ल में तख़लीक़ होकर सामने आता है तो आपकी शदीद ख़्वाहिश होती है कि जितनी जल्दी हो सके ये अपने जानने वाले किसी नज़दीकी शाख़्स के साथ साझा किया जाए। ऐसा करने से मिलने वाली खुशी कई बार तख़लीक़ की खुशी से भी बड़ी होती है और अगर दूसरी तरफ़ से दाद भी मिल जाए तो उस खुशी को तो ब्यान ही नहीं किया जा सकता। ऐसा शाख़्स जो रात को तीन चार बजे मेरी ग़ज़ल या नज़्म पढ़ सकता था वो सिर्फ़ निवेदिता ही थी जो उस वक़्त अपने किसी इम्तहान के मुत्तालिफ़ मज़मून पर “मिड नाईट ऑइल बर्न” कर रही होती। मुझे कई दफ़ा हैरानी भी होती कि ये लड़की इस वक़्त तक क्यों जाग रही है। मैंने उसे वॉट्सएप पर पूछा भी कि वो अभी तक क्यों जाग रही है और सलाह भी दी कि उसे अब सो जाना चाहिए तो उसने बताया कि वो पढ़ रही थी और बस सोने ही वाली है। ज़ाहिर है मैं उस वक़्त अपनी खुशी उसी से साझा कर सकता था सो उन दिनों तक़रीबन चार-पाँच बार ऐसा हुआ कि मैंने जैसे ही तीन या चार बजे कुछ लिखा उसी वक़्त निवेदिता के साथ साझा किया। वो कभी तो उसे उसी वक़्त पढ़ लेती और कभी अगले दिन। ये जानकर कि उसने मेरा लिखा पढ़ लिया है खुशी होती और अगर उस पर दाद भी मिल जाती तो खुशी दोगुनी हो जाती।

उसके साथ एक बड़ा ही दिलचस्प सिलसिला चल निकला था और शायद एक बहुत ही ख़ूबसूरत सा, बेनाम सा रिश्ता भी। उसके लिए मेरे दिल में एक ख़ास सी जगह बनती जा रही थी। ऐसा लगता था वो मेरी कोई अपनी है। उससे मैं कभी भी कुछ भी साझा कर सकता हूँ, डिस्कस कर सकता हूँ। एक अजीब सा रिश्ता बन गया था उसके साथ। कभी कभी तो यूँ भी लगता कि वो मेरी ही बेटी है। न मैंने कभी उससे ऐसा कुछ कहा न कभी उसने मुझसे, लेकिन

कुछ ऐसा था जो हमें आपस में बाँधे हुए था, बाँध रहा था। मुझे इस बात का भी एहसास था कि वो मुझे वालिद की मानिन्द ही मानती थी और मेरी बड़ी इज़्जत करती थी। उससे बात करके या मैसेज साझा करके एक रूहानी क्रिनात का सा एहसास होता था। बहुत मर्तबा यूँ भी होता था कि मेरी भेजी हुई शायरी अगर उसने नहीं पढ़ी या पढ़ने के बाद उसका कोई कमेंट नहीं आया तो दिल पर इक अजीब सी कैफ़ियत गुज़रती।

एक दिन मैं कोई शे'र तख़लीक़ करने के अमल में मसरूफ़ था। अल्फ़ाज़ तरीबी से बैठ नहीं रहे थे। सोचते सोचते अचानक निवेदिता का चेहरा मेरी आँखों के सामने दिखाई पड़ा और काफ़ी देर तक लगातार मेरे सामने रहा। अमूमन यूँ होता है कि आप किसी ख़याल में हैं, कुछ सोच रहे हैं और अचानक आपके ख़याल में आपके सामने किसी शख्स का चेहरा आ जाता है लेकिन वो चेहरा ज़्यादा देर तक टिकता नहीं। पल भर में उसकी जगह कुछ और आ जाता है या आप जो सोच रहे थे उसका मौजूद ही बदल जाता है। लेकिन यूँ देर तक निवेदिता का चेहरा मेरे सामने रहना अपने आप में हैरान करने वाला वाक़या था। मैं सोच रहा था और लिख रहा था। तक़रीबन चार पाँच मिनट में मेरे सामने पाँच अश'र की एक मुकम्मल ग़ज़ल पड़ी थी। ग़ज़ल भी ऐसी कि उसमें कोई तरमीम करने की ज़रूरत ही नहीं थी। अक्सर ग़ज़ल कहने के वक़्त दिमाग़ बुलन्द ख़यालात पैदा करने की क़वायद के साथ साथ उन ख़यालात के साथ इन्साफ़ करने की गरज से उन ख़यालात के मुख़्तलिफ़ पहलुओं, मरहलों, ज़ावियों और सतहों के मुताबिक़ मफ़हूमो-मा'नी के हिसाब से मौजूद और दिलक़श अल्फ़ाज़ की तलाश में होता है ताकि ग़ज़ल पढ़ने सुनने वाले भी लुत्फ़-अन्दोज़ हों और अच्छा अदब भी तख़लीक़ हो सके। इसमें काफ़ी ज़ेहनी वरजिश करनी पड़ती है और वक़्त भी लगता है लेकिन उस दिन चुटकियों में एक उम्दा ग़ज़ल कह पाना त'अज्जुब की बात थी। कुछ दिनों बाद ऐसा ही एक और वाक़या पेश आया। मैं कई दिनों से इक नज़्म लिखने की कोशिश

कर रहा था लेकिन तीन चार सतरें ही लिखकर बैठा था। आगे क्या लिखूँ और इसे अन्जाम तक कैसे लेकर जाऊँ सूझ नहीं रहा था। तक्ररीबन पाँच महीने हो चले थे लेकिन नज़्म आगे नहीं बढ़ रही थी। फिर इक रोज़ क्या हुआ कि मैं वो तीन चार सतरें पढ़ रहा था, सोच रहा था, लेकिन बात न बनते देख उसे छोड़कर दोपहर का खाना खाने लगा। खाना खाया, लस्सी पी, थोड़ा गुड़ खाया और बिस्तर पर जा लेटा। पिछली रात कम सोया था, उस पर लस्सी की खुमारी। ऐसी गहरी नींद सोया कि कुछ होश नहीं रहा। शायद एक घंटा सोया होऊँगा कि इक ख्वाब से हड़बड़ा कर उठता हूँ। अजीब ख्वाब था। मैं वही सतरें पढ़ रहा हूँ और पेंसिल को उँगलियों के बीच घुमा रहा हूँ कि निवेदिता वही मुस्कराता हुआ चेहरा लिए मेरे सामने आ बैठती है और पूछती है कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैं उसे बताता हूँ कि मैं इक नज़्म लिखने की कोशिश कर रहा हूँ लेकिन बात नहीं बन रही। वो मुझसे फिर से कोशिश करने को कहती है। मैं ख्वाब में ही वो सारी नज़्म लिखता हूँ, उसे सुनाता हूँ, वो बहुत खुश होती है और फिर गायब हो जाती है। हड़बड़ा कर उठता हूँ, यक़ीन नहीं होता कि वो ख्वाब था या हकीक़त। जल्दी जल्दी उस नज़्म को काग़ज़ पर उतारने की कोशिश करता हूँ। ख्वाब में जो ख्याल और अल्फ़ाज़ चुने थे, उनकी जो तरतीब बन पड़ी थी, डरता हूँ कहीं ज़ेहन से निकल न जाए। दस मिनट में मेरी ज़िन्दगी की बेहतरीन नज़्म मेरे सामने थी। दो तीन बार पढ़ी। नज़्म को जिस ख्याल पर मैं ख़त्म करना चाहता था ये वहाँ न होकर इक दूसरे ही बेहतर ख्याल पर ख़त्म हुई मगर इसमें तरमीम की गुंजाइश नहीं थी। इस तजुर्बे ने मुझे अन्दर तक हिला दिया था। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैंने ख्वाब देखा था या ये हकीक़त थी। क्या निवेदिता सचमुच आई थी या ख्वाब में थी। वो सामने बैठी थी और मैं लिख रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वो खुद ढूँढ़ ढूँढ़ कर मुझे मौज़ू अल्फ़ाज़ दे रही हो। क्या बेहतर नज़्म बन पड़ी थी। ये नज़्म मैंने निवेदिता को भेजी और उसने पढ़कर कहा कि “ये वाक़ई एक उम्दा नज़्म है। पूरी नज़्म में

जो सोच का बहाव है वो बड़े ही हमवार तरीके से अंजाम को पहुँचता है। अलफ़ाज़ का इन्ताखाब भी कमाल का है”। आप तसव्वुर नहीं कर सकते मुझे उसके कमेंट पढ़ कर कितनी खुशी हुई होगी। लेकिन यहाँ एक बात मैंने छुपा ली। उसकी मेरे ख़्वाब में आकर ये नज़्म लिखने के लिए इल्हाम और हौसला अफ़जाई करने की बात। अब कुछ तख़लीक़ करने के लिए मैं तन्हा नहीं होता था। जब भी कुछ लिखता सबसे पहले निवेदिता को सामने बिठाता। अब ये तय नहीं कि कुछ लिखने से पहले मैं उसे सामने बिठाता था या वो खुद ही मेरे ख़्यालों में आ बैठती थी लेकिन ये तय था कि अब जो कुछ भी तख़लीक़ हो रहा था उसकी मौजूदगी में हो रहा था। ऐसा ही कुछ एकाध बार फिर ख़्वाब में हुआ। मेरी ग़ज़लों और नज़्मों का मयार भी पहले से बुलन्द होने लगा था। ये भी हो सकता है कि उर्दू ज़बान सीखते सीखते मेरा लफ़्ज़ियात का ज़खीरा बढ़ गया हो, दूसरे शो’अरा को पढ़ कर मेरी तकनीक बेहतर हो गई हो या मेरी सोच में बुलन्द ख़्याली आ गई हो लेकिन इसमें निवेदिता के शामिल होने के असर को नज़र-अन्दाज़ नहीं किया जा सकता था। फिर तो यूँ होने लगा कि दिन हो या रात, जब भी कोई ख़्याल दिमाग़ में आता मैं उसे लिखने से पहले निवेदिता को याद करता और उसे सामने बिठाकर उससे बरकतें माँगता। अगर मैं कहूँ कि मैंने उसे अपनी तख़लीक़ की देवी मान लिया था तो कोई मुबालागा आराई नहीं होगी। मैं उसे ये बात बताना चाहता था लेकिन वॉट्सएप मैसेज के ज़रिए नहीं। मिलकर बताना चाहता था। मैंने उसे मैसेज करके पूछा कि वो कहाँ है? चन्डीगढ़ या घर पर? कोरोना की वजह से तमाम तलबा अपने घरों को जा चुके थे। जनवरी के महीने में नया सैशन भी शुरू होने वाला था मगर रेगुलर क्लासें शुरू होने का कोई इम्कान नहीं था। कुछ ख़ास रियायात के तहत पीएचडी के तलबा को इजाज़त दी गई थी कि वो अपना रिसर्च वर्क यूनिवर्सिटी में करें। निवेदिता ने मुझे मैसेज किया कि वो अभी तो घर पर ही है लेकिन चार पाँच जनवरी को चन्डीगढ़ आ रही है। छः सात जनवरी को मैंने फिर पूछा तो

उसने बताया कि वो चन्डीगढ़ आ गई है। उससे मिलकर उसे वो सब जो मेरे साथ हो रहा था बताने का लालच सँभाले नहीं सँभल रहा था मुझसे, इसलिए मैंने उसे बताया कि मैं उससे मिलना चाहता हूँ, कुछ बातें करना चाहता हूँ और वो इसके लिए कोई वक़्त मुकर्रर करके मुझे बताए। मैं शायद ज़रूरत से ज़्यादा ही मुहज़्ज़ब हूँ और क़दम क़दम पर तहज़ीब का ख़्याल रखता हूँ इसलिए उससे वक़्त लिए बग़ैर नहीं मिलना चाहता था। फिर जो बात मैं उससे साझा करने वाला था वो इतनी नाज़ुक थी कि उसे यूँ ही राह चलते तो ब्यान नहीं किया जा सकता था। उसने मुझे बताया कि अभी वो कुछ दिन मसरूफ़ है और जैसे ही वक़्त मिलेगा बताएंगी। पाँच छः दिन गुज़रने के बाद मैंने फिर पूछा तो उसने बताया कि उसकी तबीयत नासाज़ है इसलिए अभी नहीं मिल पाएंगी। मैंने उसके जल्दी सेहतमन्द होने की दुआ की और कुछ दिन बाद फिर पूछा तो उसने कहा कि वो अँग्रेज़ी डिपार्टमेंट में जा रही है लेकिन ज़्यादा देर नहीं रहेगी। उसकी नानी बीमार थी जिसे लेकर वो डॉक्टर के पास जाएंगी। ख़ैर, ये तीसरी दफ़ा था कि उससे मिलने का इत्तेफ़ाक़ नहीं हो सका। यहाँ उसे सब बताने की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। बात ही कुछ ऐसी थी कि उसके त'आस्सुर को अकेले बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था मैं। उसे बताने पर ही इस एहसास की शिद्दत कुछ कम हो सकती थी।

यहाँ मैं निवेदिता से मुलाक़ात करने के दिन और वक़्त के फ़ैसले का इन्तज़ार कर रहा था ताकि अपनी कैफ़ियत से उसे दो चार करा सकूँ, वहाँ एक और ही खिचड़ी पक रही थी जिसका मुझे क़तई अन्दाज़ा नहीं था। हुआ यूँ कि चूँकि मैं अपने बैडरूम में ही बिस्तर पर बैठे या लेटे ही रात के दो तीन बजे शायरी करता था सो करवट बदलते वक़्त मेरी बीवी फ़ोन की लाइट देखती और उसकी नींद में खलल पड़ता। कई बार सोचा कि मैं दूसरे कमरे में जाकर पढ़ लिख लिया करूँ मगर इसी कमरे में रह कर पढ़ने लिखने की दो तीन वजूहात थीं। एक तो ये कि हमारे बैडरूम के दरवाज़े के क़ब्जे बहुत आवाज़

करते हैं। उसे खोलकर रात के ढाई तीन बजे दूसरे कमरे में जाना मतलब दूसरों की भी नींद खराब करना। दूसरे सर्दी के मौसम में गर्म रजाई छोड़कर दूसरे कमरे में जाकर ठंडी रजाई लेने की हिम्मत कोई बाँका ही कर सकता है। तीसरा ये कि हम दोनों के बीच हमारा प्यारा सा बेटा सोता है, तक्ररीबन नौ साल का है लेकिन सोता हमारे साथ ही है। ये कहने की ज़रूरत नहीं कि मैं उसके बिना नहीं सो सकता क्योंकि मैं उससे प्यार ही बहुत करता हूँ। प्यार तो सभी माँ बाप अपने बच्चों से करते ही हैं लेकिन बहुत से ऐसे भी हैं जो न सिर्फ बच्चे को उसी बैडरूम में अलग बैड पर सुलाते हैं या किसी दूसरे कमरे में, लेकिन साथ सोते हुए उस नन्हीं सी जान के बदन का लम्स जो सुकून देता है उसे लफ़्ज़ों में ब्यान नहीं किया जा सकता। हम ये बात सबसे साझा नहीं करते कि हमारा बेटा हम दोनों के दरम्यान सोता है, क्योंकि फिर यार लोग चुटकी लेते हैं कि, ओह, तभी आपके एक ही बच्चा है। उसके एक ही होने की वजह ये है कि एक तो ये बच्चा हमें बहुत मिन्नतों और मन्नतों के बाद मिला है। बीवी के तौलीदी ऐजाए में कुछ गड़बड़ी होने की वजह से उसके हामिला होने में दिक्कत थी। शादी के बाद चार-साढ़े चार साल मुख्तलिफ़ डॉक्टरों की मुख्तलिफ़ सलाहों पर अमल करते हुए इलाज कराने में लग गए लेकिन नतीजा सिफ़र ही रहा। फिर एक डॉक्टर ने हमें इलाज बन्द कर के इन्तज़ार करने की सलाह दी और कहा कि जहाँ डॉक्टरी इलाज फ़ेल हो जाते हैं वहाँ उसने दुआओं को फलते देखा है। किसी की सलाह पर हमने बाबा श्रीचन्द जी के डेरे पर मन्नत माँगी और वहाँ के महन्त ने मेरी बीवी को दवा भी दी और शादी के छः साल बाद ये प्यारा सा बच्चा हमें अल्लाह के तोहफ़े के रूप में मिला। इसकी परवरिश हम दोनों ने खुद को भुला कर की। फिर बीवी को एनडोमैटरीअम एनलारजमेंट की दिक्कत की वजह से महीने में तक्ररीबन बीस दिन बेइन्तहा दर्द में गुज़ारने पड़ते। ऐसे में दूसरे बच्चे के बारे सोचना मुश्किल था। आप ये भी सोच रहे होंगे कि एक तरफ़ तो मैं अपनी उम्र साठ के पार बता रहा हूँ और

दूसरी तरफ़ बग़ल में सुलाने लायक़ बच्चे के बारे में बता रहा हूँ। तो मुख़्तसर दास्तान ये है कि ये मेरी दूसरी शादी है। पहली शादी से दो बच्चे हैं लेकिन वो शादी किसी वजह से लम्बी नहीं चली और हमारा तलाक़ हो गया। मौजूदा बेगम साहिबा मुझसे उम्र में काफ़ी छोटी हैं और शादी के बाद लम्बा अरसा बच्चा न होने की वजह से हमारा ये साहिबज़ादा हमसे काफ़ी छोटा है।

अब हुआ यूँ कि रात को मुझे फ़ोन पर मसरूफ़ देख कर बीवी के ज़ेहन में शक़ के बीज उगने लगे। एक दिन जब मैं फ़ोन बन्द करके सोया और सुबह की गहरी नींद में था तो उसने मेरा फ़ोन खँगालना शुरू किया और उसने कुछ और मैसेजज़ के अलावा निवेदिता को किए मैसेज भी पढ़े होंगे। उसने उन तमाम मैसेजज़ के फ़ोटो मेरे फ़ोन की स्क्रीन से ले लिए और इन नये हासिल करदा हथियारों से लैस होकर फिर से सो गई। मैं अमूमन तक़रीबन सात बजे सुबह सोकर उठ जाता हूँ। फिर चाय बनाता हूँ और चाय का कप बीवी के साईड टेबल पर रख कर उसके गाल का बोसा लेता हूँ और बताता हूँ कि उसके लिए चाय रख दी है। आप कहेंगे कि चाय मैं क्यों बनाता हूँ तो जवाब है कि मैं फ़ौजी भी रहा हूँ और तमाम फ़ौजियों की तरह बीवी से बहुत प्यार करने के साथ साथ उसे बैड टी पिलाने की ज़िम्मेदारी मैंने खुद अपने ऊपर ले रखी है। उस दिन जब चाय रख कर मैंने उसे किस किया तो उसने मुझे गुस्से में झटक दिया। मैं हैरान तो हुआ मगर फिर बैड की दूसरी तरफ़ जाकर चाय पीने लगा। दिन भर न मैंने पूछा न ये गुत्थी सुलझी। शाम को उसने मुझसे पूछा कि निवेदिता कौन है और मैं उसे शायरी क्यों भेजता हूँ और उसे मिलना क्यों चाहता हूँ।

मैंने उसे जो सच था वो सब बताया मगर वो सच के आगे का भी कुछ जानना चाहती थी। उसे बस यही नहीं बताया कि निवेदिता हरदम मेरे ख़्यालों में रहती है और मुझे इल्हाम से नवाज़ती है। क्योंकि इस बात की क्यों का जवाब अभी मेरे पास भी नहीं था। और किसी बीवी को शौहर का ये बात बताना कि कोई और औरत या लड़की उसके दिमाग़ पर छाई रहती है और उसे इल्हाम

से नवाजती है, अपने ही घर में तीसरी आलमी जँग के शुरू करने की वजह के साथ साथ तोप, टैंक, मिसाइल, रॉकेट, एटम बम, हाइड्रोजन बम वगैरह का ज़खीरा भी खुद अपने हाथों से बीवी को मुहैया कराने जैसा होगा। उस पर ये उम्मीद करना कि ये जँग टल जाए, बेवकूफ़ाना है। बस इतनी सी बात बताई जा सकती थी कि वो एक अच्छी लड़की है। मुझे भी अच्छी लगती है। उसे शायरी की समझ है और अच्छी और ख़राब शायरी के फ़र्क़ की तमीज़ भी। रात को तीन बजे शायरी भेजने का क्या मतलब है? सो ये भी बताया कि मैं भी दुनिया भर के शो'अरा की तरह रात के सकूत के माहौल में अच्छी शायरी कर पाता हूँ और कोई फ़नपारा मुकम्मल होते ही उसे साझा करने की तलब होती है, और चूँकि निवेदिता भी अपनी पढ़ाई के सिलसिले में उस वक़्त जाग रही होती है सो उसे भेज देता हूँ। लेकिन ये बातें बीवीओं की समझ में नहीं आती। उनका अपना एक लॉजिक होता है। मेरी बीवी का भी अपना लॉजिक है। पहली बात तो ये कि उसके होते हुए कोई दूसरा मेरी शायरी क्यों पढ़े? दूसरी बात कि कोई औरत या लड़की ही क्यों पढ़े और तीसरी ये कि रात के तीन बजे ही क्यों पढ़े? उसे समझाया कि शायरी लिखी जाने के बाद शायर की नहीं रहती, वो सबकी हो जाती है। उसे तुम भी पढ़ो और लोग भी पढ़ें, दूसरा ये कि जब मेरी किताब छप जाएगी तब भी तो दीगर औरतें और लड़कियाँ उसे पढ़ेंगी। अब ये तो नहीं छापा जा सकता कि ये किताब मेरे मियाँ ने लिखी है और ये सिर्फ़ मर्दों के लिए है। ये भी बताया कि दुनिया में उन्चास फ़ीसदी औरतें हैं तो उनमें से कोई न कोई तो ज़रूर पढ़ेगी। हो सकता है उनमें से कुछ दाद भी लिख भेजें। हम किस किस से लड़ने जाएँगे। तीसरा जवाब मैं पहले ही बता चुका हूँ लेकिन फिर भी दोहरा दूँ कि खुदा गवाह है कि कायनात की इब्तदा से लेकर आज तक किसी भी अज़ीम से अज़ीमतर शायर की हिम्मत नहीं हुई कि वो रात के तीन बजे अपनी सोई हुई बीवी को जगाकर उसे अपनी शायरी सुनाने की जुर'अत कर सके।

जहाँ बहस में लॉजिक खत्म होता है वहाँ गुस्सा जनम लेता है। यहाँ पर मेरी बीवी की जानिब से निवेदिता की शेर फ़हमी और अदब शनासी की सलाहियत पर तँज़ियाना कमेंट की तवक्क़ोह न करना भी बेवकूफ़ाना होता और इससे पहले कि उसके बाद मेरी भी शेर गोई और अदब शनासी की सलाहियत पर सवालिया बम फेंके जाते, मैं चुप हो रहा। जिस वक्त्र किसी मुद्दे पर दो दिमाग़ बहस कर रहे होते हैं और अपना अपना नज़रिया तहज़ीब और लॉजिक के दायरे में रहकर पेश कर रहे होते हैं तब तक तो उसका हल निकलने की गुँजायश बनी रहती है लेकिन जब बहस के दौरान दोनों दिमाग़ों में से किसी एक के सींग निकलने लगें और फिर सर के बाहर दिखाई भी देने लगें तो लाज़मी है कि दूसरा दिमाग़ ख़ामोश हो जाए। उसके पास चाहे कितना भी सही लॉजिक हो उसे बहस में मज़ीद हिस्सा लेने से गुरेज़ करना चाहिए नहीं तो दोनों में झगड़ा हुए बिना नहीं रह सकता। ये भी होता है कि एक दिमाग़ कितना भी ख़ामोश हो जाए, सींग वाला दिमाग़ उसे कभी इधर से तो कभी उधर से सींग मारता ही रहेगा। उसे सींगों में ही लॉजिक नज़र आता है और मुद्दे को चिंगारी देते रहने का हुनर इस बात को यक़ीनी बनाता है कि ये मुद्दा आइन्दा झगड़ों की बुनियाद के तौर पर ज़िन्दा रहे जिसे जब जी चाहे भड़काया जा सके।

इस मुद्दे पर हमारी बहस मेरे चुप हो जाने के बाद भी ख़त्म होने का नाम नहीं ले रही थी, सो आख़िर मैंने जब ये कहा कि इसमें मुझे जो कहना था मैंने कह दिया है और इसके अलावा मेरे पास कहने को कुछ नहीं है और तुम्हें जो मतलब निकालना है निकालो, तो बेगम साहिबा गुस्से में आ गईं और धमकियों पर उतर आईं। कहने लगीं, मैं उर्दू डिपार्टमेंट में जाकर सबको ये बताऊँगी कि तुम्हारे और निवेदिता के बीच क्या चल रहा है। मैंने उससे कहा कि पहली बात तो ये है कि मेरे और निवेदिता के बीच कुछ चल ही नहीं रहा है और अगर मेरा उससे शायरी साझा करना तुम्हें यूँ लगता है कि हमारे बीच कुछ चल रहा है तो वो हमारे बीच नहीं सिर्फ़ मेरी तरफ़ से चल रहा है। इसको

जिस नज़रिये से तुम देख रही हो उसमें अगर तुम्हें लगता है कि कुछ ग़लत है तो वो ग़लत मैं कर रहा हूँ, निवेदिता को न इसका कुछ अन्दाज़ा है और न उसका कुसूर। मेरा इतना कहना आग में घी डालने की तरह था। भड़क गई और उसका उर्दू डिपार्टमेंट में जाकर मुझे और निवेदिता को बदनाम करने का अक़ीदा और मज़बूत हो गया। आख़िरी बार मैंने उसे ये भी समझाया कि निवेदिता एक बहुत ही शरीफ़ और अच्छी लड़की है और जो कुछ तुम देख रही हो उसमें उसका कोई हाथ नहीं। दूसरे जहाँ तक मेरा सवाल है मैंने भी कुछ ग़लत नहीं किया है लेकिन कुछ भी करने से पहले ये जान लो कि उर्दू डिपार्टमेंट में सब मेरी बहुत इज़्ज़त करते हैं, मुझे एक मुहज़्ज़ब, शरीफ़ और ज़हीन इन्सान के रूप में देखते हैं और सबसे बड़ी बात कि सब मुझे बाप की मानिन्द मानते हैं। अगर तुम ये मुद्दा इस तरीक़े से उछालोगी तो बेशक इसमें ऐसा कुछ नहीं है फिर भी निवेदिता की इज़्ज़त पर तो हरफ़ आएगा ही मेरी भी ख्वाह-मख्वाह बेइज़्ज़ती होगी। अब शायद मैंने उसके हाथ में अपनी कमज़ोर नस दे दी थी जिसे पाते ही वो शेरनी हो गई।

इन दिनों उर्दू डिपार्टमेंट तो कोरोना की वजह से खाली था सो अगला क़दम डॉक्टर बॉबी की सलाह पर ये तय पाया कि हमारी उस्तानी साहिबा से इस बात की शिकायत की जाए या उनकी मदद ली जाए। सो बॉबी मेरी बीवी को लेकर उस्तानी साहिबा के घर पहुँच गई और उनसे सारी बात अपने मन्थरा रूपी अन्दाज़ में कही होगी। मेरे और निवेदिता के बीच शायरी साझा करने के मासूमाना अमल को पहले जुर्म और फिर जुर्म-इश्क़ का नाम देकर मेरी बीवी के शक, गुस्से और दुख को जायज़ ठहराने की क़वायद शुरू हुई। ज़ाहिर है ऐसा तभी मुमकिन था जब मेरे और निवेदिता के बीच के त'अल्लुक़ को नाजायज़ ठहराया जाता। मुझे यक़ीन है कि मुझे और निवेदिता को उस्तानी साहिबा ने जितना देखा है और जाना है उसके हिसाब से इसे कोरी बकवास माना होगा लेकिन बाज़ मर्तबा बन्दा मौक़े और मुद्दे की नज़ाक़त को समझते

हुए बीच का रास्ता इखितआर करने में बेहतरी समझता है। सो ये फ़ैसला हुआ होगा कि निवेदिता को कहा जाए कि वो मुझसे उसी लम्हा क़त'अ-त'अल्लुक़ करे।

मैं नहीं जानता उस्तानी साहिबा ने किन अल्फ़ाज़ और किस तरीक़े से ये बात कही होगी मगर मुझे इतना यक़ीन ज़रूर है कि उसकी बात सुनकर निवेदिता को बहुत बड़ा धचका लगा होगा। मैं निवेदिता को कुछ दिन पहले ही बता चुका था कि उसे शायरी भेजना मेरी बीवी को अच्छा नहीं लगा लेकिन मैं उसे समझा लूँगा। हो सकता है मेरी बीवी और बॉबी के इसरार पर उस्तानी साहिबा ने मुझसे त'अल्लुक़ क़त'अ करने का हुक्म निवेदिता पर सादिर किया हो, क्योंकि निवेदिता ने मेरी शायरी पर दाद देना या मैसेज का जवाब देना बिल्कुल बन्द कर दिया था। इधर मैं इस पक रही खिचड़ी से अन्जान ये समझता रहा कि शायद निवेदिता अपनी किसी असाइनमेंट में मसरूफ़ हो गई हो या उसकी तबीयत नासाज़ हो। मेरे निवेदिता को भेजे जा रहे मैसेज मेरी बीवी अब भी चोरी चकारी पढ़ रही थी और मुझसे लड़ने के लिए हथियारों का ज़खीरा तैयार कर रही थी मगर मुझे इसकी बिल्कुल ख़बर नहीं थी। इस बात की भी नहीं कि वो हमारी उस्तानी साहिबा से मिलकर निवेदिता को मुझसे दूर रहने का हुक्म सादिर करवा चुकी थी।

इस सबसे बेख़बर मैं ये सोचने पर मजबूर था कि ऐसा क्या हुआ होगा जो निवेदिता ने मेरे मैसेजिज़ का जवाब देना बन्द कर दिया। पहले पहल तो दिमाग़ में यही आया कि शायद वो दीगर ज़रूरी कामों में मसरूफ़ हो, तबीयत नासाज़ न हो गई हो, मगर जब ज़्यादा दिन हो गए तो मैंने सोचा कि पूछूँ ऐसा क्या हुआ जो उसने मैसेज का जवाब देना ही बन्द कर दिया। एक दिन मैंने उसे लिखा कि बहुत दिनों से मेरी शायरी पर तुम्हारा कोई कमेंट नहीं आया, मुझे बताओ कि पिछले कुछ रोज़ में जो तख़लीक़ात तुम्हें भेजी हैं मैंने वो कैसी हैं? तुम्हें इसका इल्म नहीं होगा कि ये तख़लीक़ात तुम्हीं से असर लेकर लिखी हैं

मैंने। तुम मेरी इन तख्तीकात में मेरी म्यूज हो, जिसे ख्यालों में रख कर अगर कुछ लिखता हूँ तो बहुत अच्छा लिख पाता हूँ। कुछ दिन उसका कोई जवाब नहीं आया। मैं अब भी उसे कोई शे'र, गज़ल या नज़्म भेज रहा था लेकिन रोज़ नहीं। कुछ दिन और यूँ ही गुज़र गए मगर निवेदिता का कोई जवाब नहीं आया। मेरी बेचैनी बढ़ने लगी। किसी अनहोनी के अन्देशे ने ज़ोर पकड़ा तो फिर लिखा उसे।

“हैलो निवेदिता, कैसी हो? क्या बात है, बहुत दिनों से तुम्हारा कोई कमेंट नहीं आ रहा। मैं तो लगभग रोज़ ही तुम्हें एक गज़ल या नज़्म भेज रहा हूँ। कमेंट्स मिलने से या तो ये पता चलता है कि कहाँ पर बेहतर करने की ज़रूरत है या फिर नया और बेहतर लिखने के लिए हौसला-अफ़ज़ाई होती है। तुम्हारा यूँ बिल्कुल ख़ामोश हो जाना खलता है। उम्मीद करता हूँ तुम ठीक होओगी। क्या कुछ ऐसा है जो तुम्हें मेरी शायरी पर कमेंट करने से रोक रहा है या मेरी शायरी ही कमेंट करने लायक नहीं। तुमने माना था कि तुम अपनी मुशाहिदात भेजा करोगी और मैंने भी वादा किया था कि तुम्हें कम से कम एक गज़ल या नज़्म रोज़ भेजूँगा। अगर अब इसमें तुम्हारी दिलचस्पी नहीं रही तो मुझे बता दो मैं आईन्दा नहीं भेजूँगा। छपने से पहले मेरी शायरी को पढ़ने की इस्तेहकाक़ बस तुम्हीं को दस्तयाब है। अगर कोई दूसरी वजह है तो मेरे साथ साझा करो ताकि मुझे भी मालूम हो। मैं बस सोचता रहता हूँ और अन्दाज़ा लगाता रहता हूँ, ये न हो गया हो, वो न हो गया हो।“

जब इसका भी कोई जवाब नहीं आया तो मुझे यकीन होने लगा कि कहीं न कहीं कुछ तो गड़बड़ है। मुझे लगा कि मेरी बीवी ने निवेदिता से बात की होगी, बात क्या, कुछ उल्टा सीधा बोल दिया होगा या शायद लड़ी भी हो। कुछ दिन बाद मैंने फिर उसे लिखा कि, “कुछ सँगीन हो गया होने का मेरा शक़ तुम्हारी जानलेवा ख़ामोशी की वजह से पल पल बढ़ता ही जा रहा है। मुझे प्लीज़ बताओ इस ख़ामोशी की वजह क्या है। मेरे लिए ये नाक्राबिले-बर्दाश्त

हुआ जा रहा है। मैं बद से बदतरीन हालात से निपट सकता हूँ मगर इस जानलेवा खामोशी के साथ नहीं।“

इस बीच फिर मेरी बीवी डॉक्टर बॉबी को साथ लेकर उस्तानी साहिबा के घर पहुँची और फिर से वही शिकायत दायर की। अब ये कहा गया कि मैं अब भी निवेदिता को मैसेज भेज रहा हूँ और हालांकि निवेदिता कोई जवाब नहीं दे रही फिर भी उससे कहा जाए कि वो मुझसे कहे कि वो मुझसे कोई ताल्लुक नहीं रखना चाहती। उस्तानी साहिबा ने हमारी एक और क्लासमेट से कहा कि वो निवेदिता से कहे कि निवेदिता मुझे लिखे कि वो मुझसे कोई ताल्लुक नहीं रखना चाहती। कई दिनों के बाद उसी दिन निवेदिता का मैसेज आया जिसमें उसने लिखा था कि वो मेरी बहुत इज्जत करती है, मुझे फ़ादर फ़िगर समझती है और क्लास में एक आलिम के रूप में देखती है लेकिन वो जो कुछ दिन पहले मैंने लिखा था कि वो मेरी म्यूज है वो उसे परेशान किए हुए है और इस परेशानी से निजात पाने के लिए उसने फ़ैसला किया है कि वो अब मुझसे कोई ताल्लुक नहीं रखेगी। उसने ये भी लिखा कि उसकी जगह अगर मेरी बेटा होती तो वो भी ऐसा ही करती।

ये पढ़कर मुझे अजीब सा लगा क्योंकि म्यूज लफ़्ज़ का जो मतलब उसने निकाला था मुझे अँग्रेज़ी अदब की एक ज़हीन तालिबा से ये उम्मीद न थी। मैं भी अँग्रेज़ी अदब का तालिबे-इल्म रहा हूँ और जानता हूँ कि म्यूज अदब और मौसीक्री के मुसन्निफ़ीन को तख़लीक़ी इल्हाम से नवाज़ने वाली देवी का ग्रीक नाम है जिसे हिन्दी में हम सरस्वती देवी कहते हैं और उसकी इबादत करते हैं। कुछ भी तख़लीक़ करने से पहले उसकी बरकतें माँगते हैं। मैंने तो निवेदिता को सरस्वती देवी के तख़्त पर बिठाकर उसकी इबादत की थी मगर उसने इसका ग़लत मतलब निकाला और मुझसे बातचीत करने से मना कर दिया। ख़ैर! मैं खुश था कि उसका जवाब तो आया। मैंने उसे लिखा कि म्यूज का जो मतलब वो समझ रही है वो ग़लत है, अदब की तालिबे-इल्म होने के नाते मैं समझता

था कि उसे म्यूज़ के सही मा'अनी मालूम होंगे मगर शायद उसने इसे ग़लत समझ लिया है। वो मेरी नज़रों में तख़लीक़ की देवी है जिसकी मैं बहुत इज़्ज़त और इबादत करता हूँ। इसलिए भी कि वो दूसरी लड़कियों से जुदागाना शख़्सियत रखती है उसकी इज़्ज़त मेरी नज़रों में कई गुना ज़्यादा है। मेरे दिल में उसके लिए ख़ास जगह है। हर मुसन्निफ़ किसी भी तख़लीक़ से पहले अपनी म्यूज़ या सरस्वती देवी को पुकारता है, उसका तसव्वुर करता है, उससे बरकतें माँगता है। मैं जब कुछ लिखने बैठता हूँ तो उसे पुकारता हूँ, उसका तसव्वुर करता हूँ, उसे सामने बिठाता हूँ, उससे बरकतें माँगता हूँ क्योंकि मैंने जब जब ऐसा किया है मैं बेहतर अदब तख़लीक़ कर पाया हूँ। मैंने ये भी लिखा कि मुझे इस बात का इल्म है कि वो मुझे फ़ादर फ़िगर के रूप में देखती है और मेरी बहुत इज़्ज़त करती है। मैं भी दिल की गहराइयों से उसकी इज़्ज़त करता हूँ, उस पर एतिमाद करता हूँ, प्यार करता हूँ जैसे वो कोई ग़ैर न होकर मेरे ही वजूद का कोई हिस्सा हो। हम दोनों के बीच जो इज़्ज़तो-एतिमाद का रिश्ता बना है मैं उसे एक घटिया इन्सान की तरह बर्ताव करके खोना नहीं चाहता। मेरी ज़िन्दगी में इसी तरह उसके होने का एहसास मेरे लिए बहुत अहम है और मैं चाहता हूँ ये ऐसे ही बना रहे। मुझे सभी लोग एक बहुत अच्छा इन्सान समझते हैं और मैं उस अक्स से गिरना नहीं चाहता। अपने दिल से तमाम ग़लतफ़हमियाँ निकाल कर मुस्कराओ क्योंकि मैं तुम्हारा तसव्वुर उस दिलकश मुस्कान के बग़ैर नहीं कर सकता जो हमेशा तुम्हारे चेहरे पर रहती है। मेरे ज़ेहन से इतना बड़ा बोझ उतारने के लिए बहुत शुक्रिया। चलो, अब तुम भी अपने ज़ेहनो-दिल से तमाम बोझ उतार फेंको।

ये मेरी उससे आखिरी वॉट्सएप गुप्ततगू थी। ज़ेहन से भारी बोझ हट गया था। बेचैनी दूर हो गई थी। लेकिन फिर भी कुछ ऐसा था जो अभी साफ़ नहीं था। कुछ था जो मुझसे छुपाया जा रहा था या छुपाया गया था। निवेदिता से मेरा जो ताल्लुक़ था वो एक बाहमी एतिमाद और इज़्ज़त का था। जितना

भरोसा उसे मुझ पर था उतना ही मुझे उस पर भी। जितनी इज्जत वो मेरी करती थी मैं शायद उससे ज्यादा ही उसकी करता था। हम अपनी बात बिना लाग लपेट या डर के एक दूसरे से कर सकते थे। फिर ऐसा क्या हुआ कि निवेदिता ने मुझे मेरी बीवी की डॉक्टर बॉबी के साथ मिलकर रची गई साज़िश जिसमें हमारी उस्तानी साहिबा को भी न चाहते हुए शामिल किया गया था और हमारी क्लासमेट वो लड़की जिसे निवेदिता को ये कहने का फ़रीज़ा सौंपा गया था कि वो मुझसे आईन्दा कोई ताल्लुक न रखे के बारे में एक लफ़्ज़ भी नहीं बताया। ख़ामोश रही। क्या उसे ये डर था कि अगर वो मुझे ये बताएंगी तो मेरा मेरी बीवी के साथ झगड़ा न हो जाए या फिर वो इसमें उस्तानी साहिबा के रोल को मेरे सामने उजागर नहीं करना चाहती थी। ये भी हो सकता है कि उसने सोचा हो कि जिस तरह उसे मुझसे ताल्लुक क़त'अ करने को कहा गया था, उस्तानी साहिबा ने मुझसे भी उससे ताल्लुक न रखने को कह दिया होगा। मुझे ये बात न बता कर निवेदिता ने मेरी बीवी को इस बात को तूल देने में अन्जाने में मदद ही की थी। अगर मुझे वो उसी दिन बता देती कि मेरी बीवी ने उस्तानी साहिबा के पास हमारी शिकायत की है और उस्तानी साहिबा ने कहलवाया है या ख़ुद कहा है कि वो मुझसे आईन्दा कोई ताल्लुक न रखे तो मैं उसी दिन अपनी बीवी, डॉक्टर बॉबी और उस्तानी साहिबा को समझाता कि हमारे बीच ऐसा कुछ नहीं है जिससे मेरी बीवी को कोई ख़तरा हो, तो शायद बात आगे न बढ़ती। यहाँ मैं समझता हूँ कि निवेदिता को चाहिए था कि वो मुझसे इस बारे में ज़िक्क़ ज़रूर करती। दूसरा ये कि उस्तानी साहिबा निवेदिता और मेरे बारे में जितना जानती थीं वो कह सकती थीं कि उन्हें नहीं लगता कि मेरी बीवी का ख़दशा जायज़ है, फिर भी वो अपने तरीक़े से हम दोनों से पूछ लेगी और समझा देगी। वो ये भी कह सकती थीं कि हालांकि उनको नहीं लगता कि जो बात मेरी बीवी कह रही है वो जायज़ या सही है लेकिन वो इस बारे में निवेदिता से कुछ नहीं कह सकती क्योंकि निवेदिता तब उनकी तालिबा नहीं थी। दरअसल,

कोरोना की वजह से पैदा हुए ग़ैर यकीनी हालात के चलते बहुत से तलबा ने सर्टिफ़िकेट कोर्स के बाद डिप्लोमा कोर्स में दाखिला नहीं लिया था। उनमें निवेदिता भी थी। हाँ, उस्तानी साहिबा से गुज़ारिश करके कुछ तलबा हमारे साथ ऑनलाइन क्लास अटेंड कर रहे थे ताकि उनका उर्दू के साथ ताल्लुक बना रहे और अगले साल हालात साज़गार होने पर वो फिर से अपनी पढ़ाई जारी रख सकें। मगर मुझे लगता है कि डॉक्टर बॉबी ने जिस तरह अपने साज़िश़ी अन्दाज़ में मेरी बीबी के अन्देशो को नाक्राबिले-बर्दाशत दर्द बना कर पेश किया होगा उससे उस्तानी साहिबा की दुरुस्त फ़ैसला लेने की सलाहियत पर असर पड़ा होगा और वो इस मस'अले के हल के लिए मदद करने को राज़ी हो गई होंगी।

ख़ैर, मुख़्तसर ये कि मुझे इस पक रही या पकाई जा चुकी खिचड़ी के बारे ज़रा भी भनक नहीं लगी और यही वजह थी कि इन दिनों निवेदिता की ख़ामोशी ने मुझे बेचैन किया और मुझे उससे वजह जानने पर मजबूर किया। उसने मुझे सही वजह न बताकर वो म्यूज़ वाली बात बताकर मुझसे आईन्दा ताल्लुक न रखने की बात कही। मुझे उस वक़्त भी ये एक बहुत कमज़ोर और नाक्राबिले-यक़ीन बहाना लगा था लेकिन मैंने अपनी पोज़ीशन साफ़ करने के बाद उसके फ़ैसले की इज़्जत करते हुए उसके साथ कोई ग़ज़ल या नज़्म साझा नहीं की और न कोई दूसरा मैसेज ही किया।

इससे पहले ये भी हुआ था कि जब मेरी बीबी ने मेरे फ़ोन पर निवेदिता को भेजे हुए मैसेजिज़ देखे थे जिनमें सिर्फ़ शायरी साझा की गई थी उसने मुझसे वो तमाम मैसेज हज़फ़ करने के साथ निवेदिता का नम्बर भी हज़फ़ करने को कहा। यही नहीं, मेरे फ़ोन में वॉट्सएप और फ़ेसबुक पर और भी जितनी औरतों के नम्बर थे सब हज़फ़ करने को कहा तो मैंने उसकी बात मानते हुए वो सब नम्बर हज़फ़ कर दिए लेकिन उस के बाद भी तीन चार दिन तक निवेदिता को लेकर रोज़ की चिड़चिड़ जारी रही तो एक दिन मैंने गुस्से और ज़िद में निवेदिता

का नम्बर फिर से शामिल कर लिया और कहा कि मैं किस से बात करूँ किससे नहीं इसका फ़ैसला तुम नहीं करोगी। ज़ाहिर है, मैंने ऐसा उसकी नाजायज़ दखल-अन्दाज़ी और हुकूमत के खिलाफ़ अपने गुस्से के इज़हार तहत किया था। यही वो वक़्त था जब निवेदिता मेरी जानकारी के बग़ैर वॉट्सएप पर बिल्कुल ख़ामोश हो गई थी और मुझे उससे इसकी वजह पूछनी पड़ी थी। अब अगर कोई आपको मुतासिर करता है और आप उसके असर से अपने किसी खिन्ते में बहुत अच्छा करते हो तो इस बात का क्रेडिट तो उस शाख्स को देना बनता है ना। इसमें नाराज़ होने वाली कोई बात तो मुझे समझ नहीं आई फिर भी मैंने निवेदिता को म्यूज़ के सही मा'नी समझाते हुए और ये बताते हुए कि मैं उसकी बहुत इज़्ज़त करता हूँ उसके मुझसे आईन्दा ताल्लुक न रखने के फ़ैसले को मन्ज़ूर तो किया लेकिन दिल में कहीं ये कसक सी रही कि मुझे ग़लत समझा गया।

जिस वक़्त मैं निवेदिता को म्यूज़ के सही मा'नी समझा कर उसे ये बताने की कोशिश कर रहा था कि इसमें भी मेरे दिल में उसके लिए बेइन्तहा इज़्ज़त और अक़ीदत है और मैं उसे इल्हाम की देवी के रूप में देखता हूँ और ऐसा करने से मेरी तख़लीकात के मैयार में बड़ा इज़ाफ़ा हुआ है, ऐन उस वक़्त मेरी बीवी मेरे और निवेदिता के खिलाफ़ बहुत बड़ी ज़ँग जीत कर आ रही थी। वो फिर बॉबी को साथ लेकर उस्तानी साहिबा के यहाँ पहुँची हुई थी और ये कोशिश हो रही थी कि किसी तरह निवेदिता से मुझे कहलवाया जाए कि वो मुझसे कोई ताल्लुक नहीं रखना चाहती। ऐसा होने से मैं उसे अपनी शायरी जो मैं फिर से अपनी बीवी के हुक्म के खिलाफ़ एक ज़िद के तहत उसे भेज रहा था वो बन्द हो जाए। हालांकि निवेदिता की तरफ़ से मेरी शायरी के बारे कोई कमेंट नहीं आ रहे थे, फिर भी उसे मजबूर किया गया कि वो मुझसे साफ़ लफ़्ज़ों में कहे कि वो मुझसे ताल्लुक ख़त्म कर रही है। अब उसके लिए कोई मुस्तनद बहाना तो चाहिए ही था। यही निवेदिता ने दूसरी लड़की के साथ डिस्कस

किया होगा और बताया होगा कि मैंने उसे लिखा था कि मैं उसे अपनी म्यूज मानता हूँ, तो इसी को उस लड़की की सलाह पर मुद्दा बनाकर और ये कहकर कि आपका मुझे म्यूज कहना अच्छा नहीं लगा, जिसकी वजह से मेरे दिमाग पर बोझ है, मैं आपके साथ ताल्लुक क़त'अ कर रही हूँ इसे और पुख्ता करने की सलाह भी उसी लड़की ने निवेदिता को दी और कहा कि ये भी लिखो कि अगर मेरी जगह आपकी बेटी भी होती तो शायद वो भी ऐसा ही करती। मेरी बीवी की तरफ़ से ये एक मास्टर स्ट्रोक थी और इसका असर भी हुआ कि निवेदिता ने मेरे साथ तर्के-ताल्लुक का फ़ैसला कर लिया। मैंने उसके फ़ैसले की इज़्जत की और आईन्दा उसे कुछ नहीं लिखा। अब म्यूज का मतलब जो मैं समझता हूँ वो ये है कि आपकी म्यूज कोई भी इन्सान या चीज़ हो सकती है। आपकी माँ, बीवी, बहन, बेटी, बेटा, समन्दर, पहाड़, नदी, झरना, ज़मीन, आसमान, बादल, पेड़, चिड़िया, मोर, बुलबुल, फूल, पौधे, कुछ भी। जिससे भी आपको तख़लीक़ी इल्हाम मिले वो ही आपकी म्यूज है। और किसी को ये कहना कि वो आपकी म्यूज है बहुत बड़ी इज़्जत-अफ़ज़ाई है न कि तौहीन। इस पर ख़ुश हुआ जा सकता है और मुसन्निफ़ का शुक्रिया अदा किया जा सकता है। ख़फ़ा होकर तर्के-त'अल्लुक करना तो बिल्कुल नाजायज़ और ग़ैर-वाजिब था। फिर भी मैंने निवेदिता के तर्के-त'अल्लुक के फ़ैसले का एहताराम करते हुए आईन्दा उसे कुछ नहीं लिखा।

घर आते ही मेरी बीवी ने मुझसे पूछा कि निवेदिता का मैसेज आया था क्या, तो मैंने बताया कि हाँ, आया था। इस पर वो कहने लगी कि, “अब तो शर्म करो। जब वो तुमसे बात ही नहीं करना चाहती तो तुम क्यों पीछे नहीं हट सकते। उसने तो यहाँ तक कह दिया कि अगर उसकी जगह तुम्हारी बेटी होती तो वो भी ऐसे ही करती”। मैं हैरान था कि हमारे बीच हुए मैसेज का इसे कैसे पता चला जबकि फ़ोन मेरे पास था और ये ख़ुद घर पर नहीं थी। फिर सोचा कोई ऐप्प होगी जिससे आप दूसरों के फ़ोन पर आने वाले मैसेज को भी पढ़

सकते होंगे। लेकिन फिर उसने खुद ही बताया कि वो उस्तानी साहिबा के घर से आ रही है और उसी ने उस्तानी साहिबा के ज़रिए हमारी क्लासमेट एक लड़की से निवेदिता को ऐसा लिखने के लिए कहलवाया था। फिर ये भी खुला कि इन सबने ही पहले भी निवेदिता को कहलवाया था कि वो मुझसे ताल्लुक न रखे लेकिन उसके बावजूद मेरी तरफ़ से मैसेज भेजते रहने और ये पूछते रहने पर कि इस ख़ामोशी की वजह क्या है, उन्हें ये क़दम उठाना पड़ा। मैं इन औरतों के साजिशाना तरीक़े से इतनी बड़ी मुहिम को अन्जाम देने की क़ाबिलियत की तारीफ़ किए बिन नहीं रह सका।

जहाँ कुछ नहीं था वहाँ सिर्फ़ शक और ज़िद के चलते इतना बड़ा पहाड़ खड़ा कर दिया गया था जिसे लाँघना अगर नामुमकिन नहीं तो मुश्किल ज़रूर था। मेरे मना करने और समझाने के बावजूद मेरी बीवी ने इतना बड़ा क़दम उठाया था जिसकी बुनियाद में कुछ नहीं था। लेकिन जिन लोगों ने अपने तसव्वुर से ही एक झूठी इमारत खड़ी करके उसे तहस नहस करने का खेल खेलकर अपनी जीत पर तालियाँ बजानी हों वो उस इमारत की झूठी बुनियाद भी तैयार कर ही लेते हैं। आजकल के बच्चे कम्प्यूटर पर ऐसी ही खेलें खेलते हैं। आपने अँग्रेज़ी फ़िल्मों में देखा होगा कि वो खुद ही गॉडज़िल्ला या आग उगलते डैरेन जैसे ख़तरनाक और डरावने जानवर तैयार करते हैं, सनसनीखेज़ वाक़ियात दिखाते हैं, उससे डरते हैं और आख़िर में खुद ही उसे मारकर तालियाँ बजाते हैं। मुझे ये बात ख़ाए जा रही थी कि कल तक जो उस्तानी साहिबा मुझे एक बहुत मुहज़ज़ब इन्सान समझती थीं वो मेरे बारे में क्या सोचती होंगी। क्योंकि किसी भी इज़्ज़तदार इन्सान की पगड़ी उछालने के लिए साजिश करने वालों को सख़्त क़वायद करनी पड़ती है और झूठ सच मिलाकर कोई ऐसी कहानी बनानी पड़ती है जिससे उस इन्सान की पगड़ी गिरे और उसका समाजी क़द छोटा हो। मेरे बारे में भी मेरी बीवी ने जाने क्या क्या बोला हो। दूसरा डर डॉक्टर बॉबी का था जो किसी फ़िल्मे से कम नहीं थी। मेरी बीवी ने

मेरे फ़ोन से मेरे भेजे हुए मैसेजिज़ की खींची हुई तमाम फ़ोटोएँ उसकी हमदर्दी हासिल करने और मुझे बुरा साबित करने के मक़सद से उसे भेज दी थीं। उसी के साथ मिल कर साज़िश में उस्तानी साहिबा को शामिल किया गया था और जो बात घर में ही ख़त्म हो सकती थी उसे तूल दे दिया गया था। मक़सद साफ़ था। मेरी और निवेदिता की बदनामी करना। और इस काम के लिए डॉक्टर बॉबी से अच्छा तो और कोई शख़्स हो ही नहीं सकता। अब इतना बड़ा मुद्दा बॉबी के हाथ आए और वो इसे भुनाए नहीं ऐसा हो ही नहीं सकता। उसने ये बात उर्दू शो'अबे के कुछ तलबा कि ज़रिए फैला दी और जैसा कि लोगों का ऐसी बातों पर रहे-अमल होता है, कुछ ने मुझे ग़लत कहा होगा, कुछ ने निवेदिता को, कुछ ने निवेदिता के साथ हमदर्दी ज़ाहिर की होगी और कुछ ने यूँ ही मज़े भी लिए होंगे। लेकिन बात फैले तो बदनामी तो होती ही है। इसकी सिर्फ़ एक काट थी कि सभी तलबा को इकट्ठा बिठा कर मैं और निवेदिता उस्तानी साहिबा की मौजूदगी में अपनी पोज़ीशन साफ़ करते। मगर कोरोना की वजह से यूनिवर्सिटी बन्द होने से ऐसा कर पाना मुमकिन नहीं था। मेरे दिल में एक अजीब सी शर्मिन्दगी का एहसास घर करने लगा था। ये लोग मेरे बारे में क्या सोचते होंगे। लेकिन उस से ज़्यादा मेरा दिल निवेदिता के लिए तड़पता था। उस पर क्या गुज़री होगी? उसने खुद को कैसे सँभाला होगा? एक मासूम लड़की को बेवजह बदनाम कर दिया गया था। ऐसा करने से मेरी बीवी का ये मक़सद तो पूरा हो गया कि निवेदिता और मेरे बीच कोई ताल्लुक नहीं रह गया था। लेकिन जिस तरह ये अन्जाम दिया गया था उससे मेरे दिल में अपनी बीवी के लिए नफ़रत और गुस्सा पैदा हो गया था। अक्सर देखने में आता है कि लोग क़त्ल या जबरजिनाँ के जुर्म में पकड़े जाते हैं फिर भी उनकी बीवियाँ ये ब्यान देती हैं कि उनके ख़ाविन्द को किसी साज़िश के तहत फँसाया गया है। उनके ख़ाविन्द हरगिज़ ऐसे नहीं हैं। जबकि वो भी जानती होती हैं कि उनके ख़ाविन्द

मुजरिम हैं। यहाँ मुझपर एक बेबुनियाद इल्जाम लगाकर मेरी बीवी मुझे झूठा साबित करने और मेरी बेइज्जती करने की हर मुमकिन कोशिश कर रही थी।

कुछ दिनों बाद डिप्लोमा कोर्स के सालाना इम्तिहान के लिए फ़ॉर्म भरने के लिए यूनिवर्सिटी जाना हुआ तो मेरी बीवी भी साथ गई। आजकल वो मुझ पर नज़र रख रही थी कि मैं निवेदिता को मैसेज तो नहीं करता। जब उसे पता चला कि मैंने फ़ॉर्म भरने के लिए यूनिवर्सिटी जाना है तो वो मुझसे पहले ही तैयार हो कर बैठ गई। उसे शायद ये ख़दशा था कि वहाँ मैं कहीं निवेदिता से न मिलूँ। वहाँ हम उस्तानी साहिबा से मिले लेकिन इस मुद्दे पर कोई बात नहीं हुई। बाद में मुझे मालूम हुआ कि जब ये सब चल रहा था तो निवेदिता ने उस्तानी साहिबा से कम से कम तीन मौकों पर ये कहा कि वो उसकी बात मेरी बीवी से करवा दें ताकि वो इस मामले में अपनी पोजीशन साफ़ कर सके, मगर तीनों मौकों पर मेरी बीवी ने उससे बात करने से मना कर दिया। मेरी बात तो उसे झूठ लगती ही थी, उसने निवेदिता से बात करने से भी इन्कार कर दिया था।

इन दिनों बॉबी का अपने ख़ाविन्द से तलाक़ का केस चल रहा था, बड़ी परेशान थी। फिर एक दिन ढीला सा मुँह बनाकर आई और बताया कि उसका तलाक़ हो गया है। अब ऐसे में कोई क्या कहे। जब तक वजह पता न हो तो ये समझ नहीं आता कि मुबारकबाद दी जाए या अफ़सोस ज़ाहिर किया जाए। मेरी बीवी ने उसे दोपहर के खाने पर मदरू किया हुआ था। हम दोनों ने मिलकर खाना तैयार किया था। वो अपनी बड़ी बहन के साथ आई और खाना खाने के बाद हम लोग टैरेस पर बैठकर गपशप करने लगे। बॉबी बुरा सा मुँह बनाए बैठी थी। उसे दिलासा देने की नीयत से मैंने उससे कहा कि चलो जो हो गया उसे भूलकर नई ज़िन्दगी शुरू करो। अपने बच्चे का ख़याल करो और खुद को भी सँभालो और अगर कभी हमारी ज़रूरत पड़े तो हम उसके साथ हैं। इधर उधर की कुछ और बातें हुईं। फिर मुझसे कहने लगी कि अगर आपके पास तसव्बुफ़ पर कोई किताब हो तो देना, मैं पढ़ूँगी। मैं अपने निजी कुतुबख़ाने से तीन चार

किताबें निकाल लाया और उसे दीं। उन्हें कुछ देर उलट पलट कर देखा और कहने लगी कि अभी आप इनको रखो, मैं नये घर में शिफ्ट होने के बाद ले जाऊँगी और आराम से पढ़ूँगी। इतने में चाय आ गई और चाय पीने के बाद वो चली गई।

फिर मालूम हुआ कि उसे तलाक़ में तीन करोड़ रुपये मिले हैं। कहाँ तो तलाक़ के बाद औरतें अमूमन उदास और दुखी होती हैं मगर यहाँ बॉबी के तो रँग ढँग ही बदल गए थे। उसने शहर की सबसे मशहूर और महँगी सोसायटी में तक्ररीबन डेढ़ करोड़ का फ़्लैट ले लिया और बीस लाख के क़रीब उसे इन्टीरियर डिज़ाइनर से फ़रनिश कराने में लगाए। यानि पौने दो करोड़ का फ़्लैट। एक अकेली औरत और तीन बैड रूम का फ़्लैट! लेकिन जब पैसा इस तरह आए तो ख़र्च की परवाह कौन करता है। इस फ़्लैट को सजाने और दीगर सलाह मशविरा के साथ साथ मेरी बीवी हर रोज़ ही बॉबी के साथ शॉपिंग वगैरह के लिए जाने लगी। आपमें कितनी भी गहरी दोस्ती हो जब एक शख्स अचानक बिना कुछ किए धरे अमीर हो जाए तो उसके बर्ताव में फ़र्क़ आ ही जाता है। अगर कोई मेहनत करके अमीर बनता है तो वो ज़मीन पर ही रहता है लेकिन बिना मेहनत किए अमीर होने वाले के पैर ज़मीन पर नहीं टिकते। अभी फ़्लैट मुकम्मल तौर पर तैयार नहीं हुआ था फिर भी तक्ररीबन रोज़ ही रात गए तक पार्टियाँ और रक्खो-नग़्मे का प्रोग्राम भी होने लगा। इन महफ़िलों की फ़ोटोएँ और वीडियो बाक़ायदा फ़ेसबुक पर डाली जातीं ताकि सबको पता चले कि बॉबी ने तलाक़ के बाद कितना बड़ा फ़्लैट ख़रीदा है और वो कितनी खुश है।

एक दिन मेरी बीवी ने उसे दोपहर के वक़्त फ़ोन किया तो उसने बताया कि वो किसी काम से कहीं गई हुई थी वहीं से लौट रही है। मेरी बीवी ने उसे कहा कि वो हमारे घर आ जाए, तो उसने कहा कि वो बहुत थक गई है इसलिए वो नहीं आ पाएगी और उसने मेरी बीवी से कहा कि वो उसके यहाँ आ जाए। जवाब में मेरी बीवी ने उससे कहा कि ऐसी भी क्या थक गई हो, रात को तो

खास दोस्तों के साथ बड़ा डाँस हो रहा था। बस फिर क्या था। आगे से उसने कहा कि तू मुझसे जलती है कि मैंने इतना बड़ा फ्लैट जो ले लिया है। तू मेरे दोस्तों से भी जलती है। फिर मेरी बीवी ने भी अपने तेवर दिखाए और कहा कि तू एक फ्लैट को लेकर इतरा रही है मैं तो चार चार कनाल की कोठियों में रही हूँ, गाँव में फ़ार्म हाउस भी है पर मैंने तो कभी इतना घमँड नहीं किया। और जहाँ तक तुम्हारे दोस्तों की बात है मेरे आगे उनकी क्या औकात है जो मैं उनसे जलूँ। फिर दोनों तरफ़ से आवाज़ ऊँची हुई और साथ ही फ़ोन कटा। इस तरह एक बहुत ही मज़बूत दोस्ती अपने अँजाम को पहुँची। फिर मेरी बीवी ने सारी भड़सा मेरे सामने निकाली। “पता नहीं अपने आपको क्या समझती है? आपको पता है इसने कितने ब्वॉयफ्रेंड रखे हुए हैं? आजकल वो है जो कल रात को इसके साथ डाँस कर रहा था। फ़ेसबुक पर पोस्ट डाली है इसने, देख लेना। उससे पहले वो क्रिकेटर लड़का था जिसकी सिफ़ारिश आप से करवाई थी। उससे भी पहले एक ईरानी लड़का था उसको यार बनाया हुआ था। सबके साथ इसके जिन्सी ताल्लुकात हैं। उसने मुझे खुद बताया था। कहती थी मैं तो ज़िन्दगी के मजे लेती हूँ। बड़ी बनी फिरती है, बदकिरदार औरत। बाईस चौबीस साल के लड़कों के साथ मुँह काला करती फिरती है। तलाक़ तो होना ही था। ये तो उर्दू डिपार्टमेंट में जाती ही इसलिए थी कि मैडम से मिलने के बहाने नये तलबा में से किसी लड़के को अपने जाल में फँसा सके। इसका तो ये हर साल का काम है”। बॉबी के इस नये लड़के के साथ जिन्सी ताल्लुकात के बारे सुनकर मुझे बहुत ताज्जुब हुआ। क्योंकि वो लड़का हमारे साथ ही पढ़ता था और काफ़ी अच्छे घर से ताल्लुक रखता था।

कई दिनों तक दोनों की बात नहीं हुई। फिर एक दिन उसका फ़ोन आया तो मेरी बीवी ने नहीं उठाया। फिर वॉट्सएप मैसेज आया कि उसने गृहप्रवेश का फ़्रैक्शन रखा है जिसमें हम दोनों को मदद किया था। मेरी बीवी उसके साथ

मुकम्मल तौर पर ताल्लुक कृत'अ कर चुकी थी इसलिए वहाँ जाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था।

मेरी बीवी अक्सर ये शिकायत करती थी कि उसे बात करने के लिए कोई नहीं मिलता। सब मसरूफ़ हैं अपने अपने परिवार में। कभी कभार मेरी बहनों या अपनी भाभियों से बात करती तो बात घँटों होती। मेरे साथ अगर किसी पार्टी में जाती तो वहाँ एन्जॉय तो करती मगर घर आकर कहती कि वहाँ सभी ख्वातीन उससे उम्र में बड़ी थीं। अब वो साठ साल की ख्वातीन को अपनी दोस्त तो नहीं कह सकती। खुल कर बात भी नहीं कर सकती। उसकी बात सही थी। मेरे सभी दोस्त साठ के ऊपर के हैं कुछ सत्तर से भी ऊपर। उनकी बीवियाँ भी साठ से ऊपर ही की थीं। शिकायत ये भी थी कि उसे मेरी वजह से पार्टियों में जाना पड़ता है नहीं तो उसकी इन पार्टियों में कोई दिलचस्पी नहीं। जब से बॉबी से मुलाकात हुई थी तब से उसे फ़ोन पर बात करने को एक मुस्तक़िल दोस्त मिल गई थी और दोनों में तक्ररीबन रोज़ाना ही लम्बी चौड़ी बातें होतीं। फिर जब बॉबी ने फ़्लैट ले लिया तब से उसकी आराइश और सलाह मश्वरे वगैरह के सिलसिले में वो अक्सर रोज़ ही वहाँ जाने लगी। अब चूँकि उसे बॉबी की बदौलत मेरी उस्तानी साहिबा की भी दोस्ती मुहैया हो गई थी तो उनसे भी फ़ोन पर लम्बी चौड़ी बातें होने लगीं। मुझे खुशी थी कि चलो अब उसका वक़्त फ़ोन पर अच्छा कटने लगा था और फ़ोन पर बातें ख़त्म होने के काफ़ी वक़्त बाद तक भी उसका मूड खुशगवार रहने लगा था। लेकिन मैं ये भी सोचता था कि इतनी लम्बी गुफ़्तगू और वो भी हर रोज़ किस बात पर होती होगी। एक दिन मैंने अपनी बीवी को उस्तानी साहिबा से बात करते हुए सुना भी कि आज उसने क्या पकाया है, क्या खाया है, फ़लाँ पकवान की रेसिपी क्या है, कैसे मैरीनेट किया है, वगैरह। फिर ये कि बच्चे को नहलाया है, कपड़े पहनाए हैं, वो अभी खेल कर आया है, अभी उसे दूध दूँगी, वो कह रहा था, मम्मा आज मटन बनाना, वो वैसे तो सभी नॉन वैज खाता है पर मटन का बहुत शौकीन हैं।

ऐसी बातें जो कभी खत्म हो ही नहीं सकतीं। मैं अपनी उस्तानी साहिबा की कुव्वते-सामिया पर भी हैरान था। कोई एक ही मौजू पर हर रोज़ घंटों तक कैसे तक्रीर कर सकता है और दूसरा कैसे सुन सकता है। खैर, दोनों खुश थीं।

उसी दिन मेरी बीवी को उस्तानी साहिबा का फ़ोन आया कि बॉबी ने उनको अपने फ़ैक्शन पर मदद किया है लेकिन फ़ैक्शन बहुत लम्बा है। पहले दिन में पाठ रखा हुआ है, जिसके बाद लंच है और उसके बाद शाम को रक्सो-नग्मा के प्रोग्राम के बाद डिनर है। मैं सोच रही हूँ कि सुबह वाले फ़ैक्शन में चली जाऊँगी। पूरा दिन वहाँ रहने से तो थक भी जाऊँगी और फिर शाम के फ़ैक्शन के लिए वापस इतनी दूर आना, कपड़े बदल कर फिर जाना और देर रात लौटने में तो बड़ी परेशानी होगी। ड्राइवर भी परेशान हो जाएगा। मेरी बीवी ने उन्हें सलाह दी कि आपने शाम को जो कपड़े पहनने हैं वो साथ में रख लेना और सुबह के फ़ैक्शन में शिरकत के बाद हमारे घर आ जाना। यहाँ कुछ देर आराम कर लेना, चाय पानी पीकर, शाम को तैयार हो कर वापस फ़ैक्शन में चले जाना। इस बीच ड्राइवर को छुट्टी कर देना। वो पाँच साढ़े पाँच बजे आकर आपको फ़ैक्शन में ले जाएगा। उस्तानी साहिबा को ये बात ज़ुबान पर आई और उन्होंने ऐसा ही करने का फैसला किया। मेरी बीवी ने उनको ये भी बताया कि बॉबी के साथ उसका झगड़ा हो गया है इसलिए हम लोग उसके फ़ैक्शन में नहीं जा रहे। उस्तानी साहिबा के लिए चाय नाश्ते के इन्तज़ाम का एहतमाम मेरे जिम्मे था सो मैंने उनके आने तक वो यक्रीनी बना लिया था।

तक्ररीबन दो बजे उस्तानी साहिबा हमारे घर आई और बताया कि वो शाम के फ़ैक्शन में नहीं जाएँगी। पूछने पर कहने लगीं कि, “बॉबी को तो होश ही नहीं था कि क्या हो रहा था। अगर आपने किसी को मदद किया है तो उसका ख़्याल भी करना चाहिए। लेकिन वो तो अपने में ही मस्त थी। उसने न तो किसी के साथ मेरा त’आरुफ़ करवाया न मेरे पास बैठी। खाना भी नहीं पूछा। वो तो अच्छा हुआ कि मुझे अपने कुछ तलबा मिल गए। वो ही मेरे पास

आकर बैठे, चाय नाश्ता भी उन्होंने ही करवाया और लैच भी वो ही प्लेट में डाल कर ले आए। अगर वो लोग वहाँ न होते तो मुझे तो किसी ने पूछना ही नहीं था क्योंकि किसी को पता ही नहीं था कि मैं कौन हूँ। बॉबी को तो ध्यान ही नहीं था कि उसने मुझे भी मदद किया हुआ है। वो तो बस अपनी बहनों को इम्प्रेस करने में ही मसरूफ़ रही। अब मैं दोबारा वहाँ नहीं जाऊँगी। हमें ये सुनकर बड़ा अजीब लगा। आप किसी को अपने घर बुला कर ऐसा बर्ताव नहीं कर सकते। मेहमान नवाज़ी भी एक समाजी खूबी है जो हर किसी में होनी ही चाहिए। उसी से आपके किरदार का पता चलता है। किसी को घर बुलाकर नज़र अन्दाज़ करना तो उस शख्स की तौहीन है। उस्तानी साहिबा ने ऐसा ही महसूस किया था।

खैर, हम लोगों ने काफ़ी गपशप की जिसका ख़ास मरक़ज़ बॉबी ही थी। उस्तानी साहिबा ने हमारे बेटे के साथ भी ख़ूब बातें कीं। चाय का वक़्त हुआ तो चाय पी। फिर घर का चक्कर लगाया। मैंने उनको अपना कुतुबख़ाना दिखाया। जाने लगीं तो मेरी बीवी ने उनको तोहफ़े के तौर पर एक सूट दिया और हमने खुशी खुशी उन्हें रुख़्सत किया। वो भी हमारे साथ गुज़ारे इस वक़्त से खुश थीं।

मैं अपनी बात कर रहा था लेकिन बॉबी का ज़िक्र छिड़ जाने की वजह से मेरी बात तो अधूरी ही रह गई। मेरी बीवी ने बेशक बॉबी और उस्तानी साहिबा के साथ मिलकर मेरी बेइज़्जती और निवेदिता की रुसवाई करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी फिर भी उसका दिल नहीं भरा था। अब पता नहीं कि वो मुझसे माफ़ी माँगवाना चाहती थी या ये चाहती थी कि मैं और निवेदिता उसे लिखकर दें कि हम आईन्दा कोई ताल्लुक नहीं रखेंगे। उसने अभी भी अपना रवैय्या नहीं बदला था। मुझमें और निवेदिता में कोई ताल्लुक तो रह ही नहीं गया था और जो कभी था मैं उसमें न तो अपना और न ही निवेदिता का कोई कुसूर समझता था। अगर किसी को माफ़ी माँगनी ही थी तो वो थी मेरी बीवी।

पहली बात तो ये कि उसे मेरा फ़ोन चैक नहीं करना चाहिए था। अगर वो मुझसे यूँ भी पूछ लेती कि मैं रात को फ़ोन पर क्या लिखता हूँ और किस को मैसेज करता हूँ तो मैं उसे ख़ुद ही बता देता कि मैं रात के सुकूत में शायरी करता हूँ और ये भी कि जब कोई फ़नपारा मुकम्मल होता है तो मैं उसे निवेदिता को भेज देता हूँ। यही शायद मैंने उसे बताया भी था लेकिन मेरी बात पर यक्रीन करने की बजाय या ये कहने की बजाय कि आईन्दा मैं निवेदिता को अपनी शायरी न भेजूँ उसने इसे ऐसी रँगत दी जिसमें कोई सच्चाई नहीं थी और उस पर बॉबी को मैसेजिज की फोटोएँ भेज कर हमें पूरे शो'अबे में बदनाम किया जो बिल्कुल नाक्राबिले-बर्दाश्त क़दम था। प्राइवैसी एक ऐसी निजी दौलत होती है जिसमें अगर कोई दखल देता है तो उसे चोरी समझा जाता है। आजकल आपका फ़ोन एक ऐसी चीज़ बन गया है जिसमें आप अपनी बहुत सी निजी मालूमात रखते हैं। आप चाहे मियाँ बीवी ही क्यों न हों आपको कोई हक़ नहीं कि आप एक दूसरे का फ़ोन चैक करें, उसमें से निजी मालूमात को पढ़ें, उनकी फोटोएँ खींचें और फिर उनको दूसरों में तक़सीम करें। फिर उन मालूमात की बुनियाद पर आप उस फ़र्द को बदनाम करें। ये एक कानूनी जुर्म है। मैंने तो कभी अपनी बीवी का फ़ोन चैक नहीं किया। जैसा कि मैंने बताया कि मेरी बीवी मुझसे बहुत छोटी है, तक़रीबन उन्नीस बरस का फ़र्क़ है हमारी उम्र में। ख़ौफ़-ओ-ख़दशा तो मुझे होना चाहिए कि जैसे मेरी उम्र बढ़ रही है कहीं वो किसी जवान आदमी के साथ न चली जाए। लेकिन यहाँ उल्टा है। मुझे नहीं मालूम ऐसी कौन सी औरत हो सकती है जो एक पैसठ साल के आदमी के साथ भाग जाएगी चाहे उसकी ख़ुद की उम्र भी पैसठ क्यों न हो। फिर एक पच्चीस-छब्बीस साल की लड़की पर शक़ करना कि कहीं वो मेरे पैसठ साल के ख़ाविन्द को न ले उड़े कितना जायज़ है? मुझसे अगर कुछ पूछा जाए तो मैं एक ही बार उसका जवाब देता हूँ। बार बार एक ही बात को कुरेदना न तो मुझे पसन्द है और न ही जायज़ लगता है। मेरी बीवी को दूसरी बार पहली

ही बात समझाने में एक दिक्कत ये भी है कि दूसरी बार वो ही जवाब देने में अगर पहली बार दिए गए जवाब से कोई कौमा या फुल स्टायप आगे पीछे लग जाए तो फिर सफ़ाई दो। ऐसा मुझसे होता नहीं। अमूमन मैं हर काम बहुत सोच समझ कर करता हूँ जिससे उसमें ग़लती की कोई गुंजाइश ही न रहे, लेकिन फिर भी अगर ग़लती हो जाए तो मैं उसी वक़्त माफ़ी माँग लेता हूँ। जहाँ ग़लती की ही न हो और सिर्फ़ आपको लगे कि ग़लती की है वहाँ मैं माफ़ी नहीं माँगता। वहाँ मैं आपको कहूँगा कि आप इस वाक़ये को देखने का अपना नज़रिया बदलें।

लेकिन ये बातें आप बाहर किसी से भी कर सकते हैं और उन्हें मनवा भी सकते हैं मगर बीवी के आगे ये लॉजिक भी फ़ेल हो जाता है। मेरी बीवी ने ये रट नहीं छोड़ी। मेरी और निवेदिता की बदनामी करवाने के बाद भी उसका दिल नहीं भरा तो उसने मेरी एक चालीस साल पहले की अंग्रेज़ी की एम ए की क्लासमेट जिसका हमारे यहाँ आना जाना था को बुला भेजा कि वो आकर मुझे समझाए। उससे फ़ोन पर न जाने क्या क्या कहा होगा। वो आई, मुझसे पूछा कि क्या मस'अला है तो उसे सारी बात बताई। मुझे बहुत अजीब लग रहा था कि जो लड़की चालीस साल पहले मेरे साथ पढ़ती थी और जो तब भी मुझे बहुत अच्छा इन्सान और अपना भाई ही समझती थी मेरी बीवी की बातें सुनकर मेरे बारे में क्या सोचती होगी। उसने जाते जाते मुझसे कहा कि, “भई अपने ताल्लुक़ात सुधारो।” मैंने उसे इतना कहा ही था कि जैसा मेरी बीवी सोचती है ऐसा कुछ है ही नहीं तो उसी के सामने चिल्लाना शुरू कर दिया। अब उसे ये समझ न आए कि वो जाए या रुके। यहाँ भी कोई बात न बनती देख मेरी ममेरी बहन जो मुझसे दो ढाई साल बड़ी है और मेरी सगी बहन जो मुझसे ग्यारह साल छोटी है उनको बुला भेजा कि वो अपने मियाँ लोगों को साथ लेकर आएँ और मुझे समझाएँ। मुझे जब उनका फ़ोन आया तो मैंने उनको बताया कि क्या मस'अला है। उनसे ये भी कहा कि अगर आपने वैसे मिलने

आना है तो हजार बार खुशआमदीद लेकिन इस मामले में वो बिल्कुल न आएँ मेरी बीवी ने फिर भी उन्हें मजबूर किया कि वो आएँ और एक दिन मेरी छोटी बहन के खाविन्द का फ़ोन आया कि मैं घर ही पर हूँ कि नहीं। मैंने पूछा क्या हुआ तो बोले, हम आपके पास दस मिनट में पहुँच रहे हैं। भाभी का फ़ोन फिर आया था और उसने इसरार किया था कि इस बार आपको बिना बताए ही आएँ और हमारा मस'अला हल कर के जाएँ। साथ ही मेरे एक दोस्त जो मेरे साथ पाँचवी क्लास से पढ़ता था को उसकी बीवी समेत बुला भेजा। पूरी कचहरी लगी। मुकम्मल कोर्ट मार्शल हुआ। एक तरफ़ मेरी बीवी समेत सात लोग, दूसरी तरफ़ मैं अकेला अपने ऊपर लगे इल्जामात का जवाब देता हुआ। सबने मुझे समझाया और कहा कि भाभी कहती हैं कि वो आपके लिए बहुत पोज़ेसिव है, इसलिए वो ये बर्दाश्त नहीं कर सकती कि आपका किसी ग़ैर औरत के साथ ताल्लुक हो। मैंने भी उन्हें बताया कि अगर ताल्लुक नाजायज़ हो तो बात समझ में आती है मगर इस तरह पोज़ेसिव हूँ कहकर एक अच्छे भले इन्सान को इस ज़ालिमाना तरीक़े से क़ाबू में रखने की ज़िद सरासर ग़लत है। ऐसे माहौल में मैं खुल कर साँस भी नहीं ले पाता। मेरा दम घुटता है। फिर भी मुझसे कहा गया कि मैं अपनी बीवी को सॉरी बोलूँ और मेरी बीवी से भी कहा कि चलो पुरानी बातें भूल कर आपस में मिलो। आप समझ सकते हैं कि मेरी बहनों, उनके खाविन्दों, मेरे बावन साल से रहे दोस्त और उसकी बीवी के सामने मेरी क्या फ़ज़ीहत हुई होगी। फिर भी मैं उठा और बीवी को गले लगाकर उसे सॉरी बोला लेकिन इसके बावजूद उसने कोई अच्छा रिस्पॉन्स नहीं दिया। सब अपने अपने घर चले गए लेकिन हमारा मस'अला ज्यों का त्यों रहा। मुझे लगा था कि मेरी बहनों और मेरे दोस्तों में भी मेरी बदनामी करने और मुझसे माफ़ी माँगवा लेने के बाद अब ये मामला दोबारा नहीं उठाया जाएगा लेकिन मैं ग़लत था। मेरी बीवी ने इस मस'अले को न सिर्फ़ ज़िन्दा रखा हुआ था बल्कि उसे रोज़ किसी न किसी बहाने कुरेदने की क़वायद भी जारी रखी हुई थी। मेरी

तो काफ़ी हतक्र हो चुकी थी मगर शायद वो ये सोचती थी कि वो अभी तक निवेदिता को मुकम्मल तौर पर पस्त नहीं कर पाई। अब निवेदिता उसके निशाने पर थी। मेरी तवक्क़ोह से परे वो अब भी किसी ऐसे मौक़े या ऐसे किसी बहाने की तलाश में थी जहाँ से ये ज़ंग फिर शुरू की जा सके।

किसी को प्यार करना एक कुदरती अमल है मगर किसी के लिए पोज़ैसिव होना एक नफ़िसयाती बीमारी है जो बीमार को तो परेशान करती ही है मगर उसके हदफ़ को तो ज़िन्दान में रहने जैसी ज़िन्दगी जीने पर मजबूर कर देती है और ऐसी ज़िन्दगी एक मुसन्निफ़ के लिए तो बिल्कुल ग़ैर माकूल है। उसकी क़ाबिलियत और सलाहियत पर बुरा असर डालती है। बीमार इस बात से अनजान होता है कि वो बीमार है मगर उसका शिकार तो जीने के भी क़ाबिल नहीं रहता। यही हाल मेरा भी था। ऐसा नहीं कि मैं अपनी बीवी से प्यार नहीं करता। मैं उससे बेइन्तहा प्यार करता हूँ मगर मेरा अपने प्यार के इज़हार का तरीक़ा और है। मैं फ़ितरतन एक ख़ामोश तबीयत इन्सान हूँ और दिखावे में यक़ीन नहीं रखता। मगर इसका मतलब हरगिज़ ये नहीं कि मैं उससे प्यार नहीं करता। इस बात को वो भी जानती है मगर उसे ये बर्दाश्त नहीं कि मैं किसी दूसरी औरत से बात भी करूँ। मेरी बीवी बला की ख़ूबसूरत है। ऐसी ख़ूबसूरत कि बड़ी से बड़ी फ़िल्मी हीरोइनें भी उसके आगे कुछ नहीं। इतनी ख़ूबसूरत बीवी के होते कोई क्योँ किसी ग़ैर औरत से नाजायज़ ताल्लुक़ात रखेगा। लेकिन वो ये बात समझती ही नहीं या मेरे प्यार को ही नहीं समझती। अब जबकि दुनिया की तक्ररीबन आधी आबादी औरतों की है तो जहाँ मेरी मुलाक़ात या बातचीत मर्दों से होती है तो लाज़िम है कि कुछ औरतों से भी होगी। अब ऐसा तो है नहीं कि जिस मर्द या औरत से मेरी मुलाक़ात हो मैं उसे घर ही ले आऊँ। जिन औरतों से मेरी मुलाक़ात या बातचीत हो मेरी बीवी का उनसे मेरे नाजायज़ ताल्लुक़ात होने का शक़ करना मेरी तौहीन के अलावा उन

औरतों के किरदार की भी तौहीन है। ऐसे में आप पोज़ेसिव होने की आड़ में किसी की इज़्जत नहीं उछाल सकते।

दिन गुज़रने लगे और मुझे लगने लगा कि अब हालात ठीक होने लगे हैं। एक दिन मुझसे कहने लगी कि घर में खाना बनाने के लिए कोई कुक रखो। यूँ तो मैं घर में कुक रखने के हक़ में बिल्कुल नहीं हूँ फिर भी मैंने कहा कि रख लो। मेरे ऐसा सोचने के पीछे कई वजूहात हैं। पहला तो ये कि जो लोग हमारे यहाँ कॉलोनियों में घर घर जाकर खाना बनाते हैं वो कोई तरबियत याप्रता कुक नहीं हैं और अच्छा खाना नहीं बनाते। उनके पास खड़े होकर हर चीज़ बताने और सिखाने से बेहतर है खुद ही बना लो। दूसरा उनकी अपनी सफ़ाई और खाना बनाते वक़्त आस पास की सफ़ाई हमेशा मश्कूक होती है। तीसरे वो अपने वक़्त पर आकर खाना बनाकर चले जाते हैं। बहुत बार तो ब्रेकफ़ास्ट के साथ ही लंच या लंच के साथ ही डिनर भी बना कर वो तो फ़ारिश हो जाते हैं क्योंकि उनको और घरों में भी खाना बनाना होता है जबकि आपको वही बासी खाना खाना पड़ता है। अगर आप मख़सूस तौर पर अपने लिए कुक रखते हैं तो वो इतने पैसे माँगता है जिसमें आप का दो ढाई महीने का राशन आ जाए। फिर जो आपका निजी कुक है वो खाना भी आपके घर में ही खाएगा। आप दो रोटियाँ या एक कप चावल खाएँगे वो दस रोटियाँ और आधा किलो चावल खाएगा। अगर चिकन या मटन बना है तो वो आप से ज़्यादा खा जाएगा। अक्सर देखने में आता है कि आप कमज़ोर हो रहे हैं और आपके कुक का वज़न बढ़ रहा है। देसी घी का डिब्बा हफ़्ते दस दिन में खाली होना शुरू हो जाता है। आपको कभी बाहर खाना खाना हो या किसी पार्टी में जाना हो तो कुक के लिए तो फिर भी बनेगा। यानि आप मुँह माँगी तनख़्वाह भी दो और राशन भी आधे वक़्त में ख़त्म करो। फिर वो आपके सारे घर के भेद भी पा जाता है। हो सकता है जिस दिन आप घर में नहीं हों वो अपने साथियों को बुला लाए और सब लूट कर ले जाए। फिर भी बीवी के आगे किसकी चली है

जो मेरी चलती। कोरोना तक का हवाला दिया पर वो अड़ी रही। एक दो लोगों को कुक की तलाश में लगाया गया। तीन चार दिन बाद एक हड्डा कट्टा गोरखा आ गया। उसने लैच बनाया और चला गया। मुझसे वो लैच खाया नहीं गया। ये तो गनीमत था कि उसे मना नहीं करना पड़ा। अगले दिन से वो खुद ही नहीं आया। दो दिन बाद एक औरत आई। उसका चेहरा देखकर ही लग रहा था कि वो बीमार है। उस दिन उसने खाना बनाया और फिर नहीं आई। ये खाना भी मुझे पसन्द नहीं आया। इससे कहीं बेहतर तो मैं खुद बना लेता हूँ। दो दिन बाद मेरी बीवी करेले बना रही थी तो मुझसे बोली कि उसे पकते हुए करेलों की खुशबू नहीं आ रही। मैंने कहा कि मुझे तो आ रही है। अगर तुम्हें नहीं आ रही तो तुम्हें कोरोना हो गया है। बोली आप तो मेरे लिए बुरा ही सोचोगे। मैंने कहा कि पकते हुए करेलों की खुशबू तो सारे मुहल्ले में फैल जाती है, अगर तुम्हें नहीं आ रही तो कोरोना हो सकता है। हालांकि उसने अलग कमरे में सोना शुरू कर दिया था फिर भी तीसरे दिन मुझे भी कोरोना ने अपनी गिरफ्त में ले लिया। हो न हो ये उन दोनों कुक्स में से किसी एक की तरफ से दिया गया तोहफ़ा था। लेकिन शिकायत किससे करें। कोरोना को तो हम खुद बुलाकर घर लाए थे। दस बारह दिन ईलाज चला। ठीक भी हो गए लेकिन वो पहली सी तवानाई नहीं थी जिस्म में। हम दोनों बीमार थे इसलिए बच्चे को अलग तीसरे कमरे में सोने के लिए कहा गया। वो तो कभी हमसे अलग सोया ही नहीं था। उसे समझाया तो मान गया। लेकिन रात को किसी वक़्त उठा तो जाकर माँ के साथ जा सोया। मेरे कमरे में टीवी था। टीवी के लालच में वो मेरे पास भी आता और हम दोनों ही मास्क पहन कर बैड के मुख्तलिफ़ अतराफ़ में बैठे होते। उस दिन मैंने कहीं अपनी बीवी से कहा कि ये कोरोना वो खुद बुलाकर लाई है। दुनिया भर को हुआ मगर हम बचे हुए थे। अगर उसने कुक रखने की ज़िद न की होती तो शायद हमें ये नहीं होता। बस फिर क्या था। बुड़ बुड़ शुरू। बेटा मेरे पास से उठकर अपने कमरे में गया तो ज़ोर ज़ोर की आवाज़ें आनी

शुरू हो गई। वो बच्चे को डाँट रही थी कि मेरे कमरे में बार बार क्यों जाता है। हम कभी कभार बच्चे को डाँटते हैं मगर ऐसी ऊँची आवाज़ में नहीं। मुझे लगा जो गुस्सा मुझ पर करना था वो बच्चे पर निकाला जा रहा है। मुझसे बर्दाश्त नहीं हुआ। मैं उठकर उसके कमरे में गया और उसे डाँटते हुए बोला कि ये क्या तमाशा है। अगर गुस्सा मुझ पर है तो मुझ पर करो, मेरा गुस्सा इस मासूम पर क्यों उतार रही हो। आगे से उसने भी कुछ बोला जिस पर मुझे भी गुस्सा आ गया। मैंने उससे कहा कि इतने लोग कोरोना की वजह से मर गये हैं मगर तुम्हें समझ नहीं आई। शुक्र करो कि हम लोग ज़िन्दा हैं। अगर तुमने दोबारा इसे मेरी वजह से डाँटा तो पहले मैं इसे गोली मारूँगा फिर खुद को मार लूँगा। तू बैठी ढोल बजाती रहना उसके बाद। खामोशी छा गई।

कुछ दिन बाद ईद थी। हम दोनों बच्चे को साथ लेकर ईद की मुबारकबाद देने के लिए उस्तानी साहिबा के घर गए। वहाँ हमने काफ़ी अच्छा वक़्त गुज़ारा। बहुत देर बातें करते रहे, फिर खाना खाया। लौटते वक़्त उस्तानी साहिबा ने मेरी बीवी और बेटे को तहायफ़ देकर विदा किया। बहुत दिनों के बाद बड़ा अच्छा दिन गुज़रा था। शाम को मेरी बीवी ने मुझे बताया कि वो मेरी शिकायत पुलिस को कर रही है। उसने किसी वकील से मिलकर एक शिकायत लिखवाई हुई थी जो उसके फ़ोन पर थी और उसने मुझसे पढ़ लेने को कहा। उसमें लिखा था कि मेरे ख़ाविन्द का निवेदिता के साथ इश्क़ का मुआमला चल रहा है और इसकी वजह से वो हमारे साथ अच्छा सलूक नहीं कर रहा है। वो बच्चे को पीटता है और मुझे जान से मार डालने की धमकी देता है। हमें बहुत डर लग रहा है। हम उसके साथ महफूज़ नहीं है। उसके पास एक रिवाल्वर है जिससे वो हमें कभी भी मार सकता है। हमें उससे बचाया जाए। अमूमन ऐसी शिकायत पढ़ कर किसी के भी पैरों तले से ज़मीन खिसक जाए लेकिन मैंने ऐसा कोई रद्दे-अमल नहीं होने दिया। मैं जानता था कि ये सब झूठ है। मैं वहाँ से चुपचाप उठकर अपने कमरे में आ गया। मैंने उससे बिल्कुल नहीं कहा कि वो ये

शिकायत पुलिस को न दे। अगली सुबह मेरी बीवी वो शिकायत बाक्रायदा पुलिस कप्तान को दे आई। मुझे अगले दिन बुलाया गया। पूछा गया। मैंने जो सच था वो बता दिया। मेरी स्टेटमेंट लेकर मुझे जाने को कह दिया। जब दो चार दिन देखा कि मैं तो बड़े आराम से घर में ही हूँ तो वो दोबारा पुलिस के पास पहुँच गई। वहाँ पुलिस कप्तान के रीडर ने बताया कि उन्होंने मेरी स्टेटमेंट ले ली है। कप्तान साहब पढ़ेंगे और फ़ैसला लेंगे। फिर उन से कह आई कि निवेदिता को यहाँ बुलाओ और उससे पूछो कि वो मेरे खाविन्द के साथ क्या कर रही है। दो चार दिन बाद मुझे फिर बुलाया गया तो रीडर ने मुझे बताया कि मैडम हम पर नाराज़ हो रहे थे कि हमने आपको गिरफ़्तार क्यों नहीं किया। मैंने कहा, भई शिकायत आपके पास है, आप अपनी कार्रवाई करें। मुझे गिरफ़्तार करें, मुझ पर केस दर्ज करें और कल मैजिस्ट्रेट के पास पेश करें। मुक़दमा चलने तक जुडीशियल कस्टडी में रखें। मजाल है जो मैं ज़मानत भी करवाऊँ। इतना सब होने पर उस घर में रहना ही कौन चाहता है। कहने लगा, सर आप इतने बड़े अफ़सर हैं हम ऐसा कैसे कर सकते हैं। मैंने कहा जब मैं बड़ा अफ़सर था तब वो बीवी जो मेरे साथ रही है जब वो ही मेरी पगड़ी उतारने पर बज़िद है तो फिर आप क्यों मेरा लिहाज़ कर रहे हैं। फिर उसने बात बदल दी। कहने लगा मैडम निवेदिता को भी यहाँ बुलाने पर ज़ोर दे रही हैं। मैंने कहा, आप मैडम की सुन लो या क़ानून की सुन लो। यहाँ यही लिखा है न कि मेरे खाविन्द का निवेदिता के साथ लव अफ़ेयर है। इसमें निवेदिता पर कौन सा जुर्म आयद होता है। उसे यहाँ बुलाने का मक़सद सिर्फ़ मेरी बीवी की ज़िद पूरी करना और निवेदिता को नीचा दिखाना ही है। वो मेरी बात से राज़ी तो हुआ फिर भी बोला कि अगर मैडम ने ज़्यादा इसरार किया तो उनकी तसल्ली के लिए एक बार इस लड़की को बुला लेंगे। मैंने उससे कहा कि आप ऐसा करने से पहले कप्तान साहब से पूछ लेना। मुझे नहीं लगता कि वो आपको निवेदिता को यहाँ बुलाने के लिए

कहेंगे। मेरी बीवी के शक के चक्कर में आप एक मासूम लड़की की ज़िन्दगी में खलल न ही डालें तो ठीक होगा।

काफ़ी दिन गुज़र गए। सब ठीक चल रहा था। हम लोग आपस में बात भी कर रहे थे। खाना भी इकट्ठे ही खाते थे। सोते भी एक ही कमरे में थे। मुझे अब ये महसूस हो रहा था कि हमारे बीच अब कोई मस'अला नहीं रह गया था। पुलिस ने फिर बुलाया और पूछा कि अब माहौल कैसा है तो मैंने बताया कि अब सब ठीक है। कप्तान के रीडर ने मुझसे कहा कि मैं इसी बात की एक और स्टेटमेंट लिख कर दे दूँ ताकि शिकायत बन्द की जा सके। मैंने उसे लिखकर दे दिया कि अब हमारे बीच कोई मस'अला नहीं है और हम खुशी-खुशी एक ही घर में एक ही कमरे में इकट्ठे रह रहे हैं। मुझे ठीक से याद नहीं कि क्या हुआ था मगर कुछ दिन बाद फिर किसी बात पर हमारा झगड़ा हो गया और बात आकर निवेदिता पर जा अटकी। कहने लगी मैं जब तक निवेदिता को मज़ा नहीं चखा लेती तब तक चैन से नहीं बैठूँगी। मैंने उसे फिर समझाया कि वो ख्वाह-मख्वाह निवेदिता के पीछे पड़ी है जबकि मैं बीसीयों बार उसे कह चुका हूँ कि जो हुआ उसमें निवेदिता का कोई कुसूर नहीं है। कहने लगी ये मत समझना कि मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया है। मैंने पुलिस को दी हुई शिकायत अभी पैडिंग रखी हुई है। सुनकर मुझे गुस्सा आ गया और मैंने उसे ज़ोर से एक थप्पड़ जड़ दिया। कहाँ तो मैं ये समझ रहा था कि हमारे बीच सब ठीक हो गया है, यहाँ तक कि मैं ये बात पुलिस को लिख कर भी दे आया था लेकिन यहाँ तो तेवर ही अलग थे। समझ में आने लगा कि मस'अला माफ़ी माँग लेने के बाद भी ठीक होने वाला नहीं है। जब कोई आपको धक्का दे और आप एक क्रदम पीछे हट जाओ, वो फिर धक्का दे, आप फिर पीछे हट जाओ, फिर धक्का दे, आप फिर पीछे हट जाओ, फिर धक्का दे और आपको लगे कि आप और पीछे नहीं हट सकते क्योंकि पीछे दीवार आ गई है, तो आपका रद्दे-अमल वापस धक्का देने का ही होता है। बर्दाश्त की भी कोई हद होती है, और

मेरी बर्दाश्त की हद पार हो चुकी थी। अब चाहे जो हो जाए मैं इस बेवकूफी को और बर्दाश्त करने के मूड में बिल्कुल नहीं था। अगले दिन फिर पुलिस का बुलावा आ गया। पूछताछ हुई और मैंने उनसे कह दिया कि आप लोग जो भी कानूनी, गैर कानूनी कार्रवाई मुझ पर करना चाहते हैं करें, मुझे कोई एतराज नहीं होगा। उन्होंने मुझसे कहा कि मैडम कह रहे थे कि कल आप उस लड़की का नाम सुनते ही भड़क गए और आपने मैडम पर हाथ भी उठाया। मैंने बताया कि हाँ ऐसा हुआ है मगर उस लड़की का नाम सुनकर नहीं बल्कि इस बात पर कि एक तरफ तो मैं तमाम तरह की कोशिशें कर रहा हूँ कि हमारे त'अल्लुकात सुधरें दूसरी तरफ ये अब भी मेरे खिलाफ़ अपनी शिकायत बरकरार रखे हुए थी। रीडर ने मुझसे कहा कि मैडम चाहते हैं कि हम एक बार उस लड़की को जरूर बुलाकर पूछताछ करें। मैंने कहा अगर आपने मैडम की ही सुननी है तो जरूर बुला लो लेकिन उससे कुछ हल होने वाला नहीं।

जैसा कि मैंने पहले जिक्र किया था कि हमारा सभी तलबा का एक वॉट्सएप ग्रुप बना हुआ था और उसमें हम लोग शायरी भी पोस्ट करते थे। इतनी बदनामी होने के बाद अपने क्लासमेट्स को ये एहसास दिलाने के लिए कि जो उन्होंने मेरे बारे सुना है वो ठीक नहीं है, मैंने हस्बे-मामूल उस ग्रुप में अपनी शायरी भेजना जारी रखा। इस ग्रुप में निवेदिता भी थी। मेरी बीवी ने उस्तानी साहिबा से कहा कि उसे बताए कि क्या मैं अब भी ग्रुप में शायरी पोस्ट करता हूँ। जब उन्होंने बताया कि हाँ अब भी पोस्ट करता है तो ये कहा गया कि मेरी पोस्ट्स को उसे भी फॉरवर्ड करें। उस्तानी साहिबा ने वो भी किया। फिर मेरी बीवी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं अब भी ग्रुप में शायरी पोस्ट करता हूँ तो मैंने कहा कि हाँ करता हूँ तो कहने लगी कि क्या इसलिए कि उसे निवेदिता पढ़ सके। यहाँ मैंने गुस्से का इज़हार करते हुए कहा कि तुम्हारी सुई अभी तक वहीं क्यों अटकी हुई है। ग्रुप में पोस्ट करता हूँ तो ज़ाहिर है जहाँ बाक़ी लोग पढ़ते हैं वो भी पढ़ती होगी। अब वो ये देखना चाहती थी कि मैं ग्रुप में क्या

पोस्ट करता हूँ, सो उसने फिर उस्तानी साहिबा को ज़हमत दी और कहा कि वो उसे भी ग्रुप में मेम्बर बनाएँ। जब उस्तानी साहिबा ने क़वायद का हवाला देते हुए कहा कि वो तलबा की बीवियों को मेम्बर नहीं बना सकतीं तो उन्हें भी खरी खोटी सुनाई। यहाँ तक कह दिया कि आप हो क्या? फ़क़त एक प्रोफ़ेसर? मैं कमिश्नर साहब की बीवी हूँ। उधर से फ़ोन कटा। इस तरह एक और गहरी दोस्ती भी अपने अँजाम को पहुँची।

गन्ना इतना मीठा होता है कि उसे आप जितनी बार बेलने में निचोड़ो वो उतनी बार आपको मीठा रस देता है। लेकिन फिर एक मरहला आता है जहाँ वो भी जवाब दे जाता है। दोस्ती को भी उतना ही निचोड़ना चाहिए जहाँ तक बर्दाश्त हो सके।

मुझे इस बात की फ़िक्र हो रही थी कि अगर पुलिस निवेदिता को बुलाती है तो उस पर क्या गुज़रेगी। जब उसे ये भी नहीं पता कि मेरी बीवी और मेरे बीच का मस'अला इतना सँगीन हो गया है कि पुलिस तक बात जा पहुँची है तो ये पता चलने पर कि मेरे खिलाफ़ शिकायत में उसका भी नाम शामिल है और वो भी यूँ कि उसके साथ मेरा मुआशिका चल रहा है तो वो क्या सोचेगी, उस पर क्या गुज़रेगी और उसका रद्दे-अमल क्या होगा। अगर इस बात में ज़रा सी भी सच्चाई होती कि मेरा और निवेदिता का लव अफ़ेयर चल रहा है तो मैं खुद ही पुलिस और अपनी बीवी के सामने ये बात कुबूल कर लेता और निवेदिता को भी बुलाकर ये बात कहलवा देता कि हाँ, हमारा लव अफ़ेयर चल रहा है। मगर जब ऐसा कुछ था ही नहीं और जबकि मैं निवेदिता को अपनी बेटी ही समझता था तो मैं नहीं चाहता था कि पुलिस उसे बुलाए और पूछे। इससे उस पर गहरा नफ़िसयाती सदमा गुज़रने का ख़दशा था। इसलिए मैंने निवेदिता को इस बारे आगाह करने का सोचा और उससे राबिता करने की कोशिश की ताकि उसे बता सकूँ कि मेरी बीवी ने पुलिस को मेरी शिकायत की है जिसमें उसका भी नाम आया है और ये लिखा है कि मेरा उसके साथ

लव अफ्रेयर चल रहा है। हो सकता है पुलिस उसको भी बुलाए जिसके लिए उसे जेहनी तौर पर तैयार रहना चाहिए, मगर उसने शायद मेरा नम्बर ब्लॉक किया हुआ था इसलिए मेरी कॉल नहीं लगी। चूँकि उसे आगाह करना ज़रूरी था इसलिए मैंने उसे किसी दूसरे फ़ोन से मैसेज किया कि कोई ज़रूरी बात करनी है, इसलिए मैसेज पढ़ते ही वो मुझसे बात करे। उसने जब मुझे कॉल किया तब मेरा फ़ोन मेरे बेटे के पास था और वो उस वक़्त अपनी माँ के पास बैठा हुआ मेरे फ़ोन पर वीडियो गेम खेल रहा था। स्क्रीन पर निवेदिता का नाम मेरी बीवी ने भी देखा। मेरा बेटा मुझे जब तक फ़ोन देता तब तक कॉल बन्द हो चुकी थी। देखा तो निवेदिता की कॉल थी। मैं उसके साथ बात तो करना चाहता था मगर मैं गर्मियों की दोपहर की गहरी नींद में था, इसलिए सोचा कि उससे बाद में बात करूँगा जब आँखें और दिमाग़ दोनों जाग रहे होंगे। फ़ोन पर निवेदिता का नाम देखते ही मेरी बीवी के शक के मीटर की सुई आखिरी हिन्दसे तक जा पहुँची थी मगर शाम तक उसने मुझसे कुछ नहीं पूछा। मैंने शाम को निवेदिता को कॉल किया और उसे सारी बात बताई। सुनकर वो हक्की-बक्की रह गई। मैंने उसे ये भी बताया कि मैंने पुलिस कप्तान को इस बात पर राज़ी कर लिया है कि वो उसे न बुलाए, फिर भी अगर उसे बुलाया जाता है तो वो इसके लिए जेहनी तौर पर तैयार रहे। वहाँ कौन सा झूठ बोलना है, जो सच है वो ही तो बताना है। शाम को मेरी बीवी ने मुझसे पूछा कि क्या निवेदिता अब भी मुझसे बात करती है तो मैंने कहा नहीं, मैं ही उसके साथ बात करना चाहता था। उसने मेरा नम्बर तुम्हारे कहने पर ब्लॉक कर रखा था इसलिए उसे मैसेज भेजा था कि वो मुझसे बात करे। जब उसने मेरा मैसेज देखा तभी कॉल की होगी मगर मैं सोया हुआ था इसलिए उस वक़्त बात नहीं कर पाया। अभी थोड़ी देर पहले ही बात हुई है। पूछने लगी, क्या बात हुई तो मैंने बताया कि तुम्हारे कहने पर पुलिस उसे बुला कर पूछताछ करना चाहती है और मैंने उसे आगाह किया है कि अगर पुलिस बुलाए तो घबराना नहीं जो सच है वो बता देना।

सुनकर वो फिर गुस्से में आ गई। कहने लगी, उसकी बड़ी फ़िक्र है तुम्हें। मुझे पुलिस कप्तान का रीडर बता रहा था कि तुमने पुलिस कप्तान को बोला है कि वो निवेदिता को न बुलाए। मैंने कहा, हाँ बोला है क्योंकि तुम्हारी शिकायत से निवेदिता का कुछ लेना देना नहीं है, उसे बुलाना जायज़ नहीं है यही मैंने पुलिस कप्तान से कहा था। और निवेदिता को इसलिए आगाह किया कि कहीं वो पुलिस का फ़ोन सुनकर घबरा न जाए। फिर एक पूरी महाभारत हुई और कहने लगी कि पुलिस न बुलाए मैं खुद ही उसको देख लूँगी। मुझे कहीं मिल जाए तो मैं उसका मुँह तोड़ दूँगी। मैं उसके घर वालों तक पहुँचूँगी और बताऊँगी कि उनकी बेटी यहाँ क्या गुल खिला रही है। मैं जब जब उसे कहता कि तुम बेकार में उस लड़की के पीछे पड़ी हो उसका कोई कुसूर नहीं है तब तब वो मुझे खा जाने वाली नज़रों से देखती।

फिर एक दिन तो हद ही हो गई। मेरी बीवी यूनिवर्सिटी के अँग्रेज़ी शो'अबे में जा पहुँची और इधर उधर देखने पर जब उसको निवेदिता नहीं मिली तो उसने शो'अबे के दफ़्तर से निवेदिता के घर का पता माँगा, जो उन्होंने देने से इन्कार कर दिया। अभी मेरी बीवी घर नहीं लौटी थी कि मुझे निवेदिता का फ़ोन आया कि मेरी बीवी अँग्रेज़ी शो'अबे में आई थी और उसके लिए पूछ रही थी। जब उन्होंने बताया कि वो आज नहीं आई है तो फिर उसके घर का पता माँग रही थी जो देने से दफ़्तर वालों ने मना कर दिया था। निवेदिता ने मुझसे कहा कि जब मेरी बीवी घर आए तो मैं उससे पूछूँ कि वो क्या चाहती है? उसने बताया कि वो पहले भी तीन दफ़ा उस्तानी साहिबा से कह चुकी है कि वो मैडम से मेरी बात करवा दें मगर मैडम ने उससे बात करने से मना कर दिया था। उसने मुझसे कहा कि मैं अपनी बीवी से उसकी बात करवा दूँ ताकि बात साफ़ हो सके। उसने ये भी कहा कि आज शाम तक मैं अपनी बीवी से उसकी बात करवा दूँ क्योंकि वो भी जानना चाहती है कि मेरी बीवी के दिमाग़ में क्या

चल रहा है? अगर वो बात नहीं करेगी तो वो पुलिस में शिकायत कर देगी कि मेरी बीवी उसे बेवजह परेशान कर रही है।

मैंने उसे समझाने की कोशिश की कि तुम्हें ढूँढते जो औरत यूनिवर्सिटी गई होगी वो कोई और होगी। तुम्हें गलतफ़हमी हो गई होगी क्योंकि मेरी बीवी तो बैंक से पैसे निकलवाने गई हुई है वो इतनी दूर यूनिवर्सिटी में नहीं गई होगी। निवेदिता ने मुझे बताया कि वो अपनी नानी को लेकर पी जी आई गई हुई थी सो शो'अबे में लेट आई थी। कुछ लोगों ने उसे बताया कि कोई औरत तुमसे मिलने आई थी मगर जब तुम नहीं मिलीं तो तुम्हारे घर का पता माँग रही थी। उसने ये भी बताया कि उसने सी सी टी वी में देखकर उसे पहचान लिया है कि वो मेरी बीवी ही थी। साथ ही हमारे आनन्दपुर साहिब के ट्रिप की फ़ोटोएँ जो उसके फ़ोन में थीं दिखाकर उन लोगों से कन्फ़र्म कर लिया है कि वो ही थी। आप शाम तक मुझे बता दो कि वो क्या कहती है उसके बाद ही मैं कोई कार्रवाई करूँगी। मैंने उससे कहा कि जब वो घर आएगी मैं उससे पूछूँगा और शाम को उसे बता दूँगा। मैंने उसे ये भी सलाह दी कि वो उस्तानी साहिबा से भी इसके बारे बात करे शायद वो कोई अच्छी सलाह दे सकें।

कुछ देर बाद जब मेरी बीवी घर आई तो मैंने उससे पूछा कि क्या वो यूनिवर्सिटी गई थी तो वो साफ़ मुकर गई। मैंने भी आगे कुछ नहीं पूछा। फिर कुछ देर बाद वो खुद ही बोली कि क्या हुआ। जो हुआ था मैंने उसे वो बताया तो कहने लगी मैं वहाँ क्यों जाऊँगी। कोई और होगी। पता नहीं उसने किस किस के खाविन्द पर डोरे डाले होंगे। निवेदिता इतनी अच्छी लड़की है कि उसके बारे ये बात सुनकर मुझसे बर्दाश्त नहीं हुआ फिर भी मैंने खुद को कुछ कहने से रोका। मैं निवेदिता की जितनी इज़्जत करता हूँ उस लिहाज़ से उसके बारे ग़लत बात नहीं सुन सकता। मैंने अपनी बीवी को बताया कि उसने तुम्हें सी सी टीवी में देखकर पहचान लिया है और वो तुमसे पूछना चाहती है कि तुम क्या चाहती हो और तुमसे बात कर के सारी बातें साफ़ करना चाहती है।

मेरी बीवी फिर भी नहीं मानी और निवेदिता से बात करने से फिर इन्कार कर दिया। मैंने उसे समझाया कि अगर वो अपनी पोजीशन साफ़ नहीं करती है तो निवेदिता उसकी शिकायत पुलिस में कर देगी। कहने लगी उससे कहो जो करना है कर ले। मैं कोई बात नहीं करूँगी और ये भी कहा कि आज तो वो मुझे मिली नहीं इसलिए बच गई। अगर मुझे मिल जाती तो मैं उसका मुँह तोड़ देती। सबके सामने ऐसी बेइज्जती करती कि वो डिपार्टमेंट में जाने के लायक भी नहीं रहती। उसके वालिडैन का पता या फ़ोन नम्बर मिल जाता तो उनको बताती कि उनकी लाडली यहाँ क्या कर रही है।

शाम को मैंने निवेदिता को फ़ोन पर बताया कि मेरी बीवी उससे बात नहीं करेगी और अब उसने जो कार्रवाई करनी हो कर सकती है। मैंने उसे बाकी सब भी बताया जो मेरी बीवी ने कहा था। निवेदिता ने मुझसे कहा कि उसने अपने घर वालों को सब कुछ बता दिया है और ये भी कि कैसे मेरी बीवी उसको परेशान कर रही है। उन्होंने भी उसे पुलिस में शिकायत करने की सलाह दी है। मैंने उससे कहा कि मैंने तो अपनी बीवी को समझाने की कोशिश करके देख ली है। वो नहीं मानती इसलिए तुम जो कार्रवाई करना चाहो कर सकती हो। ये बात मैंने उसी शाम अपनी बीवी को भी बता दी। मेरी बीवी ये बात सुनकर और बिफर गई। हर रोज़ मुझे कोई न कोई उलाहना देने और निवेदिता को सबक सिखाने की धमकियाँ जारी रहीं।

कुछ दिन बाद फिर एक दिन सुबह सुबह मेरी बीवी घर से गायब थीं। मुझे लगा वो आज फिर यूनिवर्सिटी गई होगी और कोई हँगामा करके लौटेगी जिसे सँभालना बाद में मेरे लिए मुश्किल हो जाएगा। इसलिए मैंने निवेदिता को फ़ोन करके आगाह करना चाहा कि अगर वो अपने शो'अबे में है तो कहीं इधर उधर हो जाए ताकि मेरी बीवी की नज़र में न आए। लेकिन उसे फ़ोन नहीं लगा। फिर मैंने उस्तानी साहिबा को अपना ख़दशा बताकर यही बात निवेदिता को कहने की गुज़ारिश की। मैं नहीं चाहता था कि बात इतनी आगे बढ़ जाए कि

शर्मिन्दा होना पड़े। जब उस्तानी साहिबा ने ये बात निवेदिता से कही तो वो भी बिफर गई और उसने उनसे कहा कि वो मुझसे कहें कि मैं उससे सीधे बात करूँ। मैंने कोशिश की मगर फ़ोन नहीं लगा। बाद में पता चला कि मेरी बीवी ने मेरे फ़ोन पर निवेदिता का नम्बर ब्लॉक कर रखा था ताकि मैं उससे बात न कर सकूँ। जब बात हुई तो निवेदिता ने बताया कि उसने सारी बात अपने वालिदैन को बता दी है और वो मेरी बीवी के खिलाफ़ पुलिस शिकायत और बाद में डराने, धमकाने और परेशान करने के लिए अदालती केस भी करने वाले हैं लेकिन अगर मैं अपनी बीवी को समझाऊँ कि वो निवेदिता को परेशान करने और अपने घरेलू झगड़े में उसका नाम घसीटने से बाज़ आए तो वो शिकायत नहीं करेंगे। उन्होंने अपने वकील से बात कर ली है जो शिकायत ड्राफ़्ट करके मेरे वालिदैन की तरफ़ से पुलिस को दे देगा।

कुछ दिन बाद मैंने अपनी बीवी को बताया कि मुझे एक वकील का फ़ोन आया था कि मुझसे मिलना चाहते हैं और मैं उनसे ही मिलकर आ रहा हूँ। वकील साहब ने बताया कि वो निवेदिता के वालिद साहब की तरफ़ से मेरी बीवी के खिलाफ़ पुलिस में शिकायत करने आए हैं। मुझसे इसलिए मिलना चाहते थे ताकि पुलिस में शिकायत देने से पहले एक बार मुझसे बात कर लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उन्हें मेरी बीवी की तरफ़ से उनकी बेटी का नाम पुलिस शिकायत में देना अच्छा नहीं लगा। फिर उसके बाद यूनिवर्सिटी में आकर डराने, धमकाने और पीटने की मन्शा से पीछा करना तो बिल्कुल नाक्राबिले-बर्दाश्त है। उनकी बेटी की इज़्जत और जान दोनों को ख़तरा है। इसलिए मैं अपनी बीवी से ये लिखकर देने के लिए कहूँ कि वो उनकी बेटी को डराने, धमकाने और पीटने की मन्शा से उसका पीछा नहीं करेगी और कभी सामने आने पर भी कम से कम पचास गज़ की दूरी बना कर रखेगी। दूसरा मेरे खिलाफ़ पुलिस कप्तान को दी शिकायत से उनकी बेटी का नाम ख़ारिज करवाएगी। ऐसा नहीं करने पर वो मेरी बीवी के खिलाफ़ पुलिस को शिकायत दे देंगे। मुझे एक

हफ़्ते का वक़्त दिया गया। मैंने उनसे कहा भी कि मेरी बीवी मेरी बात नहीं मानेगी, इसलिए आप खुद ही उससे बात कर लें, क्योंकि वो समझेगी मैं ही कहानी बना रहा हूँ। उन्होंने कहा कि उनकी बेटी ने चार दफ़ा मेरी बीवी से बात करनी चाही लेकिन हर बार उसने मना कर दिया। इसलिए अब वो भी उससे बात नहीं करेंगे।

मैंने अपनी बीवी को बताया कि उसकी इस हरकत की वजह से मेरी बहुत बेइज़्जती हुई है और वकील साहब के मुताबिक़ वो सब उसे लिखकर देने को कहा। वो उल्टा मुझसे ही झगड़ने लगी। मैंने भी उसे कहा कि मैं गुज़ारिश नहीं कर रहा हूँ, बस बता रहा हूँ। एक हफ़्ते का वक़्त है। अगर लिखकर देती हो तो शिकायत नहीं होगी और अगर नहीं तो फिर जो होगा भुगतते रहना। एक हफ़्ता तक कुछ नहीं हुआ तो मैंने वकील को मैसेज करके और वक़्त माँगा। एक हफ़्ता और मिला लेकिन कुछ नहीं हुआ। जब भी बीवी से ज़ि़क़र करता वो मुझसे ही लड़ने को आती। हार कर मैंने अपने वकील को क़ानूनी नज़रिए से ये मस'अला कितना सँगीन हो सकता है के बारे में अपनी बीवी को समझाने के लिए कहा। इन्सान एक बार क़ानूनी पचड़े में पड़ जाए तो वो या तो माफ़ी माँग कर छूटता है या सज़ा पाने के बाद। ऊपर से महीनों पुलिस और कचहरियों के चक्कर। ग़लती तो उसने की थी। ऐसे में समझदारी तो इसी में थी कि अपनी अना को एक तरफ़ रख कर इन्सान बीच का रास्ता ले ले। मेरे वकील के समझाने के बावजूद तक्ररीबन पन्द्रह-बीस दिन तक ये मुआमला लटकाए रखने के बाद मेरी बीवी ने लिख कर दिया कि निवेदिता को उससे कोई ख़तरा नहीं और वो उसके पास पचास गज़ के घेरे में नहीं आएगी। कुछ दिन बाद पुलिस कप्तान को दी मेरी शिकायत के सिलसिले में भी लिख दिया कि उसके और उसके ख़ाविन्द के बीच चल रहे मस'अले में निवेदिता का कोई रोल नहीं है। तब कहीं जाकर ये मुआमला ठँडा हुआ, लेकिन मेरे ऊपर तलवार फिर भी लटकी ही रही।

मैं समझता था कि इसके बाद एक तरफ़ तो निवेदिता को राहत-ओ-सुकून मिल गया होगा कि अब मेरी बीवी उसे परेशान नहीं करेगी और दूसरी तरफ़ मेरी बीवी एहसानमन्द होगी कि मैंने उसे उसके बे सोचे समझे की गई बेवकूफी से होने वाले नुकसान से बचा लिया, चाहे उसके लिए मुझे माफ़ी माँगनी पड़ी थी। लेकिन मैं ग़लत था। मेरे लिए मेरी बीवी की तलखी और बढ़ गई थी। उसे ये एहसास ही नहीं था कि मैंने उसे किस मुसीबत से बचा लिया था। उसका गिला ये रहा कि मैंने ऐसा करके निवेदिता की तरफ़दारी की थी, उसकी नहीं। उधर निवेदिता को शायद ये एहसास परेशान किए हुए था कि उसकी जानिब से कुछ भी ग़लत न करने के बावजूद उसे लम्बे वक़्त तक परेशानी और नदामत से गुज़रना पड़ा था। इन्सान किए हुए गुनाह की सज़ा मिलने पर इतना दुखी नहीं होता जितना नाक़र्दा गुनाह की सज़ा मिलने पर। निवेदिता के साथ यही हुआ था। हालांकि उस पर मेरी बीवी की वजह से जो परेशानी का आलम गुज़रा था उसके लिए मैंने उससे भी माफ़ी माँग ली थी फिर भी मेरा ज़ेहन एक अजीब से एहसासे-मुजरिमाना से निजात नहीं पा सका था।

इधर जब मैं इस हादसे के असर से खुद को बाहर निकालने की कोशिश और क़वायद में मशगूल था उन्हीं दिनों मेरे साथ कई पुर असरार वाक़ियात पेश आ रहे थे। निवेदिता को पता नहीं क्यों मैं अपनी बेटी ही समझता था। वो मुझे कभी ग़ैर लगी ही नहीं। वो पहले पहल तो मेरे तख़लीक़ी अमल के दौरान ही मुझे दिखाई देती थी या शायद मैं ही उसे बुला लाता था लेकिन पिछले कुछ महीनों से वो हर वक़्त मेरे ज़ेहनो-दिल में रहने लगी थी। एक पल के लिए भी ख़याल से ओझल नहीं होती थी। मेरे जागते हुए हर एक लम्हे में वो मेरे साथ होती। कुछ भी कर रहा होऊँ या यूँ ही कुछ सोच रहा होऊँ वो मेरी हर सोच में शामिल रहती। उससे जो अब तक रिश्ता रहा था मेरा वो ऐसा नहीं था कि उसे इश्क़ कहा जा सके। हम फ़क़त एक क्लास में पढ़ते थे। एक दूसरे की इज़ज़त

करते थे, अगर उम्र के इतने फ़र्क के बावजूद इसे दोस्ती कहा जा सके तो शायद दोस्त भी थे मगर अब कुछ ऐसा था कि वो ज़ेहन से इक पल को भी निकलती ही नहीं थी। निवेदिता मेरे ज़ेहन के हर हिस्से में रहने लगी थी। मैं जब भी कुछ लिखता वो मेरे सामने होती, मेरे पास होती। वो इस क्रूर मेरे ज़ेहन पर हावी हो चुकी थी कि मैं उसे भुलाने की कोशिश अगर करता भी तो कभी कामयाब नहीं होता। उसे भुला देने का न तो मेरा कोई इरादा था और न ही कोई वजह। वो मेरी तख़लीक़ात में मेरी मदद करती थी। वो मेरे लिए वाक़ई मेरी तख़लीक़ात की देवी थी। मगर अब ये देवी मेरे सर चढ़ चुकी थी। इस ज़ेहनी कैफ़ियत को ब्यान करने के लिए मेरे पास अल्फ़ाज़ ही नहीं हैं। मैं पाँच छः ज़बानें जानता हूँ पर उनमें से किसी के पास भी या यूँ कहूँ कि उन सबको मिलाकर भी मेरी हालत को सही सही ब्यान करने के लिए मौज़ूँ अल्फ़ाज़ नहीं हैं। अगर इन सभी ज़बानों से मौज़ूँ अल्फ़ाज़ लेकर भी अपनी ज़ेहनी कैफ़ियत ब्यान करने की कोशिश करूँ तो भी कासिर ही रह जाऊँगा। निवेदिता ने मुझे यूँ हर जानिब से घेरा हुआ था कि बस उसी के ख़्याल आते रहते थे। मैं जितना भी खुद को मसरूफ़ रखने की कोशिश करता उतना ही उसके ख़्यालों में उलझता चला जाता। मेरे साथ कुछ बहुत ही अजीब हो रहा था। आँखों के आगे निवेदिता यूँ आती जैसे सचमुच सामने खड़ी हो। कभी यूँ लगता अभी मेरे करीब से गुज़री है। बहुत दिन हो गए हैं, रातों में नींद ही नहीं आती। बस सारी रात करवटें लेता रहता हूँ। इधर निवेदिता दिखाई देती है। करवट बदलूँ तो उस करवट भी निवेदिता होती है।

पिछले कुछ दिनों में इक और ही अजीब सा सिलसिला चल निकला था। एक दिन रैड लाइट पर गाड़ी रोकी। बाईं जानिब देखा तो एक पोस्टर पर नज़र पड़ी। लिखा था डॉक्टर निवेदिता, स्किन स्पेशलिस्ट, एक दिन बच्चे की कोडिंग क्लास के लिए ट्यूटर ढूँढ़ रहा था। वैब साइट पर पहला ही नाम आया, निवेदिता। एक दिन कुछ आई ए एस अफ़सरों की फ़ेहरिस्त देख रहा था। वहाँ

निवेदिता नेगी मिल गई। दो तीन दिन बाद फ़ेसबुक पर मेरी एक ग़ज़ल पढ़ कर किसी ने फ़रेंड रिक्वेस्ट भेजी। खोला तो निवेदिता नैय्यर। एक फ़िल्मी रिसाला पढ़ रहा था। अशोक सराफ़ नाम के एक्टर के बारे लिखा था। तीसरी सतर पर पहुँचा तो लिखा पाया कि इनकी बीवी का नाम निवेदिता है। दो तीन दिन बाद बाज़ार में एक पुराने दोस्त से मुलाक़ात हो गई। बातों बातों में उसने बताया कि उसके भाई के बच्चे कैनेडा से उनसे मिलने आए हुए थे, सोचा उनको यहाँ के बाज़ार की रौनक दिखा लाते हैं। फिर उसने एक पैंतीस छत्तीस साल की औरत को आवाज़ दी, “निवेदिता, आओ कमिश्नर साहब से मिलो। पुराने दोस्त हैं मेरे”। मैंने पहले बताया था कि मैंने ये नाम तक्ररीबन पचास साल बाद निवेदिता के मुँह से ही सुना था। न इस नाम की किसी औरत के बारे पढ़ा न कभी मिला ही था। अब अचानक दस दिन में तक्ररीबन छः सात निवेदिताएँ किसी न किसी तरह सामने आ जाने का क्या मतलब था। ऐसे में मेरा मुत’अज्जुब होना लाज़मी था। ऐसा अमूमन होता नहीं है। अब इसे ग़ैबी इशारा न समझा जाए तो कोई क्या समझे। कुदरत कहूँ या खुदा कहूँ, मेरे लिए हिदायत यही थी कि मैं हर वक़्त इसी नाम पर मुतवज्जह रहूँ। मज़ाल है जो एक पल के लिए भी निवेदिता मेरी सोच से, मेरे ज़ेहन से दूर हो। इसी तरह निवेदिता के ख़्याल से बँधा मैं सारी सारी रात जागता रहता हूँ। दिन में एक दो घंटे सोता हूँ। अजीब से ख़्वाब आते हैं और उन ख़्वाबों में भी निवेदिता ही दिखाई देती है। एक दिन ख़्वाब में देखा, दोपहर का वक़्त है। एक लड़की खेत की मेंढ़ पर सोई पड़ी है। उसे जगाता हूँ तो देखता हूँ वो बुखार में तप रही है। इसका घर मेरे पड़ोस में ही है। इसकी शक़ल काफ़ी कुछ निवेदिता जैसी है। मैं उसे बाहों में उठाकर उसके घर पहुँचाता हूँ। अपने घर आकर माँ को बताता हूँ तो वो मुझे दवा देकर भेजती है। मैं एक औरत को दवा देकर पानी लाने को कहता हूँ। मेरी माँ दूध लेकर आती है और उस औरत से कहती है कि इसे गर्म करके लड़की को दवा खिलाने के बाद पिला दो। मैं काफ़ी देर उस लड़की के पास बैठा रहता हूँ। उसके

पेशानी पर गीली पट्टियाँ रखता हूँ। उसका बुखार उतर रहा है। वक्त्र बहुत हो गया है। रात हो गई है। मैं अपने घर जाने लगता हूँ तो वो बीमार लड़की मेरा हाथ पकड़ कर कहती है, ‘तू जाना मत, यहीं मेरे पास बैठ, मुझे डर लगता है।’ एक बार देखा वो हमारे घर आई है और मेरी माँ उसे साग और लस्सी दे रही है। और एक दिन ऐसे ही दोपहर में सोया हुआ था। ख्वाब में देखा कोई गाँव है। मैं खेत से चारा लेकर आ रहा हूँ। मेरे घर के पास बहुत लोग इकट्ठा हैं। कुछ लोग किसी को पीट रहे हैं। आगे जाकर देखता हूँ तो निवेदिता मैले-कुचैले कपड़ों में ज़मीन पर पड़ी है। बाल बिखरे हुए हैं। आँखों में आँसू हैं। एक आदमी उसे पीट रहा है। एक औरत उसे गालियाँ दे रही है। मैं निवेदिता को आवाज़ देता हूँ मगर मेरे मुँह से आवाज़ नहीं निकलती। मैं उसको बचाने के लिए उसकी तरफ़ बढ़ता हूँ तभी मेरी नींद खुल जाती है। ख्वाब टूट जाता है। मैं पसीने में तरबतर अपने बिस्तर पर पड़ा हूँ। अन्दर तक हिल गया हूँ मैं। समझ में नहीं आता ये क्या हुआ था। ये कैसा ख्वाब था। तीन चार दिन तक यही ख्वाब मुझे घेरे रहा। समझ नहीं आ रहा था मुझे ऐसे ख्वाब क्यों आ रहे हैं।

अपनी इस हालत को अकेले बर्दाश्त कर पाना मेरे बस की बात नहीं रह गई थी। लोग कहते हैं ऐसे हालात में जो शाख्स इसका बायस हो उससे बात करनी चाहिए। उसे बताने से वो शिद्दत कम हो जाती है। मेरी हालत ही ऐसी हो चुकी थी कि मुझे भी इसका इलाज निवेदिता में ही नज़र आया। मैंने अपने तमाम हालात ब्यान करते हुए एक ख़त लिखा लेकिन इस डर से कि कहीं वो मुझसे खफ़ा ही न हो जाए उसे भेजा नहीं। वो जितनी अभी तक मेरी ज़िन्दगी में थी उतनी ही बहुत थी मेरे लिए। मैं नहीं चाहता था कि मेरा ख़त पढ़कर वो मुझसे खफ़ा होकर हमेशा के लिए मुझसे त’अल्लुक्र क़त’अ कर ले। अब मुझे उसका मेरे ख़्यालों, मेरी सोचों में रहना, मेरे ख्वाबों में आना एक मो’अजज़ा सा लगने लगा था। ऐसा महसूस होता था जैसे कोई ग़ैबी ताक़त हमें मिलाना चाहती हो। एक दिन वो हुआ जिसने मुझे हिला कर रख दिया। मैं कुछ पढ़ रहा

था। हल्की सी नींद आने का सा एहसास हुआ मगर मैं सो नहीं रहा था कि अचानक एक धीमी सी आवाज़ मेरे कानों में पड़ती है। “उसे ज़रूरत है तुम्हारी, उसकी हिफ़ाज़त करो, मुहब्बत करो उससे, ख़िदमत करो उसकी। उसने बहुत बर्दाश्त किया है तुम्हारे लिए”। मैं तक्ररीबन जाग ही रहा था जब मुझे ये सुनाई दिया। ख़्वाब नहीं कह सकता इसे। कौन था, कौन बोला था ये? बचपन में सुनी कहानियों में आकाशवाणी के बारे सुना था। ये उसी आकाशवाणी जैसा ही कुछ था। एक तो मैं ज़ेहनी तौर पर पहले ही निवेदिता की गिरफ़्त में था ऊपर से ये ग़ैबी हिदायत। हिदायत क्या, इक तरह से हुक़्म ही था। नहीं समझा सकता मेरी हालत कैसी थी। यहीं आकर वो लाखों अल्फ़ाज़ जो मैं जानता हूँ फ़ैल हो जाते हैं। ठीक से ब्याँ नहीं कर सकता मेरे साथ क्या हो रहा था। कोई ऐसी अनदेखी ताक़त मुझे खींचे लिए जा रही थी निवेदिता की तरफ़। सोचने लगा कि ये क्या था। ग़ैब से ऐसी हिदायत क्यों हुई। ये क्या राज़ था? सोचते-सोचते अचानक गले में दर्द की एक गाँठ सी बन गई। फिर बस इक कराह सी निकली और आख़िर में मेरी आँखें अश्रुओं से भर गई। समझ नहीं सका ये क्या हो रहा था मेरे साथ। इक तरफ़ मेरी बीवी इस कोशिश में थी कि वो मुझे निवेदिता से दूर कर दे तो दूसरी तरफ़ ये ग़ैर मरई ताक़त थी जो मुझे निवेदिता से मिलाने की कोशिश में थी। उसकी जानिब खींचे लिए जा रही थी। मैं दोनों के बीच पैन्डुलम की तरह झूल रहा था। यही वो वक़्त था जब मैंने महसूस किया कि मैं शायद निवेदिता को पिछले किसी जन्म में मिल चुका हूँ और हम दोनों में गहरी दोस्ती थी या बहुत गहरा प्यार था, क्योंकि वो जो लड़की मुझे ख़्यालों और ख़्वाबों में नज़र आती है उसकी सूरत बहुत कुछ निवेदिता जैसी है या उसकी सूरत में कुछ तो ऐसा है जो निवेदिता में भी है। फ़र्क़ बस इतना ही है कि वो मुझे किसी गाँव में उस वक़्त के लिबास में नज़र आती है, कुछ कमज़ोर सी, कुछ डरी डरी सी, और यहाँ वो शहर के माहौल में, नये लिबास में एक ख़ुद-एतिमाद लड़की है। उम्र तक्ररीबन इतनी ही है, चौबीस पच्चीस साल। क्या सचमुच ऐसा होता

है? क्या इन्सान सचमुच बार बार जन्म लेता है? क्या पिछले जन्मों में मिले लोग अगले जन्म में भी मिलते हैं। ये भूलकर कि निवेदिता मुझसे उम्र में तकरीबन छत्तीस-सैंतीस बरस छोटी है और ये भी भूलकर कि मैं उसे अब तक अपनी बेटी ही मानता रहा हूँ, मैं निवेदिता से मुहब्बत करने लगा था। उसे पिछले जन्म की अपनी महबूबा के रूप में ही देखने लगा था। जब आप किसी से मुहब्बत करते हैं तो उसे हर रोज देखने, उससे मिलने, उससे बातें करने, उसके पास रहने, उसे अपना बना लेने की ख्वाहिश बढ़ने लगती है लेकिन मेरे केस में ऐसा नहीं था। मैं फ़क़त इतना चाहता था कि मैं उसके साथ राबिते में रहूँ, उसकी खिदमत में हमेशा हाज़िर रह सकूँ, उसकी हिफ़ाज़त कर सकूँ। यही सब मैंने निवेदिता को उस ख़त में लिखा था जो मैं उसे दे नहीं पाया था। मैंने बहुत पहले कुछ किताबों में पढ़ा था कि इन्सान बार बार जन्म लेता है और पिछले जन्मों के साथी अगले जन्मों में भी मिलते हैं। ख़ासकर वो लोग जिनकी पिछले जन्म की कोई ख्वाहिश अधूरी रह गई हो। मुझे अपने ख़्यालों, ख़्वाबों और उस आकाशवाणी पर यक़ीन होने लगा था। इन्सान अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में आने वाली छोटी मोटी ज़रूरतों और दिक्कतों से आराम से निपट लेता है लेकिन जब ज़ेहन में हर लम्हा एक ज़ँग छिड़ी रहे तो कोई क्या करे। खुद से ज़ँग लड़ने के साथ साथ मैं इन दिनों अपनी बीवी के लगाए इल्ज़ामात से भी ज़ँग लड़ रहा था। क्योंकि वो इल्ज़ामात सिरे से झूठे थे और सिर्फ़ उसकी नासमझी और ज़िद की वजह से लगाए गए थे और मुझे बेहद तकलीफ़ देते थे। फिर उसका निवेदिता पर लगाया गया इल्ज़ाम एक तरह से किसी मासूम पर हमले के बराबर था। इससे भी मैं तकलीफ़ में था। दूसरी तरफ़ निवेदिता भी मुझसे ताल्लुक तो तोड़ चुकी थी मगर उन दिनों उसके बारे में जो मैं महसूस कर रहा था उस एहसास ने भी मेरी जान आफ़त में डाल रखी थी। अगर मैं निवेदिता को अपनी ज़ेहनी कैफ़ियत से वाक़िफ़ करवा सका होता या अपनी बीवी को समझा सका होता तो शायद कुछ सुकून मिलता मगर दोनों को ही

समझा पाना मुमकिन नहीं था। एक सुनने को तैयार नहीं थी तो दूसरी ने सुनने के सब रास्ते बन्द कर रखे थे। इस तरह मैं एक साथ दो महाज्ञों पर जँग लड़ रहा था और दो महाज्ञों पर एक साथ जँग लड़ना किसी भी जँगजू के लिए बहुत मुश्किल होता है। मैं अपने ज़ेहन में इक धधकता आतिशफ़िशों लिए जी रहा था। आखिर तय हुआ कि अगर निवेदिता को लेकर जो मेरे ज़ेहन की हालत है वो और उसकी वजह उसे बता सकूँ तो शायद कुछ राहत मिले। मगर इसमें भी ख़तरा ये था कि वो लड़की जो मेरी इतनी इज़्जत करती है मेरे बारे में कोई ग़लत राय न बना ले। मैं अगर उसका हम-उम्र होता तो ये ख़तरा भी उठाया जा सकता था मगर यहाँ मस'अला एक चौसठ-पैंसठ साल के शख्स को पच्चीस-छब्बीस साल की लड़की से मुहब्बत के इज़हार का था। हालांकि ये मुहब्बत वो मुहब्बत नहीं थी जिसमें शहवत का जुज़्व भी शामिल रहता है फिर भी बग़ैर वजह जाने इसे शक की निगाह से ही देखा जाता। इस तज़ब्ज़ब में घिरा मेरा ज़ेहन फ़ैसला नहीं कर पा रहा था कि क्या सही है और क्या ग़लत। फिर भी बहुत सोचने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि अगर मैं निवेदिता को बिना बताए ही इस ज़िन्दगी से रुख़सत हो जाता हूँ तो उसे कैसे मालूम होगा कि हम पिछले जनम के साथी हैं। मैं चाहता भी तो इतना ही था कि निवेदिता को ये इल्म हो जाए कि मैं उससे जो प्यार करता हूँ उसकी वजह हमारा पिछले जनम का साथ है। मैंने ये कभी नहीं चाहा कि वो भी मुझे प्यार करे या हमारा प्यार जिस्मानी हो। सिर्फ़ उसे मालूम होना कि मैं उसका पिछले जनम का साथी हूँ और उसका मेरे साथ राबिते में रहना ही मेरे लिए काफ़ी था। ऐसे में उसे बताने में मुझे कुछ ग़लत नहीं लगा। मैंने उसे सारी बातें बताते हुए वो ख़त लिखा था क्योंकि ये बात इतनी मुख़्तसर नहीं थी कि उससे मिलकर ज़ुबानी बताई जा सकती। ये ख़त मेरे फ़ोन में था और मैं चाहता था कि वो इसे मेरे फ़ोन पर ही पढ़ ले। एक दिन उससे मिलकर मैंने उसे बताया कि मैं उसकी कितनी इज़्जत करता हूँ और ये भी कि मैं उसे अपनी तख़लीक़ की देवी मानकर उसकी इबादत

करता हूँ और उसके साथ राबिते में रहना चाहता हूँ। उसने कहा कि ठीक है अगर इसमें फ़ीलिंगज़ न हों। मुझे समझ नहीं आया कि वो फ़ीलिंगज़ किसे कह रही है और ये भी कि बिना फ़ीलिंगज़ कोई किसी की इबादत कैसे कर सकता है। मैंने पूछा कि अगर फ़ीलिंगज़ भी हों तो? बस उसे यही अच्छा नहीं लगा शायद। मैंने उसे बताया कि मैंने उसके लिए एक ख़त लिखा है जिसे पढ़कर सारी बात साफ़ हो जाएगी। उसने कहा कि मैं वो ख़त उसे उसके फ़ोन पर भेज दूँ। उसने ये भी कहा कि वो उस ख़त का कोई ज़वाब नहीं देगी। ज़वाब मुझे चाहिए भी नहीं था। मेरा मक़सद तो यही था कि उसको मेरी ज़ेहनी कैफ़ियत का इल्म हो जाए। वो उस वक़्त लाइब्रेरी में से बाहर आई थी मुझसे बात करने और वापस लाइब्रेरी में चली गई। मुझे याद आया कि उसने तो मुझे ब्लॉक कर रखा है। मैं फिर लाइब्रेरी में उससे ये कहने गया कि वो अपने वॉट्सऐप पर मुझे अनब्लॉक कर दे ताकि मैं उसे वो ख़त भेज सकूँ। उसे उस दिन कोई असाइनमेंट तैयार करनी थी और वो बहुत मसरूफ़ थी। वो परेशान हो गई और उसने मुझे जाने को कह दिया। मैंने वो ख़त उसे भेजा मगर वो उस तक पहुँचा नहीं क्योंकि मैं अभी भी उसके फ़ोन पर ब्लॉकड ही था। यानि, मैं अब किसी भी तरह उससे राबिता नहीं कर सकता था। एक तो वो मेरी बीवी की वजह से परेशान थी, दूसरे उस पर असाइनमेंट तैयार करने का दबाव और तीसरे मेरा उससे मिलकर उसे ख़त के बारे बताने से वो शायद कुछ ज़्यादा ही दबाव में आ गई थी।

वो ख़त मैंने निवेदिता को वॉट्सऐप पर भेज दिया। मैं ये सोचकर खुश था कि मैंने अपने जज़्बात उस ख़त के ज़रिए निवेदिता तक पहुँचा दिए हैं। उसने कहा था कि वो इसका ज़वाब नहीं देगी सो ज़वाब की न तवक्क़ोह थी न इन्तज़ार। खुशी इस बात की थी कि चलो मेरे जज़्बात उस तक पहुँच तो गए। अब ये भी सोचने लगा कि मेरा ख़त पढ़ कर निवेदिता का रद्दे-अमल क्या रहा होगा। मेरे जज़्बात के इज़हार का उस पर क्या असर हुआ होगा। वो मेरे बारे में क्या सोचती होगी। ख़फ़ा ही न हो गई हो। वो ख़त कुछ यूँ था।

“निवेदिता,

इस खत में मैं जो लिख रहा हूँ उस पर तुम्हें बिल्कुल यकीन नहीं होगा, क्योंकि पहले मुझे भी नहीं हुआ था। बात ही कुछ ऐसी है जो हमारी आम जिन्दगी से हटकर है और इस दुनिया की तो बिल्कुल नहीं है। तुम्हें मालूम है तुम मेरे लिए हमेशा स्पेशल रही हो और उसकी वजह तुम्हारा तर्ज-अमल और तुम्हारी दीगर खसूसियात हैं। कुल मिलाकर तुम एक बहुत अच्छी और प्यारी लड़की हो और यही वजह है कि मेरे दिल में तुम्हारी खास जगह है, इज्जत है। मगर वक़्त गुज़रने के साथ मैं कुछ ऐसे एहसासों से गुज़रा हूँ और गुज़र रहा हूँ जिस पर मैं सिर्फ़ हैरान ही नहीं परेशान भी हूँ। मैं अपनी कैफ़ियत ठीक से ब्यान करने में दिक्कत महसूस कर रहा हूँ। जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि इस पर यकीन करना मुश्किल होगा तुम्हारे लिए, फिर भी सुनो। तुम्हें भी इस हकीकत का इल्म होना ही चाहिए।

तुम्हें ये खत मैं इसलिए लिख रहा हूँ कि जो मैं कहना चाहता हूँ तुमसे, वो ज़ुबानी कह नहीं पा रहा हूँ। चाहता तो यही था कि तुम सामने बैठो, और बिना टोके मुझे सुनो और मैं बोलता ही चला जाऊँ, बेधड़क, बेझिझक। लेकिन हकीकत में ऐसा होता नहीं है। कोई सवाल आकर बीच में खड़ा हो जाता है और डिमांड करता है कि पहले उसका जवाब दिया जाए और फिर अगली बात की जाए। मंतक्री नज़रिए से ये बात ठीक भी लगती है लेकिन जज़्बात के बहाव को रोक कर जवाब देना और फिर से शुरू करने में दिक्कत ये है कि जज़्बात के इज़हार की वो जो इक लड़ी बन निकली थी वो टूट जाती है और जब तक हम टूटे हुए सिरे से नया सिरा जोड़कर आगे बात करने लगते हैं तो एहसास होता है कि सिलसिला टूट जाने की वजह से हम जो कह रहे थे वो कहीं धुँधला गया है, गुम हो गया है और उसकी जगह भरने के लिए कोई नई सोच आगे आती है और आपको तैयार करती है कि चाहे मैं वो सोच नहीं जो तुम ओरिजिनली कहना चाहते थे फिर भी बातचीत का सिलसिला जारी रखने

के लिए तब तक मुझे ही इस्तेमाल करो जब तक वो सोच जो आप ज़ाहिर करना चाहते थे वापस ज़ेहन में नहीं आ जाती। लेकिन बात कहने में इस तरह की कोई भी रुकावट असल मुद्दा ठीक से ब्यान नहीं होने देती।

असल मुद्दा ये है कि कुछ दिनों से मुझे लगने लगा है कि मैं तुमसे मुहब्बत करने लगा हूँ। अब इसी बात पर खफ़ा मत हो जाना मुझसे। पहले पूरा ख़त पढ़ लो। हाँ, मैं तुमसे मुहब्बत करने लगा हूँ। ये मुहब्बत वो मुहब्बत नहीं है जो हम आजकल लड़कों-लड़कियों में देखते हैं या जैसी फ़िल्मों में दिखाई जाती है। मेरे लिए ये एक बहुत ही ऊँचे दर्जे का एहसास है। जिस्मानी मुहब्बत से बहुत ऊपर। मुहब्बत कई क्रिस्मों की होती है। हम जो अपने माँ बाप, भाई बहन, बच्चों, दोस्तों से, अपने गाँव, शहर या देश से करते हैं वो भी मुहब्बत ही है। और मैं तुमसे कुछ ऐसी ही मुहब्बत करता हूँ। क्यों करता हूँ ये मेरी भी समझ से बाहर है। कुछ ऐसा है जिस पर मेरा भी कोई बस नहीं। मुझे इस सच्चाई का पूरा इल्म है कि मैं तुमसे उम्र में दोगुना से भी ज़्यादा बड़ा हूँ और ऐसे में हालांकि सिर्फ़ मुहब्बत करने में कुछ भी ग़लत नहीं मगर मुहब्बत का इज़हार करूँ तो उसे बेहूदगी ही समझा जाएगा। हो सकता है तुम्हें मेरी नीयत पर शक होने लगे। आज तक तुमसे कहने का रिस्क इसलिए नहीं ले पाया क्योंकि तुम अभी जितनी मेरी ज़िन्दगी में हो उससे भी हाथ न धो बैठूँ। तुम्हारा मेरी ज़िन्दगी में रहना बहुत ज़रूरी है, तुम साँस हो मेरी। तुम्हारा मेरी नीयत पर शक करना, मुझे ग़लत समझना, मुझसे नफ़रत करना और मुझसे त'अल्लुक्रात क़तअ कर लेना सब जायज़ होगा अगर मैं उम्र के फ़र्क को परे रखकर अपनी मर्ज़ी और होशो-हवास में तुमसे इश्क़ का इज़हार करता। लेकिन यहाँ मामला अलग है और मुझे तुमसे मुहब्बत होने का इल्म भी किसी ग़ैर-मरई ग़ैबी ताक़त का इशारा लगता है। मुझे कहा जा रहा है कि मैं तुमसे मुहब्बत करूँ और तुम्हें कोई नुक़सान न होने दूँ। नहीं तो करोड़ों लड़कियों में से एक तुम ही क्यों। तुम मेरी खोई हुई मुहब्बत हो जिससे मुझे मिलाने की साज़िश कुदरत ने खुद रची है वरना जितना

हमारी उम्र में फ़र्क़ है, मैं कभी ऐसा सोचता भी नहीं और न ही हम कभी भी एक दूसरे से यूँ मिले ही होते।

मुझे एकदम नहीं, धीरे धीरे ये एहसास दिलाया गया कि तुम मेरी हो। अगर ऐसा था तो फिर हमारी उम्र में इतना फ़र्क़ क्यों रखा गया? हो सकता है ये राज़ भी धीरे-धीरे खुले। शायद कुदरत की नज़र में मुहब्बत के लिए ये इन्सानी उम्र का कन्सेप्ट मा'अनी नहीं रखता।

दो मुहब्बत करने वालों की उम्र में इतना फ़र्क़ होना हमारे मुआशरे में इक बहुत बड़ी डिस्कुआलिफ़िकेशन है। वैसे मुहब्बत के जज़्बे का उम्र से कोई त'अल्लुक नहीं होता लेकिन हमारे समाज ने इस बात को एक्सेप्ट नहीं किया है। शाख़्सी तौर पर चाहे इस पर कोई एतराज़ न हो लेकिन मजमुई मुआशरती तौर पर ये एक पुख़्ता राय बन चुकी है जिसे आप नकार नहीं सकते। ठीक वैसे ही जैसे शादी के लिए दूल्हा दुल्हन की उम्र में ज़्यादा फ़र्क़ होना। हालांकि ऐसी शादियाँ भी होती हैं और मुहब्बतें भी। हम ऐसे सैंकड़ों लोगों के बारे में जानते हैं जिनका फ़र्क़ सोलह सत्रह साल से लेकर पचास-साठ साल तक का भी है, जिन्होंने प्यार भी किया है और शादी भी। ऐसे भी हजारों हैं जिनके बारे में हम नहीं जानते। किसी केस में आदमी की उम्र ज़्यादा है तो किसी में औरत की। उन्होंने क्यों मुहब्बत की, नहीं जानता। मुख़्तलिफ़ वजूहात हो सकती हैं। लेकिन हमारे मामले में मुझे पक्का यक़ीन हो चला है कि हमारा पिछले जन्म का कोई नाता है जो किसी वजह से अधूरा रह गया होगा सो अब कुदरत उसे मुकम्मल करना चाहती है। ऐसे ऐसे एहसासात से गुज़रता हूँ मैं कि बताऊँगा तो तुम यक़ीन नहीं करोगी।

ऐसा होता है कि दिन हो या रात, सोया होऊँ या जाग रहा होऊँ, मेरे तसव्वुरात-ओ-ख़्यालात में बस तुम्हारा ही चेहरा हर वक़्त मेरे सामने होता है। यहाँ हर वक़्त का मतलब वाक़ई हर वक़्त है, कोई मुहावरा नहीं। कभी यूँ भी

होता है कि कोई ब्लैक एंड वाइट जैसा मँज़र मेरी आँखों के सामने से गुज़र जाता है जिसमें मैं होता हूँ, तुम होती हो। हम दोनों की उम्र भी तक्ररीबन पच्चीस छब्बीस साल की लगती है, कोई गाँव है, और भी लोग हैं लेकिन जब तक कुछ समझ आए वो पाँच छः सैकंड का मँज़र ओझल हो जाता है। एक बात जो कचोटती है मुझे वो ये है कि ऐसे मनाज़िर में मैंने तुम्हें बस उदास या दुखी हालत में ही देखा है। मँज़र गुज़र जाता है और मुझे तकलीफ़ दे कर जाता है। लेकिन मेरे साथ ऐसा क्यों होता है? तुम मेरे साथ क्यों होती हो? हम कहाँ होते हैं? ये पता नहीं चलता। ऐसा पिछले चार पाँच महीने में तक्ररीबन सात बार हो चुका है। पूरी बात समझ नहीं आती। मैं तनासुख (पुनर्जन्म) का क़ायल भी हूँ और कर्म गति पर भी यक़ीन करता हूँ तुम यक़ीन करती हो या नहीं, पता नहीं पर मेरे साथ बहुत ज़्यादाती हो रही है। पता नहीं क्या क्या सोचने पर मजबूर हो जाता हूँ। फिर नींद नहीं आती, सारा सारा दिन चैन नहीं पड़ता। अगर किसी वजह से कभी तुम्हारी भी चेतना जागी तो हो सकता है कुछ दिनों में तुम्हारे साथ भी ऐसा हो। तुम्हें भी ऐसे एहसासात-ओ-मनाज़िर दरपेश हों और शायद कोई राज़ खुले। हो सकता है कुछ दिनों में तुम्हारा भी शऊर जागे और तुम ये सब खुद महसूस करो। ऐसा होता है तो इक अजीब सा दर्द, हल्का सा, जैसे विरह का दर्द, महरूमी का दर्द, महसूस होता है जो कई दिनों तक रहता है। लेकिन ऐसा होने में हो सकता है तुम्हें कई साल लग जाएँ, क्योंकि जब तक इसको पूरी शिद्दत से महसूस न करो तब तक इन्सान का शऊर पूरी तरह बेदार नहीं होता और इसका हल्का सा एहसास भी नहीं होता। अगर तुम्हें इस बात का एहसास बीस पच्चीस साल बाद हो कि हम दोनों पिछले जन्म की अधूरी रही मुहब्बत के मुतासरीन हैं तो तुम्हारी कैफ़ियत मेरी मौजूदा कैफ़ियत से भी बदतर होगी क्योंकि तब तक हो सकता है मैं कहीं दूर निकल गया होऊँ या मर ही चुका होऊँ। पिछले जन्मों के साथी हर जन्म में ही मिलें ये यक़ीनी नहीं क्योंकि कई बार वो दो तीन जन्मों के बाद मिलते हैं। रूहें अपनी महबूब रूहों

को पहचान लेती हैं। जो रूह जितनी ज्यादा evolved होती है वो उतनी ही आसानी से अपने पिछले जन्मों की साथी रूह को पहचान लेती है। जो इतनी evolved नहीं होतीं वो या तो पहचान नहीं सकतीं या उन्हें वक़्त लगता है।

कुदरत ऐसे हालात पैदा करती है कि वो लोग जिनकी मुहब्बत पिछले किसी जन्म में किसी वजह से अधूरी रह गई थी या कोई रिश्ता मुकम्मल नहीं हुआ था, किसी न किसी बहाने पास आएँ और मिलें। ऐसी ही मुलाक़ातों में से किसी एक में उनमें से किसी एक की चेतना जागे और वो दूसरे को पहचान जाए। जब कोई रूह दूसरी रूह को नये जन्म में पहचान रही होती है तो उसे कन्फ़्रमेशन के कई छोटे-छोटे क्लूज़ मिलते रहते हैं। किसी-किसी को मुकम्मल पहचान हो जाती है लेकिन इस के लिए उसे पहली चेतना के बाद बड़ी शिद्दत से सोचना होता है, महसूस करना होता है। मैं इस वक़्त तुम्हारी मुकम्मल पहचान के शायद तीसरे पड़ाव में हूँ। तुम्हें पिछले जन्म की साथी के रूप में पहचान तो लिया है मैंने, लेकिन टुकड़ों-टुकड़ों में। अभी कोई कोई आधा अधूरा सा, फ़लीटिंग सा क्लू मिलता है बस। इससे पहले कि ठीक से जान पाऊँ, ध्यान कहीं और चला जाता है। ठीक से पकड़ नहीं पा रहा हूँ उन मनाज़िर की सच्चाई को जो मेरी सोच में, मेरी आँखों के आगे से बस कुछ ही पल को गुज़रते हैं। तुम्हें महसूस करने की शिद्दत अब इस क़दर बढ़ गई है कि लगता है अब कोई न कोई पुख़्ता सबूत ज़रूर मिलेगा और तब मैं अपनी बात ज्यादा मुस्तनद तौर पर कह पाऊँगा।

इन्सान की तक़दीर और कुदरत मिलकर ऐसे हालात पैदा करते हैं कि पिछले जन्मों में किसी वजह से बिछुड़ चुके साथियों का फिर से मिलना हो। जब वो यूँ मिलते हैं तो उनको पता नहीं होता कि वो दोनों soulmates हैं। धीरे धीरे दोनों को ही एक दूसरे में कुछ खूबियाँ नज़र आती हैं और इसीलिए वो दोस्त के तौर पर नज़दीक आते हैं, बातें करते हैं, एक दूसरे की इज़ज़त करते हैं, यक़ीन करते हैं, ये जाने बिना कि वो पिछले जन्मों के बिछुड़े साथी हैं। वो

एहसास आहिस्ता-आहिस्ता बाद में ही होना होता है, बशर्ते कि वो मिलते-जुलते रहें, बातचीत करते रहें। इस दौरान किसी गलतफ़हमी की वजह से दोनों में से कोई एक भी अगर ये फ़ैसला करता है कि आगे न मिला जाए तो ऐसे में एक गलत फ़ैसला, लाक्राबिले-यक्रीन तन्हाई और तकलीफ़ का बायस बनता है। एक सही फ़ैसला जन्मों-जन्मों के लिए बेइन्तहा खुशियाँ और ने'अमतेँ लेकर आता है। तुम्हें याद होगा मैंने जनवरी महीने में तुमसे मिलने के लिए तुम्हें तीन चार बार गुजारिश की थी। यही बताना चाहता था तुम्हें। लेकिन मैसेज कर के नहीं, मिलकर। किसी वजह से हम मिल नहीं सके और फिर ये हादसा गुज़र गया जिसमें तुम्हें मुझसे त'अल्लुक़ क़त'अ करने को कह दिया ज़रीन मैम ने और तुमने उनकी बात मान भी ली। अगर तुम ये बात मुझे भी बता देती तो शायद हम दोनों इतनी तकलीफ़ से न गुज़रते। लेकिन तुम शायद मुझे अपना ख़ैरख्वाह न समझकर उनको ज़्यादा समझ बैठी। एक यहाँ मैं हूँ जो तुम पर जान तक कुर्बान करता हूँ और एक वो लोग हैं जिनका तुमसे कोई वास्ता नहीं। इस दौरान जो मेरी हालत हुई वो मैं ही जानता हूँ। ये ख़त मेरी सात महीने की तड़प का सिला है। अगर हमारी उम्र में इतना फ़र्क़ न होता तो मैं पहले ही तुम से अपनी मुहब्बत का इज़हार कर चुका होता। लेकिन तब मेरे पास ऐसा कोई आधा अधूरा सबूत भी नहीं था, अब है।

हमारी उम्र में इतना फ़र्क़ होने के बावजूद मैं तुमसे मुहब्बत का इज़हार कर देता मगर ऐसा करने में दो दिक्कतें थीं। एक तो ये डर था कि तुम बिना पूरी बात सुने मुझसे नफ़रत न करने लगो और दूसरी ये कि कहीं तुम मेरी मुहब्बत को हवस न समझ बैठो। मैं तुम्हें ये बताना चाहता हूँ कि मेरी मुहब्बत एक पाक-ओ-मुक़द्दस मुहब्बत है, हवस नहीं। तुम्हें यक्रीन नहीं होगा मगर ये सच है कि मैंने कभी तुम्हें ठीक से देखा भी नहीं था। मुझे नहीं मालूम कि तुम अपनी ज़ुल्फ़ें बाँधती हो या खुली रखती हो, चोटी करती हो, रिब्बन बाँधती हो, तुम्हारी ज़ुल्फ़ें लम्बी हैं या कटी हुई, कभी ध्यान ही नहीं दिया। मैंने कभी तुम्हें

तुम्हारे चेहरे से नीचे देखा ही नहीं। मैंने आज तक जब भी तुम्हें देखा है बस तुम्हारी आँखों को ही देखा है और तुम्हारी आँखों ने मुझे हर बार कहीं और ही ट्रान्सपोर्ट किया है, किसी दूसरी ही दुनिया में, जहाँ हम पहले भी मिले हैं। एक दो बार तो तुम्हारी आँखों से मिलने से पहले ही मैंने अपनी आँखें झुका लीं। मुझे लगा ये आँखें मुझे कहीं और ही ले जा रही हैं। इस दुनिया से बाहर, कोई और ही दुनिया दिखाने के लिए। मुझे लगा कि इन आँखों को मैंने पहले भी कहीं देखा है। शायद पिछले किसी जनम में। तुम इतनी पाक हो कि तुम्हें देखकर हवस नहीं इबादत का एहसास होता है। तुम्हारी इबादत, तुम्हारी खिदमत का जज्बा उभरता है दिल में तुम्हें देखकर। मुझे ग़लत मत समझना। मैं तुम्हारे पास बैठकर ढेर सारी बातें करना चाहता हूँ। तुम्हें सुनना चाहता हूँ। तुम्हें खिलखिलाते देखना चाहता हूँ। मुझे ऐसा महसूस होता है कि हमें बहुत सी बातें करनी थीं जो किसी वजह से हो नहीं पाईं। जो मुहब्बत मैं करता हूँ तुमसे वो हर लड़की का सपना होती है मगर अफ़सोस कि आज के ज़माने में वो मुहब्बत एगज़िस्ट ही नहीं करती। लोग खुदग़र्ज़ हो गए हैं। जिसे मुहब्बत कहा जाता है आजकल, वो दरअसल नापतोल कर की जाती है, फ़ायदानुकसान देखकर। उसमें मुहब्बत होती ही नहीं। टाईमपास करने के लिए दूसरों के जज्बात से खेलते हैं लोग। वो रूहानी नहीं सिर्फ़ जिस्मानी होती है और इसीलिए आरज़ी भी। जी भर गया तो ख़त्म।

तुम्हें देखे हुए मुझे अब शायद डेढ़ साल से ऊपर हो चला है, तुम्हारा चेहरा भी मेरी यादों में धुँधलाने लगा है। कोशिश करने पर ही तुम्हारे चेहरे के नक़्क़ूश याद कर पाता हूँ लेकिन मेरी मुहब्बत कम नहीं हुई कभी एक पल को भी। तुम्हें शायद ये किसी फ़िल्म का डायलॉग ही लगे मगर हक़ीक़त ये है कि मैंने कभी भी तुम्हें एक पल के लिए भी भुलाया नहीं। मेरे हर जागते हुए लम्हें में तुम मौजूद रहती हो, सोता हूँ कभी अगर तो तुम ख़्वाबों में होती हो।

पहले पहल मैंने इसे इनफ़ैचुएशन समझा मगर वक्त बीतते एहसास होने लगा कि ये कुछ और ही है, बहुत ऊँचे दर्जे का एहसास, जहाँ हर पल तुम्हारी मौजूदगी सुकून देती है, राहत का सा एहसास कराती है। इस उम्र में एक बच्ची के लिए कैसी इनफ़ैचुएशन? मुझे यकीन हो चला है कि हो न हो तुम मेरी कुछ तो लगती हो वरना ऐसा शदीद एहसास मुमकिन नहीं। हमारा पिछले किसी जनम का अधूरा मिलन हमें इस जनम में एक दूसरे के सामने लाया है। शायद यही वजह है कि मैंने जब भी तुमसे बात की है या मैसेज किया है उसमें तुम्हारे लिए फ़िक्र और मदद करने का ज़ब्बा हावी रहा है मुझ पर। हो सकता है पिछले जनम में कभी ऐसे हालात गुजरे हों कि तुमने चाहा हो कि मैं तुम्हारी मदद करूँ और मैं वो पूरी तरह न कर पाया होऊँ और ऐसा नहीं कर पाने का मलाल मेरे जेहन पर अब तक एक बोझ बना हुआ हो। तुम हमेशा से मुझे अपनी सी लगी हो। जैसे मुझ में से ही निकली हो, मेरे ही वजूद का कोई हिस्सा हो तुम। कभी तुम में मुझे एक बेटी दिखाई देती है, कभी एक दोस्त तो कभी महबूबा। बड़ी पाक-ओ-मुक़-दसा। हाँ, इस जनम में हमारी उम्र के फ़र्क़ को देखें तो तुम बेटी ही हो मेरी। मगर जब पिछले जनम का कोई मन्ज़र गुज़रता है तो एहसास होता है कि तब हम एक दूसरे से मुहब्बत करते थे, पूरी शिद्दत के साथ। कुछ तो रिश्ता है मेरा तुमसे वरना इस तरह का एहसास नहीं होता और बार बार नहीं होता। पिछले किसी जन्म में तुम्हें खो चुका हूँ मैं। शायद यही वजह है कि एक मुस्तक़िल दर्द का एहसास रहता है मेरे दिल में जिसे बहुत बरदाश्त किया है मैंने, और जो तुम्हारी मौजूदगी की वजह से, तुम्हें याद करते हुए कम होता है। मेरी ज़िन्दगी में तुम्हारे होने का एहसास रूई के उस फ़ाये की तरह है जिसे ज़ख़्म पर रखते ही दर्द से राहत महसूस होने लगती है। मैं हमेशा तुम्हें अपने आसपास महसूस करता हूँ और ये एहसास मेरी ज़िन्दगी की ख़ुराक है, ग़िज़ा है।

मुझे ये भी लगता है कि ये जो शायरी की सलाहियत की ने'अमत मिली है मुझे, उस परवरदिगार से, ये भी शायद उसकी पिछले जन्मों की अधूरी

ख्वाहिशों की तलाफ़ी की कोशिशों के सबब ही है, क्योंकि शायरी करते वक़्त जैसे म'अन ग़ैब से इक़ आमद होती है ज़ेहन में, ऐसे लगता है कोई लिखवा रहा है मुझसे, और जब कोई फ़नपारा, कोई नज़्म या ग़ज़ल मुकम्मल होती है तो एक अजीब सी कैफ़ियत तारी होती है ज़ेहन में, जिसमें सुकून भी होता है, राहत भी और मुकम्मल होने की खुशी भी। दिल होता है कि उसी वक़्त तुम्हें पढ़कर सुनाऊँ। मैंने जब तुमसे कहा था कि इन दिनों जो मैं लिख रहा हूँ उसमें तुम मेरी म्यूज़ हो और मैं तुमसे इल्हाम हासिल करता हूँ तो ग़लत नहीं था। तुम्हें मैंने खुद अपनी म्यूज़ नहीं चुना था, तुम दी गई थीं मुझे, जिससे मैं इल्हाम हासिल करूँ। ये महज़ इक़ इत्तेफ़ाक़ नहीं हो सकता। इसके पीछे कोई ग़ैबी ताक़त ज़रूर है जो हमें अपने मुताबिक़ लिए फिर रही है। इन दिनों मैं किसी ऐसे आदमी की तलाश में हूँ जो पिछले जन्मों में जा सकता हो और इस बात की तस्दीक़ कर सकता हो कि हम वाक़ई पिछले जन्मों से जानते हैं इक़ दूजे को। तुम्हारे बारे सोचकर, तुम्हें याद करते हुए एक अजीब सा “आऊट ऑफ़ द वर्ल्ड” एहसास होता है जैसे किसी दूसरी दुनिया से हों हम। मैं खुद तुम्हें याद नहीं करता। तुम्हें लाया जाता है मेरी सोचों में, मेरी यादों में और वो भी इस शिद्दत के साथ कि तुम्हें ही सोचते रहने के सिवा और कुछ कर ही नहीं सकता मैं। अगर ये सब ऐसे नहीं होता तो शायद मैं भी इस पर इतना ग़ौर न करता मगर इसमें कुछ ऐसा है जिस पर मेरा भी बस नहीं। मैंने बहुत बार खुद को समझाया कि वो बच्ची है, प्यारी है, कितनी अच्छी है, उसकी ज़िन्दगी में दख़ल नहीं देना चाहिए मुझे। लेकिन अगले ही दिन फिर वही सिलसिला शुरू हो जाता है खुद-ब-खुद। ऐसा क्यों हो रहा है, मेरी समझ से बाहर है। कोई है जो मुझसे कहता है, “इस लड़की से मुहब्बत करो, इबादत करो, ख़िदमत करो, हिफ़ाज़त करो इसकी”। तुमसे मिलकर मैं यही एहसासात बताना चाहता था तुम्हें, मगर मेरे बार बार चाहने के बावजूद हम उन दिनों मिल नहीं पाए और फिर ये हादसा गुज़र गया जिसके सदमे से हम दोनों गुज़र रहे हैं। इसमें भी कोई राज़ हो सकता

है जो शायद कभी बाद में खुले। फिर भी इस की वजह से जिस तकलीफ़ से तुम्हें गुजरना पड़ा उसके लिए मैं मुजरिम हूँ तुम्हारा।

तुम्हें याद होगा जिस दिन मैंने दाखिला लिया था और क्लास में त'आरूफ़ वग़ैरह के बाद जब हम लोग वापस जा रहे थे तब तुम सड़क के किनारे खड़ी थी और हमारी गाड़ी जब तुम्हारे करीब से गुज़री तुम मुझे देखकर मुस्कराई थी। हालांकि कि उस मुस्कराहट में मुहब्बत जैसा कुछ नहीं था, बस खुलूस था, फिर भी वो मुस्कराहट मेरे ज़ेहन में हमेशा के लिए उकेरी गई। मैं क्लास में तुम्हें देखता तो तुम अपनी सी लगती लेकिन तुमसे ये कह नहीं सकता था। इसलिए नहीं कि कहने की हिम्मत नहीं थी बल्कि इसलिए कि हमारी उम्र में जो फ़र्क़ है वो रोक देता था मुझे। डरता था कि तुम से ये कहने पर तुम मुझे ग़लत न समझने लगो। हालांकि मैं ये भी समझता हूँ कि उम्र जिस्मों की होती है, रूहों की नहीं, और अगर हम मुहब्बत में जिस्मों को परे रख दें तो ये फ़र्क़ खुद-ब-खुद मिट जाता है। लेकिन सब ऐसा नहीं समझते। मुहब्बत बेशक अल्लाह ताला'अ का इन्सान को दिया इक नायाब तोहफ़ा है, मगर हम लोगों ने उसे मु'आशरती क़वायद के तराजू में तोल तोल कर त़िज़ारत बना लिया है। उसी में छोटे-बड़े, अमीर-ग़रीब, ऊँचे-नीचे लोगों में पनपी मुहब्बत का ग़ला घोंटने को तैयार समाज के ठेकेदार जब कामयाब होते हैं तो अपनी पीठ थपथपाते हैं कि उन्होंने अल्लाह की ने'अमत से नवाज़े गए दो लोगों को सरे-बाज़ार नंगा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

मैं कभी कभी ये भी सोचता हूँ कि मैं तक्ररीबन चालीस सालों से उर्दू सीखने की ख़्वाहिश पाले हुए था लेकिन कभी मौक़ा ही नहीं मिला और जब मिला तो तुम्हारे साथ ही क्यों। इससे पहले कभी या बाद में क्यों नहीं। हो न हो कुदरत का ही ग़ैर मरई हाथ है इसमें। मुझे जब क्लास में शे'र सुनाने को कहा जाता या गाना गाने को कहा जाता तो मैं वो शे'र या गाना तुम्हें दिल में रखकर

कहता या गाता। एक दिन मैंने एक नज़्म सुनाई, पूरी की पूरी तुम्हारी तरफ़ देखकर।

“मुझे बाँधकर टकटकी यूँ न देखो

नज़र से तुम्हारी जो गिरते हैं अलफ़ाज़

उनको उठाकर फ़साने बनाएँगे

ये लोग ज़ालिम हैं बातों ही बातों में

रुसवा करेंगे मुहब्बत हमारी

इनसे कहो थोड़ा ख़ामोश बैठें

बहुत बोलती हैं ये आँखें तुम्हारी”।

क्लास ख़त्म होने के बाद तुमने मुझे आवाज़ देकर बुलाया और उस नज़्म के बारे पूछा। हालांकि तुम्हारे ऐसा करने में भी उसमें मुहब्बत-वुहब्बत जैसा कुछ नहीं था लेकिन हम शायद इसी तरह ही करीब आ रहे थे।

शायरी को शायद एक ज़रिया ही बनना था हमारी कुरबत का। मैं बड़े पाक दिल से अपनी लिखी शायरी भेजता था तुम्हें और तुम भी उसे वैसे ही ले रही थी मगर ये सिलसिला भी न सिर्फ़ टूट गया बल्कि साथ ही मेरे लिए अफ़सुर्दगी लाया और तुम्हारे लिए रुसवाई। मुझे अपने हालात का इतना दुख नहीं है जितना तुम्हारे साथ हुई बेइन्साफ़ी का। हालांकि इसमें तुम्हारा रत्ती भर भी कुसूर नहीं। यही वजह है कि मैंने तुम्हारा साथ देने की ठानी है और हमेशा तुम्हारा ही साथ दूँगा चाहे इसके लिए मुझे कुछ भी कुरबान करना पड़े। तुम जान हो मेरी। तुम्हें मैं कभी भी उदास नहीं देख सकता। तुम्हें इतनी तकलीफ़ में देखा है मैंने पिछले जनम में कि अब अगर इस जनम में तुम्हें किसी ने ज़रा सी भी तकलीफ़ पहुँचाई तो वो मेरा सबसे बड़ा दुश्मन होगा।

जब से ऐसे हालात पैदा हुए हैं तब से ही मेरी ज़िन्दगी में बहुत उथल-पुथल हुई है और पिछले छः महीने से मैं इक अजीब सी ज़िन्दगी जी रहा हूँ। मेरी क्रिएटिविटी पर बहुत बुरा असर हुआ है इसका। मैंने समझने की बहुत कोशिश की कि ऐसा क्यों हो रहा है मेरे साथ, तो उसमें तुम्हारा मुझसे दूर हो जाना सबसे बड़ी वजह लगी। तुम से त'अल्लुक था तो ज़िन्दगी दिलकश और मा'अनीखेज़ थी। अब सूखी, सुनसान और बेमा'अनी है। कोई तो बात थी कि तुम्हारा एक मैसेज पढ़ कर ही सुकून हासिल होता था। तुम्हारे मैसेज का इन्तज़ार करना भी अपने आप में एक रोज़गार था मेरे लिए। मैसेज क्या, ये इल्म भी कि तुमने मेरा मैसेज पढ़ लिया है एक बड़ी राहत लेकर आता था। इन्तज़ार तक की बेचैनी, इज़्तिराब, और फिर मैसेज आ जाने पर राहत और सुकून का एहसास। ये सिलसिला ख़त्म होना मेरे लिए ठीक वैसा ही है जैसा किसी करोना के मरीज़ के मुँह से ऑक्सीजन का मास्क उतार फेंकना।

अब हालात ऐसे हैं कि तुम्हारा नाम जहाँ कहीं देखता हूँ तुम्हें मिस करता हूँ। N से कुछ लिखता हूँ तो ऑटो प्रॉप्ट फ़ौरन निवेदिता सजैस्ट करता है। एक दिन रैड लाइट पर गाड़ी रोकी। बाईं तरफ़ नज़र पड़ी, एक दीवार पर लिखा था, डाक्टर निवेदिता, स्किन स्पेशलिस्ट। एक दिन गूगल पर कुछ सर्च कर रहा था बच्चे की ऑनलाइन कोडिंग क्लास के लिए, तो जैसे ही खोला, ट्रेनर का नाम आया, “निवेदिता”। एक एक्टर है अशोक सराफ़। उसके बारे आर्टिकल था अख़बार में। तीसरी लाईन पर पहुँचा ही था कि लिखा था, “इनकी पत्नी का नाम निवेदिता है”। कुछ IAS अफ़सरों की लिस्ट थी। यूँ ही पढ़ने लगा। चौथे नम्बर पर ‘निवेदिता नेगी’ दिखाई दे गई। एक दिन फ़ेसबुक पर एक फ्रेंड रिक्वेस्ट आई। खोला तो ‘निवेदिता नैय्यर’। एक और दिन बाज़ार में एक दोस्त से मुलाक़ात हुई। उसके कोई रिश्तेदार साथ थे। एक औरत भी थी तक्ररीबन पैंतीस छत्तीस साल की। मेरे दोस्त ने उसे बुलाया, “निवेदिता, आओ कमिशनर साहब से मिलो”, और मेरी तो जैसे जान ही निकल गई। अल्लाह! ये क्या हो

रहा था मेरे साथ? ये कोई इत्तेफ़ाक़ नहीं हो सकता। इतनी सारी निवेदिताएँ? भगवान क्या कहना चाह रहा था मुझसे? इनमें बस मेरी वाली निवेदिता ही नहीं थी। मेरी इतनी उम्र हो गई, शादी भी हुई, मुहब्बत की शायरी भी बहुत की मगर कभी ऐसी मुहब्बत नहीं हुई थी मुझे। यार दोस्त मेरी शायरी सुनते तो कहते, “कोई गहरी चोट खाए हुए हो” और मैं कहता, “नहीं, मुझे कौन चोट देगा”। अब पहली बार लग रहा है कि मुझे मुहब्बत हो गई है। और जब से तुमने मुझसे त’अल्लुक़ तोड़ा है मेरी साँसें रुक गई हैं। ऐसा लाचार मैंने कभी महसूस नहीं किया था खुद को। मुझे नहीं मालूम था कि मुहब्बत में गहरी चोट पिछले जन्म में ही लग गई थी मुझे क्योंकि तब हमारी मुहब्बत किसी वजह से अधूरी रह गई थी।

आज की रात मिलाकर पिछली 153 रातें जाग कर काटी हैं मैंने। दिन में थोड़ा बहुत सो लेता हूँ और रात को फिर वही सिलसिला। मेरी ज़िन्दगी से तुम्हारे दूर हो जाने से कल नहीं पड़ती दिल को। तुमसे गुज़ारिश है कि तुम फ़ौरन मुझसे राबिता बहाल करो ताकि मुझे साँस आनी शुरू हो। तुमसे ये भी गुज़ारिश है कि मेरी मुहब्बत कुबूल करो। मुझे बेइन्तहा सुकून मिलेगा। मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ और तुमसे मुहब्बत करने के लिए मुझे तुम्हारी कुरबत की ज़रूरत नहीं। फ़क़त इतना कि तुम जानती हो कि मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ काफ़ी है मेरे लिए। तुम्हारी कुरबत का एहसास ही मेरे लिए बहुत है। मैं तुमसे ये नहीं कहता कि तुम भी मुझसे मुहब्बत करो। बस मेरी मुहब्बत कुबूल कर लो। क्योंकि मैं जिस लेवल पर तुम से मुहब्बत करता हूँ तुम शायद उस लेवल तक अभी पहुँच नहीं पाओगी। वक़्त लो। अगर लगे कि मेरी मुहब्बत पाक है, मुक़द्दस है, इबादत है, खुदा की ने’अमत है तो फिर फ़ैसला करना।

तुम्हें बिन बताए

बिना कुछ भी बोले

तुमसे मुहब्बत मैं करता रहूँगा

मेरी मुहब्बत मुहब्बत है जानाँ

मेरी मुहब्बत तিজारत नहीं है

कि बदले में तू भी मुझे यूँ ही चाहे”

एक पहुँचे हुए नज्मी के मुताबिक मुझे अभी और सैंतीस साल जीना है और तुम्हारी कुरबत के एहसास और यक्रीन के बगैर इतनी लम्बी ज़िन्दगी सज़ा हो जाएगी मेरे लिए। ज़रा सोचो कि जब मुझे मालूम हो कि मेरा soulmate, मेरे पिछले जन्म का साथी, यहीं मेरे सामने मौजूद भी है, मानूस भी है मगर मेरा नहीं है तो इतनी लम्बी ज़िन्दगी बेइन्तहा दर्द और बेसुकूनी में ही कटेगी। इससे बड़ी और दर्द भरी सज़ा और क्या होगी मेरे लिए। जहाँ तक मैं देख पाया हूँ, जितना प्यार और यक्रीन तुम्हें मुझ पर था पिछले जनम में, मुझे यक्रीन है कि इस जनम में तुम्हारा फ़ैसला मेरे लिए दर्द और सज़ा का बायस नहीं बनेगा। मेरी इन बातों पर अभी यक्रीन नहीं होगा तुम्हें क्योंकि तुम्हें अभी वो एहसास नहीं हुआ है जो मुझे हुआ है और न ही पिछले जनम की बातों को याद करने में अभी कुदरत तुम्हें कोई क्लू दे रही है। मेरी सारी बातों पर ग़ौर करो। कोई ज़ल्दबाज़ी करने की ज़रूरत नहीं है। आराम से फ़ैसला करना। मुझे यक्रीन है कि अगर हमें कुदरत ने मिलाया है तो तुम वो ही फ़ैसला लोगी जो हम दोनों के हक़ में होगा। दूसरी बात ये कि मैंने बचपन से लेकर अब तक समाज की बनाई हर बन्दिश और पाबन्दी के खिलाफ़ बगावत की है। मुझे सामाजिक बन्धनों को नहीं देनी है ये ज़िन्दगी। ये ज़िन्दगी खुदा की ने'अमत है और खुदा के उसूलों पर ही जी जाएगी न कि दकियानूसी, अनपढ़ या अधपढ़ मतलबी समाज के बनाए उसूलों पर। ये देखो तुम्हारी फ़ुरक़त में क्या क्या लिख रहा हूँ मैं।

“तेरा चेहरा भी कुछ कुछ भूलता जाता हूँ मैं अब तो

तुझे देखे हुए भी इक ज़माना हो चला है
तेरे मैसेज भी अब आते नहीं हैं फ़ोन पर मेरे
पहले की तरह मेरी किसी भी पोस्ट पर तुम
लाइक या कमेंट नहीं करती हो अब बिल्कुल
ऐसा तो नहीं खफ़ा होकर मुझे ब्लॉक कर दिया हो तूने
खफ़ा होना तेरा यूँ हो भी सकता है कि जायज़ हो
मगर मैंने कहीं ऐसा तो कुछ भी ही नहीं कहा तुझसे
कि तू नाराज़ हो कर तोड़ ले मुझसे त'अल्लुक़
कहा भी है अगर तो इसलिए कि है वही सच भी
मैं क्यों कर झूठ बोलूँ कि नहीं कोई उन्स है तुझसे
मुझे तू अच्छी लगती है तो इसमें झूठ क्या है बोल
तुझे शायद ये अच्छा न लगा होगा कि मेरी उम्र ज़्यादा है
कि मैं इस उम्र में भी ऐसा कैसे सोच सकता हूँ
तुझे बतलाऊँ मेरी जान कि ये उम्र फ़क़त इन्सानी तसव्वुर है
मुहब्बत है मगर इन्सान को अल्लाह का इक तोहफ़ा
मुहब्बत का उम्र से कोई ताल्लुक़ था कभी न है
मुहब्बत वाले दिल इक दम जवाँ रहते हमेशा हैं
मुहब्बत ही वजह भी है ज़रिया भी है जिससे
हो सकी तख़लीक़ है कायनात ये सारी

मगर ये तोहफ़ा अल्लाह का सबको भी नहीं मिलता
निकलकर मुआशरती बन्दिशों के कैदखानों से
तू इन पाबन्दियों से आके बाहर देख तो इक बार
मुहब्बत में तसव्वुर ज़मानो-मकाँ का भी कोई मानी नहीं रखता
मुहब्बत यूँ भी है ख़ालिस मुक़द्दस जज़्बा-ए-रूहानी
इसे हम जोड़कर जिस्मों से कितनी ग़लती करते हैं
कि जिस्मानी मुहब्बत चन्द रोज़ा तहवारे-हवस ही है
रूहानी इश्क़ लेकिन एक पूजा है इबादत है
मुहब्बत रूहों में होती है जिस्मों में नहीं होती
जिस्म तो पैदा होते, मरते हैं, बूढ़े भी होते हैं
मुहब्बत न कभी मरती है न बूढ़ी ही होती है
मुझे लगता है पिछले जन्म का रिश्ता है कुछ अपना
तुझे मिलकर अजब सी इक़ खुशी महसूस होती है
उदासी देखकर तेरी मुझे तकलीफ़ होती है
तू मेरी रूह का ही हो न हो कोई ख़ास हिस्सा है
कि ऐसा उन्स यूँ ही तो नहीं हो जाता रूहों में
पुराने जन्मों के रिश्तों का ही यक़ीनन हाथ है इसमें
वग़रना हम कभी इक़ दूसरे से मिल नहीं पाते
मिले हैं हम अगर तो यूँ ही बस मिलती रहो मुझसे

बहुत मुमकिन है इक दिन यूँ ही हमको इल्म हो जाए

कि आखिर कौन हैं और इस जगह पर क्यों मिले हैं हम”

अगर मस’अला मेरी उम्र का है, तो साँईस में हर इन्सान की तीन उम्रें मानी गई हैं। एक क्रोनोलौजिकल उम्र, जिसमें मैं त्रेसठ साल का हूँ, दूसरी बायोलॉजिकल उम्र, जिसमें मैं त्रियालीस साल का हूँ और तीसरी नफ़्सियाती या साइकोलॉजीकल जिसमें मैं तीस बत्तीस साल का हूँ। मैंने साइकोलॉजिकली हमेशा खुद को जवान रखा है, मेरी सोच और ज़िन्दगी जीने का स्टाइल हमेशा यँग रहा है। मेडिकली सभी पैरामीटर्स एक ब्यालीस त्रियालीस साल के बन्दे जैसे हैं। और मैं अपनी क्रोनोलौजिकल उम्र को हर साल हराता आया हूँ। तो तुम मुझे मेरी साइकोलॉजिकल उम्र से ही जानो। और अगर हम जिस्मानी उम्र को परे रख कर सोचें तो मेरी उम्र उतनी ही है जितनी तुम्हारी। रूहों की उम्र बराबर ही होती है।

तुमने नोटिस किया होगा कि तुम्हारी इतनी इज़्जत करने के बावजूद मैं हमेशा तुम्हें तुम कह कर मुखातिब करता हूँ, आप कह कर नहीं, क्योंकि हम भगवान को, देवी को भी तुम कह कर ही मुखातिब करते हैं इसलिए कि वो अपने हैं, औरों से ज़्यादा करीब हैं। तुम मेरी पर्सनल देवी हो। जो मीरा बाई का रिश्ता था कृष्ण के साथ वही मेरा तुमसे है। न तो तुम्हारा जिस्मानी तौर पर मेरे करीब रहना ज़रूरी है और न ये कि बदले में तुम भी मुझसे मुहब्बत करो। ऐसे रिश्तों में लॉजिक के लिए जगह नहीं है।

मैं तुम्हारे साथ इश्क और इबादत की उस बुलन्दी पर पहुँचना चाहता हूँ जहाँ से खुदा का दीदार हो, उससे मिलन हो, और उसके बाद इस बार-बार के जन्म-मरण के चक्कर से निजात मिले। मेरी मुहब्बत किसी टीनेजर या ट्वेंटीज़ वाले की बहकी हुई मुहब्बत नहीं है जो हर दूसरे महीने बदलती है, इश्तहारी होती है, जिसका दोस्तों में ढिंढोरा पीटा जाता है, जैसे कोई ट्रॉफी जीती हो।

मेरी मुहब्बत एक सँजीदा और हिस्सास शख्स की ऐसी मुहब्बत है जिसमें सुलझाव है, ठहराव है, सँजीदगी है, इज़्जत है और ज़िम्मेदारी है। इसमें न तो हर सुबह 'गुड मॉर्निंग' मैसेज की न हर शाम घंटों चैटिंग की शर्त है, न रोज़ मिलने की। हाँ इसमें तुम्हारी ज़िन्दगी के फ़रोग के लिए ज़रूरी रहनुमाई और मदद ज़रूर मिलेगी तुम्हें जब भी ज़रूरत हो। हमारी उम्र में बहुत फ़र्क़ है लेकिन ये हमारी मुहब्बत में रोड़ा नहीं होना चाहिए। इसमें मेरा कोई कुसूर नहीं कि मैं बहुत बड़ा हूँ तुमसे। तुम आई ही बहुत देर से हो इस जहाँ में मेरे बाद। कुछ ज़िम्मेदारियाँ या मजबूरियाँ रही होंगी पिछले जन्म में। हो सकता है मैं पिछले जन्म में किसी जँग या हादसे में छोटी उम्र में मारा गया होऊँ और तुम मुझसे बहुत बाद कुदरती मौत से। तुम्हारे बारे में सोचता हूँ तो कई बार इक अजीब सा एहसास होता है। तुम मुझे जानी पहचानी सी लगती हो। पता नहीं मैं तुम्हें ज़्यादा सोचता हूँ इसलिए या कुछ और वजह है। अभी सोच ही रहा था कि मुझे ये क्या हो गया है? तुम पर से दिमाग़ हटता क्यों नहीं है तो एक अजीब सा ख़्वाब देखा जिसे देखकर मैं और भी बेचैन हो उठा हूँ। पाँच छः दिन पहले दिन में सो रहा था मैं। एक छोटा सा ख़्वाब आया। गाँव जैसा माहौल था। बहुत शोर था। कोई ग़ालियाँ दे रहा था। लोग जमा थे। फिर देखा एक लड़की है। ज़मीं पर बैठी है। उसे मार रहे थे। देखा तो तुम थी। तुमसे काफ़ी कुछ मिलती शक्त, कुछ कमज़ोर सी। तुम्हारी ज़ुल्फ़ें बिखरी हुई हैं, दुपट्टा फटा है। ग़ालों पर आँसू सूखे हैं, तुम्हें मारा है उन्होंने। वो तुम्हारे ही परिवार वाले हैं। एक शायद तुम्हारा शौहर है उनमें। मैं तुम्हें देखता हूँ। दुख होता है। तुमसे कोई रिश्ता नहीं है मेरा, लेकिन तुम्हें उदास देखकर मेरा जी उदास होता है। तुम्हें आवाज़ देकर बुलाना चाहता हूँ मगर तुम्हारा वो नाम याद नहीं आता मुझे। तुम्हें बचाना चाहता हूँ सबसे। मैं तुम्हारी तरफ़ बढ़ता हूँ तो उसी वक़्त मेरी नज़र टूट जाती है। वो ख़्वाब टूट जाता है। मैं हड़बड़ा कर उठता हूँ तो खुद को अपने बैड पर पाता हूँ। समझ नहीं आता क्या हुआ था? ऐसा क्यों हुआ? मुझे लगा मैंने पिछले जन्म का

कोई सीन देखा। फिर सोने की कोशिश करता हूँ ताकि वो ख्वाब आगे भी देख सकूँ लेकिन इतना डिस्टर्ब हो गया था कि फिर सो नहीं पाया। पूरा दिन उदासी में कटा। मुझे ज़रूर जानना है कि हम कौन हैं, कहाँ के हैं और मैं तुम्हें कैसे जानता हूँ? पता नहीं क्यों मगर मुझे ऐसा ही महसूस होता है कि तुमसे कोई रूहानी रिश्ता ज़रूर है मेरा और मैं चाहता हूँ कि ये बना रहे ताकि कभी न कभी ये भेद खुल सके कि आखिर हम हैं कौन?

“रच गई कुछ इस क्रूर है तू मेरे खलियात में

लाख कोशिश पर भी तू मुझसे निकलती ही नहीं”

मैं तुम्हारे लिए जो महसूस करता हूँ उस एहसास को मुहब्बत ही कहते हैं और मैं ये मुहब्बत अपने दिल ही में दबाए इस जहाँ से इसलिए रखसत हो जाता कि कहीं तू इसके इज़हार से खफ़ा होकर मुझसे नाता न तोड़ ले। तुम्हारा मेरी ज़िन्दगी में होना, तुम्हारी कुरबत मेरे लिए ज़्यादा ज़रूरी है सो इसलिए बिना इज़हार किए चुपचाप इस जहाँ से निकल जाना ही शायद ज़्यादा मुनासिब होता मगर हालात ऐसे हो गए हैं कि इस एहसास को दबा कर रखने से दम घुटने लगा है मेरा। न कहता तो शायद मर जाता। ज़ेहन पर ये भारी बोझ रख कर जीना दुश्वार हो गया था मेरे लिए। अब तुमसे कह दिया है तो राहत है।

खैर, मैंने तुम्हारे लिए जो महसूस किया उसका इज़हार कर दिया है। आगे तुम्हें सिर्फ़ इतना ही महसूस करना है कि कोई है जो इबादत की हद तक तुमसे मुहब्बत करता है। मेरी मुहब्बत मेरी तरफ़ से एक तोहफ़ा है तुम्हारे लिए, एक गिफ़्ट है। बस तुम ये तोहफ़ा कुबूल कर लो। इस गिफ़्ट को Acknowledge कर लो। मुझे बदले में कुछ भी नहीं चाहिए, कुछ भी नहीं, और आम आशिकों की तरह मालिकाना हक़ तो बिल्कुल भी नहीं। तुम्हारी ज़िन्दगी है तुम जैसे जीना चाहो जियो। मेरी तरफ़ से कोई दखल अन्दाज़ी नहीं होगी। मैंने तमाम सामाजिक बन्दिशों के बावजूद तुम्हारे वास्ते अपनी मुहब्बत का इज़हार

इसलिए भी किया है कि तुम्हें इल्म हो कि मैं तुमसे बेपनाह मुहब्बत करता हूँ और दूसरा ये भी कि दिल में कोई मलाल न रह जाए कि तुम से कह नहीं पाया, तुम्हें इस पाक जज्बे के बारे बता नहीं पाया और इसी एक मलाल की भरपाई के लिए फिर से जन्म लेना पड़े और उस जन्म में भी तुम मुझे बहुत छोटी मिलो और ये चक्कर यूँ ही चलता रहे। अगर तुम्हारी कुरबत मिली तो कोशिश करूँगा कि एक सौ दस पन्द्रह साल तक जीऊँ ताकि अगले जन्म में हमारी उम्र में ज्यादा फ़र्क न हो। अगले जन्म में ये बोझ लेकर नहीं जाना मुझे। मुझे तुम अपने तक रसाई दो। मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ, तुम्हारी इज्जत करता हूँ, इबादत करता हूँ, मगर तुम्हारी खिदमत, तुम्हारी हिफ़ाज़त तब ही कर पाऊँगा अगर तुम्हारा हाल-एहवाल पूछने के लिए कम्युनिकेशन का कोई चैनल खुला रहेगा हमारे बीच। जब तुम किसी से मुहब्बत करते हो तो यही चाहते हो कि तुम अपने महबूब को दुनिया की हर खुशी दे सको। मैं भी तुम पर दुनिया भर की खुशियाँ लुटाना चाहता हूँ। तुम्हें हर वक़्त खुश देखना चाहता हूँ। तुम्हारा पिछले जन्म का क़र्ज़ है मुझपर। जो पिछले जन्म में नहीं कर पाया, वो क़र्ज़ इस जन्म में उतार लेने दो मुझे। अपने ऊपर क़ुरबान हो लेने दो मुझे। मेरे ज़ेहन से बहुत भारी बोझ हटेगा।

“तेरे होंठों पर मुझे बस मुस्कराहट चाहिए

जब हँसो तो उस हँसी में खिलखिलाहट चाहिए

बस उजाले ही उजाले हों अँधेरे दूर हों

ज़िन्दगानी में तेरी वो जगमगाहट चाहिए”

तुमसे बस इतनी गुज़ारिश है कि मेरी ज़िन्दगी में रहो। किसी भी रूप में, किसी भी रिश्ते से, किसी भी हैसियत से। तुम हो तो ये ज़िन्दगी, ज़िन्दगी है वरना सज़ा है मेरे लिए।

किसी मुसन्निफ़ ने लिखा है कि अगर कोई तुम पर मरता है न तो उसे ज़िन्दा रखना तुम्हारा भी फ़र्ज़ बन जाता है।

मुझे ज़ेहनी तौर पर मरने मत देना।

पिछले जनम में तुमसे बिछड़ जाने के दर्द को अब तक दिल में लिए फिर रहा हूँ मैं। शायरी के ज़रिए अपना दर्द थोड़ा-थोड़ा रोज़ रो लेता हूँ। हल्की सी राहत भी मिलती है मगर वो मुस्तक़िल दर्द कम नहीं होता। बस इक बार तुम्हें गले लगाकर, तुम्हारे कन्धे पर सर रखकर, जी भर कर रोना चाहता हूँ। ये जन्मों से उमड़ा सैलाब अगर मेरे अशकों में नहीं बहा तो इक दिन यक़ीनन जान ले लेगा मेरी। अब और बर्दाश्त नहीं होता मुझसे। मुझे ये दर्द रो लेने दो। शायद तभी कुछ राहत मिले, सुकून हासिल हो।

“तेरे कन्धे पे सर रख के मैं रोना चाहता हूँ

मैं तेरे साथ हँसना मुस्कराना चाहता हूँ

कटी है ज़िन्दगी मेरी ग़मों में आज तक सारी

बची है जो मैं तेरे साथ जीना चाहता हूँ”

इसे मुहब्बत का इजहार समझ लो, गुज़ारिश समझ लो या गिड़गिड़ाहट समझ लो। मैंने अपनी ज़िन्दगी तुम्हारे हाथों में सौंप दी है, तुम्हारे पैरों में रख दी है। क्योंकि मैंने तुम्हें पहचान लिया है। तुम वही हो जिसे पिछले जनम में मुझसे बहुत मुहब्बत थी और मुझ पर बेइन्तहा यक़ीन था। तुम वही हो। तुमसे एक पॉज़िटिव रिस्पॉन्स की उम्मीद करते हुए बन्द करता हूँ।

अल्लाह ख़ैर करे”।

ये ख़त भेजने के बाद मुझे महसूस हुआ जैसे दिल पर से एक भारी बोझ हट गया हो। कुछ दिन बेसब्री से इन्तज़ार किया कि शायद इस ख़त का जवाब

आ जाए। फिर ख्याल आया कि निवेदिता ने कहा था वो ख़त का जवाब नहीं देगी। मैं मुत्तमइन था कि चलो मेरे एहसास उस तक पहुँच तो गए। फिर ये भी ख्याल आया कि ऐसा ख़त पढ़कर कोई बिना रद्दे-अमल के कैसे रह सकता है। कुछ तो कहना चाहा होगा निवेदिता ने भी।

इधर मैं ये सोच रहा था तो उधर इस बात से परेशान भी था कि जो मनाज़िर मुझे ख्यालों और ख्वाबों में नज़र आते हैं वो सच भी हैं या मेरे दिल का वहम है। मैं जिस कैफ़ियत में जी रहा था ये ज़रूरी हो गया था कि इसका पता लगाया जाए कि मेरे साथ ऐसे वाक़यात क्यों पेश आ रहे हैं। जितना ज़्यादा सोचता उतना ही लगता कि हो न हो इसकी वजह पिछले जन्म से ताल्लुक रखती होगी। अब मुझे किसी ऐसे शख्स की तलाश थी जो पुख़्ता तौर पर ये बता सके कि मुझे ऐसे मनाज़िर दिखाई देने का बायस क्या है। क्या इन्सान सचमुच कई बार जनम लेता है। क्या ये मुमकिन है कि पिछले जनम या जन्मों के साथी फिर मिलते हैं। एक दोस्त से यही सवाल किया तो उसने बताया कि जम्मू में एक रिटायर्ड प्रोफ़ेसर साहब हैं जो इस पर काफ़ी जानकारी रखते हैं। उनका पता किया और एक दिन मैं वक़्त लेकर उनके यहाँ जा पहुँचा। जम्मू से कोई सोलह मील पर उनका गाँव आया। सादा सा मकान, सादा सी आराइश, सादा से शख्स। उम्र पिचासी के करीब। रिटायर हुए एक ज़माना हो गया था। मैंने अपना त'आरुफ़ करवाया। अपनी स्टडी में ले गए। स्टडी क्या थी। सब तरफ़ किताबें ही किताबें। एक गोशे में एक छोटी सी मेज़, वो भी किताबों से लदी पड़ी थी। बेटा बहू नौकरी पर गए हुए थे। पोता पोती कॉलेज। एक औरत थी जो पड़ोस में रहती थी। मेरे आने की ख़बर थी सो उसे चाय वग़ैरह बनाने के लिए बुला लिया था। चाय पी लेने तक उन्होंने अपनी गुज़री ज़िन्दगी के कई क्रिस्से सुना डाले। बीबी तक्ररीबन नौ साल पहले वफ़ात पा चुकी थी। अपनी किताबों में ही मसरूफ़ रहते थे। बड़े दिलचस्प इन्सान थे। उन्होंने मेरे एक दो बुनियादी सवाल सुनकर मुझे बताया कि इन्सान कई बार जनम लेता है।

दरअसल कहीं कोई एक रूहों की दुनिया है जहाँ मरने के बाद हर इन्सान पहुँचता है और इस जनम में उसने जो कुछ सीखा होता है उसकी तशखीस होती है। ये वो तशखीस नहीं जिसके बारे में कहा गया है कि खुदा तुम्हारे कर्मों का हिसाब रखता है और मरने के बाद तुम्हारी रूह का इन्टरव्यू होता है और उसमें पास या फेल होने पर जन्नत या दोज़ख मिलती है। ये तशखीस रूहें खुद करती हैं। अपने आमालो-अफ़याल का जायज़ा लेकर उनका तजज़िया करती हैं और खुद को अपने अगले और बेहतर जन्म के लिए तैयार करती हैं। इन्सानी ज़िन्दगी का मतलब है अपने में इन्सानियत की खूबियाँ पैदा करना, उन पर अमल करना और उन में इज़ाफ़ा करना। इन्सानी ज़िन्दगी में इन्सानियत का फ़रोग़ ही मक़सद होता है। रूहों की दुनिया में रूहें आज़ादी से रहती हैं। उन्हें किसी तरह की परेशानी, दुख, तकलीफ़ या खुशी का एहसास नहीं होता। उनका कोई जिस्म भी नहीं होता। इन्सान का हर जनम उसके लिए एक इस्कूल की तरह होता है जहाँ उसे अपनी ज़िन्दगी में हज़ार दुखों, तकलीफ़ों में रहते हुए भी दूसरों से हमदर्दी, मुहब्बत, मुर्व्वत और मदद के ज़ब्बात को फ़रोग़ देना होता है। ऐसा करते हुए वो अपने गुस्से, नफ़रत, हसद जैसे नेगेटिव ज़ब्बात पर क़ाबू पाना सीखता है। हर जन्म में वो अपनी कोई न कोई ख़ामी तर्क करता है और जब वो सभी ख़ामियाँ तर्क कर देता है तो वो अज़ीम रूह के वजूद में शामिल हो जाता है जिसके बाद फिर जनम लेने की ज़रूरत नहीं रहती। इसे ही आत्मा का परमात्मा से मिलन कहा गया है।

इसके बाद उन्होंने क़ुरेदा कि सिर्फ़ इतना जानने के लिए तो मैं इतना तवील सफ़र तय करके उन तक नहीं पहुँचा होऊँगा। बूढ़ी हो चुकी आँखों में एक शरारती चमक थी। मैंने उन्हें बताया कि मुझे अजीब से ख़्वाब आते हैं और उन ख़्वाबों में मैं बार बार एक ही लड़की को देखता हूँ और काफ़ी तकलीफ़ में देखता हूँ। उसको ऐसी हालत में देखकर मुझे भी तकलीफ़ होती है। मुझे लगता है कि ये कोई पिछले जनम का नाता है। समझ में नहीं आता कि

क्या हो रहा है। और ताज्जुब की बात ये है कि वो लड़की मेरे साथ ही पढ़ती है मगर मुझसे बहुत छोटी है। मेरी बेटी की उम्र की है। मुझे उसके साथ कुछ ऐसा लगाव हो गया है कि मैं उसे अपने ख्यालों से एक पल के लिए भी जुदा नहीं कर सकता। दरअसल ऐसा लगता है कि वही मेरे ख्यालों से निकलना नहीं चाहती। मैं एक ज़हीन इन्सान हूँ और इससे पहले कि कोई मुझे समझाए कि मेरे दिल में इस लड़की के लिए जो मुहब्बत है वो ग़लत है मुझे खुद भी इसका एहसास है। मगर इस लड़की के लिए मेरे ज़ेहन में जो मुहब्बत है वो इस दुनिया की नहीं है। ये वो मुहब्बत है जिसका इस दुनिया की मुहब्बत से कोई सरोकार नहीं है। ये जिस्मानी नहीं, ज़ेहनी है, नफ़्सानी नहीं रूहानी है। मैं बस इतना ही चाहता हूँ कि जो एहसास मुझे हुआ है उसे भी हो। मैं ये भी नहीं चाहता कि वो भी मुझसे मुहब्बत करे। हाँ ये ज़रूर चाहता हूँ कि वो मेरे साथ राबिते में रहे। उसे इतना इल्म तो ज़रूर हो कि मैं उससे बेपनाह मुहब्बत करता हूँ। मुझे न तो उसकी कुरबत चाहिए न रोज़ाना दीदार ही। बस कभी कभार बात होती रहे, यही बहुत है मेरे लिए। हम बस दोस्त ही रहें तो मेरी बेक्रारी कुछ कम हो जाए। ये दर्दे-महरूमी ख़त्म हो जाए। कभी उसके लिए कुछ कर सकूँ तो सुकून हासिल हो। मुझे महसूस होता है कि मैं शायद पिछले जनम में उसके लिए कुछ कर नहीं सका। खुद को कहीं न कहीं उसका मुजरिम भी मानता हूँ मैं। ये बातें सबके साथ क्या, किसी के साथ भी साझा नहीं कर सकता। अन्दर ही अन्दर खुद को खाए जा रहा हूँ मैं। प्रोफ़ेसर साहब उठे और किताबों की एक अल्मारी में इधर उधर कुछ ढूँढ़ने लगे। फिर एक किताब निकाल कर लाए और मुझे देते हुए बोले। इसे पढ़ना और उस लड़की को भी पढ़ने को देना। ये एक बहुत ही मशहूर शाख्स की लिखी किताब है। इसमें पिछले जनम के साथियों के बारे काफ़ी तफ़्सील से लिखा है उसने। मैंने किताब का उनवान देखा, “ओनली लव इज़ रीयल।” लिखने वाले का नाम था डॉक्टर ब्रायन वेइस। एक मशहूर पास्ट लाईफ़ रीग़रेशन थिरेपिस्ट। अमेरिका में फ़्लोरिडा में

रहता है। किताब खोली। हर सप्ताह पर प्रोफेसर साहब ने कहीं कुछ लिखा हुआ था या कुछ सतरों को अन्डरलाईन किया हुआ था। मुझे याद आया कि ये किताब मैं पहले भी कोई पन्द्रह साल पहले पढ़ चुका था। किसी दोस्त ने दी थी। तब यँ ही पढ़ डाली थी। ज़्यादा कुछ याद नहीं था। इतने में खाना आ गया। हमने बैठक में बैठकर खाना खाया जिसके दौरान मैंने उनसे इसी मज़मून पर एक दो सवाल किए। मेरा वापसी का सफ़र तवील था। इजाज़त चाही तो प्रोफेसर साहब ने मेरा हाथ पकड़ लिया। बोले, “तुमने ये तो पूछा ही नहीं कि मुझे इस मज़मून में दिलचस्पी क्यों है। मेरे पास इस शख्स की पाँच किताबों के अलावा इसी मज़मून पर तक्ररीबन सोलह और किताबें भी हैं। कई सालों से पढ़ रहा हूँ। कुछ को तो तीन चार बार पढ़ चुका हूँ।” मैंने कहा, “बताइये”। कहने लगे, “तुम बहुत खुशकिस्मत हो जो तुम्हें ये एहसास हुआ। और इससे बड़ी खुशकिस्मती और क्या होगी कि तुमने अपने पिछले जनम की महबूबा को देख भी लिया, पहचान भी लिया, मिल भी लिया। ऐसा एहसास करोड़ों में किसी एक को होता है। ये इस बात का सबूत है कि तुम एक ऐसी रूह हो जिसकी जनम दर जनम बहुत ही तरक्की हुई है, इर्तिका हुआ है। ऐसी रूहों को ही ये एहसास होता है। यही एहसास मुझे भी हुआ था आज से कोई पैंतालीस साल पहले। मुझे भी कई बार ऐसा लगता था कि कुछ है जो मेरे पास होना चाहिए और नहीं है। हमारे कॉलेज में एक चपरासी था, अशरफ़। एक दिन ख़बर मिली कि उसकी मौत हो गई है। पन्द्रह बीस दिन बाद हम लोग स्टाफ़ रूम में बैठे थे कि एक तीस बत्तीस साल की औरत चाय लेकर आई। किसी ने बताया कि ये अशरफ़ की बीवी है। इसे उसकी जगह नौकरी पर रखा गया है। सबको चाय देते हुए जब वो मेरे पास आई तो मैंने उससे उसके शौहर की इस छोटी उम्र में मौत हो जाने का अफ़सोस ज़ाहिर किया। हमारी आँखें मिलीं, कोई दो तीन सैकंड के लिए। मगर मुझ पर एक अजीब सी कैफ़ियत गुज़री। ऐसा लगा जैसे उसे पहले कहीं देखा हो। उसका गाँव जम्मू से कोई छः सात मील पर था।

मैं उन दिनों जम्मू में ही रहता था मगर कभी उस गाँव में नहीं गया था। फिर कहाँ देखा होगा। कई दिन वो आँखें, वो चेहरा मेरे ख्यालों में आता रहा। दिमाग पर बड़ा ज़ोर दिया मगर कुछ समझ नहीं आया। शायद उसके मायके गाँव में कभी देखा हो। वो रोज़ ही स्टाफ़ रूम में चाय देने आती थी। एक दिन मैंने पूछ ही लिया कि उसका मायका कहाँ है। उसने किसी गाँव का नाम बताया मगर मैं कभी वहाँ भी नहीं गया था। ज़ेहन पर कुछ ऐसा आलम तारी था कि हर वक़्त वो चेहरा मेरे सामने ही रहने लगा। बड़ी अजीब कैफ़ियत से गुज़रने लगा था मैं। फिर एक दिन शाम को बैठा कुछ पढ़ रहा था कि ज़रा सी झपकी लगी। एक ख़्वाब सा देखा जिसमें वो मेरे पास मूढ़े पर बैठी शलगम काट रही थी। हम बातें कर रहे थे। बच्चों की, फ़सलों की, मवेशियों की। वो मेरी बीवी थी। अचानक आँख खुली। किताब मेरे हाथ से गिर गई और मैं हक्का बक्का सा बहुत देर तक खुद को सँभालने की कोशिश करता रहा। फिर हर दो चार दिन बाद कोई ख़्याल, कोई ख़्वाब आने लगा। वही औरत, वही चेहरा। परेशान रहने लगा था मैं। तभी मुझे लगा हो न हो ये किसी पिछले जनम का ताल्लुक है। उन्हीं दिनों मैंने भी इन्हीं सवालों के जवाब ढूँढ़ने शुरू किए। मैं तारीख़ का प्रोफ़ेसर था। किताबों में ढूँढ़ना शुरू किया। किस किस तहज़ीब में लोग पिछले जनमों और तनासुख में यक़ीन करते थे। क्या ये सचमुच होता है। धीरे धीरे मुझे ये सच लगने लगा। उन दिनों भी अगर ये गूगल जैसा कुछ होता तो बड़ी सहूलत होती लेकिन मुझे कई साल लगे खुद को यक़ीन दिलाने में कि इन्सान कई जनम लेता है ताकि वो जनम दर जनम अपने कर्मों से अपनी रूह को निखारता जाए और एक दिन वो पाक-साफ़ रूह खुदा के वजूद में जा मिले। अपनी हिन्दू मज़हबी किताबों में भी बहुत कुछ मिला। दूसरे मज़ाहिब की किताबों से भी बहुत कुछ मिला और एक दिन मुझे यक़ीन हो गया कि शकीला सचमुच मेरे पिछले जनम में मेरी बीवी थी। मैंने डरते डरते ये बात अपनी बीवी को बताई, पूरी तफ़्सील से। सुनकर वो पहले तो बहुत हँसी, फिर बोली, ‘पंडित जी

मुसलमान हो जाओ और ले आओ शकीला को भी। कम से कम मेरे साथ काम तो करवाएगी”। मैं हैरान था कि मेरी बीवी ने कोई हँगामा खड़ा नहीं किया। ज़्यादा पढ़ी लिखी नहीं थी वो मगर कहने लगी कि उसके बाबूजी बचपन में ऐसी कई कहानियाँ सुनाते थे जिनमें पिछले जनमों के साथी अगले जनमों में भी मिलते थे और देखकर पहचान भी लेते थे। इसके बाद मैंने शकीला को ये बात बताई तो वो भी बहुत हँसी। कहने लगी, ‘साहब हम गरीब लोग हैं हमारी इतनी औकात कहाँ कि किसी पिछले जनम में भी मैं आपकी बीवी रही होऊँ’। उसे नहीं, मगर मुझे तो ये एहसास था कि वो पिछले जनम में मेरी बीवी थी। मैंने उसकी हर तरह से मदद करनी शुरू कर दी। उसके बच्चों को स्कूल करवाने के बाद कॉलेज में भी पढ़ाने में मदद की। फ़सल आती तो मेरी बीवी खुद ही कहती कि शकीला को भी एक दो बोरी भिजवा दो। उसकी मदद करने से एक अजीब सा सुकून हासिल होता था। ये सिलसिला तक्ररीबन तीस साल चलता रहा। मैं रिटायर होने पर अपने गाँव आकर रहने लगा था। महीने में एक दो बार जम्मू जाना होता था। जम्मू जाता तो अपने कॉलेज भी जाता। पुराने साथियों से मिलता और शकीला से भी। फिर एक दिन ख़बर मिली कि वो मर गई है। जब तक ज़िन्दा रही उससे बातचीत होती रहती थी। उसकी मदद करना अच्छा लगता था। फिर उसके बच्चे कमाने लगे तो मदद की भी ज़रूरत नहीं रही। उसके मरने का दुख नहीं हुआ मुझे, क्योंकि उसके साथ तीस साल तो इस जनम भी काट लिए थे मैंने। बेशक वो इस जन्म में किसी और की बीवी थी मगर मेरी भी कुछ तो लगती ही थी। पिछले जन्मों के रिश्ते इस जन्म में भी वैसा ही सुकून देते हैं बशर्ते कि तुम बिना किसी लालच के खुलूसो-मुहब्बत से मिलते रहो। ऐसा हर किसी के मुक़द्दर में नहीं होता कि वो इस जन्म में अपने पिछले जन्म के साथी से मिले और पहचान भी ले। ये कुछ बेदार रूहों के ही नसीब में होता है। मैं शकीला से मिलकर बहुत खुश था और उसके शौहर की

मौत के बाद उसकी खिदमत का मौक़ा मिलना भी शायद ख़ुदा की मशीयत का ही हिस्सा था”।

उनकी कहानी सुनकर ताज्जुब के साथ साथ ख़ुशी भी हुई और ये यक़ीन भी पुख़्ता हुआ कि निवेदिता का मेरी ज़िन्दगी में आना कोई इत्तेफ़ाक़ नहीं, ख़ुदा की मस्लेहत का ही हिस्सा है। प्रोफ़ेसर साहब ने मुझे सलाह दी कि मैं किसी पास्ट लाइफ़ रिग्रेशन थिरपिस्ट से मिलूँ। उससे अपने पिछले जन्म को ज़्यादा साफ़ देखने का मौक़ा मिलेगा और अगर पुख़्ता यक़ीन हो जाए कि ये लड़की वही लड़की है जो उस जन्म में तुम्हारी महबूबा थी तो इस लड़की को तफ़्सील से सारी बात बताना। वो बेशक़ तुमसे बहुत छोटी है मगर दोस्त तो हो ही सकती है। मुझे यक़ीन है कि ऐसा होने से तुम्हारा दर्द-महरूमी ज़रूर कम होगा और धीरे धीरे ख़त्म भी हो जाएगा। मैं तुम्हारे लिए दुआ करूँगा।

घर आकर मैंने वो किताब पढ़नी शुरू की। साठ सत्तर सप्ते पढ़े। फिर ख़्याल आया कि क्यों न मैं ये किताब पहले निवेदिता को दूँ। मैं बाद में पढ़ लूँगा। लेकिन निवेदिता ने तो मुझे मिलने से भी मना कर रखा था। मैं भी उसे परेशान नहीं करना चाहता था। वो एक बहुत ही सँजीदा तालिबा थी और इन दिनों अपनी असाइनमेंट तैयार करने में बेहद मसरूफ़ थी। मेरी बीवी की हरकत की वजह से वो पहले ही अपनी पढ़ाई पर पूरी तवज्जोह नहीं दे पाई थी। लेकिन उसे ये किताब देना भी ज़रूरी था। दो तीन दिन बाद मैं उस किताब को एक लिफ़ाफ़े में बन्द करके अपने साथ लेकर यूनिवर्सिटी गया। रास्ते में ये भी सोच रहा था कि काश आज वो मुझे ख़ुद न मिले क्योंकि वो सोचेगी कि उसके मना करने के बावजूद मैं उसे फिर से परेशान करने क्यों आ गया हूँ। किताब को लिफ़ाफ़े में बन्द करके ले जाने के पीछे मक़सद यही था कि अगर वो मुझे वहाँ न मिली तो मैं ये किताब लाइब्रेरी असिस्टेंट को दे आऊँगा। वो सचमुच उस दिन लाइब्रेरी में नहीं आई थी। मैंने कुछ राहत महसूस की और कवर पर निवेदिता का नाम लिखकर उसे देने के लिए वो लिफ़ाफ़ा लाइब्रेरी असिस्टेंट

को दे आया। मैंने निवेदिता को मैसेज किया कि ये किताब कहाँ से मिली है और उसे क्यों दी है। वो मैसेज ये है।

“निवेदिता, कुछ दिन पहले एक खत भेज कर जो बातें मैंने बताई थीं तुम्हें, उनके बारे में गहराई से जानने के लिए मैं एक प्रोफ़ेसर साहब से मिला था जिन्हें पिछले जन्मों के बारे में काफी इल्म हासिल है। मुझे दिखाई देने वाले ख्वाबों और पुर असरार मनाज़िर के बारे में बताते हुए उनकी राय जानने की कोशिश की। उन्हें तुम्हारे बारे में भी बताया। उनके मुताबिक़ ऐसे तजुर्बात करोड़ों में से किसी एक को होते हैं। इनको हल्के में नहीं लेना चाहिए। उन्होंने एक किताब भी पढ़ने को दी है और कहा है कि मैं ये किताब तुम्हें भी पढ़ने को दूँ। इसलिए मैंने वो किताब तुम्हारे लाइब्रेरी असिस्टेंट को दी है। उससे ले लेना और पढ़कर मुझे वापस कर देना क्योंकि ये किताब प्रोफ़ेसर साहब को वापस करनी है।

कई दिन गुज़र गए मगर उसका न कोई फ़ोन आया न मैसेज ही। तब तक मुझे इस बात का इल्म नहीं था कि वो मेरे मैसेज भी ब्लॉक कर चुकी है। मैं धीरे धीरे अन्दर ही अन्दर टूटने लगा था। फिर एक दिन लाइब्रेरी असिस्टेंट का फ़ोन आया कि निवेदिता लाइब्रेरी नहीं आ रही है इसलिए मैं किसी दिन आकर वो लिफ़ाफ़ा ले जाऊँ।

मैं ये जानकर हैरान हुआ कि इतने दिनों तक निवेदिता लाइब्रेरी क्यों नहीं गई और ये सोचकर परेशान भी कि कहीं वो बीमार न हो गई हो। आख़िर वो भी तो परेशानी से गुज़र रही थी। ख़ुदा से दुआ की कि वो ठीक हो। फिर ख़याल आया कि हो सकता है उसने अपनी असाइनमेंट जमा करवा दी हो और अब लाइब्रेरी जाने की ज़रूरत न रही हो। लाख तरीक़ों से दिल को समझाने की कोशिश की कि सब ठीक ही होगा मगर ज़ेहन नहीं मान रहा था। किसी अनहोनी के अँदशे और फ़िक्र ने मजबूर किया कि उससे पूछूँ कि सब ठीक तो

है ना। उसे खत लिखा और मैसेंजर पर भेज कर जवाब का इन्तज़ार करने लगा मगर कोई जवाब नहीं आया। फिर सोचा क्योंकि उसने कहा था वो जवाब नहीं देगी शायद यही वजह होगी। वो खत ये था।

“निवेदिता,

उम्मीद करता हूँ तुम ठीक होगी। मैं कुछ दिन पहले एक लिफ़ाफ़ा जिसमें एक किताब थी, लाइब्रेरी अटेंडेंट को ये कहकर दे आया था कि वो ये लिफ़ाफ़ा तुम्हें दे दे। तुम्हारी उस दिन की नाराज़गी की वजह से मैं तुम्हें अपनी शकल नहीं दिखाना चाहता था और मन ही मन ये सोच रहा था कि जब मैं लाइब्रेरी में जाऊँ तो तुम मुझे वहाँ न मिलो। हुआ भी ऐसा ही। वो लिफ़ाफ़ा देने के बाद मैंने तुम्हें मैसेज भी किया कि वो लिफ़ाफ़ा ले लेना। इसके बाद भी मैं छिट-पुट मैसेज भेजता रहा। मुझे नहीं पता मेरे मैसेज तुम्हें मिलते भी हैं या नहीं। इससे पहले शायद शनिवार या इतवार को मैंने तुम्हें कई दिन पहले से लिख रखा खत भी मैसेंजर और वाट्सऐप पर पोस्ट किया था। पता नहीं तुम तक पहुँचा या नहीं। उसमें मैंने तुमसे जो मेरा लगाव है उसके बारे और क्यों है उसके बारे में तफ़्सील से लिखा था। वो खत पढ़ना तुम्हारे लिए बहुत ज़रूरी है। मैं नहीं चाहता हमारे बीच कोई ग़लतफ़हमी पैदा हो।

मैं ये भी नहीं जानता कि मेरा ये खत भी तुम तक पहुँचेगा या नहीं। फिर भी अगर मेरी अच्छी किस्मत को कहीं ये तुम तक पहुँच जाता है तो मैं तुमसे ये कहना चाहता हूँ कि मुझे तुम्हारी फ़िक्र होती है। एक अजीब सा डर लगा रहता है कि तुम्हारे साथ कुछ बुरा न हो गया हो, जैसे कि कोई हादसा या तबीयत न खराब हो गई हो। मैं समझ रहा था तुमने वो लिफ़ाफ़ा ले लिया होगा लेकिन आज इतने दिनों बाद लाइब्रेरी वाले का फ़ोन आया कि तुम लाइब्रेरी नहीं आ रही हो इसलिए मैं वो लिफ़ाफ़ा ले जाऊँ। दिमाग़ में कई बुरे ख़याल आए। इतने दिन लाइब्रेरी न जाना जबकि तुम्हें अपनी असाइनमेंट पूरी करनी

है और वक़्त बहुत कम है। मन में कई तरह के ख़याल आए। फ़िक्र हुई मगर किससे पूछूँ? तब से ही दिल घबरा रहा है मेरा। भगवान के आगे पूरा एक घँटा दुआ की। हे भगवान मेरी निवू का ख़याल रखना, उसे कुछ न हो।

फिर शायद भगवान की तरफ़ से ही इशारा मिला। पता नहीं ठीक है या ग़लत। सोचा हो सकता है कि लाइब्रेरी से अब और मैटीरियल की ज़रूरत न हो और तुम अपने होस्टल में ही असाइनमेंट पूरी करने में बिज़ी हो। काश यही सच हो। मेरा दिल अभी भी घबरा रहा है। एक अजीब सी हालत है। समझ में नहीं आ रहा क्या करूँ।

देख निवू, मेरे बच्चे, मेरी जान, अगर तू ठीक ठाक है तो मैं खुश हूँ। अगर कोई भी प्रॉब्लम है तो प्लीज़ मुझे बताओ। मैं कैसे भी करके उसको दूर करूँगा। मुझे कई बार ऐसा महसूस हुआ है जैसे कोई मुझसे कह रहा हो कि इस लड़की का ख़याल रखना, इसकी हिफ़ाज़त करना। पता नहीं क्यों मुझे ये डर लगा रहता है कि आने वाले वक़्त में तुम्हारे साथ कुछ बुरा न होने वाला हो। भगवान करे ऐसा कुछ न हो, लेकिन अगर ऐसा कुछ होता है और मुझे ख़बर नहीं होने की वजह से मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर पाता तो मुझे बहुत दुख पहुँचेगा।

मुझे इस बात की बिल्कुल समझ नहीं आ रही कि तुम उस दिन इतने बुरे मूड में क्यों थी। मैंने तुमसे कहा था कि मैं तुमसे मिलकर कुछ बातों की तह तक जाना चाहता हूँ, और तुमने मुझे कहा था कि तुम बाहर हो, वापस आकर इसके बारे में बात करोगी। फिर मैंने एक हफ़्ते के बाद तुमसे पूछा कि तुम वापस आ गई हो या नहीं। मैं तुमसे मिलकर कुछ बातें क्लीयर करने के बाद उन सब लोगों को कनफ़्रन्ट करना चाहता था जिन्होंने तुम्हें रुसवा करने की कोशिश की थी ताकि तुम्हारी प्रेस्टीज पर कोई आँच न आए। तुमने कोई जवाब नहीं दिया। इसी बीच मैं अपने कॉलेज के प्रोफ़ेसर से मिला तो उन्होंने मुझे पीएचडी करने की सलाह दे डाली। उनकी खुशी के लिए मैं राज़ी भी हो गया, और सोचा

तुमसे मदद लेता हूँ प्रोसीजर वगैरह के लिए। फिर मैं कोई यूँ ही नहीं आ धमका था वहाँ। तुम्हें एक दिन पहले ही मैसेज करके बता दिया था कि मैं डिपार्टमेंट में आऊँगा। यही एक जैन्टलमैनली तरीका सिखाया गया है मुझे फ़ौज में। ऐसी इत्तलाह करके अगर हम दुश्मन से भी मिलने जाते हैं तो वो भी पूरे एहताराम के साथ मिलता है। यही प्रोटोकॉल है। तुम पता नहीं क्यों गुस्से में थी। तुम्हें गुस्सा करने का पूरा हक़ होता अगर मैं तुम्हें बिना बताए आया होता।

मुझसे ये कहकर कि तुम वापस आकर मुझसे बात करोगी तुमने खुद ही ये फ़ैसला कर लिया कि अब तुमने बात ही नहीं करनी। फिर उस दिन तुमने ये भी कहा कि तुम किसी मैसेज का जवाब भी नहीं दोगी। मैंने तुमसे कहा था कि तुमसे मेरा कम्युनिकेशन में रहना बहुत ज़रूरी है। तुमसे मुझे ख़ास लगाव है इसलिए तुम्हारा मेरी ज़िन्दगी में रहना बहुत ज़रूरी है। तुम्हें पता है मैं तुम्हारी कितनी इज़्जत करता हूँ, इबादत करता हूँ। तुम बहुत अच्छी लड़की हो और मेरी पर्सनल देवी हो। मेरी इन्सपिरेशन हो। तुमने कहा था ठीक है अगर इसमें फ़ीलिंग्स न हों तो। और मैंने कहा था कि फ़ीलिंग्स भी हों तो? और तुम नाराज़ हो गई थी। फ़ीलिंग्स पॉज़िटिव और अच्छी भी हो सकती हैं। उनका मतलब हवस ही नहीं होता। फिर मैंने कहा कि मैंने तुम्हारे लिए एक लेटर लिख कर रक्खा हुआ है उसे पढ़ लो। तुमने कहा था कि मैं वो तुम्हारे फ़ोन पर भेज दूँ। मैं दूसरी बार यही कहने के लिए अन्दर गया था कि अपना वाट्सऐप खोल दो ताकि मैं वो ख़त तुम्हें भेज सकूँ। तुमने तक्ररीबन रोते हुए मुझसे कहा था तुम मुझे नहीं मिलोगी और न ही मैं तुमसे मिलूँ। तुम इतनी गुस्सा और परेशान हो गई कि मुझे समझ ही नहीं आया कि तुम ऐसा क्यों कर रही थी। ऐसे मसले आराम से बैठकर भी सुलझाए जा सकते हैं। न तुम परेशान होती न मैं। तुम्हारी हालत क्या थी और क्या रही होगी मैं समझ सकता हूँ इसीलिए थोड़ा ठीक होते ही मैंने मैसेजर पर तुमसे माफ़ी भी माँगी। लेकिन मेरी हालत क्या हुई उसका तुम्हें कोई अन्दाज़ा नहीं। मैं एक कैन्सीरियन हूँ, और कैन्सीरियनज़ हद

से ज़्यादा भावुक होते हैं। मुझसे तुम्हारा दुख बर्दाश्त ही नहीं हुआ। तुम्हें मिलकर समझाना चाहता था मगर तुम उसके लिए राज़ी ही नहीं हुई।

मैंने सोचा था कि अब तुम्हें अपना चेहरा नहीं दिखाऊँगा मगर लाइब्रेरियन के फ़ोन ने मुझे फ़िक्रमन्द कर दिया और तभी से बैठा सोच रहा हूँ, ये न हो गया हो, वो न हो गया हो। प्लीज़ मुझे एक मैसेज कर के बता दो कि तुम कैसी हो। कोई परेशानी तो नहीं फ़ेस कर रही हो।

मैं सोच रहा था कि इस सारे वबाल में मेरा और तुम्हारा क्या कुसूर है। मुझे कोई कुसूर नज़र नहीं आया। फिर सोचा तुम्हारी नज़र में मेरा क्या कुसूर है। तो मेरा कुसूर इतना है कि मैं तुम्हें भेजी हुई शायरी अपनी वाइफ़ से छुपा नहीं पाया। लेकिन उस में ऐसा कुछ था ही नहीं जिसे छुपाया जाता। इसमें सारा कुसूर मेरी वाइफ़ और बॉबी का है जिन्होंने इस बात को डिपार्टमेंट तक पहुँचाया। इसके लिए मैं कुसूरवार नहीं हूँ। मैं तो इन लोगों को सबक सिखाना चाहता हूँ, तुम्हारी इज़्ज़त बहाल करना चाहता हूँ, अपने क्लासमेट्स के साथ सब क्लीयर करना चाहता हूँ और इसके लिए मुझे तुम्हारी मदद और साथ की ज़रूरत है। अगर तुम ये सोचकर कि मैं कुसूरवार हूँ मुझसे त'अल्लुक नहीं रखना चाहती तो ये ग़लत होगा। हमें इसका सामना करना चाहिए न कि शुतुरमुर्ग की तरह अपनी गर्दन रेत में धँसा लेनी चाहिए।

मैं तुम्हारी असाइनमेंट सबमिट करने की वजह से अभी ये मुद्दा नहीं उठाना चाहता था और सोच रहा था कि जब तुम असाइनमेंट सबमिट कर लोगी तो बात करूँगा। इस मुद्दे को बीच ही में छोड़ देना ठीक नहीं होगा। मैंने अपनी वाइफ़ को तो समझा दिया है कि उसका तुम पर शक करना ग़लत है लेकिन वो मानेगी या नहीं कह नहीं सकता। मैडम ज़रीन का रोल मुझे समझ नहीं आया और न ही उनके खिलाफ़ पुख्ता सबूत मिले हैं। तुम उनसे क्यों ख़फ़ा

हो उसकी वजह भी नहीं मालूम। अगर तुम्हारे पास कुछ ऐसा है जिससे बात साफ़ हो तो मेरे साथ शेयर करना।

बाक्री, मैंने उस ख़त में सब कुछ लिखा था जो शायद तुम तक पहुँचा ही नहीं। वाट्सऐप पर मैंने उसे डिलीट फ़ार मी किया था। चैक करना शायद तुम्हारी तरफ़ डिलीट न हुआ हो। उसे पढ़ना प्लीज़। बहुत सी ग़लतफ़हमियाँ दूर होंगी। अगर नहीं मिला तो बताना मैं फिर भेजूँगा अगर तुम मुझे अनब्लॉक कर दो तो।

देखो निवू, तुमसे लगाव होने की वजह मामूली नहीं है। वो एक बहुत ही ऊँचे दर्जे की डिवाइन इन्टरवेन्शन है और उसी का एहतराम करते हुए मैं अपना फ़र्ज निभा रहा हूँ। तुम नहीं जानती तुम मेरे लिए क्या हो। मुझे ये करने दो। तुम से कुछ नहीं चाहिए मुझे। तुमसे कम्युनिकेशन न होने की वजह से मेरी सेहत, मेरे दिमाग़, मेरी रोज़मर्रा और मेरी क्रिएटिविटी पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है और इसे तुम ही ठीक कर सकती हो।

दुआ है कि तुम हमेशा खुश रहो और जो मैं कहना चाहता हूँ तुमसे, उसका मर्म तुम तक किसी न किसी तरह पहुँच जाए।

ख़ुदा हाफ़िज़”।

निवेदिता कब मेरे लिए निवेदिता से निवू हो गई थी मुझे पता ही नहीं चला। उसके लिए मेरे दिल में इज़्ज़त के साथ साथ इतना प्यार भर गया था कि लगता ही नहीं था कि वो कोई ग़ैर है। किसी और की बेटी है। वो मुझे अपनी ही लगती थी। ख़ैर, इस ख़त का भी कोई जवाब नहीं आया।

इधर मेरे ज़ेहन में निवेदिता के ख़यालात, ख़यालात में नीम बेदारी की हालत में ज़ेहन से गुज़रते वो पुर असरार मनाज़िर और कुछ कुछ वक्त्रे पर आने वाले ख़्वाबों में उसका दीदार बदस्तूर जारी रहा। कुल मिलाकर मैं उसके

ख्यालात से आज़ाद नहीं हो पा रहा था। सच तो ये है कि वो मुझे मिले न मिले, मैसेजिज़ का जवाब दे न दे, मैं ज़ेहन से उसके ख्यालों, उसके तसव्वुर को निकाल देने की कोशिश भी नहीं कर रहा था। आखिर इस मुश्किल वक़्त में यही तो मेरा सरमाया था। मैं उसके ख्यालात से आज़ाद होना ही नहीं चाहता था। इक तरफ़ इस हालत और दूसरी तरफ़ मेरी बीवी के मुसलसल दुश्मननुमा बर्ताव ने मेरा सुकून से जीना मुहाल कर रखा था जिसकी बदौलत मुझ पर एक शदीद ज़ेहनी दबाव बढ़ रहा था। नींद नहीं आती थी, भूख नहीं लगती थी। चिड़चिड़ा होने लग गया था। भूख न लगना एक तरह से ठीक ही था क्योंकि मेरी बीवी ने मुझे खाना देना बन्द कर दिया था। वो मेरे सामने बैठकर खाती थी मगर मुझे नहीं पूछती थी। हालांकि मैंने कई महीने पहले दूसरे कमरे में रहना शुरू कर दिया था फिर भी टीवी पर खबरें सुनने या कोई सीरियल देखने और ख़ास तौर पर अपने बच्चे के साथ कुछ पल बैठने के लालच में उनके कमरे में चला जाता था। कभी अगर भूख महसूस होती तो मैं खुद खाना बनाकर थोड़ा बहुत खा लेता। कभी चाय से ही भूख को मारने की कोशिश करता या पानी पी लेता। मैं तक़रीबन रोज़ ही सुबह शाम सैर करने का और हर रोज़ वरजिश करने का आदी था मगर ऐसी हालत में वो सब छूट गया था। जैसा कि मैंने पहले भी ब्यान किया कि बड़े से बड़े ज़ँगजू के लिए भी एक साथ दो महाजों पर लड़ना मुश्किल होता है मेरे साथ भी यही मस'अला था। इधर निवेदिता ने बात करनी बन्द कर दी थी उधर मेरी बीवी की ज़िद थी कि मैं उसकी हुकूमत तले उसका पालतू कुत्ता बन कर रहूँ जो मुझे कभी मन्ज़ूर नहीं था। बीमार रहने लगा। ज़्यादा वक़्त बिस्तर पर लेटा रहता। कभी कोई किताब खोलकर दो चार सप्पहे पढ़ लेता तो कभी यूट्यूब पर बेमतलब के वीडियो देखता रहता। बाहर जाना बन्द कर दिया था। अगर किसी दोस्त का फ़ोन आता या कहीं पार्टी या अदबी प्रोग्राम में शामिल होने को मदऊ किया जाता तो मैं बिना अपनी जिस्मानी और ज़ेहनी कैफ़ियत का ज़िक्र किए बहाना बनाकर टाल देता। दिल

ही नहीं करता था किसी से मिलने को। खास दोस्तों के फ़ोन के अलावा औरों का फ़ोन उठाना भी बन्द कर दिया था। एक फूलगोभी सा खिला खिला रहने वाला इन्सान बन्द गोभी बन गया था। हाँ, शायरी का अमल बदस्तूर जारी रहा जो थोड़ी देर के लिए थोड़े बहुत सुकूनो-राहत का बायस बनता मगर ये भी कोई पुख्ता हल नहीं था। एक जान पहचान वाले डॉक्टर को दिखाया तो उसने कहा कि मैं एक्यूट डिप्रेशन के दौर से गुज़र रहा हूँ। मुझे मीर से मजाज़ तक वो तमाम शो'अरा याद आ गए जो ऐसे ही दौर से गुज़र चुके थे। इस अज़ीम फ़ेहरिस्त में शामिल हो जाने पर मैंने दिल ही दिल में निवेदिता और अपनी बीवी दोनों का तहे-दिल से शुक्रिया अदा किया और डॉक्टर की सुझाई दवा लेने की बजाए मैंने खुद को सँभालने के लिए अपनी बीवी की बुड़बुड़ और उलाहनों पर ध्यान देना या उनका असर लेना बिल्कुल बन्द कर दिया। खुद को किताबों में डुबो दिया मैंने। पढ़ना या शायरी करना ही वो दो मशाले थे जो मुझे ज़िन्दा रखे हुए थे। उन दिनों मैंने निवेदिता के लिए एक नज़्म लिखी। जो यूँ है।

“बहुत रोते हुए मुझसे कहा था तुमने कि अब न मिलूँ तुमसे

मेरी आँखों के आगे से मगर वो आज भी मन्ज़र नहीं जाता

हुआ क्या था जो तुमने एकतरफ़ा फ़ैसला करके

त'अल्लुक़ तर्क कर डाला था बिन पूछे या बतलाए

तुम्हारे वास्ते भी ये यक़ीनन बहुत मुश्किल फ़ैसला होगा

मगर जो मुझपे गुज़री है ब्याँ भी कर नहीं सकता

तू मेरी ज़िन्दगी का एक अहमो-खास हिस्सा थी

तुझे मैंने कभी खुद से अलहदा समझा ही न था

तेरी तर्के-त'अल्लुक़ की मगर उस ज़िद ने मुझको मार ही डाला

भला तेरे बिना जीना मेरा क्या खाक जीना है
तुझे शायद लगा होगा कि तू ऐसा करेगी गर
तो मैं भी रफ़ता रफ़ता तुझको इक दिन भूल जाऊँगा
मगर तुझको पता भी है कि मेरे वास्ते आसों नहीं है ये
मेरी हस्ती के ताने-बाने में कुछ यूँ बुनी हुई है तू
कि तुझको खुद से बाहर करने की पुरजोर कोशिश में
मैं खुद सारे का सारा ही उधड़ कर तागा तागा हो गया होता
मेरी हिम्मत नहीं थी कि भुलाने की तुझे कोशिश भी कर सकता
तू मेरे जिस्मो-जाँ में, ज़ेहन में, दिल में, तसव्वुर में
हस्बे-मामूल ही रहती है पहले की तरह बिल्कुल
तुझे इक पल को भी मैं भूल ही पाया नहीं अब तक
मगर हाँ, जब से तू यूँ हो गई है दूर अब मुझसे
बहुत मायूस रहता हूँ मुझे कोई भी शय अच्छी नहीं लगती
मैं शायद बुझ रहा हूँ रफ़ता रफ़ता अपने ही अन्दर
मुझे सब लोग कहते हैं मैं पहले सा नहीं हूँ अब
न वो दिलचस्प बातें हैं न वो नज़्मे ही हैं लब पर
बज़ाहिर चाहे ज़िन्दा हूँ मगर सच में इसे ज़िन्दा नहीं कहते
मैं अक्सर सोचता हूँ कि तुझे भी याद तो आता ही हूँगा मैं
भुला पाना मुझे तेरे लिए भी तो कहाँ आसों रहा होगा

कभी फिर यूँ भी लगता है कि तूने यूँ ही बेमन से
 मुझे ये कह दिया होगा कि तुमसे न मिलूँ बिल्कुल
 कभी जी में ये आता है कि तुझसे मिलने जा आऊँ
 तेरा एहवाल भी पूछूँ कुछ अपना हाल कह आऊँ
 मगर ये सोचकर हर बार रह जाता हूँ मिलने से
 कि शायद दूर रह कर मुझसे तू खुश हो, बहुत खुश हो
 तुझे खुश देखना ही तो मेरे जीने का मक़सद है
 नज़र के सामने हो तू या नज़रों से बहुत ही दूर
 जुदा रहकर अगर मुझसे तू खुश है, मैं भी फिर खुश हूँ
 मेरी अपनी खुशी से लाख बढ़कर है मुझे तेरी खुशी जाना”

मैं जिस ज़ेहनी कैफ़ियत से उन दिनों गुज़र रहा था उसे बर्दाश्त कर पाना
 मेरे अकेले के बस की बात नहीं थी। सो ये नज़्म मैंने निवेदिता को भी मैसेज
 की। मैं ये सोच रहा था कि मेरी इस हालत के बारे जब निवेदिता जानेगी तो
 ज़रूर मुझसे राबिता करेगी। मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ और ये ग़म, ये तकलीफ़,
 ये दुख मुझे अकेले ही सहना पड़ा। मेरा कोई भी मैसेज निवेदिता तक नहीं पहुँच
 रहा था। उसने उस तक पहुँचने के सारे रास्ते बन्द कर रखे थे।

निवेदिता से जुड़े मस’अले की तह तक पहुँचने के लिए मैंने किसी पास्ट
 लाइफ़ रिग्रेशन थिरपिस्ट की तलाश शुरू कर दी। यूँ एक बार पिछले साल
 डॉक्टर बॉबी के ये बताने पर कि वो एक हिप्नोटिस्ट भी है मैंने यूँ ही तफ़रीह
 के लिए उससे मुझे हिप्नोटाइज़ करने को कहा था और जब उसने मुझे
 हिप्नोटाइज़ किया तो मैंने महसूस किया कि मैं हिप्नोटाइज़ तो हुआ मगर बेदार
 भी था। उस दौरान मुझे दो शाख्स दिखाई दिए थे। एक तो सिनेमा एक्टर गजराज

राव और दूसरा लम्बी सी सफ़ेद दाढ़ी वाला एक बुजुर्ग। पाँच सात मिनट बाद ही डॉक्टर बॉबी ने मुझे धीरे धीरे आँखें खोलने को कहा और मैं हिप्नोसिस के असर से बाहर आ गया था। बॉबी ने बताया कि गजराज राव मेरी ज़िन्दगी से पिछले किसी जनम में जुड़ा हो सकता है और वो सफ़ेद दाढ़ी वाला बूढ़ा मेरी रहनुमाई करने वाला फ़रिश्ता है। ख़ैर, अब जो मेरी जुस्तजू थी उसमें बॉबी की मदद लेने का मतलब निवेदिता के लिए मेरे जज़्बात को उजागर करना था जो मैं किसी सूरत में नहीं चाहता था। दूसरा मुझे उसकी सलाहियत पर भी इतना यक़ीन नहीं था। गूगल पर तलाश किया तो बम्बई की एक औरत का नाम और उसकी सलाहियत के रिव्यू पढ़े। फिर और तलाश करने पर एक आदमी मिला। इसका तजुर्बा और सलाहियत बेहतर लगा। उसे फ़ोन किया तो किसी औरत ने उठाया। मैंने बताया कि मुझे पास्ट लाइफ़ रिग्रेशन थिरेपी का एक सेशन लेना है जिसके लिए अपॉइंटमेंट चाहिए। जब मैंने उसे बताया कि मैं चन्डीगढ़ से बोल रहा हूँ तो उसने मुझे बताया कि वो लोग साल में दो बार चन्डीगढ़ आते हैं और अगले महीने ही आने वाले हैं। उसने सलाह दी कि बम्बई आने की बजाए मैं उनसे चन्डीगढ़ में ही मिलूँ। कुछ दिनों बाद अख़बार में उनका इशतहार भी आ गया। वहाँ जाकर मैं उस थिरेपिस्ट से मिला। उसने बताया कि उस दिन वो एक चार घंटे का लेक्चर करेगा और उससे हिप्नोटिज़्म सीखने वाले पुराने लोगों को आगे सिखाएगा। अगले दिन वो रिग्रेशन थिरेपी के दो चार सेशन लेगा। मैं अगले दिन वक़्त पर पहुँच गया। कोई एक घंटे के इन्तज़ार के बाद मुझे कमरे में बुलाया गया। मद्धम सी रोशनी थी कमरे में। एक सिंगल बैड पर मुझे लेटने को कहा गया। थिरेपिस्ट के पूछने पर मैंने अपने साथ पिछले चार पाँच महीनों से हो रहे वाक़िआत के बारे बताया मगर निवेदिता के बारे कुछ नहीं कहा। मैंने कहा, “एक लड़की है जो बार बार मुझे दिखाई देती है, कभी उदास, कभी रोती हुई और मुझे अन्दर तक झिँझोड़ जाती है। उसके बाद मैं बहुत देर तक एक एहसासे-मुजरिमाना और एक अजीब से दर्द-महरूमी

की कैफ़ियत से गुज़रता हूँ। इस ज़ेहनी कैफ़ियत से निजात चाहता हूँ”। थिरेपिस्ट ने मुझे समझाया कि वो मुझे गहरे हिप्नोसिस की हालत में लेकर जाएगा। फिर वो मुझे कुछ हिदायतें देगा। मुझे उन पर अमल करना है। वो मुझे मेरे पिछले जनम में लेकर जाने में मदद करेगा। सेशन के बीच अगर मुझे लगे कि मैं ठीक महसूस नहीं कर रहा तो मैं किसी भी वक़्त वापस आ सकता हूँ। लेकिन जितना ज़्यादा त’अव्वुन करूँगा मुझे उतना ही ज़्यादा फ़ायदा होगा। मैं तैयार था। उसने आहिस्ता आहिस्ता शायद दस तक गिनती गिनी और मैं जल्दी ही एक गहरे हिप्नोसिस की हालत में पहुँच गया। उसने मुझे मेरे पिछले जनम में जाने को कहा। मैं एक बेहद पिछड़े से इलाक़े के किसी गाँव में था। मैंने उसे बताया कि मैं किसी गाँव में हूँ। आस पास कच्चे घर हैं। वो मुझसे गाँव का नाम और आस पास के लोगों के बारे पूछता है। मैं बताता हूँ कि गाँव का नाम कोटली है। पास में एक शहर है, स्यालकोट। हमारी बहुत सारी ज़मीन है। बहुत सारे मवेशी हैं। हम काफ़ी अमीर हैं। मैं तक्ररीबन सत्रह अठारह साल का हूँ। हम लोग सिख हैं। मेरा नाम देबा है। मैं अपने बाप के साथ खेतों में मदद करता हूँ। मवेशियों के लिए चारा लाता हूँ। मेरी माँ मुझे गुरबाणी सुनाती है। मैं शहर के स्कूल में पढ़ने जाता हूँ। शाम को हम तीन चार लड़के मौलवी साहब के पास पढ़ने जाते हैं। मैं कबड्डी खेलता हूँ और दूसरे गाँवों में भी खेलने जाता हूँ। हमारे पड़ोस में शराफ़त चाचा का घर है। वो कुम्हार है और घड़े बनाता है। बड़ा नेक आदमी है। उसकी बहन की बेटी है बानो। वो भी उसी घर में रहती है। अभी छोटी है। तेरह चौदह साल की। वो मुझे बहुत अच्छी लगती है। मैं उसके लिए खेत से गन्ने और अमरूद लाकर देता हूँ। शराफ़त चाचा के दो बेटे हैं। एक का नाम दुल्ला है। दूसरे का नाम गुल्ला है। वो दिमागी तौर पर थोड़ा कमज़ोर है। शराफ़त चाचा की पहली बीवी तक्ररीबन दस साल पहले गुज़र गई थी। रशीदा चाची उसकी दूसरी बीवी है। वो बहुत खूबसूरत है और मुझसे बहुत प्यार करती है। थिरेपिस्ट मुझे और आगे जाने को कहता है। मैं अब बड़ा हो गया हूँ। बानो भी

जवान हो गई है। बहुत खूबसूरत है वो। अक्सर हमारे घर आ जाती है और मेरी माँ के साथ कोई न कोई काम करवाती है। कभी साग और लस्सी लेने आ जाती है। हम दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते हैं। दुल्ले को ये बात पसन्द नहीं इसलिए वो मेरे साथ भी झगड़ा करता है और बानो को भी डाँटता है। दुल्ला बदमाश क्रिस्म का आदमी है। कई कई दिन गाँव से बाहर रहता है। लोग कहते हैं वो डाके डालता है। वो हर किसी से लड़ता है और लोग उससे डरते हैं। वो बानो को छोटी छोटी बातों पर मारता और डराता है। इसलिए मेरी उससे तीन चार बार लड़ाई हो चुकी है। रशीदा चाची भी कभी उसे ठीक से आटा नहीं गूँधने, कभी रोटी जल जाने, कभी कपड़े ठीक से न धोने, कभी कुँए से वक़्त पर पानी न लाने पर डाँटती रहती है। शराफ़त चाचा निहायत शरीफ़ इन्सान है। वो बानो को बहुत प्यार करता है मगर अपनी बीवी के आगे मजबूर है। रशीदा चाची का बचपन वाला प्यार अब दूसरा रँग ले चुका है। वो मुझे तक्ररीबन दस ग्यारह साल बड़ी है। वो मुझे बहाने से घर बुलाती है और छोटे मोटे काम में मदद के बहाने मुझे ग़लत तरीक़े से छूती है। मैं उसे रोकता हूँ तो कहती है तेरा क्या जाता है एक आध जप्फ़ी डालने में। तेरा चाचा तो अब बूढ़ा हो गया है। तू मुझे बहुत अच्छा लगता है। कभी कभी आ जाया कर। मुझे उसकी ये बातें अच्छी नहीं लगती।

थिरेपिस्ट मुझे और आगे जाने को कहता है। मैं देखता हूँ कि एक दिन शाम के वक़्त मैं अपने खेतों से आ रहा था तो देखता हूँ कि बानो की बकरियाँ खेत में बेरी के पत्ते खा रही हैं और बानो खेत की मेंढ़ पर गिरी हुई है। उसे उठाता हूँ तो देखता हूँ कि उसका बदन तेज़ बुखार से तप रहा है। मैं उसे उठा कर उसके घर लाता हूँ। रशीदा चाची को बताता हूँ। बानो को मसहरी पर लिटाकर अपनी माँ को बताता हूँ। वो मुझे बुखार की दवा देती है और कहती है कि ये बानो को खिलाना तब तक वो दूध गर्म करके ला रही है। मैं रशीदा चाची को पानी लाने को कहता हूँ और बानो को दवा खिलाता हूँ। माँ भी दूध

लेकर आ जाती है और रशीदा चाची को कहती है इसे गिलास में डालकर बानो को पिलाओ। फिर माँ बानो के माथे को छूती है और कहती है कि इसको तो बहुत तेज़ बुखार है। वो एक बरतन में पानी लाती है और उसमें एक कपड़ा भिगोकर उस के माथे पर रखती है। मुझसे कहती है तू थोड़ी थोड़ी देर बाद इसके माथे पर ठंडी पट्टियाँ करता रह। तभी इसे होश आएगा। मैं बानो के माथे पर ठंडी पट्टियाँ रखता हूँ। रशीदा चाची दूध लेकर आती है मगर बानो मुश्किल से दो घूँट ही पीती है। रशीदा चाची बुड़बुड़ करती है। “इसकी माँ मर गई और ये मुसीबत मेरे गले में डाल गई”। बानो का बुखार कुछ कम होता है। उसे थोड़ा होश आता है तो मैं घर जाने लगता हूँ। रात भी काफ़ी हो गई है। बानो मेरा हाथ पकड़ लेती है और कहती है। “देबे तू मत जा, मेरे पास ही बैठ, मुझे डर लगता है”। मैं उसे कहता हूँ कि वो आराम करे, मैं सुबह फिर आऊँगा। बाहर वाले दरवाज़े पर रशीदा चाची खड़ी है। मैं पास से निकलने लगता हूँ तो वो मुझसे रुकने को कहती है। मैं रशीदा चाची से कहता हूँ इसे डाँटा मत करो तो वो कहती है कि ये तेरी क्या लगती है जो तू इसकी इतनी फ़िक्र करता है। मैं उसे बताता हूँ कि बानो मुझे बहुत अच्छी लगती है और कहता हूँ कि इसकी शादी मुझसे कर दो। वो कहती है, “तू सरदार है और हम मुसलमान, ऐसे कैसे दे दें तुझे अपनी लड़की”। फिर वो हँस कर कहती है, “मैं जानती हूँ तुम दोनों प्यार करते हो। मैं इसके मामा से बात करूँगी, लेकिन मेरी एक शर्त है। तू पहले मुझे ठंडी करा। तेरा चाचा दूसरे गाँव गया है। दुल्ला भी घर नहीं है। एक बार तू मेरी आग बुझा दे फिर मैं तेरी ज़िन्दगी की शमा रोशन कर दूँगी। ले जाना बानो को”। वो मुझे फिर कस कर पकड़ लेती है और अपनी छातियाँ मेरे सीने से रगड़ने लगती है। ज़बरदस्ती मेरा बोसा ले लेती है। मैं छुड़ाकर घर भाग जाता हूँ और अगली सुबह अपनी माँ को सारी बात बताता हूँ। माँ रशीदा चाची को बहुत डाँटती है। सारे मुहल्ले को पता चल जाता है। रशीदा चाची बाद में मुझ

पर बहुत गुस्सा होती है और कहती है अब तू बानो को भूल जा। लेकिन मैं और बानो मिलते रहते हैं।

थिरेपिस्ट फिर मुझे उस ज़िन्दगी में और आगे जाने को कहता है। मैं देखता हूँ कि मैं तीस लोगों के साथ बर्फ़ीले इलाक़े में फ़ौज की वर्दी में हूँ। मेरे हाथ में बन्दूक है। हम लोग एक बर्फ़ के बड़े से तोड़े के पीछे छुप कर दुश्मन का इन्तज़ार कर रहे हैं। हुक्म है कि दुश्मन पर अचानक हमला करके उसे इतना नुक्सान पहुँचाया जाए कि वो आगे न बढ़ सके। दुश्मन की फ़ौज आती है। कोई सौ के करीब। हम हमला करते हैं। दोनों तरफ़ से गोलियाँ चलती हैं। हमने बहुतों को मार दिया है। हमारे भी आठ साथी मारे गए हैं और कुछ ज़ख्मी हो गए हैं। दुश्मन पीछे भाग जाता है। हम अपने ज़ख्मी साथियों को लेकर जा रहे हैं। बहुत ज़ोरों की ठँड है। चारों तरफ़ बर्फ़ ही बर्फ़ है।

थिरेपिस्ट और आगे जाने को कहता है। मैं फिर अपने गाँव में हूँ। बानो अब दुल्ले की बीवी है। कुछ लोग कहते हैं इनका निकाह नहीं हुआ है। दुल्ले की बीवी के मर जाने के बाद दुल्ला बानो को अपनी बीवी बना लेता है। बानो मुझसे मिलकर बहुत रोती है। वो मुझे बताती है कि मेरे फ़ौज में जाने के कुछ महीनों बाद दुल्ले की बीवी की मौत हो जाती है और दुल्ले ने उसके साथ ज़बरदस्ती की है और उसे बीवी बना कर रखे हुए है। मैं अपनी माँ से पूछता हूँ। माँ मुझे इस सब कुछ से दूर रहने को कहती है। रशीदा चाची से पूछता हूँ तो वो भी टाल जाती है। बानो अब भी किसी न किसी बहाने मुझसे मिलती है। मुझे उससे मिले बिना चैन ही नहीं पड़ता। फिर एक दिन देखता हूँ कि हमारी गली में बड़ी भीड़ जमा है। कुछ लोग किसी को घेरे हुए हैं। दुल्ला किसी को पीट रहा है। रशीदा चाची गालियाँ दे रही है। शराफ़त चाचा बीच बचाव कर रहा है। मैं आगे बढ़ कर देखता हूँ कि दुल्ला बानो को पीट रहा है। बानो के बाल बिखरे हैं। कपड़े धूल में लिथड़े हैं। उसकी आँखों में आँसू हैं। बड़ी बुरी और क़ाबिले-रहम हालत में है वो। मैं उसे बचाने को दौड़ता हूँ। दुल्ला मुझे भी पीटने के लिए

मेरी तरफ़ गालियाँ देते बढ़ता है। मैं बानो की तरफ़ देखता हूँ। वो मेरी तरफ़ बड़ी मजबूर निगाहों से देखती है। मैं दुल्ले की उस दिन बहुत पिटाई करता हूँ। उस दिन शायद मैं उसे मार ही डालता अगर मेरे बाप ने बीच में पड़ कर उसे मुझसे छुड़वाया न होता। मैं दुल्ले को ललकारता हूँ उससे कहता हूँ कि आज के बाद अगर उसने बानो पर हाथ उठाया तो उसको जान से मार दूँगा। मेरी माँ बानो को हमारे घर ले आती है और उसे चुप कराती है, पानी पिलाती है, दिलासा देती है और उसे कहती है कि अब देबा आ गया है, अब तुझे कोई नहीं मारेगा।

थिरेपिस्ट मुझे और आगे जाने को कहता है। मैं और बानो एक आम के बाग में एक दरख्त के नीचे बैठे एक पोटली में से रोटी खा रहे हैं। दोपहर का वक़्त है। और भी बहुत सारे लोग हैं। मर्द, औरतें, बच्चे, बूढ़े। मुल्क की तक्सीम हो गई है। सब कहीं जा रहे हैं। सब यहाँ कुछ देर आराम करने के लिए रुके हुए हैं। रोटी खाकर फिर चल पड़ेंगे। अचानक दुल्ला अपने साथ सात आठ लड़के लेकर आ धमकता है। उन सब के पास हथियार हैं। वो मेरे ऊपर हमला कर देते हैं। मैं भी अपनी किरपान निकाल कर तैयार हो जाता हूँ। दुल्ला कहता है कि ये बचना नहीं चाहिए। ज़म कर लड़ाई होती है। मेरी पीठ ओर टाँगों पर तलवार के ज़ख़्म लगते हैं। मैं अकेला हूँ और वो नौ हैं। मैं उनमें से तीन को मार देता हूँ दो को ज़ख़्मी कर देता हूँ। दुल्ला ललकारते हुए मेरी तरफ़ बढ़ता है। उसके लिए मेरे दिल में इतना गुस्सा है कि मैं उसका वार बचाकर सीधा उसकी गरदन पर वार करता हूँ और उसकी गरदन धड़ से अलग हो जाती है। तभी कोई पीछे से मेरे सर पर वार करता है। बहुत गहरा ज़ख़्म कर देता है। मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा जाता है मगर मैं पीछे मुड़कर ज़ोर से वार करता हूँ, उसकी बाँह कट कर दूर जा गिरती है। दूसरे दो लड़के भाग जाते हैं। मैं ज़मीन पर गिर जाता हूँ। बानो मेरा सर ज़ानों पर लेकर चीख चीख कर रोती है, चिल्लाती है। “ओए मेरे देबे नूँ मार दित्ता, ओए मेरे देबे नूँ मार दित्ता, तुहाडा कक्ख न रहे, ओए दोज्जख विच जाओ सारे”। वो रोए जा रही है। दूसरे लोग पास खड़े देख रहे हैं। एक

आदमी साफ़े से मेरे सर को कस कर बाँधता है लेकिन खून निकलता रहता है। मैं मर रहा हूँ, मेरी जान निकल रही है। मैं बानो की तरफ़ देखता हूँ। कुछ कहना चाहता हूँ मगर आवाज़ नहीं निकलती। अब मैं मर गया हूँ। मेरी रूह जिस्म से अलग हो गई है मगर मैं सब देख रहा हूँ। वो लड़के वापस आते हैं और बानो को घसीट कर ले जा रहे हैं। बानो चिल्ला चिल्ला कर रोए जा रही है और “ओए मेरा देबा, ओए मेरा देबा” बोलती जा रही है।

थिरेपिस्ट मुझे धीरे धीरे आँखें खोलने को कहता है। मैं देखता हूँ कि कमरे में ए सी होने के बावजूद मैं पसीने से तर हूँ। एक मिनट तक न थिरेपिस्ट कुछ बोलता है न मैं। घड़ी देखता हूँ तो तक़रीबन बीस-बाईस मिनट गुज़रे होते हैं इस सेशन में। मगर ऐसा लगता है जैसे मैं दो घंटे उस हालत में रहा होऊँ। मेरा ज़ेहन, मेरा जिस्म दोनों ही थक चुके हैं। जो देखा वो ज़ेहन को ज़्यादा परेशान किए हुए है। यक़ीन ही नहीं आता ये क्या हुआ। निवेदिता ही मेरी बानो है। हूबहू वही। रशीदा चाची इस जनम में मेरी बीवी है और दुल्ला और गुल्ला मेरे सगे भाई। मैं कैसे चक्रव्यूह में फँसा हुआ हूँ? थिरेपिस्ट मुझसे पूछता है कि क्या मैंने बानो को इस जनम में देखा है तो मैं कहता हूँ कि नहीं। मैं नहीं चाहता था कि निवेदिता के बारे में उसे बताऊँ। उसने मुझसे कहा कि इस सेशन से मेरे बहुत से सवालियों का जवाब धीरे धीरे मुझे मिल जाएगा और राहत भी महसूस होगी। उसने ये भी कहा कि बहुत मुमकिन है कि बानो तुम्हें दिखाई दे। ऐसा हो तो सारी बात उसको बताना। ऐसा करना बहुत ज़रूरी है। ऐसा करने से तुम्हें बहुत राहत मिलेगी। ये जो एहसासे-महसूस है ये दूर हो जाएगा। अगले सेशन के लिए उसने मुम्बई आने के लिए कहा।

इस सेशन के बाद पता नहीं मैं सँभल रहा था या बिखर गया था। बड़ा गहरा असर हुआ था मुझ पर। तक़रीबन तीन दिन तक मैं आम हालत में नहीं आ पाया।

आम हालत में आने के लिए मुझे और वक़्त लगेगा। इस एक सैशन ने झिँझोड़ कर रख दिया है मुझे। जहाँ निवेदिता का बानो होना मेरे लिए बायसे-मसरत था वहीं रशीदा चाची का मेरी बीवी होना और दुल्ले और गुल्ले का मेरे सगे भाई होने का मतलब था कि मैं अब भी पिछले जनम के दुश्मनों से घिरा हुआ हूँ वो मेरे इतने नज़दीक होकर आज भी मुझसे वही दुश्मनी निभा रहे थे जो पिछले जनम में थी। साफ़ था कि अगर पिछले जन्म की मुहब्बत इस जन्म में भी तुम्हें मिलती है तो दुश्मनी भी तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ती। किसी न किसी रूप में तुम्हारे पिछले जन्म के दुश्मन इस जन्म में भी तुम्हारे आस पास ही मौजूद होते हैं। मैं अपने दोनों भाईयों से बहुत प्यार करता था पर उन्होंने मेरे साथ पूरी दुश्मनी निभाई। मैं अपनी बीवी को बहुत प्यार करता था और वो भी मुझे तब तक बहुत प्यार करती थी जब तक मेरी ज़िन्दगी में निवेदिता बन कर बानो नहीं आई थी। इन्सान के पिछले जनम के अफ़यालो-आमाल इस जनम में भी उसके साथ चलते हैं ये मुझे उस सैशन के बाद इस ज़िन्दगी के रिश्तों की असलियत जान कर पता चला। दुल्ले ने मेरा भाई बनकर इस जनम में मुझसे अपना पिछले जनम का बदला तक्ररीबन ले ही लिया था। हाँ, बस मैं मरा नहीं था जबकि उसने अपनी तरफ़ से कोई कसर नहीं छोड़ी थी। गुल्ला इस जनम में भी नीम पागल ही है। उसको जो जिधर लगाए उधर ही लग जाता है। उसका अपना दिमाग़ है ही नहीं। रशीदा चाची की पिछले जनम की ख्वाहिश तो मुझसे शादी करके पूरी हो गई थी। जब तक बानो निवेदिता बनकर मेरी ज़िन्दगी में नहीं आई थी तब तक सब ठीक चल रहा था। ये भी साफ़ हो गया कि मेरी बीवी इस मामले में निवेदिता का कोई कुसूर न होने के बावजूद निवेदिता के साथ दुश्मनी क्यों निभा रही हैं। मैंने तो बानो को निवेदिता के रूप में पहचान लिया है पर वो बेचारी नहीं जानती कि मैं उसके साथ राबिते में क्यों रहना चाहता हूँ। जब से ये जाना है कि निवेदिता ही मेरी बानो है तब से मेरे दिल में उसके लिए बेइन्तहा मुहब्बत जागी है। शुरू में जब वो मुझसे मानूस हुई थी

और जब मैं अपनी लिखी शायरी उसके साथ साझा करता था तब अगर कोई मुझसे पूछता कि क्या मैं निवेदिता से मुहब्बत करता हूँ तो मैं उसे पागल या बेवकूफ़ कहता। क्योंकि वो मुझे अच्छी तो लगती थी मगर तब मैं उससे मुहब्बत नहीं करता था। उसे अपनी बेटी ही समझता था। यही वजह है कि जब मेरी बीवी ने मुझ पर और निवेदिता पर मुहब्बत में होने का शक किया था तो मैंने बड़े साफ़ लफ़्ज़ों में और बड़े साफ़ दिल से कहा था कि ऐसा कुछ नहीं है और जो वो सोच रही है वो उसके शैतानी दिमाग़ का ख़लल है। क्योंकि उस वक़्त ऐसा कुछ था भी नहीं। लेकिन आज अगर कोई मुझसे पूछे तो मैं उसी तरह बड़े ही साफ़ दिल से और साफ़ लफ़्ज़ों में कहूँगा कि हाँ मुझे निवेदिता से बेपनाह मुहब्बत है।

इस रिग्रेशन सेशन में मैंने जो देखा वो मेरे ख़्यालात और ख़्वाबों में दिखाई देने वाले मनाज़िर की सौ फ़ीसदी ताईद थी। दिल में फिर यही बात आई कि मैं ये सब निवेदिता को बताऊँ क्योंकि अब ये पुख़्ता तौर पर साबित हो गया था कि वो मेरे पिछले जन्म की महबूबा थी। हमारा यहाँ इस जन्म में दोबारा मिलना कुदरत की मस्लेहत का ही हिस्सा था। निवेदिता इस सारे क्रिस्से का मरकज़ी किरदार थी। मैं चाहता था कि इस हक़ीक़त को निवेदिता भी जाने। इसलिए मैंने ये सब बताते हुए उसे फिर एक ख़त लिखा और इस उम्मीद से कि हो सकता है उसने अब मुझे अनब्लॉक कर दिया हो उसके वॉट्सएप पर भेज दिया।

“निवेदिता

मुझे मालूम है इस वक़्त तुम अपनी असाइनमेंट तैयार करने में बिज़ी हो और एक एक पल तुम्हारे लिए अहम है। मेरी भी यही ख़्वाहिश है कि तुम ये काम न सिर्फ़ बिना किसी रुकावट के कर सको बल्कि बहुत बढ़िया कर सको। मैंने पीएचडी की एलिजीबिलिटी के बारे पता किया था और मुझे एक्स-

सर्विसमैन के कोटे से रिजर्वेशन भी मिल जाता। मेरे प्रोफेसर ने यहाँ के एक प्रोफेसर से गाइड बनने की भी बात कर ली थी लेकिन मैंने सिर्फ तुम्हारी वजह से ये आइडिया छोड़ दिया है। मैं नहीं चाहता था कि इससे हमारा डिपार्टमेंट में रोज़ या गाहे-बगाहे सामना हो और तुम्हें ये लगे कि मैंने तुम्हारी वजह से दाखिला लिया है। ये ठीक है कि तुमसे मैसेज के ज़रिए कम्प्यूनिकेट कर लेने से ही मेरी तबियत ठीक हो जाती है। फ़ोन पर ही सही, बात हो जाए तो और भी सुकून मिलता है और अगर आमने-सामने मिलकर बात हो जाए तो शिफ़ा मिल जाती है मगर बावजूद इसके मैं अब तीन अक्तूबर को होने वाले डिपार्टमेन्टल एंट्रेंस इज़ाम में हिस्सा नहीं ले रहा हूँ। मेरे लिए तुम्हारी खुशी और तुम्हारी इज़्जत ज़्यादा ज़रूरी और अहम है।

खैर, मैंने अपने ख़त में तुमसे जिस बात का ज़िक्र किया था और जिसकी तह तक जाने के लिए मैं एक माहिर से भी मिला था उसी की सलाह पर मैं एक ऐसे hipnotist की तलाश में था जो past life regression therapy में माहिर हो। मेरी मुम्बई में एक ऐसे ही शाख़्स से बात हुई थी जो खुशकिस्मती से चैंडीगढ़ में workshop कर रहा था। मैंने उसका seminar attend किया और उससे अपनी past life regression therapy ली। उसने मुझसे पूछा कि मैं क्या जानना चाहता हूँ तो मैंने उसे बताया कि मैं नहीं जानता कि मैं क्या जानना चाहता हूँ, लेकिन मेरे वजूद में कहीं कोई गहरी महरूमी, किसी चीज़ की कमी, हल्का-सा मगर गहरे और मुसलसल दर्द का एहसास बना रहता है उसी की वजह जानना चाहता हूँ। फिर थिरेपी हुई, तक़रीबन पच्चीस मिनट, और मैंने जो देखा और महसूस किया वो किसी के लिए भी लाक्राबिले-यक़ीन हो सकता है। तुमसे वाबस्ता है सो तुम्हें मालूम होना ही चाहिए। मैंने तुम्हें फिर देखा और इतना साफ़ देखा कि मुझे अब कोई शक़ नहीं कि तुम ही मेरी पिछले जन्म की साथी हो। यही वजह है कि लाख जतन करने पर भी दिमाग़ तुम पर से हटता नहीं है।

मैंने जो देखा वो ये था कि हम किसी गाँव में रहते हैं और मैं तुम्हारा पड़ोसी हूँ। तुम अपने मामा मामी के घर रहती हो। वो लोग तुम्हें अच्छा ट्रीट नहीं करते और मुझे ये अच्छा नहीं लगता। मैंने बहुत बार तुम्हारे लिए उनसे झगड़ा भी किया। तुम्हारा नाम 'बानो' है और मेरा 'देबा'। हम दोनों में गहरा लगाव है और मैं तुम्हारी मामी को कहता हूँ कि इस लड़की को डाँटा या मारा मत करो। मैं उससे ये भी कहता हूँ कि जब बानो बड़ी हो जाए तो इस की शादी मुझसे कर देना और वो कहती है तू सरदार है और हम मुस्लमान। तुझे कैसे दे दें ये लड़की। फिर एक मन्जर और देखा। तुम बकरियाँ चराने खेतों में गई हुई हो, लेकिन मैं देखता हूँ तुम खेत में गिरी पड़ी हो। पास आकर देखता हूँ तो तुम्हारा जिस्म तेज बुखार से तप रहा है। मैं तुम्हें अपनी बाहों में उठाकर तुम्हारे घर लाता हूँ। फिर अपनी माँ को दवा और गर्म दूध के साथ लेकर आता हूँ। माँ तुम्हारी हालत देखकर तुम्हारी मामी को कुछ कहकर चली जाती है लेकिन मैं वहीं पर तुम्हारे पास रहता हूँ। जब जाने लगता हूँ तो तुम मेरा हाथ पकड़ लेती हो और कहती हो, 'देबे, तू न जा, मेरे पास थोड़ी देर और बैठा रह'। फिर तुम्हारी मामी मुझे बहाने से बुलाती है और ज़बरदस्ती मुझे किस करने की कोशिश करती है। वो पहले भी ऐसे ही इशारे करती थी मुझे। मैं वहाँ से खुद को छुड़ा कर अपने घर आ जाता हूँ। तुम्हारी मामी गुस्से में मुझे कहती है, 'देख लूँगी तुझे, हमारी लड़की के चक्कर काटता रहता है'। तुम्हारे मामा के दो लड़के हैं जो तुम्हारी वजह से मुझसे लड़ते रहते हैं। उनमें से एक का नाम दुल्ला है और दूसरे का गुल्ला। तुम्हारी वजह से दुल्ले के साथ मेरी दो तीन बार झड़प हो चुकी है। फिर कुछ धुँधला सा मँजर गुजरता है और कुछ समझ नहीं आता क्या हो रहा है। मैं शायद फ़ौज में हूँ। आस पास बहुत बर्फ़ है। बहुत ठँड है। हम दुश्मन से छुप कर बैठे हैं। गोलियों की आवाज़ें आती हैं पर मैं ठीक हूँ। थिरेपिस्ट मुझे और आगे जाने को प्रॉम्प्ट करता है। मैं फिर गाँव में हूँ। तुम्हारी शादी तुम्हारे मामा के लड़के दुल्ले से हो गई है। वो डाके डालता है। वो तुमसे

जबरदस्ती शादी कर लेता है। वो तुम्हें मारता है और मुझसे झगड़ा होता है उसका। तुम अब भी मुझसे बहुत प्यार करती हो और बहुत यकीन करती हो मुझ पर। तुम मुझे बताती हो कि तुम्हारा दुल्ले के साथ निकाह नहीं हुआ और उसने तुम्हारे साथ जबरदस्ती का रिश्ता रखा हुआ है और इसमें तुम्हारी मामी भी शामिल थी। फिर थिरेपिस्ट कहता है कि याद करो मैं कहाँ हूँ, किस देश या गाँव शहर में हूँ, वहाँ क्या हो रहा है? मैं कहता हूँ हिन्दुस्तान है और मैं किसी गाँव में हूँ, गाँव का नाम कोटली है। वो पूछता है कि वहाँ पास ही कोई बड़ा शहर है? मैं कहता हूँ, स्यालकोट। फिर वो मुझे उस ज़िन्दगी में और आगे जाने को कहता है और मैं देखता हूँ कि देश की तकसीम की खबरें आती हैं। बहुत सारे लोग गाँव छोड़कर जा रहे हैं। तुम कहती हो कि मैं तुम्हें भी अपने साथ ले चलूँ मैं तुम्हें उनसे बचाने के लिए अपने साथ ले जा रहा हूँ लेकिन गाँव से कोई पन्द्रह सोलह मील पर हमें दुल्ले के साथ आठ नौ लोग घेर लेते हैं। तुम्हें मुझसे छीनने की कोशिश करते हैं वो लोग। फिर बहुत जमकर लड़ाई होती है। मेरी पीठ और टाँग पर तलवार के ज़ख्म लगते हैं लेकिन मैं उन पर भारी पड़ता हूँ। मैंने दुल्ले को और उसके तीन साथियों को मार दिया है। दो को ज़ख्मी कर दिया है। वो डर गए हैं मुझसे। फिर कोई मेरे सर पर पीछे से वार करता है। बहुत खून निकलता है लेकिन मैं उस आदमी की बाजू काट देता हूँ। फिर मैं गिर जाता हूँ और तुम मेरा सर अपनी गोद में लेकर बहुत रोती चिल्लाती हो। मेरी जान निकल रही है लेकिन मुझे तुम्हारी आवाज़ सुनाई देती है। “ओए मेरे देबे नूँ मार दित्ता। ओए मेरे देबे नूँ मार दित्ता। ओए तुआडा ककख न रहे। दोज़ख में जाओ सारे।” वो लोग तुम्हें घसीटकर ले जा रहे हैं पर मैं कुछ नहीं कर पा रहा। मेरी जान निकल गई है। मैं मर गया हूँ पर तुम्हें रोते हुए देख रहा हूँ।

इसके बाद हिप्नोटिस्ट मुझे धीरे धीरे वापस लाता है। मेरी साँसें भारी हैं और मैं एसी के बावजूद पसीने से लथपथ हूँ। वो मुझसे पूछता है कि क्या मैंने बानो को इस जनम में देखा है तो मैं उसे मना कर देता हूँ। तुम्हारे बारे में नहीं

बताना चाहता किसी को। वो मुझसे कहता है कि अगर मैं उसकी मौजूदगी अपने आस पास इस शिद्दत से महसूस करता हूँ तो बहुत मुमकिन है कि वो यहीं कहीं मेरे आस-पास ही हो। ये भी हो सकता है कि मैंने उसे देखा हो मगर पहचान न पाया होऊँ। उसने ये भी कहा कि अगर मैं उसकी मौजूदगी इसी शिद्दत से महसूस करता रहा तो जल्दी ही उससे मेरी मुलाकात भी हो सकती है, मैंने बस उसको पहचानना है। मुझे मेरी बानो मिल जाएगी। उसने ये भी कहा कि जब वो मिल जाए तो उसे पूरी बात बताना। ऐसा करने से ही बानो मुझे भी पहचान पाएगी। ऐसा होने पर मेरे ज़ेहन में चल रही उथल-पुथल, सोते जागते दिखाई देने वाले मनाज़िर का सिलसिला धीरे-धीरे खत्म होने लगेगा और मैं ठीक हो जाऊँगा। अब उसे कैसे बताता कि मेरी बानो मुझे मिल गई है मगर मुझसे बात नहीं करती, मिलना नहीं चाहती। जितना परेशान मैं मुझे दिखाई देने वाले ख्वाबों और उन मनाज़िर की गुत्थी सुलझाने के चक्कर में था उससे ज़्यादा परेशान मैं इस बात से हूँ कि तुम मुझसे बात नहीं करती। इस थिरेपी से ये तो पता चला ही कि हमारा क्या रिश्ता है और तुम क्यों मेरे ख्वाबों ख्यालों में रहती हो लेकिन इससे भी ज़्यादा हैरानी मुझे ये जान कर हुई कि तुम्हारी मामी इस जन्म में मेरी बीवी है और दुल्ला और उसका जुड़वां भाई गुल्ला इस जन्म में मेरे सगे भाई हैं और जुड़वाँ हैं।

मैं इस Regression Therapy के एक ही session से हिल गया हूँ। कल सारी रात और आज का सारा दिन बदन भारी भारी रहा। ज़ेहन बर्दाश्त नहीं कर पा रहा जो मैंने देखा। तब से लेकर आज तक मेरी क्या हालत है तुम समझ सकती हो।

मेरा फ़ौज में रहते हुए 1983 में एक accident हुआ था और सर पर चोट आई थी। तेरह टाँके लगे थे। डॉक्टर ने तब बताया था मुझे कि मेरे सर पर उसी जगह पर पहले भी चोट का निशान है काफ़ी गहरा लेकिन टाँकों के निशान नहीं। मैंने उससे कहा था कि मुझे कभी सर पर चोट नहीं लगी तो उसने कहा

बचपन में लगी होगी, तुम्हें याद नहीं होगा और गाँवों में टाँके कब लगते थे तब। लेकिन मुझे लगता है कि हो न हो ये पिछले जनम का लगा ज़ख्म है जिससे मेरी मौत हुई थी, क्योंकि ये ज़ख्म अब भी साल में तीन चार बार रिसता है।

इस थियेपी के एक ही सेशन में काफ़ी हैरान करने वाली बातें पता चली हैं। अगले तीन सेशन करवाने मुम्बई जाना पड़ेगा मुझे। लेकिन मेरा वहाँ जाने का मन नहीं। एक अजीब सा ख़ौफ़ पैदा हो गया है मेरे ज़ेहन में।

तुमसे जो लगाव हुआ है न मुझे इस जनम में वो मेरे बस की बात नहीं है। ऊपर वाले ने ही ये खेल रचा है। चलो, जैसा भी है तुमसे इस जनम में मुलाकात तो हो गई। मैं मुत्मइन हूँ कि तुमको देख लिया है। इस बात की भी खुशी है कि इस जनम में तुम्हारा जन्म बड़े अच्छे घर में और बड़े अच्छे माँ-बाप के घर हुआ है और तुम्हें किसी बात की कमी नहीं है। मैं बहुत खुश हूँ तुम्हारे लिए। लेकिन वो जो मुझे कभी कभी हिदायत होती है न कि इस लड़की का ख़्याल रखो, इसकी हिफ़ाज़त करो, उससे एक अजीब सा अँदशा और ख़ौफ़ सा रहता है दिल में। ख़ुदा करे ऐसा कुछ न हो पर मुस्तक़बिल किसने देखा है। मैं एहतियात रक्खूँगा। तुम भी मोहतात रहना। एक बात तो साफ़ हो गई कि पिछले जनम से तुम्हारी हिफ़ाज़त का क़र्ज़ तो है मेरे सर पर अभी। स्यालकोट तो अब पाकिस्तान में है। हो सकता है हम लोग देश की तक्सीम के वक़्त हिन्दुस्तान जा रहे हों जब ये हादसा हुआ।

पाकिस्तान में मेरे तीन चार अच्छे दोस्त हैं शायरी की वजह से। उनसे सारी बात की सच्चाई का पता लगाने की कोशिश करूँगा कि शायद किसी को हमारे बारे में पता हो।

निवू, क्या मैं एक बार फिर तुमसे ये रिक्वेस्ट कर सकता हूँ कि प्लीज़ मुझसे राबिता बहाल करो। मेरी जान पर बनी हुई है। बड़ा हूँ तुमसे उम्र में और

अपने स्टेटस का भी ख्याल करता हूँ तो ज्यादा इसरार नहीं करता। पर क्या तुम्हें ज़रा सा भी ख्याल नहीं आता मेरा?

मैंने तुझसे कहा था कि मुझे तुमसे सिवाय राबिता रखने के और कुछ भी नहीं चाहिए। क्या मैंने बहुत ज्यादा माँग लिया तुझसे। मैं तो बस तुम्हारा ख्याल रखना चाहता हूँ। तुम्हें अगर किसी बात का डर है तो वो मुझे बताओ। मैं तुम्हारा डर दूर करूँगा।

और हाँ, मुझसे बात करते वक़्त, मेरी पोस्ट पढ़ते वक़्त, मेरी लेटर पढ़ते वक़्त, मेरे बारे में सोचते वक़्त अपना जेंडर भूल जाया करो। तुम मेरे वास्ते सिर्फ़ एक लड़की नहीं हो। हम जिस प्लेन पर मिले हैं न, वहाँ जेंडर का कोई मतलब नहीं है। रूहों के जेंडर नहीं होते। किसी जनम में मैं फ़्रीमेल और तुम मेल, किसी में तुम फ़्रीमेल और मैं मेल। किसी जनम में भाई बहन, किसी में बाप बेटी, किसी में दोस्त, किसी में लवज़। ये सिलसिला यूँ ही चलता रहता है। पिछले जनम में मैं जल्दी मर गया था तो अब तुमसे बहुत बड़ा हूँ। ये भी हो सकता है कि किसी पिछले जनम में मैं तुम्हारा बेटा या बेटी भी रहा होऊँ। हम जब तक ज्यादा गहराई से इसे नहीं समझते ये गुत्थी यूँ ही उलझी रहेगी। इसे सुलझाना है।

शब-ब-ख़ैर”।

मुझे पूरा यक़ीन था कि ये ख़त पढ़कर निवेदिता ज़रूर मुझसे राबिता करेगी। उसे यक़ीन नहीं आया इस पर। क्योंकि उसका ज़ेहन इसे सच मानने को तैयार ही नहीं होगा। सिर्फ़ निवेदिता ही नहीं कोई भी सुनेगा तो यक़ीन नहीं करेगा क्योंकि बात ही कुछ ऐसी है। वो शक करेगी मुझ पर, मेरी कहानी पर। ये भी हो सकता था कि वो इस पर यक़ीन कर लेती मगर उसके दिल में कई सवाल जन्म लेते और उन सवालों के जवाबों के लिए वो मुझसे राबिता करती। मगर जब उसकी जानिब से कोई फ़ोन या मैसेज नहीं आया तो मुझे यक़ीन हो

गया कि मेरा ये खत भी उस तक नहीं पहुँचा था। अब सिवाय सत्र और इस दुख को बर्दाश्त करने के और कोई चारा नहीं था मेरे पास। ये दुख सिर्फ मेरा था और मुझे ही बर्दाश्त करना था। इसका मुदावा सिर्फ और सिर्फ निवेदिता के पास था और निवेदिता मुझसे खफ़ा थी। मैं खुद को सँभालने की कोशिश कर रहा था मगर निवेदिता का ख्याल अब भी ज़ेहन में हर लम्हा मौजूद रहता था। उस सेशन के बाद तो और भी ज़्यादा। उस सेशन का एक फ़ायदा ये हुआ कि अब मुझे निवेदिता के बार बार मेरे ख्यालों और ख्वाबों में आने की वजह वाज़ेह हो गई थी।

अब मैंने जो पास्ट लाइफ़ रिग्रेशन थिरेपी के सेशन में देखा था उसकी तफ़्तीश और तहक़ीक़ करने का वक़्त था। मेरी खुशक्रिस्मती ये थी कि ये पिछले जन्म के वाक़ियात स्यालकोट जो अब पाकिस्तान में है के इलाक़े से मनसूब थे। अगर हमारा पिछला जन्म कहीं यूरोप में या अफ़्रीका में हुआ होता तो इसकी तह तक जाना मुमकिन नहीं होता। दूसरा ये कि ये सब मुल्क की तक्रसीम के वक़्त और उसके दस बीस साल पहले के वक़्त के साथ जुड़ा था। इसलिए पाकिस्तान में उस गाँव और उस गाँव के देबे और बानो के बारे में जानकारी हासिल करना मुश्किल नहीं लगा मुझे। मेरी आदत है कि मैं जो भी काम हाथ में लेता हूँ उसे पूरे दिल से करता हूँ। हर बात की तह तक तहक़ीक़ करने के बाद ही उस पर यक़ीन करता हूँ। फिर ये तो मेरा अपना काम था। मैंने रिग्रेशन थिरेपी के वक़्त जो कुछ देखा था उसकी तह तक जाना मुझे ज़रूरी लगने लगा था। मैंने पाकिस्तान के अपने कुछ दोस्तों के ज़रिए इसकी तह तक जाने का फ़ैसला किया। फ़ेसबुक पर शायरी पोस्ट करने की वजह से पाकिस्तान के भी कुछ लोग दोस्त हो गए थे। मैंने मैसेंजर पर अशफ़ाक़ से बात की और कहा कि वो स्यालकोट ज़िले के कोटली गाँव को ढूँढे और पता करे कि क्या उस गाँव में नव्वे बरस की उम्र के आस पास का कोई आदमी या औरत ज़िन्दा है? अगर कोई मिल जाए तो उससे पूछे कि क्या वो उस गाँव के देबा या बानो

के बारे में कुछ जानता है? अगर देबे को वो लोग भूल चुके हों या न जानते हों तो बानो के बारे में ज़रूर जानते होंगे क्योंकि बानो तो वहीं रह गई थी। अशफ़ाक़ को मेरी बात सुनकर बड़ी हैरानी हुई। उसने मुझे बताया कि वो स्यालकोट शहर में ही रहता है और वो मेरी ज़रूर मदद करेगा लेकिन इसके लिए बहुत वक़्त लगेगा क्योंकि स्यालकोट ज़िले में ही कोटली नाम के तक़रीबन बीस बाईस गाँव हैं। मैंने उससे कहा कि वक़्त चाहे जितना लग जाए लेकिन इस गाँव को ढूँढना बहुत ज़रूरी है।

इस बीच नवरात्रि का वक़्त आया। मैं ख़ुदा में यक़ीन रखने वाला बन्दा हूँ। लेकिन मज़हब के नाम पर मन्दिरों में जाकर पूजा वग़ैरह करने से दूर ही रहता हूँ। मेरा मानना है कि ख़ुदा हर जगह है और उसे कहीं भी याद किया जा सकता है। इस बार मैंने नवरात्रि में बग़ैर ताम झाम के सभी देवियों की पूजा की। शायद इसलिए कि मैं उनकी बरकतें लेकर दुआएँ कर रहा था कि मेरे पिछले जन्म की कहानी और वाज़ेह होकर मुझ तक पहुँचे। मेरी बानो की कोई ख़बर मुझ तक पहुँचे। जिस दिन सरस्वती वन्दना की उस दिन मैंने निवेदिता की भी पूजा की। वो मेरे लिए सरस्वती देवी का ही रूप थी। मैं चाहता था निवेदिता को ये भी लिख भेजूँ। मैंने ख़त तो लिखा मगर उसे भेजा नहीं क्योंकि मेरे ख़त या मैसजिज़ निवेदिता तक पहुँचते ही नहीं थे। यही वो वक़्त था जब मुझे किसी दोस्त से मालूम पड़ा कि जब कोई आपको ब्लॉक कर देता है तब आपका कोई भी मैसेज उस शाख़्स तक नहीं पहुँचता। जिसे हम डिलीवरी रिपोर्ट समझते हैं वो डिलीवरी के सिर्फ़ इन्डिकेटर होते हैं डिलीवरी नहीं। साफ़ हो गया कि अब तक मैंने जो भी ख़त निवेदिता को भेजे थे और ये समझ रहा था कि वो मेरे ख़त मिलने के बावजूद उनका जवाब नहीं दे रही थी वो दरअसल उस तक कभी पहुँचे ही नहीं थे। वो ख़त ये है।

“निवेदिता

इस नवरात्रि के तहवार में मैंने सभी देवियों की पूजा के साथ साथ तुम्हारी भी पूजा की। क्योंकि तुम मेरी निजी देवी हो। मेरी बच्ची भी हो और मेरी ज़िन्दगी का अहम हिस्सा होने के साथ-साथ मेरी प्रेरणा भी। ऐसा करने से दिल में एक सन्तुष्टि का एहसास हुआ। मैंने तुम्हें कभी एक पल के लिए भी भुलाया नहीं। खैर, मुझे ये बातें तुम्हें नहीं बतानी चाहिएँ क्योंकि ये मेरा निजी मस'अला है।

मैंने तुम्हें कुछ मैसेजिज़ के अलावा वो ख़त भी भेजा था जिसका ज़िक्र मैंने तुमसे किया था। उसके बाद भी दो ख़त और भेजे थे तुम्हें। पता नहीं तुम्हें कुछ मिला या नहीं। मैं चाहता हूँ कि तुम उन ख़तों को पढ़ो ताकि तुम मेरी हालत, मेरी मजबूरी, मेरी नीयत और मेरी गुज़ारिश को समझ सको। मैं तुम्हें ये सभी ख़त दोबारा भेजना चाहता हूँ ताकि तुम ये जान सको कि मैं क्यों बार बार तुम्हें राबिता बहाल करने को कहता हूँ। मेरे लिए ये एक रिसर्च का सब्जेक्ट बन गया है। बहुत परेशान रहता हूँ इसको लेकर। तुम न चाहते हुए भी इस सब्जेक्ट का मरकज़ी किरदार हो। मैं तुम्हें बिल्कुल भी परेशान नहीं करना चाहता और न ही तुम्हारी हँसती खेलती ज़िन्दगी में कोई ग़ैर वाजिब दख़ल देना चाहता हूँ। मुझे उस दिन तुम्हें दुखी देखकर बहुत दुख हुआ था और चाहे उसकी वजह मैं नहीं था फिर भी मैं खुद को ही मुजरिम मान कर तुमसे मुआफ़ी भी माँग चुका हूँ मगर मुझे अब महसूस हो रहा है कि शायद मुझे ब्लॉक कर देने की वजह से मेरा कोई भी मैसेज तुम तक नहीं पहुँचा। इसलिए मैं वो मैसेजिज़ और ख़त तुम्हें फिर से भेज रहा हूँ ताकि पोज़ीशन क्लीयर हो सके। मुझे तुमसे कुछ नहीं चाहिए सिवाय कभी कभार बात कर लेने के। मैं तुम्हारा ख़ैरख़्वाह हूँ और उम्मीद करता हूँ कि तुम मुझे इतनी कन्सैशन तो दे ही सकती हो। इन ख़तों को पढ़ने के बाद भी तुम अगर ये कन्सैशन नहीं देती हो मुझे तो मैं ये दुख सहता रहूँगा लेकिन तुम्हें फिर कभी ये नहीं कहूँगा। बस तुम्हें इतना

बता दूँ कि इस वजह से मैं अपनी ज़िन्दगी के मुश्किलतरीन वक़्त से गुज़र रहा हूँ।

मैं वो तीनों ख़त और मैसेजिज़ तुम्हें फिर भेज रहा हूँ ताकि तुम्हें असलियत का पता चले और तुम मेरे बारे में कोई ग़लतफ़हमी न पालो।

तुमसे कुछ अच्छा सुनने और तुमसे मिलने की उम्मीद के साथ यहीं बन्द करता हूँ।

ख़ुदा तमाम ख़ुशियाँ दे तुम्हें”।

इस ख़त का भी कोई जवाब न आना था न आया। तक्ररीबन दो हफ़्तों के बाद अशफ़ाक़ का मैसेज आया कि वो कोटली नाम के छः गाँवों में दरयाफ़्त कर आया है लेकिन उनमें इन नामों के लोगों के बारे कुछ पता नहीं चला। अब वो और गाँवों में जाकर पता करेगा। उसका मैसेज मुझे हर इतवार शाम को आता मगर नाकामयाबी की ख़बर के साथ। वो तक्ररीबन चौदह गाँवों में पता कर चुका था और ऐसा करते उसे डेढ़ महीने से ऊपर हो गया था। फिर तक्ररीबन दो हफ़्ते बाद उसका मैसेज आया कि उसने मेरा वाला गाँव ढूँढ लिया है। छोटा सा गाँव है और उस गाँव के ज़्यादातर लोग शहरों में जा बसे हैं और कुछ बाहरी मुल्कों में चले गए हैं। एक बूढ़ा बाबा भी है। वो लोहार है। फ़ज़लू बाबा कहते हैं उसे। तक्ररीबन पिचानवे साल का है। उसने बताया कि वो देबे को भी और बानो को भी बहुत अच्छी तरह जानता था। लेकिन वो बहुत बीमार था और उसको उस दिन शहर के बड़े अस्पताल लेकर जा रहे थे उसके पड़ोस वाले। इसलिए उससे ज़्यादा नहीं पूछ सका। उसे बोलने में भी मुश्किल पेश आ रही थी इसलिए अब वो दोबारा अगले इतवार के रोज़ जाकर सब दरियाफ़्त करेगा। मुझे ये सुनकर हैरानी भी हुई और ख़ुशी भी कि देबा और बानो सचमुच थे। अब ये भी डर लगने लगा कि कहीं वो बूढ़ा फ़ज़लू मर ही न जाए। अल्लाह से दिल ही दिल में फ़ज़लू की सेहतयाबी की दुआएँ करने लगा मैं। फिर ये भी

ख़याल आया कि जिस अल्लाह ने मुझे इस जन्म में निवेदिता से मिलवाया है, कोटली तक पहुँचाया है, फ़ज़लू तक पहुँचाया है, देबे और बानो तक पहुँचाया है वो मुझे मज़धार में नहीं छोड़ेगा। इस हफ़्ते का एक एक लम्हा, एक एक दिन शदीद इज़्तिराब की हालत में कटा। अगले इतवार की शाम बड़ी मुश्किल से आई। बार बार फ़ोन खोलता, बार बार मैसेंजर चैक करता, मगर अशफ़ाक़ का कोई मैसेज नहीं आया। तक्ररीबन साढ़े सात बजे अशफ़ाक़ का फ़ोन आया। उसने बताया कि फ़ज़लू बाबा अब ठीक है। दमे का मरीज़ है इसलिए कई बार अचानक ही बीमार हो जाता है। उसने बताया कि फ़ज़लू बाबा से तक्ररीबन तीन घंटे बात हुई। रुक रुक कर बोलता है। उसने पहले पूछा कि मैं ये सब क्यों पूछ रहा हूँ। जब मैंने उसे बताया कि हिन्दुस्तान से फ़ोन आया था किसी पहचान वाले का। वो ही पूछ रहा था। कहने लगा हिन्दुस्तान में तो बानो का कोई नहीं है। देबे के वालिदैन ज़रूर हिन्दुस्तान चले गए थे मगर अब तक तो वो भी मर चुके होंगे। ख़ैर! मैं तुम्हें देबे और बानो की कहानी सुनाता हूँ। लेकिन ये कहानी थोड़ी लम्बी है। ये सुनते ही मैंने फ़ोन का रिकॉर्डर ऑन कर लिया और फ़ज़लू बाबा ने जो बोला वो रिकॉर्ड कर लिया है। मैं आपको सुनाता हूँ। इससे पहले कि अशफ़ाक़ कहानी सुनाना शुरू करता मेरे पेट में एक गहरा सा कुँआ बनना शुरू हो गया। ठीक वैसा जैसे आप किसी बड़े से झूले पर बैठे हों और झूला नीचे की तरफ़ तेज़ी से आए।

फ़ज़लू ने जो कुछ बताया था उसे सुनकर अशफ़ाक़ ने वो सारी कहानी मुझे फ़ोन पर सुनाई। फ़ज़लू ने कहानी कुछ यूँ शुरू की थी। “वो जो बड़े कुँए के पास चौबारे वाला घर है न, वो तक्रसीम से पहले देबे का घर था। ये कुँआ भी देबे के बाबे ने बनवाया था। चौबारा भी। अमीर लोग थे। गाँव में सबसे ज़्यादा ज़मीन के मालिक। देबे का नाम गुरदेव सिंह था मगर उसे सभी देबा ही कहते थे। उसके वालिद का नाम प्यारा सिंह था और अपने नाम के मुताबिक़ बड़ा प्यारा इन्सान था वो। मज़हबी भी था। दोनों वक्रत अरदास किया करता

था। गुरुपरब होता तो घर में पाठ करवाता और पूरे गाँव को लँगर खिलाता। देबे की माँ नसीब कौर की जुबान पर भी हमेशा वाहिगुरु वाहिगुरु ही रहता। बड़ी रहमदिल औरत थी। गाँव में अगर किसी भी औरत को कोई ज़रूरत होती वो देबे की माँ के पास ही जाती और देबे की माँ सब की ज़रूरत पूरी करती। दूध, दही, लस्सी से लेकर आटा, चावल, गुड़ और यहाँ तक कि पैसे से भी मदद करती। गाँव में किसी लड़की की शादी होती तो वो खुद उसके घर जाकर ज़रूरत का सामान दे आती। देबे की दो बड़ी बहनें थीं जिनकी शादी मेरी पैदाइश से पहले ही हो चुकी थी। देबे से दस बारह साल बड़ी थीं। जलंधर के पास किसी गाँव में एक ही घर में ब्याही थीं दोनों। जब कभी यहाँ आतीं तो दोनों इकट्ठे ही आती थीं। देबा तो जैसे वाहिगुरु की सौगात के रूप में टमिला था इस मजहबी परिवार को। मुझसे सात आठ साल बड़ा था देबा। ऊँचा क्रद, गठीला जिस्म, खूबसूरत, सजीला और हँसमुख नौजवान। तुम लोग आजकल जिनको हीरो कहते हो न, बस हमारे गाँव का हीरो था वो। कबड्डी खेलता था और जहाँ भी खेलने जाता उसे देखने सैकड़ों लोग आते। नुकरी घोड़ी रखता था वो और वो भी ऐसी कि उसकी खूबसूरती देखते ही बनती थी। ऐसी घोड़ी पूरे इलाक़े में किसी और के पास नहीं थी। पूरे गाँव में एक ही साईकिल था और वो भी देबे के ही पास।

बानो मुझसे दो तीन बरस बड़ी थी। वो बारह तेरह बरस की थी जब हमारे गाँव में आई थी। उसकी माँ की मौत के बाद उसका बाप उसे उसके मामा के घर छोड़ गया था। उसका मामा शराफ़त कुम्हार वाक़ई एक शरीफ़ इन्सान था। अपने काम से काम रखने वाला बन्दा। न घर न घर से बाहर वो किसी के भी काम में दखल नहीं देता था। दो गधे थे उसके पास। इन्हीं गधों पर वो घड़े बनाने के लिए एक टीले से अच्छी मिट्टी खोदकर लाता था। शराफ़त चाचा के दो बेटे थे, अब्दुल और गुलफ़ाम। दोनों जुड़वाँ थे। सब उन्हें दुल्ला और गुल्ला कहते थे। सुनते हैं जब वो कोई पाँच छः बरस के थे तो उनकी माँ गुजर गई थी।

शराफ़त चाचा अकेला पड़ गया था। तक्ररीबन एक डेढ़ साल बाद शराफ़त चाचा की सास ने अपनी बहन की बेटी के साथ उसका फिर से निकाह करवा दिया। बच्चों की देखभाल और शराफ़त चाचा की रोटी का बन्दोबस्त हो गया। शराफ़त चाचा की नई बीवी बला की ख़ूबसूरत औरत थी। वो जितनी ख़ूबसूरत थी उतनी ही या उससे भी ज़्यादा तेज़ थी। शराफ़त चाचा उसके आगे चूँ तक नहीं करता था। रिश्ते में चूँकि वो दुल्ले और गुल्ले की ख़ाला लगती थी सो दुल्ला और गुल्ला उसे ख़ाला कहकर ही बुलाते थे। उसका नाम रशीदा था सो हम लोग उसे रशीदा चाची कहते थे। रशीदा चाची तक्ररीबन अठारह बरस की होगी जब वो शराफ़त चाचा की बीवी बनकर हमारे गाँव में आई थी। शराफ़त चाचा से वो पूरे चौदह बरस छोटी थी। मैं उन दिनों बहुत छोटा था। मैंने ये बातें अपनी वालिदा से सुनी थीं। रशीदा ने आते ही सारा घर सँभाल लिया था इसलिए जहाँ शराफ़त चाचा को बच्चों की देख भाल से फ़रागत हासिल हुई वहीं पकी पकाई रोटी भी नसीब होने लगी थी। रशीदा चाची के आने से पहले और पहली बीवी की वफ़ात के बाद वो ख़ुद ही दोनों बच्चों की देखभाल करता और खाना भी ख़ुद ही बनाता था। चूँकि देबे का घर शराफ़त चाचा के घर के सामने ही पड़ता था सो रशीदा चाची अक्सर देबे के घर चली जाती, नसीब कौर के काम काज में थोड़ी बहुत मदद कर देती और नसीब कौर से दूध, दही, लस्सी, साग वगैरह ले आती। दोनों टब्बरों का आपस में काफ़ी मेल जोल था। रशीदा चाची की अपनी कोई औलाद नहीं थी।

फिर तक्ररीबन नौ दस साल बाद बानो आ गई और उसकी भी ज़िम्मेदारी रशीदा चाची पर पड़ गई। बानो चाहे बारह तेरह बरस की ही थी पर वो रशीदा चाची की हर काम में मदद करती। कहते हैं बिन माँ की बेटियाँ जल्दी सयानी हो जाती हैं। शराफ़त चाचा बानो से बहुत प्यार करता था लेकिन कभी कभार किसी काम में कोताही हो जाती तो रशीदा चाची की डाँट से वो भी बानो को बचा नहीं पाता था। बानो इस बात को समझती थी इसलिए उसने जल्दी ही

हर काम सलीके से करना सीख लिया था। देबे की माँ भी इस बिन माँ की बेटी से बहुत मुहब्बत करती थी और देबा भी जब कभी बानो को रशीदा चाची की डाँट पड़ते देखता तो अपनी माँ से रशीदा चाची को समझाने और बानो को बचाने की सिफ़ारिश करता। धीरे धीरे दोनों में रगबत हो गई। देबा खेतों को जाता तो बानो के लिए अपने बाग से आम, अमरूद, खरबूजे या तरबूज ले आता। जब बानो पन्द्रह सोलह साल को पहुँची और मुकम्मल शबाब पर आई तो उसका हुस्न निखर आया। देबा भी तब तकरीबन बीस साल का हो गया था। बचपन की हमदर्दी और रगबत अब मुहब्बत में तब्दील हो चुकी थी। दोनों इक दूसरे के दीवाने थे। कभी बानो तो कभी देबा सिर्फ़ इक दीदार की खातिर किसी न किसी बहाने इक दूजे के घर हो आते थे। दुल्ला जो देबे का तकरीबन हम उम्र था इस बात से बेहद नाखुश था। वो कभी बानो को खुद डाँटता तो कभी रशीदा चाची से बानो को देबे के घर जाने से रोकने के लिए कहता। दुल्ला घर में कम ही रहता था और अक्सर दस बारह दिन के लिए घर से ग़ायब रहने लगा था। जब भी घर वापस आता बहुत सा सामान लेकर आता। घर वाले ये समझते थे कि वो कहीं मज़दूरी करता है। लेकिन वो डाकुओं के गिरोह में शामिल हो चुका था। इस बात का पर्दा तब फ़ाश हुआ जब वो एक दिन सोलह सत्रह साल की एक लड़की को घर ले आया और सबसे कहा कि वो उससे निकाह करके लाया है, मगर उस लड़की ने रो रोकर बताया कि वो एक डाकू है और उसे ज़बरदस्ती उठा लाया है। शराफ़त चाचा ने दुल्ले को बहुत फटकार लगाई और उस लड़की को वापस उसके घर पहुँचाने को कहा। उस दिन लोगों ने दुल्ले का असली चेहरा देखा। उसने धक्का देकर अपने बाप को गिरा दिया और धमकी दी कि आईन्दा उसके किसी काम में दखल दिया तो वो उसे जान से मार देगा। शराफ़त चाचा दुल्ले का बदला हुआ रूप देखकर डर गया और आईन्दा कुछ नहीं बोला। रशीदा चाची भी चुप हो रही। उस लड़की की तलाश में भी उसके घर या गाँव से जब कुछ दिन कोई न आया तो उसने इस नई

जिन्दगी को ही तक्रदीर समझ लिया। दुल्ले की पूरे इलाक़े में धाक बढ़ने लगी और वो दुल्ले डाकू के नाम से मशहूर हो गया। शराफ़त चाचा के पास चार पाँच बकरियाँ थीं और बानो हर रोज़ उन्हें चराने के लिए खेतों में ले जाती थी। एक दिन दुल्ले ने बानो और देबे को शाम के वक़्त इकट्ठे खेतों से लौटते देख लिया। दोनों आपस में हँस हँस कर बातें करते हुए आ रहे थे। दुल्ले से ये बर्दाश्त नहीं हुआ और उसने घर आते ही बानो को बुरी तरह पीटना शुरू कर दिया। दुल्ले के गुस्से से वाक्किफ़ न रशीदा चाची कुछ बोली न शराफ़त चाचा। बानो की चीखें जब देबे के कानों में पड़ीं तो वो अपने घर से दौड़ता हुआ आया और उस दिन उसने दुल्ले की वो धुनाई की कि सारी उम्र न भूले। सारे गाँव ने दुल्ले को पीटते हुए देखा लेकिन कोई भी उसे बचाने के लिए आगे नहीं आया। जब देबा उसे पीटते पीटते थक गया तो रशीदा चाची बीच में आई और दुल्ले को खींचकर एक तरफ़ ले गई। देबे ने पूरे गाँव के सामने ये ऐलान कर दिया कि वो बानो से मुहब्बत करता है और अगर किसी ने बानो को कुछ कहा या कोई नुक़सान पहुँचाया तो वो उसका वही हाल करेगा जो दुल्ले का किया है। उसने शराफ़त चाचा और रशीदा चाची को भी कह दिया कि अगर वो लोग बानो की हिफ़ाज़त नहीं कर सकते तो उसे उसके साथ आज ही ब्याह दें। शराफ़त चाचा, रशीदा चाची, और सारा गाँव ऐसे चुप था जैसे उन्हें साँप सूँघ गया हो। देबे की माँ देबे को खींचकर घर ले गई। सब लोग खुसर-पुसर करते अपने अपने घरों को लौट गए। इस वाक़ये से अगर कोई खुश था तो एक थी दुल्ले की बीवी जिसे दुल्ले की उसके ऊपर होती ज़्यादातियों का इन्तक़ाम मिल गया था और दूसरी बानो जो देबे की दिलेरी, सरे-आम मुहब्बत के इज़हार और ब्याह के लिए उसे माँग लेने की हिम्मत देखकर अपनी खुशी सँभाल नहीं पा रही थी। अगले दिन दुल्ला गाँव में दिखाई नहीं दिया। कुछ लोग कहने लगे कि जैसा वो शैतान और बदमाश है ज़रूर अपने साथियों को लेकर देबे को मारने

आएगा। कुछ ने कहा कि जिस तरह से देबे ने उसे मारा है वो कभी भी देबे की तरफ़ मुँह नहीं करेगा।

अगले दिन शराफ़त चाचा और रशीदा चाची दोनों देबे के घर पहुँचे और प्यारा सिंह और नसीब कौर के आगे हाथ जोड़ कर खड़े हो गए। कहने लगे कि कल देबे ने बहुत बड़ी बात कह दी। हम लोग तो मुसलमान हैं और आप लोग सिख हो, सरदार हो। हम कैसे दे दें बानो आपको। नसीब कौर ने कहा कि अगर दोनों एक दूसरे को मुहब्बत करते हैं तो मैं बीच में नहीं आऊँगी क्योंकि ऐसा करना गुनाह होगा। रही मुसलमान और सिख होने की बात तो मुहब्बत मज़हब से हमेशा बड़ी रही है और रहेगी। देबे को घर आने दो। उससे खुलकर बात करूँगी। अगर उसने कल वाली बात ही दोहराई तो समझ लेना बानो तुम्हारे पास हमारी अमानत है। हम सही मौक़ा देखकर वाहिगुरू की बरकतें लेकर उसे लेने आ जाएँगे। शराफ़त चाचा और रशीदा चाची चुपचाप अपने घर लौट आए। बानो अब पूरी तरह महफूज़ थी।

देबा दसवीं करने के बाद स्यालकोट के उसी स्कूल में खेलकूद का मास्टर लग गया था और बच्चों को कबड्डी के साथ साथ दूसरे खेलों का भी उस्ताद हो गया था। सुबह सुबह निकल जाता था और शाम को वापस आता था। उसकी वालिदा ने बहुत कहा कि वो ये नौकरी छोड़ दे। क्योंकि उसे डर था कि कहीं दुल्ला इन्तक़ाम लेने के इरादे से उस पर रास्ते में घात लगाकर हमला न कर दे। लेकिन देबा बिना किसी ख़ौफ़ के बदस्तूर स्कूल जाता रहा। उसकी वालिदा ने जब उससे कुछ दिनों बाद पूछा कि उस दिन उसने ये बात क्यों कही कि बानो का ब्याह उसके साथ कर दो तो उसने कहा कि बानो उस घर में महफूज़ नहीं है और दूसरे ये कि वो वाक़ई एक दूसरे से मुहब्बत करते हैं। उसने अपनी वालिदा से कह दिया कि वो इस मामले में बेहद सँजीदा है इसलिए वो खुद जाकर शराफ़त चाचा से इस बारे में बात करे।

फिर वो शराफ़त चाचा के घर गया और दुल्ले के बारे पूछा तो पता चला कि वो उस दिन के बाद वापस नहीं आया। उसने शराफ़त चाचा से कहा कि जब दुल्ला आए तो उसे बताएँ क्योंकि वो दुल्ले से सुलह करना चाहता है। उस दिन वो कुछ ज़्यादा ही गुस्से में आ गया था। कुछ दिन बाद दुल्ला आया तो देबे ने दुल्ले से सुलह की पेशकश की, मगर दुल्ला चुप रहा। देबा एक नेक इन्सान था और उस दिन गुस्से में दुल्ले को कुछ ज़्यादा ही पीटने का अफ़सोस उसे भी था।

वक़्त बीतता गया और बानो और देबा भी कभी घर पर, कभी कुँएं पर तो कभी खेतों में मिलते रहे। अब उन्हें कोई नहीं टोकता था।

एक दिन देबा बुखार में तप रही बानो को खेतों से उठाकर उसके घर लाया और उसको दवा वगैरह देकर उसकी खिदमत में लगा रहा। वो काफ़ी रात गए तक उनके घर पर रहा। अगली सुबह बड़ा हँगामा हुआ। नसीब कौर जो कभी किसी से ऊँची आवाज़ में बात नहीं करती थी रशीदा चाची को डाँट रही थी। बाद में ये बात खुली कि रात को जब देबा बानो की खिदमत से फ़ारि़ होकर अपने घर लौट रहा था तब रशीदा चाची ने उसे अपनी बाहों में भर कर उसका बोसा ले डाला और उसके साथ जिन्सी ताल्लुकात बनाने को कहा। पता चला कि उसने देबे से कहा कि अगर बानो चाहिए तो पहले उसको खुश करना होगा। देबे ने अगली सुबह ये बात अपनी वालिदा को बता दी और रशीदा चाची की शामत आ गई। कई दिन गाँव में इसका चर्चा रहा।

एक दिन पता चला कि दूसरी आलमी जँग में नये सिपाहियों की ज़रूरत के मद्देनज़र अँग्रेज़ अफ़सरों ने हुक्म जारी किया था कि ज़्यादा से ज़्यादा नौजवान अँग्रेज़ी फ़ौज में भर्ती होने के लिए आगे आएँ। देबे की सिफ़ारिश उसके स्कूल के हेड मास्टर ने की थी। पढ़ा लिखा तो था ही। उसे अँग्रेज़ों ने बतौर अफ़सर फ़ौज में भर्ती करके बाहर के किसी मुल्क में भेज दिया। जँग शुरू

हुए तक्ररीबन पाँच साल हो चुके थे लेकिन खत्म होने का कहीं नाम नहीं था। खबर ये थी कि अँग्रेज हर मोर्चे पर जँग हार रहे थे। उनका बहुत नुकसान हो रहा था इसलिए राशन, रसद के साथ साथ नये सिपाहियों की भी ज़रूरत रोज़ बढ़ रही थी। देबा फ़ौज में चला गया तो गाँव जैसे सुनसान हो गया। वो सजीला, बाँका नौजवान पूरे गाँव की शान था। बानो भी जैसे एकदम ख़ामोश रहने लगी। घर से कम ही निकलती। निकलती भी तो किसके लिए। उसका देबा अपने साथ उसकी तमाम मसरतें जो ले गया था। दुल्ला अपनी बदमाशी बदस्तूर जारी रखे हुए था। वो डाके डालता, कई कई दिन घर से गायब रहता। एक दिन ख़बर मिली कि उसकी बीवी बहुत बीमार है। वो उम्मीद से थी। बच्चे की पैदाइश के वक़्त ऐसा दर्द उठा कि रशीदा चाची और बानो के लाख जतनों के बावजूद न वो बची न उसका बच्चा। दुल्ला उस रात भी घर पर नहीं था। कुछ दिन बाद आया तो ख़ससाना और बच्चे की मौत की ख़बर सुनकर बस ख़ामोश ही हो गया। बहुत दिनों तक न तो वो कुछ बोला न कहीं बाहर गया। शराफ़त चाचा और रशीदा चाची ने समझा कि वो शायद बीवी बच्चे की मौत के ग़म में ही पत्थर हो गया है। न कुछ बोलता है न कहीं जाता है। दोनों उसे दिलासा देने लगे कि जो अल्लाह को मन्ज़ूर था सो हो गया। अल्लाह की मर्ज़ी के आगे किसी की कब चली है। उसे भी इस मातम से अब बाहर निकलना चाहिए। जवाब में जो दुल्ले ने कहा उसे सुनकर दोनों के पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई। कहने लगा कि वो किसी मातम वातम में नहीं है। वो तो ये सोच रहा है कि क्यों न अब वो बानो से निकाह कर ले। शराफ़त चाचा ने उसे ख़ुदा का वास्ता दिया कि वो बच्ची उसने अपनी सगी बेटी की तरह पाली है इसलिए वो उसकी भी सगी बहन ही है। दूसरे वो उसकी मरहूम बहन की निशानी है। उसकी ज़िम्मेदारी है। इसलिए वो ये बात दिल से निकाल दे। मगर रशीदा चाची जो दिल ही दिल में बानो को अपनी दुश्मन समझने लग गई थी चुप रही। उसने सोचा कि देबे से इन्तक़ाम लेने का इससे बड़ा कोई ज़रिया नहीं हो सकता। देबे

ने न सिर्फ़ बानो के लिए उसे ठुकराया था बल्कि उसे पूरे गाँव में बदनाम भी किया था। जब वो वापस आएगा और उसे मालूम होगा कि बानो तो दुल्ले से ब्याही गई है तो वो जीते जी ही मर जाएगा। इससे दुल्ले का भी इन्तक़ाम पूरा हो जाएगा और उसका भी। अगले दिन रशीदा ने दुल्ले की हौसला अफ़ज़ाई करते हुए उससे कहा कि वो बानो से निकाह की तैयारी करे बाक़ी उसके वालिद को वो खुद मना लेगी। रुख़साना की मौत के एक महीने बाद ख़बर फैली कि दुल्ला बानो से निकाह करने वाला है। देबे की माँ ने शराफ़त चाचा और रशीदा चाची दोनों को बुलाया और आगाह किया कि वो बहुत ग़लत कर रहे हैं। बानो देबे की अमानत है सो रहेगी। वो दोनों कुछ नहीं बोले। रशीदा चाची मस्लेहतन और शराफ़त चाचा दुल्ले और रशीदा चाची के ख़ौफ़ की वजह से। ये बात बानो को मालूम हुई तो उसने खुली बगावत करते हुए इस निकाह से साफ़ इन्कार कर दिया। रशीदा चाची ने उससे कहा कि देबा बहुत बड़ी ज़ँग में गया है। वहाँ रोज़ाना सैंकड़ों सिपाही मर रहे हैं। बहुत मुमकिन है कि देबा वहीं मर जाए और वापस ही न आए। तो क्या वो ऐसे ही बैठी रहेगी सारी उम्र। बानो ने कहा कि पहली बात तो ये है कि देबा मर नहीं सकता और दूसरी ये कि अगर ऐसा होता है तो वो सारी उम्र बिन ब्याही गुज़ार देगी पर दुल्ले से किसी हालत में निकाह नहीं करेगी। बानो देबे की माँ को भी मिली और उसने बानो को समझाया कि वो उसके साथ ज़बरदस्ती नहीं कर सकते। बस मौलवी के सामने वो निकाह से इन्कार कर दे। ऐसा ही हुआ। सब तैयारियाँ मुकम्मल होने के बाद मौलवी साहब को बुलावा भेजा गया। गाँव के कुछ और मुसलमान परिवार भी हाज़िर थे। मौलवी साहब के पूछने पर बानो ने निकाह से साफ़ इन्कार कर दिया। मौलवी साहब दुल्ले के लाख रोकने पर भी नहीं माने और वापस चले गए। उस दिन दुल्ले ने बानो को बहुत मारा। दो दिन बाद मौलवी साहब को फिर बुलाया गया तो बानो ने फिर इन्कार कर दिया। दुल्ला मौलवी साहब को एक तरफ़ ले गया और उनके हाथ में कुछ रुपए देकर कहने लगा कि ये रखो

और जैसे भी हो इस निकाह को सिरे चढ़ाओ। मौलवी मोहिउद्दीन बड़ा आलिम, ज़हीन और शरीयत का पैरोकार था। अल्लाह का नेक बन्दा था। उसने न सिर्फ़ वो रुपए दुल्ले के मुँह पर मारे बल्कि ये भी कह दिया कि वो ये निकाह हरगिज़ नहीं कराएगा क्योंकि वो लोग इस लड़की और ख़ुदा की मर्ज़ी के खिलाफ़ निकाह करने की ज़िद करके गुनाहे-अज़ीम कर रहे हैं और वो इस गुनाह में कभी शरीक नहीं हो सकता। इसके बाद दुल्ले और रशीदा चाची को चार बातें और सुनाकर वो चले गए।

उस दिन मौलवी साहब के जाने के बाद रशीदा चाची ने फिर बानो को समझाया कि मौलवी साहब के सामने निकाह से इन्कार करके उसने सबकी बेइज़्जती की है। वो अब ख़ुद ही मान जाए तो ठीक होगा वरना दुल्ले के गुस्से से वो और उसका मामा भी उसे बचा नहीं सकेंगे।

दुल्ला कुछ देर के लिए बाहर गया तो बानो चोरी से देबे की माँ के पास चली गई और उसे सारी बात बताई। देबे की माँ कुछ देर बाद रशीदा चाची के घर गई और उससे कहा कि बानो बहुत डरी हुई है उसे उसके साथ उसके घर भेज दें ताकि उसका ख़ौफ़ दूर हो सके। वो बानो को अपने घर ले गई और रात को अपने पास ही रखा। बानो की जान में जान आई। दुल्ला दो दिन गाँव नहीं लौटा। वो किसी और ही फ़िराक में था। बदमाश तो वो था ही और किसी के कहने में तो था ही नहीं। उसके दिमाग़ में पता नहीं क्या फ़ितूर चल रहा था। तीसरे दिन शाम के वक़्त वो घर आया और आते ही बानो को गालियाँ देना और मारना शुरू कर दिया। रशीदा चाची ने उसे छुड़ाया तो वो उस पर भी चढ़ बैठा। जब रात गहरा गई तो घर से निकला और सीधा मसीत में पहुँच गया। मौलवी साहब सो रहे थे। उन्हें जगाया और डंडे से मारना शुरू कर दिया। बेचारा छिहत्तर साल का बूढ़ा नातवाँ बुज़ुर्ग उस मार की ताब न ला सका और मर गया। मुअज़्ज़िन बशीर ने उसे बचाने की कोशिश भी की मगर दुल्ले का एक डंडा पड़ते ही वो भी गिर गया। अगले दिन सुबह सुबह ये ख़बर फैल गई कि

मौलवी साहब नहीं रहे। हम सब भी मसीत पहुँच गए। मौलवी साहब के सर और जिस्म पर चोटों के निशान साफ़ नज़र आ रहे थे। बशीर से दरयाफ़्त किया तो उसने दुल्ले का नाम नहीं बताया। बस ये कहा कि कुछ लोग आए थे। उनके मुँह ढके थे। वो मौलवी साहब को गालियाँ देते और मारते रहे। उसने बचाने की कोशिश की तो उसे भी मारा गया। समझ में नहीं आया कि इतने नेक और खुदा के बन्दे को भला कोई क्यों मारेगा। उसके साथ किसी की क्या दुश्मनी हो सकती है। न तो कुछ लूटा गया था और न किसी चीज़ को नुक़सान पहुँचाया गया था। सारा गाँव हैरत और ग़म में था। मामला मौलवी साहब की ग़ैर कुदरती मौत का था। शहर से पुलिस आई। पूछ पड़ताल हुई। बशीर ने फिर वही ब्यान किया जो हमें बताया था। दुल्ले का न कहीं नाम आया न उस पर शक़ किया गया। पुलिस के हाथ कुछ नहीं लगा। सबको यही पता था कि दुल्ला कई दिनों से गाँव में नहीं आया। तक्ररीबन एक महीने बाद मुअज़्ज़िन ने हक़ीक़त बताई मगर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। दुल्ले ने मौलवी साहब के निकाह पढ़ाने से मना करने और शरीयत सिखाने के जुर्म की सज़ा दी थी मौलवी साहब को। दुल्ले के डर से सारा गाँव चुप हो रहा। दुल्ला फिर कुछ दिन ग़ायब रहा। तक्ररीबन पन्द्रह बीस दिनों बाद आया और उस रात उसने सोई हुई बानो के मुँह में दुपट्टा ठूँस कर उसके साथ जबरज़िनाँ किया। रशीदा चाची ने सब देखा मगर उसने बानो को बचाने की कोशिश नहीं की। रोती हुई बानो को दुल्ले ने धमकाया कि अब वो उसकी बीवी हो गई है और आईन्दा उसकी बीवी बनकर ही पेश आए। निकाह नहीं तो न सही। ज़बरदस्ती ही सही। उसको ये भी बताया कि रुख़साना भी ऐसे ही उसकी बीवी बनकर रही थी। उसके साथ भी कोई निकाह विकाह नहीं हुआ था उसका। बानो कई दिन रोई पर उसकी सुध किसी ने नहीं ली। शराफ़त चाचा उसे सीने से लगाकर चुप कराता। रशीदा इधर उधर का लेक्चर करती मगर दिलासा न देती। देबे की माँ को पता चला तो वो भी कई दिनों तक हक्की-बक्की हो रही। दुल्ले के इस बर्ताव से सारा गाँव हैरत

और खौफ़ में था मगर न तो कोई कुछ कह सकता था न कर सकता था। सो बानो इस तरह दुल्ले की बीबी हो गई।

दुल्ले का हाल पहले जैसा ही था। वो जिस गिरोह का हिस्सा था उसके सरदार की साँप के डसने से मौत हो गई और दुल्ला सरदार बन गया। डाकुओं का सरदार बनते ही उसकी हरकतों में इज़ाफ़ा हो गया और अब वो कई कई दिन बाहर रहने लगा। उसकी वारदातें बढ़ गईं तो पुलिस भी उसके त'आकुब्ब में लग गई। वो वारदात करने के बाद रूपोश हो जाता था। पुलिस गाँव में आती। पूछ पड़ताल करने पर पता चलता कि दुल्ला बहुत दिनों से घर नहीं आया तो पुलिस वापस चली जाती। फिर एक दिन ख़बर आई कि दुल्ला और उसके तीन साथी पकड़े गए हैं और बाक़ी रूपोश हो गए हैं। दुल्ले को पुलिस ने बहुत मारा। उसने अपने किए सब गुनाह कुबूल कर लिए और उसे तीन साल कैदे-बामुशक्कत की सज़ा हो गई। इस बीच बानो के एक लड़की पैदा हुई मगर वो बीस दिन बाद ही पीलिया होने से मर गई। बानो गहरे सदमे में रहने लगी थी।

एक दिन ख़बर आई कि आलमी जँग ख़त्म हो गई है और अँग्रेज़ लोग जँग जीत गए हैं। इसके तक्ररीबन डेढ़ महीने बाद देबा भी वापस आ गया। देबे के सही सलामत वापस आने की ख़बर सुनकर सारा गाँव बहुत खुश था। हम सब उससे मिलने उसके घर गए। उससे बातें कीं। हाल चाल पूछा। जँग की बातें सुनीं। तभी वहाँ बानो भी आ गई। और वो जो देबे के गले लग कर रोई उसे देखकर सब की आँखें छलक आईं। उसकी चीखें आसमान फाड़ रही थीं। देबा हैरान था कि उसके सही सलामत वापस आने पर सारा गाँव खुश था तो ये इतनी बुरी तरह क्यों रो रही है। देबे की माँ ने उसके जँग पर जाने के बाद बानो के साथ जो हुआ था देबे को बताया तो देबा भी फूट फूट कर रोया। देबा और बानो एक दूसरे के गले लग कर बहुत रोए। हम देबे को अपना बड़ा भाई और गाँव की शान मानते थे। उसे हमेशा कबड्डी में बड़ों बड़ों को मात देते देखा था। पहली बार उसे रोते देख रहे थे और खुद भी रो रहे थे। कहते हैं न कि

जब पहाड़ रोता है तो सब को बहा ले जाता है। देबे और बानो के दुख ने हम सबको भी अपने असर में ले लिया था। दोनों ऐसे लिपटे थे कि छुड़ाए नहीं छूट रहे थे। बड़ी मुश्किल से देबे की माँ ने दोनों को अलग किया। देबे के जँग से सही सलामत वापस आने की खुशी के जश्न की तैयारियों में नसीब कौर की मदद के लिए जमा गाँव की औरतें कड़ाह परशाद तैयार कर चुकी थी। नसीब कौर ने अरदास करके सबको परशाद बाँटा और देबे को समझाने लगी कि बेटा शायद वाहिगुरू की यही मर्जी रही होगी। हमने तो बहुत कोशिश की कि ऐसा न हो मगर दुल्ला ही बेईमान निकला। देबे ने कहा वाहिगुरू ने कुछ नहीं किया। वो उसके साथ तो ऐसा कर ही नहीं सकता। अब जो करना है वो खुद करेगा। दुल्ले को कहना कहीं छुप सकता है तो छुप जाए वरना आज उसकी ज़िन्दगी का आखिरी दिन होगा। देबे की माँ ने देबे को पहले अपनी क्रसम दी, फिर वाहिगुरू की क्रसम दी कि वो ऐसा कुछ नहीं करेगा। उसको ये भी समझाया कि पिछले डेढ़ साल से बानो दुल्ले की बीवी है सो उसे भी ये बात मान लेनी चाहिए। बानो ज़ोर से चिल्लाई कि वो किसी की बीवी नहीं बल्कि जबरजिनाँ की शिकार है। उसकी हिफ़ाज़त अब देबे की ज़िम्मेदारी है। अब दुल्ला उसे हाथ लगा कर दिखाए। और वो फिर दहाड़ें मार कर रोने लगी। देबे ने फिर उसे बाहों में ले लिया और कहने लगा कि अब उसकी बानो को जो छुएगा उसका हाथ काट देगा वो। देबे भाई की दिलेरी के क्रिस्से हम बचपन से सुनते आ रहे थे मगर आज उसका ये रूप देख कर हम और ज़्यादा मुत्तासिर और कायल हुए जा रहे थे। अब दुल्ला नहीं बचेगा देबे से। बानो ने देबे को बताया कि दुल्ला जेल की सज़ा काट रहा है पिछले तक्ररीबन डेढ़ साल से और डेढ़ साल ही और बचा है उसकी सज़ा पूरी होने में। देबा उसे दिलासा देता है कि अब वो आ गया है इसलिए वो बेफ़िक्र हो जाए।

देबे के वापस आने से बानो बहुत खुश थी और उसके चेहरे पर मायूसी की जगह वही पहले वाली रौनक लौट आई थी। वो पहले की तरह देबे के घर

आने जाने लगी थी और देबे की माँ की हर काम में मदद करने लगी थी। देबा और बानो फिर पहले की तरह मिलने लगे थे। कभी घर में, कभी कुँए पर तो कभी खेतों, बागों में। शराफ़त चाचा भी देबे के आने के बाद बानो के चेहरे पर आई रौनक और चमक देख कर खुश था मगर रशीदा चाची जल-भुन जाती। वो अक्सर बानो को बातों ही बातों में दुल्ले के वापस आने पर उस पर आने वाली आफ़त के बारे में आगाह करती रहती।

जब दुल्ला सज़ा काट कर वापस गाँव में आया तो रशीदा चाची ने उसे बताया कि देबा ज़ँग से वापस आ गया है और ये भी कि कैसे बानो उसके गले लग कर दहाड़ें मार मार कर रोई थी और देबे ने उसे जान से मारने की बात सबके सामने की थी। तब से बानो की हिम्मत बढ़ गई है और उसके लाख मना करने पर भी बानो देबे से मिलने जाती रहती है। दुल्ला ये सब सुनकर गुस्से में आ गया और उसने बानो से पूछा कि वो देबे से मिलने क्यों गई थी और उसके गले लग कर क्यों रोई थी। और अब उससे रोज़ क्यों मिलती है। आगे से बानो ने भी कहा कि देबा ही उसका सब कुछ है, उसे अल्लाह ने ज़ँग से सही सलामत उसकी हिफ़ाज़त के लिए ही वापस भेजा है। अब अगर वो उसे कुछ कहेगा या मारेगा तो उसकी ख़ैर नहीं। ये सुनते ही उसका पारा चढ़ गया और आपे से बाहर होते हुए वो बानो को बालों से पकड़ कर खींचता हुआ बाहर गली में ले आया और बोला, “कह दे अपने यार से, तुझे बचा सकता हो तो बचा ले। आज तू ज़िन्दा नहीं बचेगी”, और बानो को लातों, थप्पड़ों और घूँसों से मारना शुरू कर दिया। रशीदा चाची, देबे की माँ और शराफ़त चाचा ने उसे बचाने की कोशिश की मगर दुल्ले ने सबको धक्के देकर गिरा दिया और उससे दूर रहने को कहा। देबा खेतों से वापस आ रहा था। बानो को पिटते हुए देखकर उसने दुल्ले को ललकारा। दुल्ला भी तैयार हो गया। फिर दोनों में ज़मकर हाथा-पाई हुई। देबा तगड़ा था और दिलेर भी। उसने दुल्ले को कई दफ़ा पटक पटक कर ज़मीन पर मारा। लात घूँसे मारे और उसकी दाहिनी बाँह मरोड़ कर तक्ररीबन

तोड़ ही डाली। जब वो दुल्ले को मारते मारते थक गया तो बानो को ज़मीन से उठाकर बोला। “मैं इसे अपने घर ले जा रहा हूँ। आज से ये हमारे घर में रहेगी। इसे इस हैवान, इस शैतान की औलाद के पास नहीं छोड़ सकता”। फिर दुल्ले से मुखातिब होकर बोला। “मैं ले जा रहा हूँ बानो को। अब ये तेरे जुल्म नहीं सहेगी। इसकी तरफ़ अब अगर देखेगा भी तो तेरी आँखें निकाल लूँगा”। दुल्ला अपनी बाँह पकड़ कर कराहता रहा और कुछ नहीं बोला। बानो को देबा और उसकी माँ अपने साथ अपने घर ले गए। दुल्ले की बाँह की हड्डी टूट चुकी थी। रशीदा चाची ने बुड़ बुड़ करते हुए उसकी बाँह को दुपट्टे से बाँधा और बाँह को दुपट्टे की मदद से उसके गले में डाल दिया।

अगले दिन प्यारा सिँह ने गाँव के मो'अतबर लोगों को अपने घर इकट्ठा किया। हम तो अट्ठारह उन्नीस बरस के थे पर हम भी चार पाँच लड़के देखने पहुँचे कि आखिर क्या बात होती है, क्या फ़ैसला होता है।

प्यारा सिँह ने सबसे कहा कि, “ये बच्ची दस बारह बरस की थी जब हमारे गाँव आई थी। इसकी माँ हामिदा हमारी बहन जैसी थी। बेचारी जल्दी अल्लाह को प्यारी हो गई इसलिए बानो को अपने मामा के घर आना पड़ा। हालांकि शराफ़त भाई बड़ा नेक इन्सान है पर वो रशीदा की चालाकियों और दुल्ले की शैतानियत के आगे मजबूर होकर इस बच्ची पर हर रोज़ होते जुल्म को रोक नहीं सका। हद तो तब हो गई जब दुल्ले ने इस मजबूर को अपनी हवस का शिकार बनाया और ज़बरदस्ती अपनी बीवी बनाकर रख लिया। देबा तब जंग पर गया हुआ था नहीं तो हम ये जुल्म न होने देते इस लाचार पर। रशीदा को मालूम था कि बानो और देबा इक दूजे को मुहब्बत करते हैं। हमने देबे के लिए बानो को माँगा भी था शराफ़त भाई से। फिर देबे को जंग में जाना पड़ा तो वो बात बीच ही में रह गई। रशीदा से हमने ये कहा था कि देबे के वापस आने तक वो बानो को हमारी अमानत के तौर पर अपने पास रखे। दुल्ले की पहली औरत के मरने पर दुल्ले की बुरी नज़र बानो पर हो गई और रशीदा ने इसलिए

उसका साथ दिया क्योंकि वो देबे और बानो दोनों से खार खाती थी। आपको याद होगा कैसे इसने देबे पर डोरे डाले और कैसे देबे की माँ ने इसको सबके सामने जलील किया था। देबे के वापस आने पर जो हुआ वो भी आप सबने देखा। हमने देबे को समझाया कि अब बानो दुल्ले की हो गई है सो उसे उसका ख्याल छोड़ देना चाहिए। कल दुल्ले ने वापस आते ही जो हरकत की उसे भी आप सबने देखा। हम बानो को मज़ीद जुल्म से बचाने के लिए अपने घर ले आए हैं। जब उसकी हालत ठीक हो जाएगी और वो इस सानिहे के सदमे से बाहर आ जाएगी तब उससे पूछ कर हम देबे और बानो का ब्याह करने की ख्वाहिश रखते हैं। किसी को कोई ऐतराज़ हो तो अभी बोलो।“

शराफ़त चाचा तो कुछ नहीं बोला मगर रशीदा चाची ने ऐतराज़ किया कि अब चूँकि बानो दुल्ले की बीवी है सो जब तक दुल्ला उसको तलाक़ नहीं देता उसकी शादी किसी दूसरे मर्द से नहीं हो सकती। मेरे अब्बू और शमशाद चाचा ने रशीदा की बात बीच में ही काटते हुए कहा कि सारा गाँव जानता है कि दुल्ले का बानो के साथ निकाह कभी हुआ ही नहीं था इसलिए तलाक़ देने या न देने का दुल्ले को कोई हक़ ही नहीं है। ये बड़े शर्म की बात थी कि रशीदा सब कुछ जानते हुए भी दुल्ले का साथ दे रही थी। रशीदा की बात में कोई दम नहीं है। मस'अला अगर कोई है तो वो ये है कि बानो मुसलमान है और देबा सिखा गाँव का कोई भी मुसलमान इस ग़ैर मज़हबी शादी के हक़ में नहीं था। देबे की माँ ने कहा कि इसमें मुसलमान या ग़ैर मुसलमान होने का कोई मतलब नहीं है। सभी जानते हैं कि बानो और देबा मुहब्बत करते हैं और मुहब्बत हमेशा मज़हब से ऊपर मानी गई है। कौन सा मज़हब मुहब्बत को नहीं मानता। मुहब्बत ही तो हर मज़हब की बुनियाद है। मुहब्बत तब भी थी जब मज़ाहिब नहीं थे। किस मज़हब में मुहब्बत को ग़लत या गुनाह बताया गया है। गुनाह वो है जो दुल्ले ने बानो के साथ किया था। दुल्ले की मुजरिमाना हरकत को मज़हब के नाम पर किसी भी सूरत में सही ठहराने की कोशिश न की जाए। हम लोग बड़े

हैं इसलिए हमें बिना मज़हबी इख़्तिलाफ़ को बीच में लाए बच्चों की ख्वाहिश और उनके बीच हुई मुहब्बत का एहताराम करना चाहिए। इस दलील की काट किसी के पास नहीं थी। तय हुआ कि इस सारे मस'अले में अहम मुद्दा मज़हब न होकर बानो को हर रोज़ के जुल्म से निजात दिलवाना और उसकी हिफ़ाज़त करना था। ये इन्सानी फ़र्ज़ भी था और मज़हबी भी। आख़िर मज़हब इन्सान के लिए है न कि इन्सान मज़हब के लिए।

सबसे ज़्यादा ज़रूरी था बानो के ज़ेहन से दुल्ले का ख़ौफ़ निकालना। इसके लिए पहले उसे दुल्ले की मार से लगी गहरी जिस्मानी चोटों का इलाज और फिर उसके मुसलसल जुल्म से पैदा हुए ज़ेहनी और नफ़्सियाती सदमे का इलाज ज़रूरी था। इसमें वक़्त लगता है और माहौल की तब्दीली और महफूज़ होने का एहसास पैदा करना ज़रूरी था इसलिए बानो का देबे के घर में ही रहने से ज़्यादा मुफ़्रीद न दूसरा इलाज था न दूसरी जगह ही थी। इस तरह बानो एक महफूज़ माहौल में देबे के घर ही रहने लगी।

बैसाखी के मेले की तैयारियों में सारा गाँव ही मसरूफ़ था सो बानो और देबे के ब्याह की तारीख़ बैसाखी के मेले के बाद तय करने की बात हुई। ब्याह के लिए कई तरह की तैयारियाँ करनी पड़ती हैं और फिर अगर ब्याह एक अमीर खानदान के इकलौते बेटे का हो तो तैयारियों में और भी वक़्त लगता है। रिश्तेदारों को मदद करने से लेकर उनके लिए तहायफ़, दुल्हा दुल्हन के कपड़े, ज़ेवर, अखंड पाठ, आनन्द कारज, कीर्तन, लँगर वग़ैरह का बन्दोबस्त, बहुत कुछ करना था। प्यारा सिँह और नसीब कौर सारे गाँव का त'अव्वुन हासिल कर देबे और बानो के ब्याह की तैयारियों में लग गए। इस बार फ़सल भी बहुत अच्छी हुई थी सो देबे के ब्याह के पहले ही प्यारा सिँह ने हर हाज़तमन्द और ग़ैर काश्तकार लोगों की दिल खोल कर मदद की। इधर रशीदा चाची हर रोज़ दुल्ले को कोई न कोई पट्टी पढ़ाती। उसे देबे से तो तकलीफ़ थी ही, अब बानो को भी वो अपनी दुश्मन समझने लगी थी। जब आप का किसी चीज़ या इन्सान

पर दिल आ जाए और वो आप को न मिले तो आप उससे नफ़रत करने लगते हैं और अगर उस चीज़ या इन्सान को कोई ठीक आपकी नाक के नीचे से ले उड़े तो उससे दुश्मनी हो जाना आम बात है। देबा और बानो दोनों ही अब रशीदा चाची के निशाने पर थे। वो चाहती थी कि किसी तरह देबे और बानो की शादी न हो। वो दुल्ले को भड़काती तो दुल्ला भड़क तो जाता मगर अपनी टूटी हुई बाँह को देखकर चुप हो रहता।

उधर पिछले तक्ररीबन चार पाँच महीनों से ख़बरें मिल रही थीं कि अँग्रेज़ हिन्दुस्तान छोड़कर जाने वाले हैं। ये ख़बरें सुनने को अच्छी लगती थीं पर उन पर कोई यक़ीन नहीं करता था। इतना बड़ा राज़ काज़ कोई क्यों छोड़ेगा। जिन्होंने रेलें, नहरें, डाक़खाने, यहाँ तक कि शहर और रहने के लिए महल नुमा बड़े बड़े घर बना रखे हों, सौ सौ नौकर चाकर रखें हों, मनमर्ज़ी की हुकूमत करते हों वो ऐसा ऐशो-आराम छोड़कर क्यों जाएँगे। दलील ठीक भी थी मगर फिर कोई कहता कि अँग्रेज़ आलमी ज़ँग बेशक जीत गए हैं मगर इतनी लम्बी ज़ँग में उनका इतना बड़ा माली नुक़सान हुआ है कि हिन्दुस्तान और दीगर गुलाम देशों का निज़ाम चलाना उनके बस की बात नहीं रही। वो अन्दर से इतना टूट चुके हैं कि फिर से ख़ुद को एक आलमी ताक़त के तौर पर खड़ा होने में उन्हें पचास साल लग जाएँगे। ये यक़ीनन उनके लिए एक घाटे का सौदा होगा। फ़ायदा इसी में है कि वो सभी गुलाम मुमालिक को आज़ाद कर दें और अपना मुल्क सँभालें। इस दलील में ज़्यादा दम नज़र आता था। ये ख़बरें भी आनी शुरू हो गईं कि स्यालकोट, लाहौर, अम्बरसर, दिल्ली वगैरह में अँग्रेज़ अफ़सर मीटिंगें कर रहे हैं और लँदन से भी बड़े हाकिम ने गाँधी, जिन्ना, नेहरू को ख़ुद बताया है कि वो जल्दी ही जाने वाले हैं। फिर ये ख़बर भी फैलने लगी कि हिन्दुओं और मुसलमानों के दो मुख़्तलिफ़ मुल्क बनेंगे। पुख़्ता ख़बर ये भी थी कि रावी के मगरिबी इलाक़े में मुसलमानों का नया मुल्क बनेगा जिसका नाम पाकिस्तान होगा। मुसलमान तो यहीं रहेंगे लेकिन अगर इस इलाक़े में रहने

वाले हिन्दू और सिख चाहें तो वो भी यहीं रह सकते हैं। कुछ शरारती और फ़सादी लोगों को ये बात पसन्द नहीं थी इसलिए उन्होंने हिन्दुओं, सिखों के आलीशान घरों, हवेलियों और कारोबारों पर कब्ज़ा करने की नीयत से मनसूबे बनाने शुरू कर दिए थे और दूर दराज़ से ख़बरें आती थीं कि कहीं कहीं तो उन पर हमले भी शुरू हो गए थे। सदियों से हिन्दुओं और सिखों को भाई समझने वाले मुसलमान उनकी जायदाद हथियाने के चक्कर में चाहने लगे कि सभी हिन्दुओं और सिखों को यहाँ से जाने पर मजबूर कर दिया जाए। इसके लिए सबसे आसान तरीका उनमें ख़ौफ़ पैदा करना था। हम लोग लाख भाई भाई रहे हों, लालच सगे भाइयों में फूट डाल देता है तो हम तो सगे भी नहीं थे। लूटपाट और मारधाड़ की ख़बरें आम हो गई थीं। कुछ पढ़े लिखे और हकीकत आशना हिन्दू सिख परिवारों ने तो अपना कारोबार समेटना भी शुरू कर दिया। कुछ ने अम्बरसर, जलन्धर, अम्बाला, दिल्ली वगैरह शहरों में अपना कारोबार शुरू भी कर दिया था। रोज़ डरावनी ख़बरें सुनने को मिलती थीं। हमारा गाँव शहर से दूर होने की वजह से इन ख़बरों की तहक़ीक़ कर पाना मुश्किल था पर जैसे जैसे दिन गुज़रते गए ये ख़बरें सच्ची लगने लगीं। देबा कभी कभी शहर जाता था। उसने बताया कि वो ख़बरें ग़लत नहीं थीं। बहुत जगहों पर मुसलमानों ने हिन्दुओं और सिखों के घरों और दुकानों पर हमले किए हैं, उन्हें हिज़रत पर मजबूर किया है। पुलिस यहाँ वहाँ भाग रही है लेकिन इस पागलपन को सँभालना उनके बस की बात नहीं। सदियों से मुसलमानों के साथ इकट्ठे रह रहे हिन्दू, सिख अब अचानक काफ़िर हो गए थे। हालांकि हमारे गाँव में अभी तक ऐसा कुछ नहीं हुआ था फिर भी हालात बिगड़ते देख हमारे गाँव के हिन्दुओं और सिखों ने भी हिज़रत का मन बना लिया था। सभी मुसलमानों ने उनको रोकने की बड़ी कोशिश की मगर कामयाब नहीं हुए। हम चाहे कितना भी उनकी हिफ़ाज़त का यक़ीन दिलाते मगर दूसरे गाँवों और शहरों से उमड़ती

पागल दँगाईयों और लुटेरों की भीड़ के आगे हमारा भी बस नहीं चलता। ऐसे हालात में बानो और देबे की शादी नहीं हो सकी।

फिर एक दिन ख़बर आई कि मुल्क आज़ाद हो गया है। पाकिस्तान भी बन गया है। जो हिन्दू, सिख अभी तक शशो-पँज में थे वो भी अपना सामान बाँधकर तैयार हो गए। कुछ तो अगली सुबह ही निकल गए। देबे का घर-बार बड़ा था। उन्होंने बहुत सा सामान, अनाज, बर्तन वगैरह हम लोगों में बाँट दिया और जाने की तैयारी कर ली। एक बैलगाड़ी में ज़रूरी सामान रखकर देबे ने प्यारा सिँह और नसीब कौर को सुबह ही सबको मिलने के बाद रवाना कर दिया। देबे और बानो ने घोड़ी पर जाना था इसलिए वो बाद में निकले।

इधर कई दिनों से मनसूबे बना रही रशीदा ने दुल्ले को कहा कि आज मौक़ा है। देबे और बानो को जाने मत देना। इनको रास्ते में ही घेर कर देबे को मार दो और बानो को वापस लेकर आओ। दुल्ले की बाँह तो अब ठीक हो गई थी मगर उसके जेल जाने की वजह से उसका गिरोह टूट चुका था। रशीदा चाची ने मुझे, असलम और हाशिम को बुला भेजा। जब हम रशीदा चाची के घर गए तो उसने हमसे कहा कि तुम कैसे मुसलमान हो। तुम्हारे नाक के नीचे से देबा बानो को ले गया और तुम चुपचाप देखते रहे। ये सिर्फ़ हमारी नहीं सारे गाँव के मुसलमानों की बेइज़्जती है। अगर ज़रा सी भी ग़ैरत बची हो और इस्लाम की इज़्जत करते हो तो दुल्ले के साथ जाओ और बानो को वापस लेकर आओ। मुसलमान की बेटी किसी सिख की बीवी नहीं बनेगी। और देबा जिन्दा नहीं बचना चाहिए आज। उस सिखड़े की लाश गिरनी चाहिए। तुम सबको इस्लाम की क्रसम है। हम तीनों पर पता नहीं क्या जादू किया रशीदा चाची ने कि हम दुल्ले और गुल्ले के साथ हो लिए। रास्ते में एक गाँव से दुल्ले के दो पुराने साथियों को लिया। उनको जब मक्रसद बताया तो उन्होंने अपने गाँव से दो और लड़कों को साथ ले लिया। वो पहले ही हिन्दुओं के घरों को लूटने के लिए निकलने ही वाले थे। कुल नौ लोग थे हम। उन चारों के पास

घोड़े थे। एक घोड़ा दुल्ले के पास था। इस तरह हम पाँच घोड़ों पर नौ लोग देबे के त'अकुब्ब में सरपट हो लिए। देबा तक्ररीबन आठ दस मील आगे होगा हमसे। घोड़े भगाते हुए हम उसके पीछे चल पड़े। हदफ़ साफ़ था। देबे को ज़िन्दा नहीं जाने देना और बानो को वापस लाना। रशीदा चाची की दी हुई इस्लाम की क़सम ज़ेहन पर भारी थी।

काफ़ी आगे जाने पर एक आमों का बाग़ आया। बहुत से हिन्दू और सिख लोग जो हिन्दुस्तान जा रहे थे थक कर इस बाग़ में आराम कर रहे थे। अलग अलग परिवार आमों के नीचे बैठे खाना खा रहे थे। एक तरफ़ हमें देबा और बानो भी दिखाई पड़ गए। उन्हें देखते ही दुल्ला चिल्लाया। “घेर लो, ज़िन्दा नहीं बचना चाहिए ये काफ़िर”। देबे ने भी किरपान निकाल ली। दुल्ले के गिरोह के पुराने साथियों ने देबे पर हमला कर दिया। उस दिन मैंने जो देबे का रूप देखा वो इतना ख़ौफ़नाक था कि आज भी उसे याद करके रूह काँप उठती है। तीन तरफ़ से घिरे देबे ने फ़ुर्ती दिखाते हुए तीन लड़कों को मार दिया और एक को बुरी तरह ज़ख्मी कर दिया। देबे की टाँग और पीठ पर ज़ख़म लगे पर वो बिजली की सी तेज़ी से लड़ता रहा। उसने हाशिम और असलम को भी ज़ख्मी कर दिया था। तभी दुल्ले ने ललकारते हुए देबे पर तलवार चला दी। देबे ने दुल्ले का वार बचाकर इतनी ज़ोर से वार किया कि दुल्ले का सिर धड़ से अलग हो गया। ये मँज़र देख कर मैं ख़ौफ़ से काँप गया। अगली बारी मेरी थी। कहते हैं ख़ौफ़ बन्दे से वो काम भी करवा देता है जो उसने ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं किया होता। अपनी मौत सामने देख मैंने अपने गँडासे का वार देबे पर कर दिया। उसकी पीठ मेरी तरफ़ थी। गँडासा उसके सर में घुस गया। अभी मेरा हाथ गँडासे के हथ्थे पर ही था कि देबे ने तेज़ी से घूम कर वार किया और मेरा हाथ कट कर दूर जा गिरा। मैं, हाशिम, असलम और गुल्ला चीखते हुए पीछे भाग गए। फिर देखा कि देबा ज़मीन पर गिर गया था। बानो ने देबे का सर अपने ज़ानों पर लेकर वो चीख़ पुकार मचाई कि आज तक मेरे कानों में गूँजती

है। वो चीख चीख कह रही थी। “ओए, मेरे देबे नूँ मार दित्ता, ओए, मेरे देबे नूँ मार दित्ता। तुआडा कक्ख न रहे। दोज़ख विच्च जाओ सारे। ओए, मेरे देबे नूँ मार दित्ता।” आस पास के लोग इकट्ठा हो गए। किसी ने देबे के सर से गँडासा खींच कर निकाला तो खून का फ़व्वारा छूट पड़ा। उसके साफ़े के साथ उसका सर कस कर बाँधा। मगर देबे के जिस्म में कोई हरकत नहीं हो रही थी। वो मर गया था। अब गुल्ले और असलम ने दहाड़ें मारकर रोती हुई बानो को बाँह से पकड़ा और घसीट कर लाने लगे तो कुछ लोग बीच में आ गए। हमने उनको बताया कि वो मुसलमानों की लड़की है और ये सिख उसे ज़बरदस्ती लेकर जा रहा था। मेरी बाँह को हाशिम ने कस कर एक कपड़े से बाँधा मगर खून रुकने का नाम नहीं ले रहा था। मेरा कटा हाथ, गँडासा, दुल्ले और उसके साथियों की लाशें वहीं रह गईं। हम बानो को लेकर चार घोड़ों पर सवार हो कर तेज़ी से अपने गाँव की तरफ़ चल पड़े। गुल्ले को छोड़कर सब ज़ख्मी थे पर मेरा हाल सबसे बुरा था। लगता था मैं बेहोश होकर गिर जाऊँगा। कुछ देर बाद हम अपने गाँव पहुँचे। बानो को रशीदा चाची के हवाले किया और सारी बात बताई। गाँव के और लोग भी इकट्ठा हो गए थे। सुनकर सब हैरान भी हुए और दुखी भी। बहुतों ने रशीदा चाची को बहुत खरी खोटी सुनाई। किसी ने मेरी बाँह से कपड़ा खोलकर नये कपड़े से उसे फिर कस कर बाँधा। बानो अभी भी रो रही थी। उसने भी रशीदा चाची को बहुत गालियाँ दीं। शराफ़त चाचा का बुरा हाल था। कुछ देर बाद मैं बेहोश हो गया। उस दिन आगे जो हुआ वो मैंने अगले दिन होश में आने के बाद सुना।

रशीदा चाची की ज़िद ने दुल्ले को मरवा दिया। मेरा हाथ कट गया। दुल्ले के तीन साथी मारे गए। तीन और बुरी तरह ज़ख्मी थे। सिर्फ़ गुल्ला ठीक था क्योंकि वो देबे के नज़दीक गया ही नहीं था। बानो का बुरा हाल था। वो बार बार ग़श खाती और जब होश में आती तो यही कहती, “ओए मेरा देबा मार दित्ता”। रशीदा चाची की ज़मकर मज़ममत हुई मगर वो इतने नुक्सान के बाद

भी खुश थी। उसके दोनों मक्कासिद पूरे हो गए थे। देबा भी मर गया था और बानो भी वापस आ गई थी। शराफत चाचा को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसे अपने जवान मगर बदमाश बेटे के मरने पर इतना दुख नहीं था जितना बानो की हालत का। दरअसल, पूरे गाँव में दुल्ले की मौत पर किसी को दुख नहीं हुआ। सबने देबे की मौत पर आँसू बहाए। हमारे गाँव का हीरा था वो। सबने बानो की तक्रदीर पर आँसू बहाए। उसकी तक्रदीर में खुशी थी ही नहीं। पहले बचपन में माँ मर गई। फिर दुल्ले के जुल्म सहती रही और अब जब कि उसका देबे के साथ ब्याह होने वाला था तो देबा मारा गया। लोगों को जब ये पता चला कि देबा मेरे हाथों मरा था तो सबने मुझे लाख लाख लानतें भेजीं। पता नहीं इसमें मुल्क की तक्रसीम का फैसला ग़लत था या मुसलमानों का लालच जो जाते हुए हिन्दुओं और सिखों को लूटने और मारने लगे, इस्लाम का नशा था या सियासी लोगों की ग़ैर ज़िम्मेदाराना तक्ररीरें, कि अच्छे खासे लोग रातों रात वहशी दरिदों में तब्दील हो गए थे। इससे जो लोगों का जानी या माली नुकसान हुआ वो अलग मगर जो सदियों का भाईचारा ख़त्म हो गया वो सबसे बड़ा नुकसान था। पूरे इलाक़े में खूनो-ग़ारत का खेल कई दिनों तक चला। और जगहों पर भी यही हुआ होगा मगर हमारा हँसता खेलता गाँव एक ही दिन में बर्बाद हो गया। ये सारा रशीदा चाची के इन्तक़ाम का मनसूबा था जिसे हम समझ ही नहीं पाए और इस्लाम के नाम पर ग़ैर इस्लामी काम कर आए। बेशक देबे ने मेरा हाथ काट दिया था और मैं फ़ज़लुर्रहमान लोहार से फ़ज़लू टुण्डा बन गया था मगर देबे जैसे नेक इन्सान को बिना किसी कुसूर के मार देने का मलाल मेरे दिल से जाता ही नहीं। दुल्ले के साथ न मेरी कभी यारी रही न उसके लिए मेरे दिल में इज़्जत, फिर भी पता नहीं रशीदा चाची के कहने पर मैं क्यों उसके साथ चला गया। मैंने बेशक अपनी मौत सामने देख कर देबे पर वार कर दिया था मगर पीछे से वार करने में जो बुजदिली और धोखे का जुज़्व शामिल था वो मुझे आज भी परेशान करता है और पशेमान भी। मेरी देबे से कोई निजी

दुश्मनी नहीं थी बल्कि मैं तो उसे बड़ा भाई मानता था और उसकी बहुत इज्जत करता था। पता नहीं क्यों ऐसे हालात पैदा हुए कि उस नेक इन्सान को मारने का गुनाह मेरे ही सर चढ़ना था।

बानो बहुत दिनों तक गुम सुम रही। अगर कोई बुलाता तो कोई जवाब न देती। बस रो पड़ती और कहती, “मेरे देबे नूँ मार दिता।” अकेली बैठी भी यही कहती रहती। न खाना खाती, न बाल बाँधती, न कपड़े बदलती। वही रशीदा चाची जो बानो की दुश्मन बन चुकी थी उसे अब खाना खाने के लिए कहती, कभी नहा कर कपड़े बदलने को कहती, कँधी लेकर उसके बाल बनाने की कोशिश करती तो बानो उसका हाथ झटक देती। ये देखकर मेरी वालिदा ने ये जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। वो रोज़ शराफ़त चाचा के घर जाती, बानो को नहाने में मदद करती, कपड़े बदलती, बालों में कँधी करती और उसे सब भूल जाने को कहती। मेरी वालिदा ने रशीदा चाची को बानो के सामने आने से भी मना कर दिया। हम सब चाहते थे कि बानो की हालत सुधरे और वो धीरे धीरे ठीक हो जाए, मगर ऐसा हुआ नहीं। उसकी हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती चली गई और वो तीन चार महीने के बाद पागल हो गई। जिसे देखती उसे ही पूछती, “मेरे देबे नूँ देखिया तूँ? देबा आया नहीं?” फिर खुद ही कहती, “मेरे देबे नूँ मार दिता”।

गुल्ला एक बेवकूफ़ क्रिस्म का इन्सान था। अपनी मर्जी का मालिक, घड़ों के लिए मिट्टी तैयार करने लगता तो इतना पानी डाल देता कि सब कुछ खराब कर देता। शराफ़त चाचा को फिर सब खुद करना पड़ता। बकरियाँ चराने जाता तो बकरियाँ खेतों में ही छोड़कर घर आ जाता। बाद में रशीदा चाची खुद जाकर बकरियाँ लेकर आती। उसे सभी आधे दिमाग़ वाला कहते थे। उसे न तो काम से मतलब था न अपने वालिद की मदद से। सिवाय रोटी खाने और सोने के वो कुछ नहीं करता था। कई बार वो बानो को आवाज़ लगाकर कहता कि उसे रोटी दे। मगर बानो को तो अपनी ही होश नहीं होती थी तो उसे रोटी

कैसे देती। फिर गुल्ला उसे गालियाँ देने लगता। एक दो बार शराफ़त चाचा ने डंडा दिखाते हुए उसे बानो को कुछ भी कहने से बाज़ रहने को भी कहा। शराफ़त चाचा ने बहुत कोशिश की कि गुल्ले की कहीं शादी हो जाए। वो समझता था कि शादी के बाद उसकी बीवी शायद उसे किसी काम का बना दे। मगर गुल्ले के बारे सुनकर, उसे देखकर कोई भी उसको अपनी लड़की देने को तैयार नहीं होता था। तीस बरस का हो गया था पर उसकी शादी नहीं हो सकी।

बानो को देखकर कभी कभी लगता कि शायद वो ठीक हो रही है। वो पके हुए घड़ों को एक बड़े से कमरे में रखने में शराफ़त चाचा की मदद करती तो लगता वो अब ठीक है। वो सिर्फ़ शराफ़त चाचा से या मेरी वालिदा से ही बात करती थी। दोनों कहते कि बानो को देखकर, उसकी बातें सुनकर लगता है कि अब वो जल्दी ठीक हो जाएगी। वो बिना मदद के खुद को सँभालने भी लग गई थी। रशीदा चाची की किसी बात का जवाब नहीं देती थी। कभी लगता वो ठीक नहीं हुई है, क्योंकि कई दफ़ा वो बैठे बिठाए फिर बोल पड़ती, “मेरे देबे नूँ मार दित्ता।” वो ये बात बार बार दोहराती और फिर रोने लग जाती। देबे के साथ हुई लड़ाई इतनी ख़ूनी थी और इतनी तेज़ी से सब कुछ हुआ था कि पाँच छः मिनट में ही सब ख़त्म हो गया था। इसलिए बानो को इस बात का पुख़्ता इल्म नहीं था कि देबे की जान मेरे किए वार से गई थी। मगर मैं इस बात की पशेमानी से निजात नहीं पा सका था।

एक दिन एक और ही अनहोनी हो गई। बानो शाम के वक़्त पके हुए घड़े बाहर से उठाकर अन्दर रख रही थी कि अन्दर पहले ही से मौजूद गुल्ले ने बानो को पकड़ कर नीचे गिरा दिया और उस पर चढ़ बैठा। बानो ने शोर मचाया तो शराफ़त दौड़ कर अन्दर गया और देखा कि गुल्ला बानो पर चढ़ा हुआ है। उसका एक हाथ बानो की छाती पर था और दूसरे से वो उसकी शलवार खोलने की कोशिश कर रहा था। उस पर अचानक न जाने कैसी वहशत तारी हो गई थी जो वो ऐसी हैवानियत पर उतर आया था। शराफ़त चाचा ने चिल्ला कर

उसे बानो को छोड़ देने को कहा मगर वो नहीं माना। उसे हाथ पकड़ पर खींचा भी पर वो बानो को दबोचे रहा। शराफ़त चाचा ने गुस्से में आकर दस बारह पके हुए घड़े उस के सर पर फोड़ डाले। लहूलुहान गुल्ले के नीचे से बानो को बमुश्किल निकाला। गुल्ले के जिस्म में कोई हरकत नहीं थी। वो मर चुका था। शराफ़त चाचा का ये रूप कभी किसी ने नहीं देखा था। वो कभी किसी को थप्पड़ भी नहीं मार सकता था। शायद बेबस बानो पर होते हुए जुल्म को वो बर्दाश्त ही नहीं कर सका। जब उसे एहसास हुआ कि गुल्ला मर गया है तो वो चुपचाप दीवार से टेक लगाकर बैठ गया। उधर रशीदा चाची कभी बानो और कभी शराफ़त चाचा पर चीखती रही। शोर सुनकर लोग इकट्ठा हो गए। हकीक़त जान कर सभी ने मरे हुए गुल्ले को लानतें भेजीं और कहा कि शराफ़त ने बहुत अच्छा किया।

फिर कुछ लोग कहने लगे कि गुल्ले की ग़ैर-कुदरती मौत पुलिस से छुपी नहीं रहेगी। शराफ़त को सज़ा हो जाएगी तो घर कैसे चलेगा? सलाह मश्वरे के बाद ये फ़ैसला हुआ कि पुलिस के आगे कोई शराफ़त का नाम न ले। गुल्ले की बानो पर ज़बरदस्ती की बात ज्यों की त्यों रखी जाए और बानो पर गुल्ले को मारने का इल्ज़ाम लगा दिया जाए। बानो चूँकि पागल है इसलिए उसे कोई सज़ा नहीं होगी और शराफ़त भी बच जाएगा। मरने वाला तो मर गया, अब मरने वाले के पीछे औरों को क्यों मरने दिया जाए। अगले दिन पुलिस आई। तफ़्तीश के दौरान रशीदा चाची, शराफ़त चाचा और मेरी वालिदा के ब्यान लिए। फिर बानो की जानिब देखा तो थानेदार ने पर्चा दर्ज नहीं करने का फ़ैसला किया। एक हवलदार ने सलाह दी कि पर्चा तो करना ही पड़ेगा। बाद में अदालत के सामने पेश करने पर जज साहब बानो की हालत देखकर उसे बरी कर ही देंगे। थानेदार ने उसकी बात काटी और कहा कि जब पता ही है कि मुजरिमा पागल है और उसने अपने को बचाने के लिए ये क़दम उठाया था जिसमें गुल्ला मर गया तो हम पर्चा दर्ज करके साल दो साल अदालत के चक्कर क्यों काटना

चाहते हैं। लाश दफ़नाने का हुक्म देकर थानेदार वापस चला गया। शराफ़त चाचा तो सज़ा से बच गया पर बानो के दिल पर एक बार फिर गहरा सदमा लग गया। उसके असर से वो फिर कभी बाहर न आ सकी। उस की हालत दिन-ब-दिन बदतर होती गई।

मेरी शादी हो गई थी। मेरी वालिदा ने मेरी बीवी को बानो के बारे सब बताते हुए कहा कि ये लड़की हमारी ज़िम्मेदारी है इसलिए अब तू इसकी देखभाल करेगी। वालिदा ने सकीना को बानो से मिलवाया। सकीना हर रोज़ बानो के पास जाने लगी। दोनों में अच्छी जान पहचान हो गई यानि बानो मेरी बीवी पर भरोसा करने लगी थी। हमें यक़ीन था कि बानो ज़रूर एक दिन ठीक हो जाएगी मगर ऐसा हुआ नहीं।

एक दिन शराफ़त चाचा घड़ों के लिए मिट्टी लाने गया हुआ था। मिट्टी की खुदाई करते वक़्त मिट्टी का एक बड़ा सा तोदा उस पर गिर गया और शराफ़त चाचा उसके नीचे दब गया। गाँव के दो बारह तेरह बरस के बच्चों ने शराफ़त चाचा को तोदे के नीचे दबते हुए देखा। वो दौड़ कर गाँव में आए और लोगों को बताया। वो जगह जहाँ शराफ़त चाचा मिट्टी खोद रहा था गाँव से कोई एक मील पर थी। सब लोग दौड़ कर वहाँ पहुँचे, जल्दी जल्दी मिट्टी हटाई मगर शराफ़त चाचा की लाश ही बाहर निकाल पाए। इसके तक्ररीबन आठ साल बाद रशीदा चाची ऐसी बीमार पड़ी कि फिर ठीक नहीं हुई। तक्ररीबन दो साल तक बीमारी से लड़ती रही मगर आखिर हार गई। रशीदा चाची के मरने के बाद मेरी बीवी बानो को अपने घर ले आई। हालांकि हमारा घर बानो के घर से पाँच सात घर हट कर ही था मगर बानो को उस हालत में तन्हा नहीं छोड़ा जा सकता था। मुल्क की तक्रसीम हुए पच्चीस बरस हो गए थे और पच्चीस बरस ही बानो को पागल हुए हो गए थे। कभी लगता वो ठीक हो गई है। मेरी बीवी के साथ वो कई बार बड़ी अच्छी बातें करती तो कभी देबे को याद करके रोने लगती। कभी कहती मेरा देबा जब आएगा न तब हम शादी कर

लेंगे। देबा अगले महीने आएगा। कभी रोने लगती और कहती, "मेरे देबे नूँ मार दित्ता"। उसकी हालत हमसे देखी नहीं जाती थी। मैं खुद को उसका गुनाहगार मानता था इसलिए जब वो रोती तब मैं भी अपने आँसू नहीं रोक पाता था। मेरी बेटी भी अब बड़ी हो गई थी। जब तक उसकी शादी नहीं हुई वो भी बानो की खिदमत में लगी रही। मेरा बेटा और मैं एक दिन बानो को स्यालकोट अस्पताल ले गए। वहाँ एक डॉक्टर को दिखाया। उसने कहा कि उसकी हालत बहुत बिगड़ चुकी है। वो पुख्ता तौर पर ये नहीं कह सकता कि वो ठीक हो जाएगी मगर कोशिश की जा सकती है। उसने हमें महीने भर की दवा दी और महीने बाद फिर दिखाने को कहा। इस तरह हम तक़रीबन दो साल तक हर महीने बानो को डॉक्टर के पास ले जाते रहे। कोई फ़र्क़ न पड़ते देख डॉक्टर ने भी हाथ खड़े कर दिए। हमें समझाया कि दवा बहुत महँगी है और बानो के ठीक होने के आसार बहुत कम हैं इसलिए दवा देने की बजाए उसका ध्यान कहीं और लगा कर रखें और उसे पुराने हादसे याद न आने दें। मेरा बेटा किराए पर पिकचरें लाता और हम सब बानो के साथ बैठकर पिकचर देखते। बच्चे पिकचर में किसी बात पर खुश होते तो बानो भी खुश होती। हमें लग रहा था कि अब शायद वो ठीक हो जाए। एक दिन एक पिकचर देख रहे थे तो उसमें मार काट का सीन आया। उसे देखकर बानो चीखने लगी। दहाड़ें मार कर रोने लगी और कहने लगी, "ओ देखो, मेरा देबा मार दित्ता ज़ालिमाँ ने, तुसीं देखिया ना, मेरा देबा मार दित्ता।" हमने जल्दी से पिकचर बन्द की और मेरी बीवी, बहू और पोती ने बानो को चुप कराने की बहुत कोशिश की मगर वो तक़रीबन दो घंटे रोती रही। डॉक्टर ने हमें नींद की दवा दी थी और कहा था कि अगर बानो की हालत ज़्यादा ख़राब लगे तो उसे वो दवा देकर सुला दिया करना। हमने बानो को वो दवा दी और कुछ देर में वो गहरी नींद में सो गई। मेरे घर में सभी बानो का बड़ा ख़्याल रखते थे मगर वो ठीक नहीं हो सकी। वक़्त गुज़रता रहा और एक दिन बानो सुबह बड़ी देर तक सोई रही। जब देखा तो उसके एक कान

से खून बह कर उसके बालों में सूखा हुआ था। उसके दिमाग की नस फट गई थी और वो नींद में ही दम तोड़ गई थी। इस बात को तक्ररीबन तीस साल हो गए हैं। हम कभी बानो को भूले नहीं। खासकर मैं तो अब भी बानो और देबे को याद कर के रो लेता हूँ। मुझसे गुनाहे-अज़ीम हुआ था। देबे और बानो दोनों का गुनाहगार हूँ मैं। मैं समझता था कि बानो की खिदमत करने से मेरा वो गुनाह माफ़ हो जाएगा मगर ऐसा हुआ नहीं। मेरा बेटा अपने बीवी बच्चों समेत आस्ट्रेलिया जा बसा, बीवी को मरे हुए बीस साल हो गए हैं और मैं अकेला यहाँ उस गुनाह की सज़ा भुगत रहा हूँ। इस साल छियानवे का हो जाऊँगा। दिल का ऑपरेशन हो चुका है दो बार, दमे के दौर पड़ते हैं तो लगता है जान निकल जाएगी। मगर न मौत आती है न निजात मिलती है

अशफ़ाक़ ने आगे बताया कि देबे और बानो की कहानी सुनाकर फ़ज़लू बाबा ने लम्बी साँस ली लेकिन लगा कि वो साँस वापस नहीं आएगी। उसे फिर दमे का दौरा पड़ा था। पड़ोस में रहने वाले दो लड़के जो बाबा का ख़याल रखते थे और उस वक़्त वहीं मौजूद थे उन्होंने इन्हेलर से उसके मुँह में दवा स्प्रे की तो उसे कुछ राहत महसूस हुई। फिर वो कहने लगा कि अब बताओ हिन्दुस्तान में कौन है जो देबे और बानो के बारे जानना चाहता था। अशफ़ाक़ ने बताया कि उसने फ़ज़लू से कहा कि अभी आपकी हालत ठीक नहीं है आप आराम करो। वो अगले इतवार फिर आएगा और हिन्दुस्तान में बात करके उसको बताएगा।

अशफ़ाक़ ने मुझसे पूछा कि अब आप बताएँ कि पूरी बात क्या है और देबे और बानो के बारे कौन जानना चाहता था ताकि वो अगले इतवार फ़ज़लू बाबा को बता सके। मैंने उसे बताया कि मैं ही देबा हूँ और मेरा दूसरा जन्म हुआ है। ये बात पास्ट लाइफ़ रिग्रेशन थिरेपी से तस्दीक़ भी हो गई है, मगर मुझे किसी ऐसे शाख्स की तलाश थी जो इस बात को पुख़्ता तौर पर तस्दीक़ कर सके। उसे ये भी बताया कि बानो भी मुझे मिल गई है। मगर उसे इस बात का

एहसास नहीं है कि वो पिछले जन्म में बानो थी और मुझसे मुहब्बत करती थी। फिर मैंने अशफ़ाक़ को अपने और निवेदिता के बारे सारी बात बताई जिसे सुनकर उसे बहुत हैरत हुई।

अशफ़ाक़ के ज़रिए फ़ज़लू की बताई बातें सुनकर मेरी हैरत की कोई हद न रही। देबे और बानो की मुहब्बत, बानो पर हुए जुल्मों और देबे के क़त्ल के बाद बानो पर जो गुज़री उस सबने मुझे अन्दर तक हिला कर रख दिया। सबसे ज़्यादा और नाक़ाबिले-बर्दाश्त दुख इस बात का हुआ कि वो मासूम तक़रीबन पैंतालीस साल तक पागलों की तरह अपने देबे के ग़म में ज़िन्दा रही। क्या क्या बर्दाश्त करना पड़ा होगा उसे। कितना दुख उठाया होगा उसने। हालांकि फ़ज़लू और उसके घर वालों ने आख़िर तक उसकी हिफ़ाज़त की और ख़याल रखा पर ये बेइतहा दुख तो उसने अकेले ही बर्दाश्त किया था।

मैं चाहता था कि मैं ये सब निवेदिता को बताऊँ लेकिन निवेदिता मुझसे मिलना ही नहीं चाहती थी। और उसकी इजाज़त के बिना उससे मिलने की कोशिश करना मेरी तहज़ीब के खिलाफ़ था। एक ही ज़रिया था कि उसको लिख कर मैसेज करूँ मगर इतनी सँजीदा बात मैसेंजर के ज़रिए बताने से अपना असर खो देती। दूसरा ये कि ये मैसेज भी मुझे किसी और के फ़ोन से करना पड़ता। ये बात आमने सामने बैठकर ही हो सकती थी और वो निवेदिता के तगाफ़ुल के चलते मुमकिन ही नहीं था। मेरे और मेरी बीवी के झगड़े की वजह से उसने मुझसे मिलने या मैसेज के ज़रिए राबिते में रहने से खुद को अलग कर लिया था। उसका फ़ैसला ठीक भी था। आख़िर मैं उसका था भी कौना। सात आठ महीने इकट्ठे पढ़ने से आप बेशक़ मानूस हो गए हों फिर भी बेवजह बदनाम होने से तो त'अल्लुक़ क़तअ कर लेना अच्छा ही है। उसकी निगाह में मेरा और उसका त'अल्लुक़ इतना ही था जो मेरी बीवी की वजह से टूट भी गया, मगर मेरी निगाह में मेरा और उसका रिश्ता जन्मों का रिश्ता था जो मैं जब तक उसे बता पाता उससे पहले ही हम जुदा हो गए थे। जबसे मुझे इस बात का

एहसास हुआ था तब से ही मैं उसे बताना चाह रहा था मगर ये हो नहीं सका। मेरे उसको लिखे खत भी मुझे ब्लॉक कर देने की वजह से उस तक नहीं पहुँचे। मैं यही समझता रहा कि मेरे सभी मैसेज उस तक पहुँच तो गए हैं और वो क्रस्दन मुझे जवाब नहीं दे रही।

अगले इतवार फिर अशफ़ाक़ का फ़ोन आया। दिन के तक्ररीबन ग्यारह बजे होंगे। अशफ़ाक़ फ़ज़लू के घर पहुँच गया था और उसने फ़ज़लू को देबे और बानो के पुनर्जन्म के बारे बताते हुए मेरे और निवेदिता के बारे में बताया। सुनकर फ़ज़लू को बड़ी हैरत हुई और साथ ही उसकी आँखों में चमक आ गई। कहने लगा, अब उसे उसके गुनाह की सज़ा से निजात मिल जाएगी। उसने अशफ़ाक़ से कहा कि वो मुझसे उसकी बात कराए। अशफ़ाक़ ने इसीलिए मुझे फ़ोन किया था। कहने लगा, “लीजिए, फ़ज़लू बाबा से बात करें आप”। मैंने हैलो कहा तो आगे से पहले सिसकियों और फिर ज़ोर ज़ोर से रोने की आवाज़ आने लगी। मैंने फिर हैलो कहा मगर फ़ज़लू रोने पर क़ाबू पाए तो बात करे। मैं फ़ोन लिए चुपचाप इन्तज़ार करता रहा। तक्ररीबन एक मिनट के बाद फ़ज़लू की आवाज़ आई। इक़ज़ईफ़ो-नातवाँ इन्सान जैसे बात करता है। “देबे भाई, मैं तेरा गुनाहगार फ़ज़लू, फ़ज़लू लोहार, हाशिम लोहार का लड़का। देबे भाई, मुझे बख़्श दे। मुझसे बहुत बड़ा गुनाह हो गया। मुझे किसी ज़हान में सुकून नहीं मिलेगा। देख मुझे शायद इसीलिए अभी तक मौत नहीं आई कि एक दिन तुझसे माफ़ी माँग सकूँ। अल्लाह कैसे कैसे रँग दिखाता है। मैं पिछले दस बारह साल में कई बार सँगीन बीमार हुआ हूँ पर मौत नहीं आई मुझे। देबे भाई, मैं तुझे मारना नहीं चाहता था। बस उस दिन इतना डर गया था कि मुझे पता ही नहीं चला कि मैंने क्या कर दिया। तू तो मेरा बड़ा भाई था। तेरी बहुत इज़्ज़त करता था मैं। उस दिन पता नहीं कैसे मैं रशीदा चाची के कहने पर दुल्ले के साथ चल पड़ा। मुझसे बहुत बड़ा गुनाह हो गया। मैंने दो प्यार करने वाली रूहों को जुदा कर दिया। इस पछतावे के साथ पिचहत्तर बरस से जी रहा हूँ। तू सुन रहा है न”?

मैंने कहा, “हाँ, हाँ सुन रहा हूँ। तू रो मत। ये तो पुरानी बातें हैं। पुरानी क्या पिछले जनम की हैं। अब मैं देबा नहीं कोई और हूँ। तू आगे बता। तूने मेरी बानो का इतने बरस ख्याल रखा। मैं तो तेरा शुक्रगुज़ार हूँ”। कहने लगा, “मैं अपने किए गुनाह पर बहुत शर्मिन्दा था और समझता था कि बानो की खिदमत करने से मेरा गुनाह माफ़ हो जाएगा पर ऐसा नहीं हुआ। वो बेचारी तो तेरे ग़म में पागल ही हो गई। उसने अपने सामने तुझे मरते हुए देखा था और ये ग़म, दुख बन कर उसकी ज़िन्दगी में ठहर गया। बहुत इलाज कराने पर भी वो ठीक नहीं हुई और एक दिन उसी हालत में मर गई। तेरे जाने के पैंतालीस साल तक वो तेरा ग़म ढोती रही। तक़रीबन तीस साल पहले उसने आखिरी साँस ली। उसके मरने का दुख तो हुआ पर मरने के साथ ही उसे दुख से निजात मिल गई, इस बात की खुशी भी है। ये लड़का बता रहा था कि तुझे बानो फिर से मिल गई है। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि चलो इस जनम में तो तुम एक हो सके”। मैंने उसे बताया कि हम लोग मिले तो हैं पर एक नहीं हो सके और न हो ही सकते हैं। एक तो ये एहसास सिर्फ़ मुझे हुआ है कि मैं देबा और वो बानो है। उसे इसके बारे में कुछ नहीं मालूम। फ़ज़लू कहने लगा, “तो तू उसे बताता क्यों नहीं भाई। तू उसे अपने पास बिठाकर सारी बात बता। वो समझ जाएगी”। मैंने उसे बताया कि हम कैसे मिले, कैसे हम दोनों में दोस्ती हुई, फिर कैसे मेरी बीवी ने हमारे बीच दरार डाल दी, और अब आलम ये है कि वो मुझसे बात भी नहीं करना चाहती। जब मैंने फ़ज़लू को बताया कि रशीदा चाची ही अब मेरी बीवी है और दुल्ला और गुल्ला मेरे सगे भाई हैं तो फ़ज़लू की हैरत की इन्तहा न रही। कहने लगा, “रशीदा चाची ने यहाँ भी उसकी ज़िन्दगी जहन्नुम बना रखी थी, वो वहाँ भी बानो का पीछा नहीं छोड़ रही। देबे भाई, तू कुछ भी कर बानो को अपनी बना ले। उसने बहुत दुख सहा है तेरे बिछोड़े में। उसकी रूह को तभी सुकून मिलेगा जब तुम दोनों फिर से करीब हो जाओगे”। मैंने उसे बताया कि बानो इस जनम में मुझसे पैंतीस छत्तीस साल छोटी है, अभी सत्ताईस-अट्ठाईस साल

की है और मैं उसे अपनी बेटी ही समझता हूँ। मैं तो बस उसके साथ राबिते में रहना चाहता हूँ, वो बेटी बनकर रहे, दोस्त बनकर रहे या किसी भी हैसियत से रहे, बस मुझे उसकी खैर-खबर मिलती रहनी चाहिए। फ़ज़लू कहने लगा, “देबे भाई, मैं सब समझता हूँ, तू यहाँ भी किरदार का पक्का बन्दा था, वहाँ भी ज़रूर होगा। मेरी वालिदा बताती थी कि बानो तकरीबन पाँच महीने देबे के घर रही पर देबे ने कभी उसे छुआ तक नहीं, वो देबे की माँ के पास ही रहती थी और उसी के साथ सोती थी। देख, अल्लाह ने इतना बड़ा करिश्मा किया है तो वो आगे भी करेगा। अल्लाह की रहमतों की कोई इन्तहा नहीं। पर मैं समझता हूँ कि तुम्हें अल्लाह ने दोबारा इसलिए मिलाया है कि तुम्हारी अधूरी रही मुहब्बत पूरी हो सके। ऐसा होगा, तभी दोनों की तड़पती रूहों को सुकून हासिल होगा, राहत मिलेगी। उससे शादी कर लो तुम”। मैं उसकी बात सुनकर हँसा। मैंने कहा, “फ़ज़लू तू समझा नहीं, मैंने कहा न कि वो मुझसे बहुत छोटी है, और मैं भी पैसठ का हूँ, पहले से ही शादीशुदा और बाल-बच्चेदार हूँ, उस पर हिन्दू भी। हमारे यहाँ चार चार शादियों की इजाज़त नहीं है। फिर तुम समाज को तो जानते ही हो”। फ़ज़लू बोला, “ये मैं भी समझता हूँ, पर जहाँ अल्लाह की मर्ज़ी हो वहाँ सब मुमकिन है। तुम लाख कोशिश कर लो, अल्लाह की मर्ज़ी हुई तो न उम्र, न मज़हब, न कोई और समाजी दीवार रोक पाएगी। यहाँ तो ब्यासी ब्यासी साल के बूढ़े अट्टारह उन्नीस साल की लड़कियों से निकाह कर रहे हैं, तुम तो अभी जवान हो। फिर समाज का काम ही अड़ंगे डालना है। आज तक समाज ने कुछ दिया है क्या तुम्हें? मैं छियानवे का हो गया हूँ। मुझे तो आज तक समाज ने कुछ नहीं दिया। फिर जिस दिलेर देबे भाई को मैं जानता हूँ वो अगर अपनी पर आ जाए तो समाज भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता”। इतना कह कर वो हँसा और फिर उसकी साँस रुकने लगी।

अशफ़ाक ने फ़ोन पकड़ लिया। कहने लगा, “आप फ़ोन पर बने रहिए। ये लड़के दवा दे रहे हैं बाबा को। वो इशारे कर रहा है कि मैं फ़ोन न काटूँ”। मैं

फ़ोन पर ही था। कुछ देर में फ़ज़लू की आवाज़ आई। “देबे भाई, मैं तो बहुत बूढ़ा हो गया हूँ, कहीं आ जा नहीं सकता। तुम और बानो ही आ जाओ मुझसे मिलने। तुम्हारे पैरों में गिर कर माफ़ी माँग लूँगा तो जान आसानी से निकल जाएगी।” मैंने फ़ज़लू से कहा कि मैं जल्दी ही आऊँगा उससे मिलने, और जहाँ तक माफ़ी की बात है, मैंने उसे माफ़ कर दिया है। उसने मेरी बानो का जिस क्रंदर ख्याल रखा उससे उसका गुनाह माफ़ हो चुका है। वो फिर भी कहने लगा कि मैं एक बार उससे कहूँ कि, “जा फ़ज़लू मैंने तुझे माफ़ किया।” मैंने कहा, “जा फ़ज़लू मैंने तुझे माफ़ किया।” वो खुश हो गया और बोला, “देबे भाई, मिलने ज़रूर आना मुझसे। अपना गाँव भी देख जाना।” मैंने उसे आने का भरोसा दिलाया, खुदा हाफ़िज़ कहा, उसने भी खुदा हाफ़िज़ कहा और फ़ोन बन्द हो गया।

शाम को मुझे ख्याल आया कि मैंने अशफ़ाक़ का तो शुक्रिया अदा किया ही नहीं। उस लड़के ने मेरा गाँव ढूँढने से लेकर फ़ज़लू से देबे और बानो की कहानी सुनकर मुझे सुनाई थी। आज उसने फिर फ़ज़लू से मेरी बात करवाई थी। बड़ी मेहनत की थी उसने मेरे लिए। मैंने उसे इस सब के लिए शुक्रिया अदा करने के लिए फ़ोन किया तो उसने कहा कि वो मुझे फ़ोन करने ही वाला था। उसने बताया कि फ़ज़लू के गाँव से कुछ वक़्त पहले ही फ़ोन आया था कि फ़ज़लू नहीं रहा। ये सुनकर बहुत दुख हुआ मुझे। वो शायद मुझसे माफ़ी माँगने के लिए ही अब तक ज़िन्दा था।

फ़ज़लू की बातें सुनकर जहाँ मुझे अपने पिछले जन्म में जी गई मुख़्तसर सी ज़िन्दगी से जुड़े इस जन्म में दिखाई देने वाले मनाज़िर और थिरेपी के दौरान देखे मनाज़िर और बानो से मुहब्बत के पुख़्ता सबूत मिले, वहीं बानो की तवील तकलीफ़ और पैतालीस बरस तक पागलपन की हालत में जीना मुझे और भी गहरा दुख दे गया। मेरे ज़ख्मी होकर मर जाने में कुछ मिनटों का दर्द था, मगर मेरे मरने से मेरी बानो ने वो दर्द पैतालीस साल तक जिया। ये सोचकर मुझे

लगने लगा कि मैं बानो की हिफाजत न कर पाने का मुजरिम होने के साथ साथ उसे पैंतालीस साल तक दर्द देने का भी मुजरिम हूँ। आम तौर पर मैं अगर किसी बात का जिम्मा ले लूँ, उसमें रत्ती भर भी कोताही नहीं बरतता। मुझ पर अगर पीछे से हमला न किया गया होता तो मैं हर हालत में बानो को सही सलामत लेकर अपनी बहनों के पास पहुँचता। फिर हम वादे के मुताबिक शादी कर लेते और आराम से रहते। न उस जन्म में बानो को पागलों की ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ती न मैं इस जन्म में इक दर्दे-महरूमी और एहसासे-मुजरिमाना लिए जी रहा होता। अल्लाह भी अजीब खेल खेलता है। अगर हमें एक करना ही नहीं था तो फिर हमें इस जन्म में मिलाया ही क्यों। अजीब बात ये भी है कि पिछले जन्म की हमारी मुहब्बत के बारे इल्म भी मुझ अकेले को ही दिया। निवेदिता को भी क्यों नहीं बेदार किया। मुझसे निवेदिता को मिला देने के बाद हमारे रिश्ते को तोड़ देने से पैदा हुआ दर्द इतना शदीद है कि मुझसे बर्दाश्त नहीं होता। अगर निवेदिता मुझसे राबिता बहाल नहीं करती तो ये ग़म, ये दर्द, इक मुस्तक़िल दुख बनकर मेरे ज़ेहन में रहेगा। मेरे ज़ेहनी तवाज़न को मुत्तासिर करेगा। मुझे पागल कर के छोड़ेगा। शायद यही बानो को मेरी वजह से मिले दुख की तलाफ़ी हो। मुझे भी शायद इस जन्म में पैंतालीस साल पागल होकर ही जीना होगा। एक नज़ूमी ने मेरी माँ को बताया भी था कि मेरी उम्र इस जन्म में सौ बरस से ज़्यादा होगी। अगर मेरे पागल हो जाने से बानो के सहे दुखों की तलाफ़ी होती है तो मैं ऐसे जीने से पागल हो जाना बेहतर समझूँगा। हमने मुहब्बत की है। बानो ने अपनी मुहब्बत का सबूत दे दिया है। मैं इस जन्म में दूँगा। पिछले डेढ़ साल से नीम पागलों की सी हालत में तो हूँ ही, आगे पूरी तरह पागल हो जाऊँ तो शायद ये इम्तहान पास कर सकूँ।

माँ का ज़िक्र आया तो एक और बात याद आ गई। अब ये सोचकर हैरत में हूँ कि अल्लाह क्या क्या खेल खेलता है हमारे साथ। मेरी माँ और मेरी ख़ाला एक ही घर में ब्याही हुई थीं। मैं जब तक़रीबन छः सात साल का हुआ तो मैंने

अपनी माँ को कई बार उसकी बहन से कहते सुना कि देखो बहन ये देबे चाचे की तरह नहीं लगता? और कहती, उसी की तरह तेज़ तेज़ बोलता है, वैसे ही चलता है। जब मैंने एक दो बार उसके मुँह से देबे चाचे के बारे सुना तो एक दिन पूछा कि ये तुम्हारा देबा चाचा कौन है और मैं उसके जैसा क्यों हूँ और अब जो बात मैं आपको बताने जा रहा हूँ उस पर भी आपको यक़ीन नहीं आएगा। मेरी माँ भी इसी गाँव कोटली की रहने वाली थी जिसका देबा था। तक्रसीम के वक़्त मेरी माँ की उम्र सात बरस थी और वो भी अपने घर वालों के साथ हिन्दुस्तान की जानिब हिजरत कर रहे काफ़िले के साथ उसी आम के बाग में दूसरे बच्चों के साथ खेल रही थी जिसमें देबे के ऊपर हमला हुआ था। उसने देबे का क़त्ल अपनी आँखों के सामने होते देखा था। वो मन्ज़र उसके ज़ेहन में छप सा गया था और वो बचपन में बार बार इसका ज़िक्र करती रहती थी और अपने वालिद से पूछती रहती थी कि मुसलमानों के लड़कों ने देबे चाचे को क्यों मारा था। ख़ुदा के रँग देखिए कि मेरी माँ की शादी पन्द्रह साल की उम्र में कर दी गई थी और सोलहवें साल में उसने एक बेटे को जन्म दिया। वो बेटा मैं था, यानि देबा। इसीलिए जब मैं छः सात साल का हुआ तो मेरी माँ को मुझमें देबा दिखाई देने लगा। जिस पँडित ने मेरी जन्मपत्री बनाई थी वो हर बरस माघ के महीने में हमारे गाँव आता था और हर बरस ही मेरी माँ उसे मेरी जन्मपत्री दिखाती थी। एक बार उसने बताया कि ये लड़का बहुत पढ़ाई करेगा। बड़ा अफ़सर बनेगा और सौ साल से ज़्यादा जिएगा। उसने ये भी बताया कि पिछले जन्म में मेरी मौत छोटी उम्र में ही सर पर चोट लगने से हुई थी। ये भी बताया कि किसी ने पीछे से वार किया था। उसने मेरी माँ को बताया कि ये लड़का इतना दिलेर होगा कि चाहे इसके आगे हज़ार बन्दा भी खड़ा कर दो ये हारेगा नहीं। मगर इस बात का ख़याल रहे कि मुश्किल हालात में इसके पीछे खड़ा होने वाला कोई न कोई होना चाहिए। ये जब भी हारेगा, पीठ पीछे किए वार से हारेगा। मेरी माँ डर गई। कहने लगी, “पँडित जी, आप तो डरा रहे हो।

कौन है मेरे बेटे का दुश्मन"? पंडित ने कहा, इसका मतलब ये नहीं कि कोई हथियार से वार करेगा। इसका मतलब है कि इसको नुकसान पहुँचाने की नीयत से वो लोग जो सामने से इसका मुक्काबला नहीं कर सकते, पीठ पीछे साजिशें रचेंगे। इसके ऊपर ग़लत इल्जाम लगा कर बदनाम करने की कोशिश करेंगे। मगर वो इसका कुछ बिगाड़ नहीं पाएँगे। ये परमात्मा का नेक बन्दा है। हर किसी के साथ नेकी करेगा लेकिन इसे ग़लत समझा जाएगा। जिसके साथ नेकी करेगा वो भी ये सोचेगा कि उसके साथ नेकी इसने खुदगर्ज़ी की नीयत से की होगी। ज़रूर इसमें इसका कोई निजी मफ़ाद होगा। ऐसा हर बार होगा मगर बाद में सच बाहर आने पर वो अपनी सोच को बदलेंगे और इसकी इज़्जत बरकरार रहेगी। आज माँ होती तो देखती कि वो नज़ूमी जो कह गया था सब सच हो रहा है। मुझे ग़लत भी समझा गया है, खुदगर्ज़ भी और मेरी पीठ पीछे साजिशें रच कर मेरा नुक़सान भी किया गया है। एक बार नहीं कई बार। कुछ से तो ये ही बर्दाश्त नहीं होता कि मैं उनसे बेहतर क्यों हूँ और कुछ मेरे किए अच्छे कामों, अच्छी सलाह और अच्छे मन्सूबों का सेहरा अपने सर बाँधने के चक्कर में मेरे बारे में पीठ पीछे ग़लतब्यानी करके मेरा हक़ छीन लेते हैं। बाद में सच सामने आने पर उन्हीं की बेइज़्जती होती है। नेकी और सच को आप हरा नहीं सकते।

मुझे दिखाई देते वो पुर-असरार मनाज़िर, वो आधी नींद की हालत में दिखाई देते ख़्वाब, वो आकाशवाणी, वो बार बार निवेदिता नाम का मेरे सामने आना, वो बेताबी, वो इज़्तिराब, पास्ट लाइफ़ रिग़्रेशन थिरेपी में देखे मनाज़िर, मेरी बीवी की निवेदिता से ऐसी सँगीन दुश्मनी की वजह, मेरे भाईयों का मेरे साथ किया वो वहशियाना सलूक, सबका राज़ खुल गया था मुझ पर। मैं सोचने लगा कि अगर फ़ज़लू के कहे मुताबिक़ मैं पिछले जनम में एक अच्छा इन्सान था और इस जनम में उससे भी अच्छा इन्सान हूँ तो मेरी तक़दीर में इतना दुख़ क्यों है? कहते हैं कि अल्लाह अच्छे बन्दों का इम्तहान ज़्यादा लेता है। मैंने कहीं पढ़ा भी है कि ये दुनिया रूहों के इर्तिक़ा के लिए एक इस्कूल की तरह है।

अल्लाह रूहों को मुश्किल हालात में डालता है और फिर इम्तहान लेता है। रूहें इन मुश्किल इम्तहानों में से कैसे निकलती हैं उसी के हिसाब से नम्बर मिलते हैं और अगले जनम में तरक्की मिलती है। इस कायनात में रूहों की तीन क्रिस्में हैं। पेड़-पौधे, जानवर और इन्सान। इन्सान के जिस्म में जनम लेने से पहले रूहें चौरासी लाख योनियों से होकर गुज़रती हैं। जब वो पेड़-पौधों की शक्ल में होती हैं तब वो तरक्की कर रही होती हैं। जो पौधे अदना होते हैं वो अज़ीम होने की कोशिश में होते हैं और जो अज़ीम क्रिस्म के होते हैं वो अगली क्लास यानि जानवरों की क्लास में शामिल होने के क़ाबिल हो जाते हैं। साँईसदानों ने बहुत पहले तज़ुर्बा कर लिया था कि कुछ पौधे इन्सान की क़ुरबत पाकर इक़ खास तरह का रद्दे-अमल करते हैं। कुछ इन्सान का लम्स पाकर खुश होते हैं तो कुछ मौसिक्री से मुत्तासिर होकर खुद भी मौसिक्री पैदा करते हैं। ऐसे ही जानवरों के दिमाग़ भी खुद तो काम करते ही हैं इन्सानी मुहब्बत पाकर वो और भी वफ़ादार हो जाते हैं। प्यार का इज़हार करते हैं। ये सब रूहों के इर्तिक़ा की ही अलामत हैं। ठीक ऐसे ही कुछ इन्सान बहुत ही नीच सोच वाले होते हैं जिनको दुख और मुसीबत, ग़ुरबतो-ग़दाई में ज़िन्दगी काटनी पड़ती है। पास होने पर अगले जनम में उन्हें बेहतर हालात मिलते हैं मगर वो मज़दूर, नौकर या अदना क्रिस्म के काम करते हैं। यहाँ से पास होकर वो उससे बेहतर क्लास में दाखिल होते हैं। क्योंकि अल्लाह ने इस कायनात को जोड़ कर रखने के लिए मुहब्बत की गोंद बनाई है इसलिए मुहब्बत के जज़्बे को अच्छी तरह समझने और अमल में लाने के लिए ही इन्सान को जनम दर जनम कई मरहलों से गुज़रना पड़ता है। जो लोग मुहब्बत के जज़्बे को खुद में अच्छी तरह जज़्ब कर लेते हैं और लालच और हवस को तर्क कर देते हैं उनकी रूह रूहे-अज़ीम यानि परमात्मा में जज़्ब होने का ईनाम पाती हैं। उन्हें फिर जनम और मौत के चक्कर से निजात मिल जाती है।

मुहब्बत को लोगों ने बहुत बदनाम किया है, क्योंकि उनके बन्द दकियानूसी दिमागों ने मुहब्बत को एक बड़ी ही तंगजहनी से एक ऐसे तंग बक्से में बन्द कर रखा है जहाँ से उसका एक ही मतलब निकलता है जो जिस्मानी कशिश से शुरू होता है और जिन्सी ख्यालात में परवरिश पाता हुआ शहवत से गुजरते हुए मुबाशरत पर जाकर खत्म होता है। खत्म होता मतलब वाकई खत्म हो जाता है क्योंकि ऐसी मुहब्बत का आखिरी हदफ़ ही मुबाशरत होता है।

जिस मुहब्बत की बात मैं करता हूँ उसने इस पूरी कायनात को अपनी कशिश में बाँध रखा है। जिस तरह खुदा इस कायनात के ज़र्रे ज़र्रे में मौजूद है उसी तरह मुहब्बत भी इस कायनात के ज़र्रे ज़र्रे में मौजूद है। जिस तरह खुदा तमाम वसीअ है उसी तरह मुहब्बत भी तमाम वसीअ है। अगर मैं ये कहूँ कि मुहब्बत ही खुदा है और खुदा ही मुहब्बत है तो ये कोई मुबालगा आराई नहीं, एक हकीकत है और आफ़ाक़ी सच्चाई है। कायनात में जो भी कुछ है वो आपस में बँधा हुआ है, जुड़ा हुआ है। एक ज़र्रे से लेकर पूरी कायनात में तैरते ये सय्यारे, सितारे, पूरी की पूरी कहकशाएँ अपने मुअय्यन रास्तों पर, एक दूसरे से मुअय्यन दूरी पर सदियों से एक मुअय्यन धुरे पर घूम रहे हैं और आपस में कभी नहीं टकराते वो इसी कशिश का, इसी मुहब्बत का कमाल है। हर ज़रा अपने आप में एक पूरी कायनात है। हर ज़र्रे के अन्दर मौजूद प्रोटोन, न्यूट्रॉन और इलेक्ट्रॉन एक मुअय्यन गिनती में मौजूद हैं और इलेक्ट्रॉन अपने अपने मदार में पूरे कायदे से घूम रहे हैं। एक भी इधर से उधर हो जाए तो उस ज़र्रे का पूरा वजूद ही बदल जाता है। ये इसी कशिश, इसी मुहब्बत का कमाल है। यही कशिश मुहब्बत है, इश्क़ है। अगर हम ये मानते हैं कि खुदा हर ज़र्रे में मौजूद है तो ये भी मानेंगे कि हर ज़रा खुदा है। अगर हम ये मानते हैं कि खुदा ही मुहब्बत है और मुहब्बत ही खुदा है तो हर ज़रा मुहब्बत का घर है। यहीं आकर मज़हब और साईंस एक हो जाते हैं। दरअसल यही मुहब्बत पूरी कायनात की

वज्रदियत की बुनियाद है, इन्सान का बुनियादी मज़हब है। कायनात में मौजूद हर शय मुहब्बत का घर है। यही वजह है कि हर कोई किसी न किसी शय से मुहब्बत करता है। मज़हबी और सूफ़ी लोग जो इस हकीक़त को जान चुके हैं वो ख़ुदा से मुहब्बत करते हैं, जो थोड़े कम आलिम हैं वो ख़ुदा की बनाई दूसरी चीज़ों से। कोई फूलों से मुहब्बत करता है, कोई चाँद सितारों से मुहब्बत करता है, कोई रात से, कोई दिन से, कोई समन्दर से, नदियों, झीलों से तो कोई पहाड़ों से, कोई कुत्तों, बिल्लियों से तो कोई ऊँट, घोड़ों से, कोई मौसीक़ी से तो कोई शायरी से, कोई रक्ख़स से तो कोई मुसब्बिरी से। इसी तरह कोई माँ से, बाप से, महबूब से, बीवी से, शौहर से, दोस्त से, बच्चों से तो कोई आस पड़ोस में रहने वाले हर इन्सान से। जिस जिस लेवल पर जिसका जितना जितना इर्तिका हुआ है वो उसी लेवल पर मुहब्बत करता है। कोई सिर्फ़ पैसे से मुहब्बत करता है तो कोई अपने मुल्क से। तँग ज़ेहन लोग सिर्फ़ अपने ही घर वालों से मुहब्बत करते हैं। मुनाफ़िक़ लोग अपने मतलब के लिए मुहब्बत का ढोंग करते हैं। कुशादा ज़हन लोग ख़ुदा की बनाई हर शय से मुहब्बत करते हैं। इन्सान, इन्सान से मुहब्बत करता है। आदमी, औरत से, औरत, आदमी से। वो आदमी या औरत माँ, बाप, बहन, भाई, बेटा, बेटी, बीवी, शौहर, आशिक़, माशूक़ या सिर्फ़ दोस्त भी हो सकते हैं। ये ज़रूरी नहीं कि जब कोई ये कहे कि वो फ़लाँ से मुहब्बत करता है तो आपके ज़ेहन में वही मुहब्बत आए जो मुबाशरत या हमबिस्तरी पर जाकर ख़त्म होती है। मुहब्बत सिर्फ़ जिस्मानी नहीं होती। मुहब्बत रूहानी भी होती है और रूहानी मुहब्बत ही असली मुहब्बत है। बाक़ी सब उसके बिगड़े हुए या पूरी इर्तिका हासिल न किए हुए रूप हैं। अगर मुहब्बत ख़ुदा है तो वो बहुत ख़ूबसूरत है। उसका एहसास भी ख़ूबसूरत है। मुहब्बत करने वाला हर इन्सान ख़ूबसूरत है। इन्सान की तमाम ख़ूबियों में सबसे बड़ी ख़ूबी मुहब्बत ही है। जब हम किसी ज़र्रे के वज्रूद को तोड़ते हैं तो उसमें से निकली तवानाई किसी को भी बर्बाद कर देने की ताक़त रखती है। एटम बम

ऐसे ही बनाए जाते हैं और हम जानते हैं कि वो कितने खतरनाक होते हैं। एक मुकम्मल एटम में जो तवानाई होती है वो मुहब्बत की तवानाई है और वो किसी का नुकसान नहीं करती बल्कि जीने की कुव्वत देती है। हमारी सब्ज़ियाँ और अनाज कुदरत की मुहब्बत के ख़जाने हैं जिनके हर ख़लिए में इतनी ताक़त है कि उनको खाने से हमारे जिस्म को ताक़त मिलती है। ये मुहब्बत की ही ताक़त है। यही सब्ज़ियाँ या अनाज अगर सड़ जाएँ तो वही तवानाई हमें बीमार भी कर सकती है और मार भी सकती है। मुहब्बत को मुहब्बत ही बना रहने देने में सबकी भलाई है। उसे तोड़ने, मरोड़ने से उसमें से बर्बादी ही निकलेगी। आपने फ़िज़िक्स में पढ़ा होगा। दो ही चीज़ें ऐसी हैं जो न बनाई जा सकती हैं न बर्बाद की जा सकती हैं, और वो हैं माद्दा और तवानाई। आप न ख़ुदा को बना सकते हैं न बर्बाद कर सकते हैं। न ही आप मुहब्बत को बना सकते हैं न बर्बाद कर सकते हैं। ख़ुदा ही इस तमाम कायनात में मौजूद माद्दा है और मुहब्बत उसमें मौजूद तवानाई। ये दोनों दुनिया के वजूद में आने से पहले भी थे, अब भी हैं। दुनिया तबाहो-बर्बाद हो सकती है मगर ख़ुदा और मुहब्बत हमेशा थे हमेशा रहेंगे। बाक़ी तमाम कायनात इन में से ही निकली है। इसलिए इनका एहताराम करना चाहिए। अगर सब जानते हुए भी आप ख़ुदा के वजूद को मानने से इन्कार करते हैं तो आप अपने जाहिल होने का सबूत देते हैं। अगर ये जानते हुए भी कि मुहब्बत ही इस दुनिया की, इस कायनात की बुनियाद है, आप मुहब्बत को क्रस्दन नज़र अन्दाज़ करते हैं तो आप असल मायनों में काफ़िर हैं।

ख़ुदा चाहता है कि इन्सानियत मुहब्बत पर मब्नी हो। हर दिल में मुहब्बत हो। मुहब्बत की दुनिया ख़ुदा की दुनिया है। इन्सान की अज़ीमतर ख़्वाहिश पुरसुकून जिन्दगी है और सुकून मुहब्बत में महव होने से मिलता है, नफ़रत से नहीं। नफ़रत भरे दिल न ख़ुद सुकून से रह पाते हैं न दूसरों को रहने देते हैं। नफ़रत के साथ दीगर इन्सानी ख़ामियाँ आपकी फ़ितरत का हिस्सा बन जाती

हैं और आखिर में आपके किरदार का। दुनिया में जितने भी ज़ालिम लोग होते हैं या हैं उनमें अना-ओ-तकबुर का, बेरहमी का, हसद का, गुस्से का जुज़्ब होता है और ये सब नफ़रत से शुरू होता है। जो लोग मुहब्बत में यक्रीन रखते हैं, वो रहमदिल होते हैं। उनके चेहरे पर खुदा का नूर होता है। वो प्यारे लगते हैं, जबकि नफ़रत करने वाले डरावने होते हैं। जो लोग मुहब्बत को अपना मज़हब मानते हैं वो ही खुदा की नज़रों में इन्सान हैं और जो नफ़रत को अपना मज़हब मानते हैं वो इन्सान ही नहीं। उनकी रूहें इर्तिक़ा के उस मुक़ाम पर पहुँची ही नहीं जहाँ से उनको अच्छे और बुरे में फ़र्क़ करने की तमीज़ हो।

इस दुनिया से परे एक और भी दुनिया है। रूहों की दुनिया। जहाँ एक जन्म के बाद जिस्म को तर्क करके रूहें कुछ वक़्त आराम करती हैं जहाँ पिछले जन्म के आमाल की बुनियाद पर उनका लेखा जोखा होता है। देखा जाता है कि पिछले जन्म में कोई रूह इर्तिक़ा के किस मरहले पर पहुँची है और वो फ़र्स्ट, सैकिंड या थर्ड डिवीज़न में पास हुई है या फ़ेल हुई है। जैसे एक क्लास पास करने पर इस्कूलों में दो महीने की छुट्टियाँ होती हैं। छुट्टियों में तलबा ये फ़ैसला करते हैं कि अब वो किस इस्कूल में दाखिला लें, कौन से मज़मून रखें। ये वक़्त रूहों की छुट्टियों का वक़्त होता है। ये छुट्टियाँ एक दो महीनों से लेकर कुछ बरसों तक की होती हैं। अगर किसी रूह ने ज़ंग में या किसी ख़तरनाक तरीक़े से पिछला जिस्म छोड़ा है तो उसे ज़्यादा आराम दिया जाता है। फिर उसे अगले जन्म में अगले इम्तहानों के लिए भेजा जाता है। ये सिलसिला तब तक चलता है जब तक कोई रूह रूहे-अज़ीम में ज़ब्ब हो जाने के लायक़ नहीं हो जाती। यहाँ आप एक बार फिर मिसाल के तौर पर एटम को ले लीजिए। एटम का मतलब ही आत्म या आत्मा है। ये आत्मा ही रूह है। यही वो तवानाई है जिसे हम ज़िन्दगी कहते हैं। इस तवानाई के बिना कोई भी जिस्म रूह से ख़ाली है यानि मुर्दा है। एटम के मरक़ज़ में जो न्यूक्लियस है वही परमात्मा या रूहे-अज़ीम है। इसीलिए हम कहते हैं कि खुदा ज़र्रे ज़र्रे में है। न्यूक्लियस में

मौजूद प्रोटोन और न्यूट्रान वो रूहें हैं जो अपने इर्तिक्रा के उरूज पर पहुँच कर रूहे-अज़ीम में शामिल हो चुकी हैं। वो जन्म और मौत के चक्कर से बाहर आ चुकी हैं। वो इलेक्ट्रॉन जो न्यूक्लियस के गिर्द मुख्तलिफ़ मदारों में घूम रहे हैं वो रूहें हैं जो अभी रूहे-अज़ीम में शामिल नहीं हो सकीं मगर अपनी इन्सानी ज़िन्दगी में इर्तिक्रा के जिस मरहले पर पहुँची हैं उसी के मुताबिक़ वो न्यूक्लियस के बाहर तयशुदा मदारों में घूम रही हैं। जो रूहें न्यूक्लियस से दूर और सबसे बाहरी मदार में घूम रही हैं ऐसी रूहें हैं जिन्हें अभी कई इम्तहानों से गुज़रना है। कई बार जन्म लेना है। अभी बहुत कुछ सीखना है। जैसे जैसे उनका इर्तिक्रा होता जाएगा और जैसे जैसे वो अपनी नेगेटिविटी छोड़कर पॉज़िटिविटी की तरफ़ बढ़ेंगी वैसे वैसे उनको अगले मदार में जगह मिलती जाएगी और एक वक़्त आएगा जब वो भी न्यूक्लियस में मौजूद प्रोटोन और न्यूट्रान की तरह रूहे-अज़ीम में जा मिलेंगी और बार बार जन्म और मौत के चक्कर से आज़ाद हो जाएँगी। यही क़ायदा है कुदरत का।

मुझे और निवेदिता को पिछले जनम में मुहब्बत का तोहफ़ा देकर बेरहमी से छीन लेना भी शायद हमारा इम्तहान ही था। मैं बानो की हिफ़ाज़त करते करते ख़ुद चाहे मारा गया था मगर फिर भी जब तक ज़िन्दा रहा, बानो की हिफ़ाज़त करता रहा। शायद इसीलिए उस जनम में मुझे दीगर इम्तहान से फ़ारिग़ कर दिया गया था। बानो का इम्तहान जारी रहा। अल्लाह शायद ये देखना चाहता था कि बानो मुझसे सच्ची मुहब्बत करती थी या मुझमें सिर्फ़ एक मुहाफ़िज़ देखती थी। मेरी मौत के बाद वो मुझे याद भी रखती है या मुझे भूलकर किसी और से निकाह कर लेती है। उसका इम्तहान बहुत लम्बा था मगर वो इसमें पूरे नम्बर लेकर पास हुई। यही वजह है कि पिछले जनम की मुफ़लिस, मज़लूम, मजबूर, मोहताज़ और माज़ूर बानो इस जनम में अच्छे घर में, प्यार करने वाले वालिदैन के घर पैदा हुई, ऊँची पढ़ाई कर रही है, ज़हीन और ख़ुद ऐतिमाद लड़की है।

इस जनम में सिर्फ मुझे ही पिछले जनम की झलकियाँ दिखाना, बानो को फिर मेरी ज़िन्दगी में निवेदिता बनाकर भेजना, चार दिन की सरसरी सी रफ़ाक़त अता करना, फिर दरार पैदा करना, मुझे बेक्रार करना, इज़्तिराब देना, ये सब शायद मेरे ज़ब्त का इम्तहान ही हो। मैं अगर इन हालात से परेशान होकर निवेदिता का ख़्याल दिल से निकालने की कोशिश करूँगा तो इस अज़ीम इम्तहान में फ़ेल हो जाऊँगा और फ़ेल होना मेरी फ़ितरत में नहीं है। मुझे न सिर्फ़ ये इम्तहान पास करना है बल्कि अब्बल आना है।

मैं पिछले जनम में भी तालीम याफ़्ता था और इस जनम में उससे भी ज़्यादा तालीम हासिल कर चुका हूँ और अभी भी कर रहा हूँ। मैं पिछले जन्म में आलमी जंग के वक़्त फ़ौजी अफ़सर था तो इस जन्म में भी फ़ौजी अफ़सर होने के बाद सिविल सर्विस में भी एक आला अफ़सर रहा हूँ। ये भी इतिहास का ही सबूत है। किसी एक मज़हब का न होकर सभी का एहताराम करने वाला और इन्सानियत को मानने वाला शाख़्स हूँ। इन्सानियत का पहला मज़हब मुहब्बत है और मैं मुहब्बत का ही पैरोकार हूँ। मैं अल्लाह की बनाई हर शय से मुहब्बत करता हूँ। कुछ लोगों का मानना है कि सच्ची मुहब्बत एक बार ही होती है। मुझे लगता है ये बात किसी अधूरे इल्म वाले शाख़्स ने कही है। मैं समझता हूँ जो शाख़्स खुद सच्चा है उसे एक बार नहीं कई बार मुहब्बत होती है और हर बार सच्ची मुहब्बत ही होती है। मुझे एक बार नहीं दिन में शायद सौ बार सच्ची मुहब्बत होती है। मैं अगर किसी दोस्त से मिलता हूँ तो पूरे खुलूस और मुहब्बत के साथ। किसी बच्चे को देखता हूँ तो सच्ची मुहब्बत से। किसी फूल, पौधे, कुत्ते, बिल्ली, गाय, भैंस, घोड़े को देखता हूँ तो उससे सच्ची मुहब्बत करता हूँ। यहाँ तक कि मैं खुद से भी सच्ची मुहब्बत करता हूँ। मुझे हर किसी से मुहब्बत है। मैंने लालच, हवस, हसद, रशक़, नफ़रत, झूठ, दिखावे सब को कई साल पहले ही तर्क कर दिया था। शायद सात आठ साल की उम्र से ही साल दर साल तरक्की करता आ रहा हूँ। आज मैं उस मुक़ाम पर

हूँ जहाँ मैं सिर्फ़ मुहब्बत हूँ, सरापा मुहब्बत, और ये भी ख्वाहिश नहीं करता कि जिससे मैं मुहब्बत करता हूँ वो भी मुझसे मुहब्बत करे। ये मुहब्बत के जज़्बे का आखिरी मरहला है। जो मुहब्बत तब भी कायम रहती है जब आपको पता हो कि आप जिससे मुहब्बत करते हैं वो आपको नहीं मिलेगा, वहीं सच्ची मुहब्बत है। मैं दुनिया के बनाए मज़ाहिब में यक़ीन न करके खुदा के बनाए मज़हब यानि मुहब्बत में यक़ीन करता हूँ। मुहब्बत मेरा मज़हब है, फ़र्ज़ है, मुझ पर खुदा का कर्ज़ है जो मैं खुदा की बनाई हर शय से मुहब्बत करके हर रोज़ चुकाता हूँ।

अभी मैं इस कश्मकश से गुज़र ही रहा था कि मेरी बीवी ने मेरे ऊपर एक और बम फोड़ डाला। वो यूँ भी निवेदिता को लेकर बहुत गुस्से में थी और कहती रहती थी कि वो निवेदिता को सबक़ सिखा कर ही मानेगी। मैं अगर उससे कहता कि तुम ख्वाह-मख्वाह उसके पीछे पड़ी हुई हो जबकि उसका इस सब के साथ कोई लेना देना नहीं है तो वो मुझ पर ही चढ़ बैठती। एक दिन उसने फुँकारते हुए मुझे बताया कि वो थाने में गई थी। वहाँ उसने निवेदिता की दी हुई शिकायत के बारे दरयाफ़्त किया मगर उन्होंने बताया कि उनके पास ऐसी कोई शिकायत नहीं आई थी। कहने लगी, तुमने और तुम्हारे वकील ने मेरे साथ झूठ बोला था। मैंने उससे कहा कि निवेदिता को तो शायद इस सबके बारे में इल्म ही न हो। उस मामले में मेरी बात उसके वालिद साहब की तरफ़ से भेजे गए वकील से हुई थी और उसने ये कहा था कि अगर तुम लिखकर देती हो कि आईन्दा तुम निवेदिता को धमकाने या उसे बदनाम करने की कोशिश नहीं करोगी तो वो ये शिकायत नहीं करेंगे। जब तुमने लिखकर दे दिया तो उन्होंने या तो वो शिकायत की ही नहीं होगी या की होगी तो वापस ले ली होगी। मगर वो नहीं मानी। मैंने उसे ये भी कहा कि असल में क्या हुआ होगा वो हमारे वकील को पता होगा क्योंकि उसी ने तुम्हारा लिखा हुआ निवेदिता के वकील को दिया था। तुम उसी से पूछ लो तो उसने कहा कि तुम और तुम्हारा वकील

मिले हुए हो। मैंने अपने वकील से भी कहा कि वो निवेदिता के वकील की बात मेरी बीवी से करवा दे। उसने एक दो बार मेरी बीवी को फ़ोन किया पर उसने वकील का फ़ोन उठाया ही नहीं और अपनी ज़िद पर अड़ी रही। कुछ रोज़ में उसने एक शिकायत वीमेन कमीशन में दे दी। उसमें उसने मेरे वकील के खिलाफ़ शिकायत की कि उसने उसे वरगला कर निवेदिता के हक़ में लिखवा लिया था। निवेदिता के बारे लिखा कि मेरा उसके साथ लव अफ़ेयर चल रहा है और मेरे खिलाफ़ घरेलू तशहूद का इल्ज़ाम लगाते हुए ये भी लिखा कि मैं अपनी तमाम जायदाद अपनी होने वाली बीवी निवेदिता के नाम करने वाला हूँ। वीमेन कमीशन ने वो शिकायत थाने में तफ़्तीश के लिए भेज दी। मुझे पता चला तो मैंने अपने वकील से बात की कि मैं नहीं चाहता कि निवेदिता को थाने में जाना पड़े क्योंकि इसका उस पर बुरा असर पड़ सकता था। मेरे वकील ने निवेदिता को फ़ोन करके कह दिया कि अगर थाने से फ़ोन आए तो वो उसे न उठाए और उसे थाने में जाने की ज़रूरत नहीं क्योंकि हम ये मस'अला खुद ही सँभाल लेंगे। मुझे थाने से बुलावा आया तो मैं अपना ब्यान दे आया। शिकायत पढ़ कर उस में लिखे सफ़ेद झूठ पर मुझे बहुत हैरत हुई। आखिर ये औरत चाहती क्या थी? उस दिन शाम के वक़्त मैंने किसी के फ़ोन से निवेदिता को ये बताने के लिए फ़ोन किया कि शिकायत में क्या लिखा है और ये भी कि वो थाने में न जाए। मगर निवेदिता ने मेरा नाम सुनते ही फ़ोन काट दिया। वो शायद इस मस'अले के फिर से उठने और इसमें उस पर लगाए इल्ज़ाम से परेशान हो गई थी इसलिए इस बार वो भी थाने में जाकर अपना ब्यान दे आई थी। वकील ने भी अपना ब्यान ई-मेल के ज़रिए भेज दिया।

पुलिस ने अपनी रिपोर्ट वीमेन कमीशन को भेज दी मगर वीमेन कमीशन ने क्या कार्रवाई की मुझे इसका इल्म नहीं। मैं अपनी बीवी की तरफ़ से की गई इस शिकायत से और उसमें लिखे गए झूठ से परेशानी की हालत में था। इसके दो दिन बाद मैं यूनिवर्सिटी में अपना रोल नम्बर लेने गया तो मुझे एक रैड लाइट

पर स्कूटर पर बैठी निवेदिता दिखाई दे गई। मैंने बड़े खुलूस के साथ उसे देखकर हाथ हिलाया मगर उसने मुझसे नज़रें फेर लीं। मैंने उसे तकरीबन दस महीने बाद देखा था। इतने अर्से के बाद उसे देखने से जो खुशी मुझे हुई थी वो उसके नज़रें फेर लेने से क्राफूर हो गई। जाहिर था कि वो मेरी बीवी की तरफ से की गई शिकायत की वजह से मुझसे भी खफ़ा थी। चाहता था कि गाड़ी सड़क के किनारे लगा कर उसकी ख़ैरियत पूछूँ मगर उसका बिगाड़ा हुआ मूड देखकर मैंने उससे उस दिन मिलना मुनासिब नहीं समझा। यूँ भी उस दिन उसके स्कूटर की पिछली सीट पर उसका दोस्त भी बैठा था जिसके सामने बात करना मुनासिब नहीं समझा मैंने। इसके कुछ दिन बाद जम्मू यूनिवर्सिटी से एक प्रोफ़ेसर साहब का तर्जुमा पर लेक्चर था। वो सुनने के बाद जब मैं डिपार्टमेंट से बाहर निकला तो देखा कि निवेदिता अपने दो दोस्तों के साथ जो सर्टिफ़िकेट कोर्स में हमारे साथ ही पढ़ते थे मेरा इन्तज़ार कर रही थी। उसने मुझसे कहा कि मैं उसको एक ख़त लिखकर दूँ। जब पूछा कि ख़त में लिखना क्या है तो वो ठीक से बता नहीं पाई और कहने लगी कि कुछ भी लिख दो। वो शायद ये चाहती थी कि मैं उसे ये लिख कर दूँ कि मेरा उससे कोई रिश्ता नहीं है मगर ये बात न वो कह सकी और न ही मैंने लिख कर दी। ख़त तो मैंने लिख कर दे दिया उसे मगर उस में यही लिखा कि निवेदिता एक बहुत अच्छी लड़की है और ये कि हर बाप ये चाहेगा कि उसकी बेटी वैसी हो जैसी निवेदिता है। ये बात मेरे हिसाब से ठीक भी थी। ये भी लिखा कि मैं इबादत की हद तक उसकी इज़्जत करता हूँ। ये ख़त उसके किस काम आएगा, कहाँ इस्तेमाल होगा कह नहीं सकता। उस दिन मैंने उससे कहा भी कि मैं ये ख़त इस शर्त पर लिख कर दे रहा हूँ कि वो फिर से मेरे साथ राबिता बहाल करे। ये न हो कि अगर हम कहीं मिलें तो वो मुझे पहचानने या मुझसे बात करने से इन्कार कर दे। उसने ये बात मानी भी मगर जब कुछ दिनों बाद उससे मुलाक़ात का इत्तेफ़ाक़ हुआ तो उसने मुझसे मिलने या बात करने से इन्कार कर दिया। वो चाहती थी कि वीमेन

कमीशन की रिपोर्ट मिलने पर वो मेरी बीवी के खिलाफ़ हतक इज़्जत का दावा करे। मैं भी ऐसा ही करना चाहता था सो ये ज़रूरी था कि हम दोनों इस मस'अले को लेकर राबिते में रहते। मगर निवेदिता ने फिर भी मुझसे राबिता बहाल नहीं किया।

एक दिन मैंने अखबार में सूबाई सिविल सर्विस के इम्तहान का इश्तहार देखा तो फिर किसी का फ़ोन लेकर मैंने निवेदिता को फ़ोन किया कि वो इस इम्तहान के लिए अपना फ़ार्म भरे। उसे ये भी कहा कि वो इस साल उर्दू डिप्लोमा में भी दाखिला ले ले। मेरा उसे ये सलाह देने का मक़सद ये था कि बेशक वो अँग्रेज़ी में पीएचडी कर ले फिर भी उसे मुलाज़मत पाने के नज़रिए से एक से ज़्यादा मुतबादल अपने पास रखने चाहिएँ। मुस्तक़बिल का कुछ पता नहीं होता। मुलाज़मत मिले न मिले। मैं ऐसे कई पीएचडी किए लोगों को जानता हूँ जिनको मुलाज़मत नहीं मिली। हमारे मुल्क में जो इस वक़्त बेरोज़गारी का दौर चल रहा है उसके मद्देनज़र बन्दे के पास और भी मुतबादल होने चाहिएँ तभी वो किसी किनारे लग सकता है। मैं खुद भी बच्चों को सिविल सर्विसेज़ की मुफ़्त कोचिंग देता हूँ और ज़हीन बच्चों को इसके लिए एनकरेज भी करता रहता हूँ। मुझसे तरबियत पाकर बहुत से बच्चे आज मुख्तलिफ़ शो'अबों में अफ़सर हैं। मगर निवेदिता ने मेरी सलाह पर सँजीदगी से ग़ौर करने से इन्कार कर दिया।

कुछ दिन पहले की बात है कि मैं अपना उर्दू के एडवांस डिप्लोमा का आखिरी पर्चा देकर घर जा रहा था कि यूनिवर्सिटी के गेट पर लाल बत्ती होने की वजह से रुकना पड़ा। अचानक बाईं तरफ़ निगाह पड़ी तो देखा निवेदिता कुछ लड़कियों से बातें कर रही थी। मुझसे रहा नहीं गया और मैंने अपनी गाड़ी उसकी तरफ़ घुमा ली। उसके पास जाकर उसे आवाज़ दी। उसने मुझे देखा मगर बातों में मशगूल रही। फिर न जाने क्या सोचकर मेरी जानिब आई मगर उखड़े

उखड़े लहजे में ही बात की। मुझे लगा कि उसके दिल में मेरे लिए नफ़रत पैदा हो चुकी थी। वो मुझसे बात नहीं करना चाहती थी।

अब तक जो हुआ था उसके बारे में मैंने तफ़्सील से प्रोफ़सर शर्मा को फ़ोन पर बताया। सुनकर वो हैरान भी हुए और खुश भी। कहने लगे तुम्हारी कहानी सुनकर मैंने अब तक जो पिछले जन्मों के तजुर्बात के बारे पढ़ा था और जो मेरे खुद के साथ हुआ था उस सबकी तस्दीक़ हो गई। मुझे यकीन है कि अब तुम्हारी ज़ेहनी कैफ़ियत धीरे धीरे ठीक होने लगेगी। उन्होंने मुझे सलाह दी कि अब मैं निवेदिता को सब कुछ बता दूँ। जब मैंने उन्हें बताया कि निवेदिता मुझसे बात ही नहीं करना चाहती तो वो बड़े हैरान हुए। कहने लगे, अगर ऐसा है तो सब्र करो। क्योंकि जो हो रहा है वो अल्लाह की मस्लेहत का हिस्सा है। अगला काम भी अल्लाह को ही करने दो। अल्लाह ज़रूर किसी न किसी तरह तुम दोनों को मिलवाएगा। ये वाक़ई तुम्हारे सब्र का इम्तहान होगा। फिर कहने लगे कि जितना मैंने पिछले जन्मों के रूहानी रिश्तों के बारे पढ़ा है और जो मेरा निजी तजुर्बा है उसके मुताबिक़ ऐसा नहीं हो सकता कि वो तुमसे बात न करे। एक दिन उसे भी ज़रूर कोई न कोई इशारा मिलेगा कुदरत की तरफ़ से और वो तुम्हें अगर पूरी तरह से न भी पहचान सकी तो भी उसे इतना एहसास तो ज़रूर हो जाएगा कि तुम दोनों में कोई रूहानी ताल्लुक़ ज़रूर है। अगर वो हर पल तुम्हारे ज़ेहन पर छाई रहती है तो ये मुमकिन ही नहीं कि वो तुम्हारे बारे में न सोचती हो। वो एक लड़की है इसलिए उसके लिए तुम्हारी तरफ़ क़दम बढ़ाना तब तक आसान नहीं होगा जब तक वो पुख़्ता तौर पर ये नहीं महसूस करती कि तुम ही उसके soulmate हो। रूहें अपनी साथी रूहों को पहचानने में कभी ग़लती नहीं करतीं। जब कोई रूह अपनी साथी रूह को पहचान लेती है तो उससे मिले बग़ैर रह नहीं पाती। तुम्हारे बीच बातचीत का जारी रहना बहुत ज़रूरी था। फिर भी अगर उसने तुम्हारे साथ बातचीत करना छोड़ दिया है तो इसकी वजह ग़लतफ़हमी नहीं है। वो सिर्फ़ समाज की नज़रों में खुद को महफूज़

रखने की क़वायद है। मर्द और औरत में ये फ़र्क तो होता ही है। मर्द जब मुहब्बत करता है तो वो समाज की परवाह नहीं करता मगर औरत मुहब्बत में होते हुए भी हर क़दम फूँक फूँक कर रखती है। उसे इस बात की गारंटी चाहिए होती है कि अगर उसकी मुहब्बत ज़ाहिर होती है तो मर्द उसकी हिफ़ाज़त के लिए सीना तान कर खड़ा हो जाएगा। मैंने प्रोफ़ेसर साहब को बताया कि दरअसल मैं निवेदिता को लेकर एक बड़े ही अजीब तज़ब्ज़ब में हूँ। जब तक मुझे ये अजीब से इशारे मिलने शुरू नहीं हुए थे तब तक मैं उसे अपनी बेटी की तरह ही देखता और महसूस करता था। यही वजह थी कि मैं अपनी बीवी को कह पाया था कि मेरा निवेदिता से ऐसा कोई रिश्ता नहीं है जैसा वो समझ रही है। मगर जब से मुझे वो मनाज़िर दिखाई देने लगे, निवेदिता से तख़लीक़ी इल्हाम मिलना शुरू हुआ, वो आकाशवाणी सुनी और जब मैंने सब कुछ अपनी थिरेपी के दौरान देख लिया, तब से उसमें मुझे अपनी खोई हुई महबूबा दिखाई देती है। फ़ज़लू की बातें सुनकर और बानो के बारे सब जानकर वो मुझे इतनी ज़्यादा अपनी लगने लगी है कि उसके बिना रहना मुश्किल हो गया है। हर वक़्त उसी को सोचता हूँ। उसी को देखता हूँ। वो मेरे ज़ेहन पर इस क़दर हावी हो चुकी है कि उसके बिना रह ही नहीं पा रहा हूँ। हर पल बेचैन रहता हूँ। अब अगर मेरी बीवी मुझसे पूछे तो मैं बेख़ौफ़ कह सकता हूँ कि हाँ, मैं निवेदिता से मुहब्बत करता हूँ। समझ में नहीं आता यही बात निवेदिता से कैसे कहूँ। डरता हूँ कहीं वो मुझे बदकिरदार न समझने लगे। मेरी मुहब्बत बेशक़ रूहानी है और अल्लाह की ने'अमत है मगर ये बात निवेदिता नहीं जानती। प्रोफ़ेसर साहब ने मुझे बताया कि मुझे उसमें बेटी दिखाई देने की कई वजूहात हो सकती हैं। सबसे पहली ये कि तुम बदकिरदार नहीं हो और औरतों की इज़्ज़त करने वाले इन्सान हो, दूसरी ये कि जितना तुम दोनों की उम्र में फ़र्क़ है उस लिहाज़ से तुम्हारा उसे बेटी समझना समाजी रिवायत का हिस्सा है और तीसरी बात ये भी है कि हो सकता है वो तुम्हारे किसी पिछले जन्म में तुम्हारी बेटी भी रही हो। तुमने अभी

अपना एक ही पिछला जन्म देखा है। और गहरे जाने पर तुम्हें और भी जन्मों का इल्म होगा। जो रूहें एक दूसरे से मन्सूब होती हैं वो कई जन्मों से मुख्तलिफ़ रिश्तों से मन्सूब होती हैं। रूहानी मुहब्बत कायनाती मुहब्बत होती है। आप किसी जन्म में भाई बहन हो सकते हैं किसी में माँ बेटा, बाप बेटी, किसी में बीवी और शौहर, किसी में महबूब और किसी में अच्छे दोस्त। यही नहीं जन्म दर जनम तुम्हारे जेंडर भी बदलते रहते हैं। एक चीज़ जो नहीं बदलती और हमेशा क़ायम रहती है वो है मुहब्बत। ये मुहब्बत खुदा का दिया हुआ बेशक़ीमती तोहफ़ा है। इसे कुबूल करने और इसका इज़हार करने में कोई तज़ब्ज़ब नहीं होना चाहिए। उम्र का फ़र्क़ भी इसमें आड़े नहीं आना चाहिए क्योंकि उम्र वक़्त से नापी जाती है और वक़्त इन्सान का अपनी सहूलत के लिए ईजाद किया हुआ एक कन्सेप्ट है। रूहों की दुनिया में वक़्त या उम्र का कोई कन्सेप्ट नहीं होता। सभी रूहें हम उम्र होती हैं। वहाँ कोई बूढ़ी रूहें या जवान रूहें नहीं होतीं। वैसे तो तुम्हें कोशिश करनी चाहिए कि तुम ये सब पिछले जन्म का क्रिस्सा निवेदिता को सुनाओ। तुम दोनों की रूहों के इर्तिक़ा के लिए ये ज़रूरी है कि तुम मुहब्बत में आगे बढ़ो। मुहब्बत का मतलब ये नहीं कि तुम शादी ही करो। मुहब्बत दोस्तों में भी होती है। लेकिन क्योंकि पिछले जन्म में तुम दोनों की शादी तय हो चुकी थी जो अगर ऐन वक़्त पर मुल्क की तक़सीम न होती तो हो भी जानी थी। अब चूँकि तुम दोनों पिछले जन्म में तयशुदा शादी के बन्धन में बन्धने से पहले ही जुदा हो गए थे इसलिए इस जन्म में शादी ही शायद तुम्हें उस दर्दे-महरूमी से निजात दिला सकती है।

जहाँ तक उम्र के हिसाब से बेमेल शादियों की बात है तो मैं तुम्हें अपने ही कॉलेज के एक साथी प्रोफ़ेसर और उनकी एक तालिबा का क्रिस्सा सुनाता हूँ। प्रोफ़ेसर अरोड़ा हमारे कॉलेज में अँग्रेज़ी पढ़ाते थे। मुझसे एक साल छोटे थे उम्र में यानि उस वक़्त उनकी उम्र पचपन साल थी। उनकी एक तालिबा थी, नसीमा मुसलमान थी। कर्नल साहब की बेटी। वो पहले दिल्ली, हैदराबाद, पुणे

वगैरह शहरों में पढ़ कर आई थी। बड़ी ज़हीन और तेज़ तर्रार लड़की थी। उन्नीस बरस की। एक दिन मालूम हुआ कि दोनों ने शादी कर ली। सभी हैरान थे। प्रोफ़ेसर अरोड़ा ऐसे इन्सान नहीं थे कि ऐसा करते। उनकी बीवी तक्ररीबन छः सात साल पहले गुज़र गई थी। अकेले थे। हो सकता है यही वजह रही हो। लेकिन बाद में बात खुली कि नसीम ने ही उनसे शादी की ख्वाहिश ज़ाहिर की थी। प्रोफ़ेसर अरोड़ा ने उसे दोनों की उम्र के फ़र्क़ का हवाला दिया। ये भी कहा कि वो उसे अपनी बेटी की तरह समझते हैं। नसीम के वालिद से भी मिले और उन्हें अपनी बेटी को समझाने को कहा। मगर नसीम अपनी ज़िद पर अड़ी रही और आखिर एक दिन दोनों की शादी हो गई। कुछ दिन तक लोगों ने इस बेमेल शादी की बातें कीं, फिर धीरे धीरे सब भूल गए। यहाँ एक और बात भी अजीब थी। वो ये कि इस शादी में ससुर साहब दामाद से नौ बरस छोटे थे। कर्नल साहब ने प्रोफ़ेसर अरोड़ा से कहा कि उनकी एक ही बेटी है और इकलौती औलाद है जिसे उन्होंने बड़े नाज़ों से पाला है। मॉडर्न ख़्यालात दिए हैं। अब अगर वो आपसे शादी करना चाहती है तो मैं उसकी ख्वाहिश में रुकावट नहीं बनूँगा। उन्होंने ही प्रोफ़ेसर साहब को नसीम से शादी के लिए मनाया। नसीम ने न सिर्फ़ उम्र के फ़र्क़ बल्कि मज़हब और ज़ात के फ़र्क़ को भी दरकिनार करके सिर्फ़ मुहब्बत के लिए शादी की थी। तक्ररीबन आठ साल पहले प्रोफ़ेसर अरोड़ा के वफ़ात पा जाने पर हम सभी पुराने साथी उनके यहाँ गए। नसीम के साथ अफ़सोस का इज़हार किया। नसीम हमारे पास काफ़ी देर बैठी रही। इस बीच एक लेडी प्रोफ़ेसर ने नसीम से पूछ ही लिया कि उसे अपने से इतने बड़े आदमी के साथ शादी की क्या सूझी थी। अब देखो ज़वानी में ही बेवा हो गई हो। नसीम के ज़वाब ने हम सब को हैरान कर दिया। कहने लगी, मैडम, बेवा होने की कोई उम्र नहीं होती। मेरी एक इस्कूल की सहेली ने अपने क्लासमेट के साथ तेईस साल की उम्र में शादी की थी। डेढ़ साल बाद ही एक मोटरसाइकिल हादसे में उसके ख़ाविन्द की मौत हो गई। तब से वो एक बेवा

की ज़िन्दगी गुज़ार रही है। मैंने तो फिर भी प्रोफ़ेसर साहब के साथ बीस बरस गुज़ार लिए। उनसे प्यार हो गया था मुझे। उनसे शादी करने और उनकी मौत का कोई अफ़सोस नहीं मुझे। मुहब्बत में गुज़ारे तो दो पल भी बहुत होते हैं। फिर प्रोफ़ेसर साहब की मुहब्बत में मैंने बीस साल उनके साथ गुज़ारे हैं और मेरी बची हुई ज़िन्दगी भी उनकी मुहब्बत में ही गुज़रेगी। वो मरने के बाद भी मेरे साथ ही हैं, मेरे पास ही हैं। वो मेरे लिए तक़रीबन आठ दस करोड़ की जायदाद छोड़ गए हैं। ये कोठी, गाड़ी और गाँव में बीस एकड़ ज़मीन भी है। तीस पैंतीस लाख नक़्द भी। दो प्यारे से बच्चे हैं। और क्या चाहिए मुझे? रिटायर होने के बाद उन्होंने मुझे एक प्ले स्कूल खोल दिया था। वहाँ से भी अच्छी आमदनी हो जाती है। अगर मैं अपने किसी हम उम्र से शादी करती तो अभी तक शायद क्रिस्तों पर ख़रीदे मोटरसाइकिल पर ही घूम रही होती। ये भी हो सकता था कि मुझे भी कोई पन्द्रह बीस हज़ार महीना की नौकरी करनी पड़ती। उस हालत में अगर मैं बेवा हो जाती तो बची ज़िन्दगी बैंक का क़र्ज़ उतारने में ही गुज़ारनी पड़ती। प्रोफ़ेसर साहब बेशक मुझसे उम्र में बड़े थे मगर मियाँ-बीवी के रिश्ते में वो मेरे हम-उम्र बनकर ही रहे। उन्होंने मुझे कभी ये महसूस ही नहीं होने दिया कि वो मुझसे इतने बड़े हैं। उन्होंने बीस बरस में ही इतना प्यार दिया है मुझे जो आम औरतों को पचास साठ साल की शादीशुदा ज़िन्दगी में भी नसीब नहीं होता। उनके प्यार में एक ठहराव था, संजीदगी थी, ज़िम्मेदारी का जुज़्व था। हमारा कभी झगड़ा भी नहीं हुआ। ऐसा शायद इसलिए कि हम दोनों, हम-उम्र नहीं थे। उनसे शादी की ज़िद करना मेरा फ़ैसला था। जिसमें मुहब्बत ही बुनियादी वजह थी। तब ये बिल्कुल इल्म नहीं था कि फ़ायनैशियल सिक्योरिटी क्या होती है। अगर मैं अपने किसी हम-उम्र लड़के से शादी करती तो हम दोनों की तनख़्वाह जोड़कर भी बीस सालों में हम इससे आधा भी नहीं बचा पाते। बात तो बिल्कुल ठीक थी उसकी। शादी करते वक़्त हम लोग ये सब कहाँ सोचते हैं। तो मेरे भाई, तुम अपना ये उम्र के फ़र्क़ का राग अलापना

बन्द करके कोशिश करो कि तुम दोनों की शादी हो जाए। इससे दोनों रूहों को सुकून हासिल होगा। मैंने उनसे कहा कि प्रोफ़ेसर साहब आपकी बात ठीक हो सकती है मगर मैं इस लड़की को शादी के लिए नहीं कह सकता। मैं उसको बहुत प्यार करता हूँ मगर शादी की बात करूँगा तो वो मुझे खुदग़ार्ज समझेगी जो कि मैं हूँ नहीं। हो सकता है वो इस कुदरत के खेल को मेरी बनाई हुई कहानी समझे। जब तक कोई अलही मदाख़लत उसे भी अपनी पिछले जन्म की ज़िन्दगी के बारे कुछ इशारा नहीं करती और यक़ीन नहीं दिलाती कि हम पिछले जन्मों से इक़ दूजे से बँधे हुए हैं तब तक सिर्फ़ मेरे बताने से उसे यक़ीन नहीं आएगा और जब तक उसको इस बारे में पुख़्ता यक़ीन नहीं हो जाता मैं उसे ये नहीं कह सकता। दूसरे मैंने उसे कभी इस निगाह से देखा ही नहीं। मैं तो बस इतना ही चाहता हूँ कि कि वो मुझे अपना दोस्त और ख़ैरख़्वाह समझे। मुझ पर एतिमाद रखे और अपनी ख़ैर-ख़बर देती रहे। अगर मेरे दर्द-महरूमी का इलाज उससे शादी ही है तो मैं अगले एक दो जन्मों तक इसी दर्द के साथ जीने को तैयार हूँ मगर उसकी नज़रों में गिरने को तैयार नहीं और ये तभी हो सकता है जब उसे भी वो तमाम एहसासात हों और वो खुद मुझसे शादी की पेशकश करे। मैं समझता हूँ कि उसे शायद इस जन्म में वो एहसासात नहीं होंगे क्योंकि उसकी रूह इर्तिक़ा के उस मुक़ाम पर अभी नहीं पहुँची है। इसके लिए शायद उसे अभी एक दो जनम और लेने होंगे। प्रोफ़ेसर साहब बोले, “बरख़ुरदार, तुम किस दुनिया के हो? इस दुनिया के तो नहीं लगते। तुम्हारी रूह वाक़ई अपने इर्तिक़ा के आख़िरी मुक़ाम के बहुत नज़दीक़ है”। मैंने उनसे कहा कि हो सकता है मेरी रूह इर्तिक़ा की आख़िरी मुक़ाम के नज़दीक़ हो मगर अभी वहाँ तक पहुँचने में मुझे एक दो जनम और लेने होंगे क्योंकि मैंने बेशक बहुत सी इन्साऩी ख़ामियों पर फ़तह हासिल कर ली है फिर भी एक ख़ामी है जिस पर मैं अभी तक फ़तह हासिल नहीं कर सका हूँ और वो है गुस्सा। हालांकि मुझे साल में एक दो बार ही शदीद गुस्सा आता है मगर जब आता है

तो मैं उस पर काबू नहीं रख सकता। इसलिए खुदा की नज़रों में एक मुकम्मल नेक इन्सान बनने के लिए मुझे और एक दो जनम लेने पड़ेंगे। जहाँ तक मैं इस लड़की को जानता हूँ वो एक बहुत ही नेक लड़की है और एक अच्छे इन्सान की तमाम खूबियाँ उसमें मौजूद हैं। यक्रीनन उसकी रूह भी इतिक्का के उसी मरहले पर होगी जहाँ मेरी है। हम दोनों एक साथ ही अपनी आखिरी मँजिल पर पहुँचेंगे। हो सकता है उसकी मेरे लिए बेरुखी, मेरे सब्र और दर्द बर्दाश्त करने की इन्तहा देखने का खुदा का कोई मनसूबा हो। मेरा इम्तहान हो। और मैं किसी भी क्रीमत पर इस इम्तहान में फ़ेल नहीं होना चाहता। खुदा को भी तो मालूम हो कि मैं इस लड़की का साथ पाने के लिए कितना दर्द बर्दाश्त कर सकता हूँ। कितना सब्र है मुझमें। सुनकर प्रोफ़ेसर साहब कुछ देर को ख़ामोश हो रहे। फिर बोले, “गुस्सा करना इतनी बड़ी ख़ामी नहीं है जितनी तुम उसे बनाए बैठे हो। देवी-देवताओं की कहानियाँ तो पढ़ी होंगी तुमने। ये भी जानते होंगे कि गुस्से में उन्होंने क्या क्या किया। जब देवी देवता खुदा के नज़दीक होते हुए भी गुस्से पर काबू नहीं पा सके तो इन्सान क्या चीज़ है। अगर कहीं कुछ ग़लत हो रहा है तो वहाँ गुस्सा करना भी एक इन्सानी खूबी है न कि ख़ामी, बशर्ते ये गुस्सा किसी को नुक़सान पहुँचाने की नीयत से न किया गया हो। अगर खुदा वाक़ई तुम्हारा इम्तहान ले रहा है तो मेरे ख़्याल से तुमने वो इम्तहान पास कर लिया है। खुदा रहीम है, वो तुम्हें और दर्द से गुज़रने नहीं देगा। मैं समझता हूँ तुम्हारा प्यार, तुम्हारी पिछले जन्मों की साथी ये लड़की इन्शाल्लाह बहुत जल्द तुम्हारे करीब होगी”।

उन्होंने मुझे ये सलाह भी दी कि मैं अपनी ये कहानी लिखूँ ताकि और लोग भी मेरी कहानी पढ़कर जान सकें कि पुनर्जन्म होता है और उसका मक़सद क्या होता है। अभी तक जो कुछ इसके बारे लिखा गया है उसमें इज़ाफ़ा होगा और अगर चन्द लोग भी इसे पढ़कर अपनी ज़िन्दगी में इन्सानियत की खूबियाँ

हासिल करते हैं और खामियाँ तर्क करके अच्छे इन्सान बनते हैं तो ये भी अल्लाह की खिदमत होगी, इबादत होगी।

मैंने उनकी बात मान कर अपनी और बानो की कहानी लिखनी शुरू कर दी। रातों को नींद तो मुझे वैसे ही कई महीनों से नहीं आ रही थी। सारी सारी रात निवेदिता के ख्यालों में गुज़रती थी मेरी। ये वक़्त अपनी कहानी लिखने के लिए सबसे मुफ़ीद था। निवेदिता तो यूँ भी मेरे पास ही होती थी। अब वो इस कहानी को लिखने में मेरी म्यूज़, मेरी तख़लीक़ की देवी के रूप में मेरे साथ रहने लगी। इस कहानी को लिखते वक़्त वो हर लम्हा मेरे पास मौजूद रही और मुझे इल्हाम की बरकतों से नवाज़ती रही।

कुछ दिन पहले फिर पुलिस का फ़ोन आया कि मेरी बीवी ने फिर मेरी शिकायत कर दी है और मुझे अगले दिन पुलिस कप्तान के सामने पेश होना है। वहाँ गया तो पता चला कि मेरी बीवी ने वीमेन कमीशन को लिखा है कि उसकी शिकायत की पड़ताल किसी बड़े अफ़सर से दोबारा करवाई जाए क्योंकि वो पिछले साल पुलिस कप्तान शहरी की तरफ़ से की गई तफ़्तीश से मुत्मइन नहीं थी। मैं अपना ब्यान लिखवा ही रहा था तभी पुलिस कप्तान के रीडर ने मुझे बताया कि मेरी बीवी चाहती है कि निवेदिता को हर हाल में यहाँ बुलाया जाए। मैंने उसे समझाया कि वो शिकायत की इबारत को पढ़े और बताए कि निवेदिता ने क्या जुर्म किया है। उसने शिकायत फिर से पढ़ी और कहने लगा कि इसमें सिर्फ़ इतना लिखा है कि मेरे शौहर का निवेदिता के साथ लव अफ़ेयर चल रहा है। निवेदिता ने क्या किया है इसका कोई ज़िक्र नहीं है। ऐसे में निवेदिता को बुलाना तो जायज़ नहीं होगा। मैंने उसे ये भी बताया कि अब तो सुप्रीम कोर्ट ने भी कह दिया है कि प्यार करने का हक़ बेशक़ बुनियादी हक़ की फ़ेहरिस्त में दर्ज नहीं है फिर भी ये जीने के हक़ (Right to Life) के तहत आता है। प्यार करना कोई जुर्म नहीं है। मैंने उसे कहा कि वो ये बात पुलिस कप्तान को भी बता दे और मेरी बीवी को भी बता दे कि उसकी तरफ़

से निवेदिता को इस तरह परेशान करने से तँग आकर अगर निवेदिता ने खुदकुशी जैसा कोई सँगीन क़दम उठा लिया तो उसे कम से कम सात साल की सज़ा हो सकती है। उसने मुझे निवेदिता को न बुलाने का भरोसा दिया और कहा कि आप बेफ़िक्र हो जाइए।

इसी दौरान एक और अजीब बात हुई। मेरे सर का वो ज़ख़्म जिसकी वजह से पिछले जन्म में मेरी मौत हुई थी और वो साल में तीन चार बार कुछ दिन रिसता रहता था। इसकी वजह ये भी हो सकती है कि ठीक उसी जगह पर मुझे एक हादसे में इस जन्म में भी चोट लगी थी। टाँके भी लगे थे। मगर इस बात को भी तक्ररीबन चालीस साल हो गए हैं। थिरेपी के बाद अचानक वो ज़ख़्म ठीक हो गया था। फ़ज़लू से हक़ीक़त जान लेने के बाद दिल को थोड़ी राहत भी थी मगर निवेदिता की बेरुख़ी अब भी मुझे अन्दर ही अन्दर खाए जा रही थी। वो पुर-असरार मनाज़िर, वो ख़्वाब अब नहीं दिखाई देते थे मुझे। मगर निवेदिता का ख़्याल ज़ेहन से जाता ही नहीं था। वो अब भी हर घड़ी मुझे याद आती रहती। मैं ख़्यालों में उसके चेहरे के नक़्श बनाता रहता और हर ज़ाविए से उसे देखता। उसे अपने क़रीब महसूस करता। मगर वो मुझ से दूर चली गई थी। उसकी कुरबत ही मेरी बेचैनी का मुदावा थी। मगर उसको क़रीब लाने का कोई ज़रिया मेरे पास नहीं था। मुझे रातों को सोए हुए तक्ररीबन सोलह महीने हो गए हैं। समझ में नहीं आता क्या करूँ। सोचता हूँ कि इक़ आख़िरी ख़त ज़रूर लिखूँ उसे। मैं अब उससे मिलने की कोशिश तो करूँगा नहीं। फ़ोन पर बात भी नहीं कर पाऊँगा। अगर कभी बात हो भी गई तो फ़ोन पर ये सब नहीं बताया जा सकेगा। उस तक पहुँचने के तमाम रास्ते बन्द कर दिए हैं उसने। मगर मुझे यक़ीन है कि मेरी और उसकी ये कहानी कभी न कभी निवेदिता तक ज़रूर पहुँचेगी। इसी उम्मीद के साथ एक आख़िरी ख़त लिखूँगा उसे ताकि वो भी हक़ीक़त जान सके। उसकी ग़लतफ़हमियाँ दूर हों।

और एक दिन बहुत बेचैनी की हालत में मैंने इस कहानी के साथ ये खत लिखा निवेदिता के नाम ताकि उसको भी इसका इल्म हो सके। वो खत यूँ है।

निवू

ये कहानी पढ़कर तुम्हें ये इल्म तो हो ही गया होगा कि हम इस ज़िन्दगी में यूँ ही इत्तेफ़ाक़न नहीं मिले हैं। तुम मेरी ज़िन्दगी के इस मरहले पर मुझसे यूँ ही नहीं मिली हो। इस में खुदा की मस्लेहत पिन्हा है। हमें इस जन्म में मिलना ही था। अगर ऐसा नहीं होता तो मैंने उर्दू की उसी क्लास में दाखिला नहीं लिया होता जिसमें तुम थी। ऐसा होता तो शायद हम कभी न मिले होते। हमें फिर से मिलाने के लिए ही ये हुआ है। हमारी उम्र में जितना फ़र्क़ है उससे कभी मुमकिन ही नहीं था कि हम एक ही क्लास में एक साथ पढ़ते होते, हम मानूस होते और हम में राबत पैदा होती। तुम्हारा मेरे ख्यालों में आना, मेरे ज़ेहनो-तसव्वुर पर हावी हो जाना, मुझे इल्हाम से नवाज़ना, सोते जागते, पुर-असरार मनाज़िर के ज़रिए तुम्हें ही देखना, महसूस करना ये सब खुदा के एक बड़े मन्सूबे का हिस्सा था। खुदा चाहता था कि मैं तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होऊँ। वरना मैं इस उम्र में अपने से इतनी छोटी लड़की की तरफ़ कभी भी नहीं खिंचता। हमारे बीच मेरी बीवी की वजह से जो दूरियाँ पैदा हुईं वो भी अब लगता है कि खुदा की मस्लेहत का ही हिस्सा है। वो इम्तहान लेना चाहता था हमारा। अगर तुम मुझे बिना वजह बताए यक़तरफ़ा फ़ैसले के तहत मुझसे दूर न हो गई होती तो मेरे ज़ेहन में वो शदीद इज़्तिराब न पैदा होता और न ही मेरे ख्वाबो-ख्यालात में दिखाई देने वाले उन मनाज़िर की तह तक जाने के लिए इस क्रूर शदीद तजस्सुस पैदा होता। न पिछले जनम में हमारी कुरबत का इल्म होता, न ये राज़ खुलता कि मेरी बीवी इस जनम में भी ऐसी शिद्दत से तुम्हारे पीछे क्यों पड़ी है। ये सब कुछ जानकर तुम्हारी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी महसूस हुई और मैं तुम्हारी तरफ़दारी करने लगा। पिछले जनम में अधूरी छूटी ज़िम्मेदारी का क़र्ज़ इस जनम में चुकाने का मौक़ा मिला था मुझे ताकि मैं जो अपने ज़ेहन में एक

एहसासे-मुजरिमाना लिए फिरता हूँ, एक दर्दे-महरूमी लिए फिरता हूँ उससे निजात मिल सके। मेरी तमाम कोशिशों के बावजूद हमारे दरम्यान बदगुमानियाँ और गलतफ़हमियाँ पैदा हो गईं क्योंकि तुमने उन्हें दूर करने का कभी मौका ही नहीं दिया। हम दोनों दो मुख्तलिफ़ लेवल पर काम कर रहे थे। मैं इस इल्म से कि हम एक रूहानी रिश्ते में बँधे हैं और तुम ये सोचकर कि मैं तुम्हारा लगता ही कौन हूँ जो तुम में इतनी दिलचस्पी ले रहा हूँ। तुमने शायद इस ज़ाविए से कभी सोचा ही नहीं कि करोड़ों लड़कियों में से इक तुम में ही क्यों दिलचस्पी होनी थी मुझे। मुझे ये तो इल्म है कि तुम मुझसे खफ़ा हो मगर मैं ये नहीं जानता कि किस बात पर खफ़ा हो। अगर तुम मुझसे इसलिए खफ़ा हो कि मैं उस औरत का शौहर हूँ जिसने तुम्हें बेवजह बदनाम करने में कोई क़सर नहीं छोड़ी तो ये मेरे खिलाफ़ तुम्हारी ज़्यादती है। वो इक अलग किस्म की औरत है। ज़िदी और गुस्सैल। मैं वो नहीं हूँ और वो मैं नहीं। फिर उसकी ज़्यादतियों के खिलाफ़ मैं तो तुम्हारी तरफ़ ही था। मैं यूँ भी फ़ितरतन हमेशा ज़ालिम की बजाए मज़लूमो-मासूम की ही तरफ़ होता हूँ चाहे वो ज़ालिम मेरी अपनी बीवी या भाई ही क्यों न हो। ये भी हो सकता है कि तुम मुझसे खफ़ा न होओ और सिर्फ़ इस झमेले से बचने के लिए तुमने मुझसे दूरी बना लेने का फ़ैसला कर लिया हो। मैं ये भी समझता हूँ कि इस वाक़ये ने उस वक़्त तुम्हारी ज़िन्दगी में खलल डाला जब तुम अपने रिसर्च में मसरूफ़ थी। जहाँ तुम्हारी सारी तवज्जोह अपनी रिसर्च पर मरकूज़ होनी चाहिए थी वो वक़्त तुम्हें एक झूठे इल्ज़ाम से दिफ़ा करने में लगाने पर मजबूर होना पड़ा। मैं ये भी समझता हूँ कि ऐसे वक़्त में इन्सान एक शदीद ज़ेहनी दबाव से गुज़रता है, ख़ास करके तब जब वो मासूम हो, बेगुनाह हो। इधर तुम इस नाक़र्दा गुनाह के इल्ज़ाम और उसकी वजह से हुई रुसवाई के नुक्सान से बाहर आने की कोशिश में थी उधर मैं तुम्हें इस इल्ज़ाम से फ़ारिग़ होने में मदद करने में। तय भी यही हुआ था कि हम दोनों अपने क्लासमेट्स और ज़रीन मैम के सामने इस मामले की वज़ाहत करते हुए तमाम ग़लतफ़हमियों को दूर करेंगे। मगर फिर पता नहीं क्या हुआ कि तुमने

मुझसे ही किनारा करने का फ़ैसला कर लिया। हो सकता है कि तुमने मेरे बग़ैर ही अपने क्लासमेट्स के साथ इस मुद्दे पर मीटिंग की हो और उनकी सलाह पर मुझसे ताल्लुक कत'अ कर लिया हो। इस सबके बारे में मैं मुस्तनद तौर पर कुछ नहीं जानता। ये सब तुमसे ताल्लुक टूट जाने के बाद मेरे इज़ितराबी ज़ेहन के अन्दाज़े हैं।

मैंने तुम्हारे फ़ैसले का एहताराम करते हुए तक़रीबन दस महीने तक तुमसे राबिता नहीं किया। फिर मेरी बीवी की तरफ़ से दोबारा शिकायत कर देने की वजह से ज़रूरी होने पर किसी और के फ़ोन से तुमसे राबिता करना चाहा तो तुमने मेरा नाम सुनते ही फ़ोन काट दिया। मैंने फ़ोन इसलिए करना चाहा था कि वो इल्ज़ाम जो हम दोनों पर ही था उसका हम दोनों को मिलकर जवाब देना चाहिए था ताकि वो मस'अला हमेशा के लिए ख़त्म हो सके। ज़ाहिर है तुम्हारे दिल में मेरे लिए कुछ ग़लतफ़हमियाँ पल रही हैं। वो क्या हैं मुझे इसका इल्म नहीं और तुमने कभी वाज़ेह करने की ज़हमत नहीं उठाई। तुम्हारे इस रवय्ये ने मुझे बहुत दुख पहुँचाया है। उससे भी बड़े दुख की बात ये है कि ये दुख मुझे तुमने पहुँचाया है और तुम्हें मैं कुछ कह भी नहीं सकता। मेरे ज़ेहनो-दिल में जो तुम्हारी जगह है उसका एहसास इस बात की इजाज़त ही नहीं देता। मैंने तुम्हें अपने दिल में बहुत ऊँचा मुक़ाम दे रखा है। इबादत करता हूँ तुम्हारी। तुम्हें अपनी देवी मानता हूँ। तुम्हें अपना समझता हूँ और जब कोई अपना दुख देता है न तो तकलीफ़ ज़्यादा होती है।

ज़िन दिनों मेरी बीवी हमें दूर करने के लिए ये खेल खेल रही थी, उन्हीं दिनों मैं हमारे रूहानी रिश्ते के मुत्तालिक़ मिलने वाले कुदरत के इशारों को समझने के लिए उनके तजज़िये में लगा हुआ था। जैसे जैसे ये हक़ीक़त मुझ पर वाज़ेह हो रही थी वैसे वैसे ज़ेहन पर अजीब सी कैफ़ियत तारी हो रही थी। जब मैंने मुकम्मल तौर पर तुम्हें अपनी रूहानी साथी के तौर पर पहचान लिया और चाहा कि तुम्हें भी ये बात बताऊँ तब मेरी बीवी का वो खेल उरूज़ पर था। हम

दोनों ही उस वक़्त ज़ेहनी कश्मकश के ऐसे मराहिल से गुज़र रहे थे कि तुम्हें ये सब बताने के लिए वो वक़्त मुफ़ीद नहीं लगा मुझे। इसलिए वो सब मुल्तवी करना पड़ा। इसलिए भी कि तुमने मुझे बताया था कि तुम पर अपनी असाइनमेंट वक़्त पर जमा कराने का भी दबाव था। सोचा था, सही वक़्त आने पर बताऊँगा तुम्हें। मगर तब तक तुम मेरा फ़ोन ब्लॉक कर चुकी थी। इसलिए जो बात तुम्हें पिछले साल ही मालूम हो जानी चाहिए थी वो आज तक नहीं हो पाई। जहाँ एक तरफ़ अपने पिछले जन्म के एहसासात मेरा ज़ेहनी सकून लूटने में लगे थे वहीं दूसरी तरफ़ तुमसे ताल्लुक टूट जाने का दुख मेरी जान लेने में लगा हुआ था। ज़ाहिर है इस दौरान मैं शदीद ज़ेहनी दबाव से गुज़रा हूँ।

मैंने जो हम दोनों के रूहानी साथी होने के बारे लिखा है वो तवील तहक़ीकात का नतीजा है। मुझे इसमें कोई शक नहीं कि तुम ही मेरी बानो हो। यही एक वजह है मेरी तुम में दिलचस्पी की। तुमसे त'अल्लुक टूट जाने की वजह से मैं तुम्हें ये सब बता ही नहीं पाया। उम्मीद है ये सब पढ़कर तुम्हें तुम्हारे सवालों का जवाब मिल गया होगा। हमारे बीच दूसरे लोगों के आ जाने से हमारे दरम्यान पैदा हुई दूरियाँ बढ़ती गईं क्योंकि तुमने मुझसे सीधे-सीधे कुछ पूछा ही नहीं और मैं तुम्हें बता पाता वो तमाम रास्ते तुमने बन्द कर दिए थे।

मेरी सिर्फ़ एक ही गुज़ारिश थी तुमसे, कि मेरे साथ राबिता बनाए रखो। उसे तुमने मन्ज़ूर ही नहीं किया। ख़ैर, अब तो तुम्हें सब मालूम हो ही गया है। लेकिन अब मैं तुमसे नहीं कहूँगा कि मुझसे राबिता बहाल करो। मैंने अब ये फ़ैसला तुम पर छोड़ दिया है। तुम मेरे साथ राबिते में रहना चाहो या नहीं तुम्हारी मर्जी है। अगर किसी बात पर ख़फ़ा भी हो तो ख़फ़ा ही रहो। मैं तुम्हारी फ़ुरक़त का दुख सह लूँगा। मगर तुम्हें परेशान नहीं करूँगा। अगर तुम ऐसे खुश हो तो मैं भी इसी में खुश रहने की कोशिश करूँगा। मेरा असल मक़सद तो तुम्हारी खुशी ही है। वो मेरे साथ हो या मेरे बग़ैर अब फ़र्क़ नहीं पड़ता। तुम अब भी पहले की तरह मेरी सोचों का हिस्सा हो और हमेशा रहोगी। मैं तुम्हारी इज़्जत

करता हूँ और करता रहूँगा। तुम्हारी इबादत करता हूँ और करता रहूँगा। तुमसे मुहब्बत करता हूँ और करता रहूँगा। तुम जिस्मानी तौर पर दूर रख सकती हो खुद को, सोशल मीडिया पर ब्लॉक कर सकती हो, मगर जैसे खुदा ने तुम्हें मेरी रूह में, मेरी ज़िन्दगी में, मेरे ज़ेहनो-तसव्वुर में, मेरी सोचों में, मेरे ख्यालात में मुस्तक़िल तौर पर फिट कर दिया है, वहाँ से खुद को कैसे निकालोगी तुम? मैं तुम्हारी सोच के बदलने तक तुम्हारा इन्तज़ार करूँगा। सब्र की इन्तहा से भी आगे निकल जाऊँगा। मगर हाँरूँगा नहीं।

पिछले एक साल में अलग अलग मरहलों पर जब जब भी मुझे खुदा की तरफ़ से इशारे मिले कि हम आपस में ज़रूर किसी रूहानी रिश्ते में बँधे हुए हैं तब तब मैंने तुम्हें वो सब बताने के लिए ख़त लिखे थे। तुम्हें भेजे भी थे मगर नहीं जानता था कि वो ख़त तुम तक पहुँचेंगे ही नहीं।

उम्मीद करता हूँ कि अब ये सब पढ़ कर तुम्हें वाज़ेह हो गया होगा कि मैं क्यों चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ राबिते में रहो। मुझे तुम से कुछ नहीं चाहिए सिवाए इसके कि तुम्हारी ख़ैर ख़बर मिलती रहे। महीने में अगर एक दो बार भी हमारी बात हो जाए तो काफ़ी है मेरे लिए। पिछले साल उस दिन छब्बीस अगस्त का दिन था जब तुम मुझसे ऐसी ख़फ़ा हो गई थी कि मैसेज भेजने का ज़रिया भी बन्द कर दिया था तुमने। आज जब मैं ये लिख रहा हूँ आज भी छब्बीस अगस्त ही है। आज पूरे दो साल हो गए हैं तुम्हें मुझसे ख़फ़ा हुए। मेरे ख़्याल से ये एक तवील अरसा है ख़फ़ा रहने के लिए। अगर मेरा जुर्म जिसके बारे में मुझे कोई इल्म भी नहीं नाक्राबिले-मुआफ़ी न हो तो मेरी गुज़ारिश है कि अब गुस्सा थूक दो। मेरी हालत पर ग़ौर करो और मुझसे राबिता बहाल करो। अगर ऐसा नहीं करती हो तुम तो ये दुख ज़िन्दगी भर सहता रहूँगा मैं। ये दुख मेरा है तो सहना भी मुझे ही पड़ेगा। कभी सोचता हूँ कि इस सबका अज़ाम अगर यही होना था तो अल्लाह ने मिलवाया ही न होता हमें। ख़ैर, मेरे साथ किए गए तुम्हारे बर्ताव और रवय्ये का इल्ज़ाम तुम्हें नहीं देता मैं। तुम मेरे लिए

आज भी उतनी ही क्राबिले-एहताराम हो जितनी पहले थी। मेरे दिल में तुम्हारे लिए उतनी ही इज्जत है जितनी पहले थी। उतनी ही मुहब्बत है जितनी पहले थी और हमेशा क्रायम भी रहेगी।

पुनर्जन्म होते हैं निवू और कुछ बहुत ही नायाब केसज़ में पुनर्मिलन भी। मेरा पिछले जन्म में गुजरे वाकियात से रूबरू होना, तुम्हें बानो के रूप में देखना, ये सब मेरी मर्ज़ी या ख्वाहिश से नहीं हुआ। ये कुदरत का ही रचा खेल है जिसमें मैं बुरी तरह फँस कर रह गया हूँ। अगर तुम्हें उन्हीं दिनों बता पाता तो शायद ज़ेहनी दबाव की इस शदीद कैफ़ियत से न गुज़रा होता मैं। हम दोनों मिलकर इसका कोई हल निकाल लेते। देखो, ये बात तो है कि तुम हर लम्हा मेरे ज़ेहनो-तसव्वुर में रहती हो। ये भी सच है कि मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। करूँ भी क्यों न? जब कि मैं जानता हूँ कि मेरे रब ने नवाज़ा है मुझे तुमसे। मुझे उससे कोई शिकवा नहीं, हाँ ये गिला ज़रूर है कि पिछले जन्म का सच मुझ अकेले पर ही क्यों ज़ाहिर किया। तुमको भी इस हक़ीक़त से क्यों न रूशनास किया? मेरी तरह तुम्हें भी क्यों नहीं बेदार किया? शायद इसका ज़िम्मा मेरे सर हो। ये भी सच है कि हमारी उम्रों में बहुत फ़र्क़ है। मगर ये फ़र्क़ क्यों है वो भी हम जान गए हैं। ये उम्रों के फ़र्क़ का हिसाब यहीं इसी दुनिया में होता है क्योंकि हमने ही वक़्त को नापने का तरीक़ा ग़लत चुना है। कुदरत का एक दिन हमारे एक अरब दिनों के बराबर होता है। ऐसे ही अरबों साल मिलकर एक युग बनता है। इस हिसाब से देखें तो हमारी उम्रों का फ़र्क़ सालों की बजाए सैकड़ों या मिनटों में ही गिना जाएगा।

कुदरत की वुसअत को देखो। कुदरत के करिशमों को देखो। कुदरत के मन्सूबे देखो। कुदरत के खेल देखो। तुझसे आखिरी बार मिलने के तक्ररीबन दस महीने बाद अपना रोल नम्बर लेने के लिए यूनिवर्सिटी गया था। लौटते वक़्त मुझे याद आया कि मेरी वाटर बॉटल वहीं रह गई है। उसे लेने के लिए वापस जा रहा था कि इक मोड़ पर तुम मिल गई। फिर एक दिन अपना आखिरी

पेपर देने के बाद घर लौट रहा था तो यूनिवर्सिटी के गेट पर रैड लाइट की वजह से रुकना पड़ा। बाईं तरफ़ नज़र गई तो देखा तुम खड़ी हो। दिमाग ने काम ही नहीं किया। तुम्हारी तरफ़ गाड़ी घुमा ली। अब ये दोनों बार मैं अपने किसी मन्सूबे के तहत तो तुमसे मिलने नहीं गया था। मगर ये कुदरत का ही करिश्मा है न कि तुमसे ऐसे मुलाकात हुई। न तो तुम ही आम तौर पर यूँ शाम को पाँच बजे अपने हॉस्टल के बाहर घूमती हो न मैं ही रोज़ उस वक़्त यूनिवर्सिटी में जाता हूँ। तुम्हें नहीं लगता कि हमारा यूँ दो बार मिलना महज़ इत्तेफ़ाक़ नहीं हो सकता। हाँ, दोनों ही बार तुमने मेरे साथ जो सलूक किया वो तुम्हें मालूम ही है। यहाँ नहीं दोहराऊँगा उसे। अगर मैं कोई मामूली सरफिरा आशिक़ होता तो बार बार जगह जगह तुमसे मिलने की कोशिश करता। तुम्हारा पीछा करता रहता। तुम्हें परेशान करता रहता। तुम्हारी मर्जी के खिलाफ़ तुमसे मिलने आता। दोस्तों को बताता कि तुम मेरी मुहब्बत हो। मगर मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। मुझे तुमसे जिस्मानी क़ुरबत नहीं चाहिए। मैं तुमसे दूर रह कर भी तुमसे कभी न मिटने वाली मुहब्बत कर सकता हूँ। जिस्मानी मुहब्बत तो कोई भी कर सकता है। लेकिन सच्ची और पाक मुहब्बत वही होती है जहाँ ये पता होने के बावजूद कि तुम जिससे मुहब्बत करते हो वो तुम्हें मिलेगा नहीं और तुम फिर भी उससे मुहब्बत करो, करते रहो, करते ही रहो। मेरी मुहब्बत यही है। तुम कहीं भी रहो, कुछ भी करो, किसी के भी साथ रहो, मुझसे न भी मिलो, तब भी मैं हर हालत में सच्चे दिल से, पूरी शिद्दत के साथ तुमसे कभी न मिटने वाली मुकम्मल मुहब्बत करता रहूँगा। न तो मैं मुहब्बत तर्क करूँगा न मुहब्बत से भरोसा ही उठेगा मेरा। मुहब्बत करना मेरे लिए खुदा का हुक्म बजा लाना है। यही मज़हब है मेरा।

अभी कुछ दिन पहले की बात है। बच्चे के लिए स्टेशनरी ख़रीदने गया था। दुकान में एक लड़की थी जो बड़े सलीके से मुझे सामान दिखा रही थी। उसका गाहकों से बात करने का तरीक़ा बहुत अच्छा लगा मुझे। यूँ ही उससे

नाम पूछ लिया उसका। बोली, “सर निवेदिता”। मैं सन्न रह गया। पिछले हफ्ते यँ ही तुम्हारी सोचों में महव था, सोचा कोई फ़िल्म देखता हूँ। शायद तुम पर से कुछ देर के लिए ध्यान हटे। टीवी पर एक फ़िल्म लगा ली। फ़िल्म का नाम था, “द औड कपल”। उसमें एक ही नाम की दो लड़कियाँ होने की वजह से मैरिज रजिस्ट्रार के दफ़्तर में दस्तावेज़ तैयार करते वक़्त उनकी शादी ग़लत शौहर के साथ रजिस्टर हो जाती है। दोनों लड़कियों का नाम निवेदिता था। एक निवेदिता वर्मा और दूसरी निवेदिता राव। अब बताओ कि मैंने वही फ़िल्म क्यों लगानी थी जबकि मेरे पास चार सौ से भी ज़्यादा फ़िल्मों की चॉयस थी। कल ही की बात है। रात के तीन बज गए थे पढ़ते पढ़ते। नींद तो आनी नहीं थी इसलिए सोने की कोशिश करना बेकार था। फ़ोन पर यूट्यूब देखने लगा। वहाँ जगजीत कौर और ख़य्याम का इन्टरव्यू था। ये वही जगजीत कौर है जिसने वो मशहूर नग़मा गाया है। “तुम अपना रँजो-ग़म अपनी परेशानी मुझे दे दो” ये गाना मेरा तब से फ़ेवरिट है जब मैं बच्चा ही था। न मुहब्बत के मा’अनी जानता था न मुहब्बत में होने वाले दुख या परेशानी के बारे में ही। मगर जब भी ये गाना सुनता यँ लगता कोई अन्दर हाथ डाल कर कलेजा निकाल रहा हो। इस गाने का मुखड़ा भी सुनाया गया और फ़िल्म का सीन भी दिखाया गया। बहुत ख़ूबसूरत हीरोइन थी। बाद में बताया गया कि ये गाना उस वक़्त की बेहद ख़ूबसूरत हीरोइन “निवेदिता” पर फिल्माया गया था। अब बताओ मैं तुम्हें परेशान कर रहा हूँ या तुम। किसी न किसी बहाने से मेरे सामने आ जाती हो। जो नाम मैंने पचास साल नहीं सुना वो नाम अब पचासों बार मेरे सामने आ रहा है। कुदरत मेरे साथ ऐसा क्यों कर रही है? मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? मेरे ही साथ क्यों? इसे कुदरत का इशारा न समझूँ तो क्या समझूँ। क्या तुम्हें नहीं लगता कि कोई ग़ैबी ताक़त है जो मुझे तुमसे मिलाने की कोशिश कर रही है।

इक नज़्म लिखी थी तुम्हारे लिए, कई रोज़ पहले। वो भी पढ़ लो। मुझसे तो सारे ज़तन करके भी कुछ नहीं हो सका। शायद कभी तुम्हारा भी शऊर

जागे। तुम्हें भी हमारे पिछले जन्म के रिश्ते का एहसास हो तो तुम अगले जन्म में ही सही, ज़रूर कोशिश करना कि हमारी मुहब्बत खुशनुमा अँजाम को पहुँचे।

“न जाने कैसे इतनी बदनसीबी लिख दी मेरे नाम अल्लाह ने
कि तुझको देखा भी मिल भी लिया पर पा सका न मैं
कोई साज़िश रची होगी यहाँ तकदीर ने मेरे खिलाफ़
और मैं नादाँ समझता ये रहा कि ये भी कोई इम्तिहाँ होगा
तुझे देखा था जब मुझको तभी अपनी लगी थी तू
मेरे दिल के किसी गोशे में बरसों से बसी थी तू
बहुत सोचा तो इक दिन ख़्वाब में देखा कि तुझको जानता हूँ मैं
मेरे पिछले जनम में मेरी महबूबा रही है तू
कि अपनी जान से ज़्यादा तू मुझसे प्यार करती थी
मगर कुछ तँगदिल लोगों ने मुझको क़त्ल कर डाला
यहाँ देखा तुझे तो धीरे-धीरे सब समझ आया
मैं अल्लाह की मेहरबानी पे खुश था और हैराँ भी
मुझे फिर से तुम्हारे साथ मिलवाया जो था उसने
मैं इक दिन बात ये सारी ही तुझसे कहने वाला था
मगर फिर यूँ हुआ कि याँ भी कुछ खुदग़ार्ज़ लोगों ने
हमारे बीच बेवजह ही कितनी दूरियाँ कर दीं
और इससे पहले कि मैं तुझको बतलाता तू मेरी कौन लगती है

गलतफ़हमी में ही तूने त'अल्लुक्र तोड़ डाला था
 तेरा वो फ़ैसला गरचे नहीं माकूल था बिल्कुल
 मगर मैं खुश हूँ गर तू तोड़ कर त'अल्लुक्र बहुत खुश है
 तुझे खुश देखना ही तो मेरा भी असल मक़सद है
 अगर तू मिलती रहती तो किसी दिन मैं तुझे ये बात समझाता
 कि याँ मिलना हमारा कुदरत की मस्लेहत का हिस्सा था
 ख़ैर, अब इस जन्म में तो हम कभी इक हो न पाएँगे
 तुमको मनाने, सब बताने के लिए मैं अब नहीं आ पाऊँगा
 तुम्हें पाने की नाकामी लिए ही एक दिन मर जाऊँगा मैं बस
 बिछड़ कर तुझसे यूँ हर पल जहन्नुम जी रहा हूँ मैं
 मेरा ये जन्म शायद बस इसी एहसास की खातिर हुआ होगा
 मगर तू, हाँ, तुझे अगले जनम में गर कहीं मिल जाऊँ मैं यूँ ही
 तो कोशिश बस यही करना कि तू मेरी तरह नाकाम मत होना
 दर्द सह लेना, जहाँ से ही नहीं, अल्लाह से लड़ जाना
 मगर उससे यही कहना कि तेरी ज़िद है चाहे जो भी हो जाए
 तू मुझको अब नहीं खोएगी बस पाकर रहेगी तू”

निवू, मुझे नहीं मालूम कि अल्लाह ने हमारे लिए इस जन्म में और क्या
 क्या सोच रखा है और वो हमें किस रास्ते पर लेकर जाना चाहता है, मगर अब
 तक जो हुआ है उससे तो ये साफ़ ज़ाहिर है कि अल्लाह चाहता है कि हम
 मिलें और एक दूसरे को पहचानें। अब तक जो हुआ वो एक मुश्किल इम्तहान

था मगर इतना भी मुश्किल नहीं कि हम उसके दिए इम्तहान में पास न हो सकें। मैंने तो तुम्हें पहचान लिया है। अब तुम्हारी बारी है। कहते हैं कि अगले जन्मों में चाहे इन्सान की शक्लो-सूरत बदल जाए, उसका जेंडर बदल जाए मगर आँखें एक ऐसी खिड़की हैं जिन में से पिछले जन्मों की झलक मिलती है। हम आँखों के ज़रिए पिछले जन्मों के साथियों को पहचान सकते हैं। क्यों न तुम सारी नाराज़गी भुला कर मुझसे इक बार मिलो। मेरी आँखों में देखो। बहुत मुमकिन है कि उनमें तुम्हें तुम्हारा देबा नज़र आ जाए। अब जब तुमने ये जान लिया है कि मैं क्यों तुम्हें इतना चाहता हूँ तो तुम ये भी जान लो कि मैं अपनी रूह की गहराइयों से मुहब्बत करता हूँ तुमसे। क्योंकि हमारा रिश्ता रूहानी रिश्ता है। ये भी बताना चाहता हूँ कि मेरी मुहब्बत तुम्हारे जिस्म या खूबसूरती की मुहताज नहीं। तुम अगर खूबसूरत न भी होती तो भी मैं तुमसे ऐसे ही मुहब्बत करता। तुम अगर जिस्मानी तौर पर माज़ूर भी होती तब भी मैं तुमसे ऐसे ही मुहब्बत करता। तुम एक लड़की न होकर अगर एक लड़का भी होती तब भी मैं तुमसे ऐसी ही मुहब्बत करता। कोई और अगर चाहेगा तुम्हें तो वो सिर्फ़ तुम्हारे जिस्म को चाहेगा। क्योंकि वो इस जिस्म के पार तुम्हारी रूह तक नहीं पहुँच पाएगा, क्योंकि उसके लिए तुम करोड़ों लड़कियों में फ़क़त एक और लड़की होगी। मगर मेरे लिए तुम वो वाहिद लड़की हो जिसके आगे करोड़ों लड़कियों की कोई अहमियत नहीं, क्योंकि तुम्हें मुझे कुदरत ने दिया है, खुदा ने दिया है। ये भी सच है कि जिस्मानी मुहब्बत ज़्यादा देर चलती नहीं है। जिस्म से जी भर जाता है। जिस्म बूढ़ा भी हो जाता है। बीमार भी हो जाता है, मर भी जाता है। रूह हमेशा जवान रहती है। रूह का रिश्ता मरता नहीं। जन्म दर जन्म क़ायम रहता है। रूह के रिश्ते से तुम मेरी मुहब्बत हो। इसी मुहब्बत के ज़रिए इस जन्म में हमारी रूहें इर्तिका के अगले मरहले पर पहुँचेंगी। मुहब्बत हमारी रूहों के इर्तिका के अमल में एक ख़ास और अहम जुज़्व है। इसे ज़िन्दा रखना होगा। रूहानी मुहब्बत ही सच्ची मुहब्बत है, और सच्ची मुहब्बत से बढ़कर

कहीं भी कोई और दौलत नहीं है जहाँ में। जिसे सच्ची मुहब्बत मिल जाए उससे बड़ा अमीर कोई नहीं।

आज मुझे रातों को सोए हुए तक्ररीबन पाँच सौ त्रियालीस रातें हो गई हैं। अब तो सारी सारी रात जागते रहने की आदत सी हो गई है। पता नहीं ये आदत है या कोई सँगीन बीमारी है मगर इससे निजात पा सकना मेरे बस में नहीं रहा। आगे की सारी ज़िन्दगी शायद इसी तरह रातों की नींद के बिना ही काटनी होगी। शायद ये लाक्राबिले-ज़िक्र मुहब्बत, ये न ख़त्म होने वाली जुस्तजू, ये दर्दे-महरूमी, ये एहसासे-मुजरिमाना, ये ग़मे-तन्हाई, ये बेचैनी, ये बेतरतीबी, ये इज़्तिराब, ये बेसुकूनियत, ये पहाड़ सा दुख ही मेरी तक्रदीर हो। अगर ये कोई इम्तहान है मेरे सब्र का, मेरी मुहब्बत का, तो मुझे मन्ज़ूर है मगर हार मन्ज़ूर नहीं।

निवू, अब मैं तुम्हें एक ऐसी बात बताने वाला हूँ जिसे पढ़कर तुम्हारे पैरों तले से ज़मीन खिसक जाएगी। यक्रीन ही नहीं होगा। तुम्हें याद होगा 2022 के अगस्त महीने में मैंने किसी दोस्त के फ़ोन से तुम्हें एक मैसेज किया था जिसमें मैंने लिखा था कि हमारे बीच जो हुआ और जो मेरे साथ हो रहा है उसकी वजूहात की गहरी तहक़ीकात के बाद मिले नतीजों की बिना पर मैंने एक कहानी लिखी है जिसमें तुम मरक़ज़ी किरदार हो। मैं इसे एक किताब की शक्ल में छपवाने से पहले इसका मसव्विदा तुम्हें भेजना चाहता हूँ ताकि तुम छपने से पहले इसे एक बार पढ़ लो। तब इस किताब को लिखने के अमल में आख़िरी सफ़र्यों पर था मैं। आज तक्ररीबन तीन साल होने को आए हैं मगर तुम्हारा जवाब नहीं आया। इस बीच तुम्हारा कोई अता पता न होने की वजह से ज़ेहन बड़ी मुश्किल कैफ़ियत में था। तुम अब भी कभी कभी मेरे ख्वाबों में दिखाई दे जाती हो और मुझे बेकरार कर जाती हो। फिर तुम्हें ढूँढ़ने की कोशिश करता हूँ। कहीं तो कभी तो इक बार मिल जाओ तुम। कोई ख़ैर ख़बर ही मिल जाए तो शायद रूह को करार आए। तुम सोशल मीडिया पर तो मेरे साथ राबिते में

हो ही नहीं। मेरी किस्मत देखो। एक दिन मैं फ़ेसबुक देख रहा था कि अचानक तुम्हारे पापा का फ़ेसबुक अकाउंट “people you may know” के ज़रिए मेरे सामने था। तुम्हारी किसी ख़ैर ख़बर के लालच में उसे खोलकर देखा तो मेरे पाँव तले से ज़मीन खिसक गई। तुम्हारे वालिदैन् की तस्वीर देखकर मैं यक्रीन ही नहीं कर पाया कि ऐसा भी हो सकता है। मेरी हैरानी की कोई इन्तहा ही नहीं रही जब मैंने देखा कि तुम्हारे पापा ही पिछले जन्म में तुम्हारे मामू थे। हमारे शराफ़त चाचा। और तुम्हारी मम्मी कोई और नहीं पिछले जन्म में फ़ज़लू की अम्मी थी जिसने तुम्हारे पागलपन के दौर में कई साल तुम्हारा ख़्याल रखा था। वो इस जन्म में भी तुम्हारा ख़्याल रखने के लिए तुम्हारे वालिदैन् बन कर आए हैं। कितनी ख़ुशकिस्मत हो तुम। अब इस करिश्मे को क्या कहोगी तुम? खुदा के इस खेल में हम सिर्फ़ मोहरे हैं। चाल तो वही चलता है। मनसूबे तो वही बनाता है।

मैं तुम्हें ये भी बताना चाहता हूँ कि समाज या हमारी उम्रों के फ़र्क़ की परवाह किए बग़ैर, मैं सच्चे दिल से और रूह की गहराइयों से ये तस्लीम करता हूँ कि मैं तुमसे बेइन्तहा मुहब्बत करता हूँ और क्योंकि ये मुहब्बत रूहानी है और अल्लाह की नवाज़िश है इसलिए ये भी कहूँगा कि तुम्हारी मुहब्बत पर पहला हक़ मेरा है।

आख़िर में मैं बस इतना ही कहूँगा कि एक बस तुम ही हो इस जहाँ में जो मुझे इस ज़ेहनी कैफ़ियत से बाहर निकाल सकती हो। मेरी मदद करो। मैं बहुत तकलीफ़ में हूँ। जैसे भी हो अपने देबे को उसकी बानो वापस दे दो प्लीज़। इस कहानी को आख़िरी ख़त के साथ निवेदिता को भेजें हुए साल से ऊपर का वक़्त होने को आया है मगर निवेदिता की जानिब से कोई जवाब नहीं आया। जवाब की उम्मीद भी नहीं थी मगर इस दौरान कुछ ऐसा हुआ है कि मैं धीरे - धीरे ही सही काफ़ी बदल गया हूँ। बदल रहा हूँ। एक तो ये कि मेरा अल्लाह की रहमतों पर यक्रीन बढ़ चला है। मैं ये समझ गया हूँ कि मेरे साथ जो भी हो

रहा है वो अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर नहीं हो रहा। मुझे निवेदिता से दूर रखने में अल्लाह का कोई खुफ़िया मन्सूबा है। शायद वो नहीं चाहता कि हम दोनों की मुलाकात फिर से इसी जनम में हो जाए और हम दोनों पुरसुकून होकर एक ऐसी ज़िन्दगी जीना शुरू कर दें जिसमें हमारी रूहों के मज़ीद इतिफ़ा में कोई रुकावट आए। असल मक़सद तो रूहों के उस हद तक इतिफ़ा का है जहाँ हमारी रूहें रूहे-अज़ीम में जा मिलें। इसके लिए हमें अभी कुछ और जनम यूँ ही दर्द और इज़तराब से गुज़रना पड़े।

मुझे समझ आ गया है कि मुहब्बत नामुकम्मल ही रहे तो उसकी शिद्दत बढ़ती है। दर्दे-हिन्न बढ़े तो मिलने की उम्मीद जगी सी रहती है। तड़प बढ़ जाए तो समझो तुम्हारी मुहब्बत ज़िन्दा है। महबूब का तसव्वुर प्यारा लगता है। उसे सोचना, उसे याद करना दिलचस्प लगता है। अगर मनचाहा मिल जाए तो वो शिद्दत, वो तड़प रफ़ता-रफ़ता कम हो जाती है और शायद ख़त्म भी। प्यार में वो मज़ा नहीं रहता।

मेरे सर में एक ज़ख़्म था जो हर महीने दो चार दिन रिसता था वो पास्ट लाइफ़ रिग्रेशन थिरेपी के बाद धीरे-धीरे ठीक हो रहा था, अब बिल्कुल ठीक हो गया है। मुझे दिखाई देने वाले पुर-असरार मनाज़िर भी अब दिखाई देना बन्द हो गए हैं। नींद भी भरपूर आती है। इज़तराब कम हो गया है। अल्लाह की रज़ा में रहना सीख गया हूँ। हाँ, निवेदिता को याद करने का सिलसिला बदस्तूर जारी है। यूँ तो निवेदिता का मुझसे त'अल्लुक़ तोड़ना बेहद नागवार गुज़रा था मुझे पर अब ये सोचता हूँ कि शायद हमारा इस जनम में यूँ मिलना सिर्फ़ मुझे दिखाई गई एक झाँकी थी जिससे मेरी सोई हुई रूह बेजार हो सकती। तसल्ली ये भी थी कि निवेदिता ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वो ये नहीं जानती थी कि हमारा पिछले जन्म का कोई रिश्ता है। अगर उसकी रूह को भी मेरी रूह की तरह अल्लाह ने बेदार किया होता और सब जानने के बाद भी वो मुझे छोड़कर जाती तो यक़ीनन बुरा लगता। मगर ऐसा नहीं था। खुदा ने ऐसा शायद इसलिए

नहीं किया क्योंकि वो सिर्फ मेरा ही इम्तिहान लेना चाहता है। निवेदिता तो अपनी मुहब्बत का, अपनी वफ़ा का इम्तिहान पिछले ही जनम में दे चुकी थी। अब बारी मेरी थी। मैं अगर निवेदिता के राबिया ने रखने के फ़ैसले का एहताराम न करता और आजकल के आशिकों की तरह मैं भी उसे भुला देता तो यक़ीनन इस इम्तिहान में फ़ेल हो जाता। उसे आज भी मुहब्बत करना इस बात का सबूत है कि मेरी मुहब्बत नाकाम नहीं।

मैं नहीं जानता निवेदिता इस वक़्त कहाँ है और क्या कर रही है। न ही मैं उसकी किसी सहेली या दोस्त से ये पूछना चाहता हूँ कि निवेदिता कहाँ है और क्या कर रही है। अगर अल्लाह चाहता है कि मैं निवेदिता से जुदाई के दर्द को पूरी शिद्दत से महसूस करूँ तो मैं कर रहा हूँ। मेरे सब्रो-ज़ब्त की इन्तेहा का इम्तिहान है ये। इस इम्तिहान को पास करने के बाद ही शायद अगले जनम में अल्लाह मुझे निवेदिता से फिर मिलाए और इस बार निवेदिता ही मुझसे मिलने की पहल करें।

कभी-कभी इक अजीब सा ख़याल आता है कि शायद मैं जल्दी मर जाऊँ और निवेदिता की शादी के बाद मैं उसकी औलाद के रूप में जनम लूँ। अल्लाह की मस्लेहत में ये भी तो तरीक़ा हो सकता है हमें मिलाने का। या फिर यूँ कि मेरी मौत तब तक न हो जब तक निवेदिता अपनी ज़िन्दगी के अन्जाम के करीब न हो और अगले जनम में हमारी उम्रों में इतना फासला न हो जितना इस जनम में है। ऐसा होने से अगले जनम में मिलना आसान होगा हमारे लिए। तब तक इन्तज़ार करूँगा मैं।

अब तो मैं बस यही चाहता हूँ कि निवेदिता जहाँ कहीं भी है, खुश रहे और अगले जनम में हमारी अधूरी मुहब्बत के अलावा इस जनम का कोई क़र्ज़ लेकर न पैदा हो। मैं दुआ करूँगा उसके लिए।

